६० ॐनमः॥सिद्धेभ्यः॥अथपरीक्षामुखनामप्रमाणप्रकरणकीवचनिकालिखियेहै॥दोहा॥श्री
मतवीरजिनेशरवि॥तमअज्ञाननशाय॥शिवपथवरतायोजगति॥वंदौंमैंतसुपाय॥१॥
माणिक्यनंदिमुनीशकृत॥ग्रंथपरीक्षाहार॥करूंवचनिकातासकी॥लघुटीकाअनुसार॥२॥
ऐसैंमंगलपूर्वकप्रतिज्ञाकरीअबपरीक्षामुखनामसंस्कृतसूत्रबंधमाणिक्यनंदिआ
चार्यकृतग्रंथहैताकीवडीटीकातौप्रमेयकमलमार्तंडनामहैसोप्रभाचंद्रआचार्यकृतहै
तामैंतौविशेषकरिवर्णनहै॥बहुरिछोटीटीकाप्रमेयरत्नमालाहै॥सोलघुअनंतवीर्यआ
चार्यकृतहैताकेअनुसारमैंदेशभाषामयवचनिकालिखूंहूं॥तामैंबुद्धिकीमंदतातैंतथाप्र
मादतैंकहूंहीनाधिकअर्थलिख्याहोय॥तौपंडितजनहास्यमतिकरियो॥मूलग्रंथदेखिशु
द्धकरिलीजियो॥इहांकोईकहैजोप्रमाणकेप्रकरणतौसंस्कृतवचनरूपहीचाहियेदेशभाषा
मयवचनतैंहीनाधिककरनांबणैंतौविपर्ययहोनेतैंबडादोषलागै॥ताकासमाधानजोस
त्यहैदेशभाषाकेवचनअपभ्रंशबहुतहैंतसंअर्थविपर्ययरूपभीभासैपरंतुकालदोषतैं
संस्कृतकेपढनेवालेविरलेहैंअरकेईहैंतेभीगुरुसंप्रदायकेविछेदहोनेतैंअर्थयथार्थ
नसमझैंहैंतातैंसंस्कृतकाभावार्थसमझनेंकूंदेशभाषाकरियेहैअरजेविशेषपंडितहैंतेमू १

लग्रंथतथासंस्कृतटीकातैंसमझैंहीगेजैनमतमैंप्रमाणनयरूपस्याद्वादन्यायकेग्रंथबहु
तहैंतिनिकेअर्थसमझनेंकूंयहप्रकरणबडाउपकारीहैतातैंयाकाभावार्थदेशभाषामय
भीलिखियेहैअरजेजिनमतकीआज्ञामानैंहैंतिनिके॥अर्थकाविपर्ययभीनहोयगाजेतायथा
र्थसमझैंगेतेतातौयथार्थरहैहीगा॥अरकहीं॥अन्यथाहोयगातौविशेषबुद्धिवानपंडितनि।
कासंयोगभयेंयथार्थहोयगाजैनमतकेश्रद्धानवालेपुरुषहठग्राहीनाहीहोहैंतातैंदेशभा
षाकरनेमैंदोषनलागैगा॥ऐसैंजाननां॥ऊ॥तहांप्रथमहीयाकासंबंधऐसाजोपहलैंश्रीअ
कलंकदेवआचार्यभयेतेकैसेभये॥अपनीनिर्दोषज्ञानअरुसंयमरूपसंपदाताकरिप्रत्ये
कबुद्धश्रुतकेवलीसूत्रकारआदिबडेऋषीश्वरतिनिकीमहिमाकूंआपलेतेभये॥बहुरिक
ल्याणरूपभये॥बहुरिस्याद्वादविद्यासोईभईनृत्यकारिणीताकानृत्यकेआचार्यअद्वैतप्रवी
णभये॥बहुरिसमस्ततार्किकनिकासमूहतितिविषैजेबडेतार्किकतेईभयेचूडामणितिं॥
निकीकिरणसारिखीनमनक्रियाताकरिमिलीहैचरणनिकेनखनिकीकिरणजिनिकी॥
भावार्थ॥बडेबडेतार्किकजैनकेशास्त्रकेवेत्तातेजिनिकेचरणसेवैंहैं॥बहुरिकविताकर॥
नांटीकाकरणवारजीतनां॥वक्तापणाकरनांयऊच्यारिप्रकारपंडितपणांतिसकेजाननेंके

इच्छकनृषानुग्रहणाकरनेंकेइच्छकजेविनयकरिनम्रीभूतशिष्यजनतिनिसहितकियाहैआप॥
अनुभवजिनूंनैं॥ऐसेभये॥तिनिनैंनर्कग्रंथनिकेसातप्रकरणरचे॥तहांअपलघुअपचूर्णिका
तेअतिकठिनजिनिमैंमंदवुद्धीप्रवेशनकरिसकेंयातेंतिनिमैंमंदवुद्धीहूनिकाप्रवेशहोनेंके।
अर्थितिनिहीकाअर्थलेकरिधारानगरीकेविषैश्रीमाणिक्यनंदिआचार्यतिनिनेंपहपरीक्षा
मुखनामप्रकरणरच्यातिसकाविवरणकरनेंकेइच्छकजेलघुअनंतवीर्यआचार्यतेतिस
कीआदिविषैनास्तिकताकापरिहारशिष्टाचारपालनपुण्यकीप्राप्तिनिर्विघ्नशास्त्रकीसा
माप्तिआदिफलकूंचाहतेसंतेश्लोककहैहै॥छ॥नतामरशिरोरत्नप्रभाप्रोतनखत्विषेन
मोजिनायदुर्वाररमारवीरमरछिदे॥१॥याकाअर्थ॥टीकाकारकहैहैजोजिनकहियेकर्मश
त्रुकेजीतनेंहारेजेअरहंतपरमेष्टीतिनिसर्वतिकेअर्थिहमारानमस्कारहो॥कैसेहैंजिन
नमेंजेदेवनिकेमस्तकतिनिकेमुकुटनिकेमणिकीप्रभातिसविषैपोईहैंमिलीहैंचरण॥
केनखनिकीकिरणजिनिकी॥भावार्थ॥अरहंतपरमेष्टीकूंच्यारिप्रकारकेदेवनमस्कारकरे
हैं॥वहुरिकैसेहैंकठिनहैनिवारनजाकाऐसाजोकामरूपसुभटताकामदकेछेदनहारेहैं॥इ
सश्लोकमैंमारवीरमदछिदेऐसाविशेषणजिनकाहैताकाऐसाभीअर्थहै॥माकहियेलक्ष्मी २

ताहिरातिकहियेदेताकूंमारकहियेसोइसमारशब्दकेअर्थतैंतोमोक्षमार्गकेदाताभयेवहु॥
रिविकहियेविशेषकरिईरकहियेसमस्तपदार्थनिकूंजाननहारेहैंऐसैंसर्वज्ञभये॥वहुरिमदछि
तकहियेमानकषायकेछेदनहारेहैंऐसैंमदऐसानपलक्षणपदतैंसर्वरागादिककानाश॥
करनहारेभयेऐसैंमोक्षमार्गस्यनेतारंइत्यादिसूत्रकीटीकाविषैकहेजेआप्तकेतीनूंविशेष
णतेसिद्धभये॥छ॥वहुरिअन्यप्रकारकहैहै॥माकहियेप्रमेयकाप्रमाणरूपज्ञाननहाराकेव
लज्ञानसोईभयारविकहियेसूर्यवहुरिइराकहियेवाणीदिव्यधुनिएदोकुकैसेउदुर्वारकहिये
वोरिहेतुदृष्टांतनिकरिनिवारनजिनिकानहोयऐसेजाकेहोयसोदुर्वारमारवीरकहिये॥वहु
रिमदकहनेंतैंसर्वरागादिकलेशतिनिकोंछेदैसोमदछितकहिये॥ऐसैंभीतिआप्तकेतीनूंवि
शेषणभयेऐसाजाननां॥ऐसैंमंगलकेअर्थिनमस्कारकीयातहांमंगलदोयप्रकारहैएकमु
ख्यमंगलदूजाअमुख्यमंगलतहांमुख्यमंगलतौजिनेंद्रकेगुणनिकास्तोत्रकरनांहैअरुअमु
ख्यमंगललौकिकहैतहांदधिअक्षतआदिहैंसोइहांमुख्यमंगलजिनेंद्रकेगुणनिकास्तोत्र
हैसोहीकियाहै॥छ॥आगैंइसग्रंथकेकर्ताकूंटीकाकारनमस्कारकरैहै॥श्लोक॥अकलंकव
चोंभोधेरुद्दध्रेयेनधीमतान्यायविद्यामतंतस्मैनमोमाणिक्यनंदिने॥२॥याकाअर्थ॥तिसमा

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

णिक्यनंदि नाम आचार्य के अर्थि हमारा नमस्कार होहु जा बुद्धिवाननें अकलंक कहिये कर्मकलं
ककरि रहित श्री वर्द्धमान स्वामी अथवा अकलंक नामा आचार्य तिनिके वचन अथवा अकलंक क
हिये निर्दोष सर्वज्ञ की दिव्यधुनि सो ही भया समुद्र तातैं न्याय विद्या रूप जो अमृत सो मथि करि का
ढ्या प्रगट कीया ऐसे हैं ॥ इहां लौकिक कथा है जो नारायण समुद्र मथि करि चौदह रत्न काढे ति
नि मैं अमृत भी है सो प्रसिद्ध अपेक्षा अलंकार रूप वचन है ॥ छ ॥ आगैं इस ग्रंथ की वडी टीका प्रमेय
कमलमार्त्तंड है ताका कर्त्ता प्रभाचंद्र आचार्य है ताकी महिमा दोय श्लोक मैं करै है ॥ छ ॥ प्रभेंदुवच
नोदारचंद्रिकाप्रसरे सति ॥ मादृशाः क्व नु गण्यंते ज्योतिरिंगणसंनिभाः ॥ ३ ॥ तथापि तद्वचोपूर्वरचना
६ रुचिरं सतां चेतोहरं भृतं यद्वन्नद्या नवघटे जलं ॥ ४ ॥ इनिका अर्थ ॥ प्रभाचंद्र नाम आचार्य के वचन रूप
उदार चांदणी का फैलना होतैं हम सारिखे आगिया नामा कीट जीव तुल्य कौन गणना मैं गणिये ॥ छ ॥
तोऊ हम इस ग्रंथ की टीका करैं हैं सो जैसैं नदी का जल नवीन घट विषै किछु पा लिये सो हू शीत
ल होय पीवनेंवाले पुरुषनि के चित्त कूं प्रिय लागै तैसें तिस प्रभाचंद्र के वचन ही अपूर्व रचना क
हिये तिनि कूं नई रचना रूप कीये संते सुंदर सत्पुरुषनि के चित्त कूं हरन हारे होयगे ॥ छ ॥ आगैं पह ६
री कारिका निमित्त ले वर्णी है सो संबंध कहे है ॥ छ ॥ श्लोकः ॥ वैजेयप्रियपुत्रस्य हीरपस्योपरोधतः

॥ शांतिषेणार्थमारब्धा ॥ परीक्षामुखपंचिका ॥ ५ ॥ याका अर्थ ॥ वैजेय का प्यारा पुत्र जो ही
रप नामा ताकी प्रार्थना तैं शांतिषेण नामा कोई शिष्य है ताके पढनें के अर्थि यह परीक्षामुख नामा
ग्रंथ की पंचिका आरंभी है ॥ छ ॥ इहां परीक्षामुख ऐसा नाम का अर्थ ऐसा जो परीक्षा नाम विचार का
है जो वस्तु ऐसैं है कि नाहीं है कि अन्य प्रकार है ऐसा विचार कूं कहिये सो इहां प्रमाण का लक्षण
आदि की परीक्षा करिये है इस द्वार तैं सर्व ही वस्तु की परीक्षा होय है तातैं परीक्षामुख है बहुरि ता
की टीका कूं पंचिका कही सो सूत्रनि के पद न्यारे न्यारे करि तिनि का न्यारा न्यारा अर्थ कहिये ता कूं पं
चिका कहिये है सो इस टीका मैं सूत्रनि का भिन्न भिन्न पदनि का अर्थ करियेगा ॥ तातैं पंचिका नाम है
याका दूजा नाम प्रमेयरत्नमाला भी है ॥ छ ॥ आगैं मूल ग्रंथ का आदि सूत्र की सूचनिका करैं हैं
श्रीमत् कहिये पूर्वापर विरोध रहितपणां सो ही जो श्री लक्ष्मी ताकरि सहित ऐसा जो न्याय सो
ही भया समुद्र तामैं अगणित प्रमेय वस्तु रूप रत्न भरे सो ही है सार तामैं ऐसा न्याय रूप समुद्र
ताके अवगाहन करनें कूं अव्युत्पन्न जे न्यायशास्त्र के अभ्यास रहित पुरुष ते असमर्थ हैं ॥ ऐ
सा विचारि श्री माणिक्यनंदि नाम आचार्य तिनि के अवगाहनें कूं जिहाज सारिषा यह परीक्षामु
ख नाम प्रकरण रचै हैं ॥ इहां न्याय ऐसा शब्द है सो नि उपसर्ग पूर्वक इण् गतौ धातु के घञ् प्रत्यय।

करण अर्थमैं जो आहै तातैं ऐसा अर्थ होय है जो कोई प्रकार निश्चय करि प्रमेय पदार्थ का स्वरूप जा
करि जाणिये सो न्याय है अथवा नय प्रमाण रूप युक्ति ताका कहनेंहारा होय ताकूं भी न्याय कहिये
बहुरि याका श्रीमान् विशेषण कीया ताका यहु अर्थ जो निर्बाधपणो होय सो श्री अथवा अज्ञान
आदि गुण का उपजावनां है लक्षण जाका ऐसी श्री करि युक्त होय सो श्रीमान् बहुरि याकूं समु
द्र कह्या सो रूपकालंकार करि कह्या सो याका विशेषण कीया जो अमेय प्रमेय रत्नसार है सो
अमेय कहिये मिथ्यादृष्टीनि करि जाननेंमैं न आवै अथवा गणनारहित अनंतानंत ऐसे जे प्र
मेय कहिये प्रमाण करि जिनिकूं जानिये ऐसे जीव आदि पदार्थ वस्तु हैं। बहुरि रत्ननि विषै सार
होय सो रत्नसार कहिये। ऐसें अमेय प्रमेय हैं रत्नसार जामैं ऐसें बहुव्रीहि समास है बहुरि अ
मेय प्रमेय प्रमेय जे रत्न तिनि करि सार है उत्कृष्ट है ऐसा न्याय रूप समुद्र है। ऐसैं तत्पुरुष समास है
ऐसें इस परीक्षामुख प्रकरण के संबंध अभिधेय शक्यानुष्ठान इष्टप्रयोजन इनि तीनूंनिकूं जा
नें विना परीक्षावान पुरुषनिकी प्रवृत्ति या विषै होय नाहीं इस हेतु तैं तिनि तीनूंनि का अनुवाद क
हिये पूर्वाचार्यनि करि कह्या होय तिस अनुसार कहनां सो है पुरस्सर कहिये मुख्य जामैं बहुरि व
स्तु जाका कथन कीजिये सो ऐसा इहां वस्तु आदि करि प्रमाण अर प्रमाणाभास लेणां ताका निर्देश

कहिये स्वरूप कहनां तिस विषै परक। कहिये तत्पर ऐसा प्रतिज्ञा का श्लोक करै है॥ भावार्थ
॥ इस ग्रंथ का आदि का श्लोक है तामैं अभिधेय संबंध शक्यानुष्ठान इष्टप्रयोजन इनि तीनूंकों ज
नाय अर प्रमाण अर प्रमाणाभास का लक्षण जो पूर्वाचार्यनि करि कह्या है तिनि का अनुसार लेक
हनेंकी प्रतिज्ञा करै है॥ ॥ प्रमाणादर्थसंसिद्धिस्तदाभासाद्विपर्य्ययः। इति वक्ष्ये तयोर्लक्ष्म सि
द्धमल्पं लघीयसः॥१॥ याका अर्थ॥ प्रमाण तैं अर्थ की संसिद्धि होय है बहुरि प्रमाणाभास
तैं अर्थ की संसिद्धि नाहीं होय है विपर्यय होय है या हेतु तैं मैं ग्रंथकर्त्ता हूं सो तिस प्रमाण का अ
रु प्रमाणाभास का लक्षण कहौंगा टीका॥ अहं कहिये मैं ग्रंथकर्त्ता माणिक्यनंदि आचार्य हों
सो तल्लक्ष्म कहिये प्रमाण अर तदाभास इनि दोऊनि का लक्षण है ताहि वक्ष्ये कहिये कहूंगा कै
सा लक्षण कहौंगा सिद्धं कहिये पूर्वाचार्य्यनि करि प्रसिद्ध कीया सो ही बहुरि कैसा अल्प कहिये
थोरे अक्षरनि करि कहनेंयोग्य अरु अर्थनैं महान्॥ बहुरि कौंनकूं विचारि करि इहां लघुपणां बुद्धि
कृत ग्रहण करनां। शरीर के परिमाण कृत न लेणां जो तैं छोटे शरीर वाले हू बडे बुद्धिवान होय है बहु
रि अवस्था कृत भी न लेणां॥ जो तैं छोटी अवस्था वाले भी केई बडे बुद्धिवान होय है॥ तातैं जिनिमैं बुद्धि।
थोडी होय ते इहां लघुशब्द करि ग्रहण करनें॥ इहां लक्षण का तो स्वरूप ऐसा जाननां जो बहुत वस्तु ए

कहीमितिरहीहोयतिनिमैंसूंजुदीकरनेंकाजोकिछुवस्तुमैंप्रसिद्धचिन्हहोयसोलक्षणहोय।वहुरिसि
द्धविशेषणतैंअपनींहीरुचिकरिनाहीकीयापूर्वेंकह्यातिसहीअर्थरूपहैंऐसाजनायाहै।वहुरिअ॥
ल्पकहनैंतेंयामैंथोरेअक्षरनिमैंहीअर्थवहुतहैंऐसैंयाकानिःप्रयोजनपणांनिषेध्याहैयहप्रमा
णतदाभासकालक्षणकोंनहेतुतैंकहियेहैजातैंअर्थजोजाननेंयोग्यवस्तुताकीसंसिद्धिकहिये।
प्राप्तिहोनांअथवाजाननांएदोऊप्रमाणतैंहोयहैंयातैंवहुरिकेवलप्रमाणतैंअर्थकीसंसिद्धिहो
यहैऐसाहीनाहीप्रमाणाभासतैंअर्थसंसिद्धिकाअभावभीहोयहैयातैंदोऊहीकालक्षणकह
नांवहुरिइतिशब्दहैसोहेतुअर्थमैंहैअरयाकासमुदायार्थउपरिकह्यासोजाननां॥छ॥इहांतर्क
जोअभिधेयसंबंधशक्यानुष्ठानइष्टप्रयोजनइनितीननिकरिसहितशास्त्रहोयहै।तहांइसप्रकरण
काजहांताईअभिधेयअरुसंबंधएदोऊनकहियेतहांताईयाकाउपादेयपणांनहोयपढनग्रहणक
रनेंयोग्यनहोय॥इहांउदाहरणजैसैंकाहूनैंकह्याजोयहवंध्याकापुत्रजायहैआकाशकेफूलनि
काजाकेमस्तकसेहुराहैमरीचिकाभाडलीमैंस्नानाकरिजायहैसुसाकेसींगकाधनुषधारेंहै॥ऐ
सेंकहनेंमैंकिछुवस्तुनाहीअवस्तुहीअवस्तुकहैतातैंयामैंअभिधेयअर्थनाही॥वहुरिकाहूनैंकह्या
दशदाडिमहैंछहपूवाहैंचरवीहैछेलीकाचामडाहै।मांसकापिंडहैअथवाअहोदेषोयहगौऽहैसयह

कीयानाकापितारोलाहोयगया।ऐसेवचनकहैतिनिमैंकाहूकासंबंधनमिल्यापलापमात्रभयेऐ
सैंशास्त्रमैंअभिधेयसंबंधरहितवचनहोयतौपरीक्षावानआदरेंनाही॥वहुरितैसेंहीजोअशक्यानुष्ठा
नइष्टप्रयोजनहोयजाकाग्रहणकरनांकठिनहोयअरुअपनेंइष्टहोयतौजैसैंसर्पकामणिसर्वज्व
ररोगकाहरनहाराहैऐसैंकहनेंमैंरोगकाहरणतौइष्टहैपरंतुतिसकाग्रहणकरनांकठिनहैऐ
सेवचनकूंपरीक्षावानआदरेनाही॥तैसैंहीशक्यानुष्ठानअनिष्टप्रयोजनहोयजैसैंकहूनैंकह्यामाता
काविवाहकरनांतौयाकाकरनांतौसुगमहैपरंतुयहइष्टनाही।सोऐसेवाचनभीपरीक्षावानआदरे
नाहीतातैंएतीनूंहीप्रकारशास्त्रकेकहेचाहिये॥ताकासमाधान॥आचार्यकहैहैजोयहअसत्यहै।याप्रकरण
केअभिधेयप्रमाणअरुप्रमाणाभासहैंतेतौइसश्लोकमैंप्रमाणतदाभासपदकाग्रहणतैंकहेही
जातैंइसप्रकरणकरिप्रमाणप्रमाणाभासहीकाकथनकरियेहै।वहुरिसंबंधहैसोअर्थकीसामर्थ्य
हीतैंआयाजातैंयाप्रकरणकैअरुप्रमाणप्रमाणाभासरूपअभिधेयकेवाच्यवाचकहैलक्षणजा।
काऐसासंबंधपदनिमैंआवैहीहै॥वहुरिप्रयोजनशक्यानुष्ठानरूपअरुइष्टरूपहैसोभीआदिश्लो
ककरिहीलषियेहै॥जातैंप्रयोजनदोयप्रकारहै।एकसाक्षात्दूजापरंपरातहांइसश्लोकमैंवक्ष्येऐ
सापदहैसोयापदकरिसाक्षात्प्रयोजनकहियेहैजातैंसंशयविपर्ययरहितज्ञानशास्त्रकाज्ञानहोनेतैं

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी इत्यस्य स्मारकम्

शिष्यजन देषिलेंगे शिष्यजननिहीकूं विचारिकरि कहनेंकी प्रतिज्ञा करीहै सा साक्षात प्रयोजन है॥ बहुरि प
रंपराप्रयोजन अर्थका ज्ञान तथा प्राप्ति है सो आदि श्लोकमें अर्थसंसिद्धि ऐसा पद है ताकरि कह्या जा
तैं शास्त्र के ज्ञान के अनंतरि अर्थ का ज्ञान तथा प्राप्ति होयगी॥ ऐसें जाननां॥ छ॥ फेरि तर्क॥ जो सम
स्त विघ्न के नाशके अर्थि इष्टदेवताका नमस्कार शास्त्र की आदि विषै चाहिये सो इस प्रकरण के कर्त्तानें
न कीया सो कहा कारण॥ ताका समाधान॥ आचार्य कहै है जो ऐसैं न कहनां॥ जातैं नमस्कार मन अर स
कायकरि भी संभवै है॥ तातैं ऐसें जानूं मनकरि अर कायकरि शास्त्रके प्रारंभ करतैं करिलीया होगा
बहुरि वचनकरि नमस्कार भी इस आदिवाक्यकरि कह्या हूवा जाननां जातैं केई वाक्य ऐसे हैं जिनिका
दोय आदि अर्थ भी देषिये है॥ जैसें काहूनें कह्या श्वेतो धावति ऐसे वाक्यके दोय अर्थ होय है एक तो ऐ
सा जो श्वा कहिये कूकरा सो इतः कहिये यातरफ धावति कहिये दौडै है॥ बहुरि दूजा॥ अर्थ॥ जो श्वेत
कहिये धोला गुण युक्त कोई दौडै है॥ ऐसें दोय अर्थकी प्रतीति है॥ तहां आदिके वाक्यके विषै नमस्काररू
प अर्थ भी है सो ही कहिये है तहां अर्थ कहिये हेयोपादेयरूप वस्तु ताकी संसिद्धि कहिये यथार्थ ज्ञान
सो प्रमाणतैं होय है॥ तहां मा कहिये लक्ष्मी अंतरंग तो अनंतचतुष्टयस्वरूप अर बाह्य समवसरणादिक
रूप॥ बहुरि आण कहिये शब्द इति दोऊनिका द्वंद्वसमासतैं मान ऐसा भया बहुरि प्र उपसर्ग जो उत्कृष्ट प्र ६

माण भया सो इस उपसर्गके योगतैं ऐसा अर्थ भया जो ऐसी प्रकृष्ट उत्कृष्ट लक्ष्मी हरि हर ब्रह्मा आदि॥
कूं लौकिक देव मानें हैं तिनिकै नाही॥ बहुरि ऐसी दिव्यध्वनि वाणी प्रत्यक्ष अनुमान प्रमाणतैं विरोधरहि
त अन्य कै नाही॥ ऐसा प्रमाण नाम भगवान अरहंत का ही भया॥ ऐसें असाधारण गुणका दिषावनां क
है सो भगवान का स्तवन ही है तातैं अर्थकी संसिद्धि कूं अवश्य कारणभूत जो प्रमाण कहिये भगवा
न अरहंत ता तैं तो अर्थकी संसिद्धि सम्यक्ज्ञान होय है बहुरि प्रमाणाभास जे हरिहरादिक तिनि तैं अ
र्थकी संसिद्धि का अभाव मिथ्याज्ञान होय है इस हेतु तैं इस प्रकरणतैं तिनि प्रमाण प्रमाणाभासका
लक्षण कहूंगा ऐसें कह्या तैसा आगें सूत्र कहिये गा जो सामग्री विशेष इत्यादिक तिनिमें सर्वज्ञ अ
सर्वज्ञका निश्चय करिये गा॥ ऐसें अरहंतका सत्यार्थस्वरूप कहनां सो मंगलरूप भया अन्यका निषेध
सो अमंगलका निषेध है॥ ऐसा जाननां॥ १॥ आगें अब कहनेंकूं प्रारंभ कीया जो प्रमाणतत्त्व ता विषै अ
न्यवादीनिके च्यारि विप्रतिपत्ति है॥ स्वरूपविप्रतिपत्ति॥ १॥ संख्याविप्रतिपत्ति॥ १॥ विषयविप्रतिपत्ति॥ १॥
फलविप्रतिपत्ति॥ १॥ ऐसें च्यारि विप्रतिपत्तिनिमें प्रथम ही स्वरूपकी विप्रतिपत्तिका निराकरणके अर्थि सूत्र क
है है॥ इहां विप्रतिपत्ति नाम अन्यथा ज्ञाननें कहै है सो प्रमाणका स्वरूप अन्यवादी अन्यप्रकार कहै है सो बा
धासहित है सत्यार्थ नाही ऐसा इस सूत्रतैं सिद्ध होय है॥ छ॥ स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणं

॥भाषाकाअर्थ॥स्वकहियेआपआत्माअपूर्वार्थकहियेपहलैंजाकीप्रमाणज्ञानभईऐसाअन्यवस्तुइ
निदोऊनिविषेव्यवसायात्मककहियेव्यापारकरिनिश्चयकरनेंस्वरूपजोज्ञानसोप्रमाणहै॥१॥इहांप्र
माणशब्दकीनींनिरुक्तिऐसीप्रकहियेप्रकर्षरूपसंशयविपर्ययअनध्यवसायकरिरहितहोय
करिमीयतेकहियेवस्तुस्वरूपकूंजानियेजाकरिसोप्रमाणहै॥ऐसैंकरणसाधनरूपनिरुक्तिहै॥सो
ऐसाज्ञानहैसोज्ञानविशेषणकरितोजेअज्ञानरूपसंनिकर्षआदिकूंप्रमाणमानैंहैंतिनिकानिराक
रणभयातहांलघुनैयायिकमतवालेतोइंद्रियकेअरपदार्थकेसंबंधहोनांऐसाजोसंनिकर्षताकूंप्र
प्रमाणमानैंहैंअरवडेपुराणेंनैयायिकतेकर्त्ताकर्मआदिकारकनिकासकलपणांकूंप्रमाणमा
नैंहैंवहुरिसांख्यमतवालेइंद्रियनिकीप्रवृत्तिहीकूंप्रमाणमानैंहैं॥वहुरिप्राभाकरजेमीमांसकमतके
भेदवालेअज्ञानरूपजोज्ञाताकाव्यापारताकूंप्रमाणमानैंहैं॥इत्यादिजेअज्ञानरूपप्रमाणमानैंहैंति
निकानिषेधज्ञानकहनेंतैंभया॥वहुरिवौद्धमतीप्रमाणज्ञानहीकूंकहैहैंपरंतुप्रमाणकाभेदजोप्र
त्यक्षताकेच्यारिभेदकरैहैंस्वसंवेदनप्रत्यक्ष॥१॥इंद्रियप्रत्यक्ष॥१॥मानसप्रत्यक्ष॥१॥योगिप्रत्यक्ष॥१
ऐसैंप्रकृच्यारयौंहीप्रकारकाप्रत्यक्षनिर्विकल्पव्यापारकरिरहितमानैंहैंतिनकेनिराकरणकेअर्थि
व्यवसायपदकाग्रहणहैजोव्यापाररूपसविकल्पहोयनिश्चयकरनेंवालाहोयसोप्रमाणहै॥वहुरि। ७

अर्थपदकाग्रहणतैंजेवाह्यपदार्थकालोपकरनेंवालेविज्ञानाद्वैतवादीवौद्धमतीतथाब्रह्माद्वैतवादी।
वेदांतमतीतथादीपतीवस्तुकालोपकरनैंवाएलेअन्यएकांतवादीतिनिकानिराकरणहै॥वौद्धम
तकेच्यारिभेदहैंतहांमाध्यमिकतोसर्वशून्यमानैंहैं॥वहुरियोगाचारवाह्यपदार्थकूंशून्यमानैंहैंज्ञा
नकूंअद्वैतमानैंहैंवहुरीसौत्रांतिकअनुमानकाविषयअनुमेयकूंअवस्तुमानैंहैं॥वाहुरिवैभाषिक।
भीसर्ववस्तुकूंशून्यमानैंहैं॥वहुरिअर्थकाअपूर्वविशेषणहैसोगृहीतग्राहीपहलैंग्रहणकीयाजा
ण्यांताहीकूंग्रहणकरैजानैऐसाजोधारावाहीज्ञानताकेप्रमाणताकानिषेधकेअर्थिहैधारावाही
ज्ञानप्रमाणकाफलरूपप्रमितिहैकरणस्वरूपप्रमाणनाही॥वहुरिस्वपदकाग्रहणतैंज्ञानकूंप
रोक्षहीमानैंऐसेमीमांसकमतीतथाज्ञानस्वसंवेदनस्वरूपनाहीपरहीकूंजानैंहैआपकूंआपजा
नैंनाहीऐसैंमाननेंवालेसांख्यमतीतथाज्ञानहैसोदूसरेज्ञानकरिजानियेहैआपकूंआपहीजानैंना
हीऐसैंमाननेंवालेयोगमतीनैयायिकइनिकानिषेधहैज्ञानस्वपरप्रकाशकहै॥असेंअव्याप्तिअ
तिव्याप्तिअसंभवऐसेतीनलक्षणकेदोषहैंतिनिनैंरहितभलेप्रकारठहरयानिश्चयभयाप्रमाणका
लक्षणहै॥ऐसैंप्रकृसूत्रहैसोप्रमाणभूतहैतहांअनुमानप्रमाणकाप्रयोगस्वरूपपाससूत्रकूंदिषा
इएहैतहांप्रमाणतौरहाधर्मीहैताविषैपरलक्षणकत्यासोसाध्यहैवहुरिप्रमाणजोधर्मीसाहीइहांहै

तुकहनाइहांप्रश्न जोप्रमाणशब्दकैतोप्रथमाविभक्तिहैअरहेतुविषैपंचमीहोयहैसोप्रमाणत्वा
दहेतुकैसैंताकासमाधान॥जोकोईजायगांप्रथमाविभक्तिअंतपदभीहेतुस्वरूपहोयहैजैसैंक
ह्याहैप्रत्यक्षंविशदंज्ञानंऐसैंइहांसाध्यसाधनकाप्रयोगकरियेतबप्रथमाभीहेतुरूपहैतातैंइस
सूत्रकाप्रयोगऐसैंकीयाहैप्रमाणहैसोस्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकज्ञानहैकाहैतैंजातैंप्रमाणप
णांयाहीकैहै॥तातैंजोस्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकज्ञाननाहीसोप्रमाणनाहीजैसैंसंशयादिकस्वा
पूर्वार्थव्यवसायात्मकनाहीतैप्रमाणभीनाहीतथाघटआदिजडपदार्थतेभीऐसेनाहीतैप्रमाण
नाही॥वहुरिप्रमाणहैसोऐसोहैतातैंस्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकज्ञानहैसोहीप्रमाणहैऐसैंअनु
मानकेपंचअवयवरूपयहसूत्रहैधर्मीअरसाध्यदोऊस्वरूपपक्षकहियेताकावचनसोप्रतिज्ञाहैसा
धनकावचनसोहेतुहैव्याप्तिकूंलारलगायदृष्टांतकावचनसोउदाहरणहैदृष्टांतकैंअरुपक्षकूंस
मानकहनांहेतुकूंसंकोचनांसोउपनयपुनसाध्यकानियमकहनांसोनिगमनऐसैंइनिपांचनिकास्वरूप
आगैंसूत्रकारकहसीऐसैंसूत्रहैसोप्रमाणभूतहैआप्तकायहवचनहैतातैंतोआगमप्रमाणरूपहोहै:
वहुरिअनुमानकेअवयवरूपअनुमानप्रमाणरूपहोहै वहुरिसूत्रकाऐसाभीस्वरूपकह्याहैजामैंअक्ष
रअल्पहोयवहुरिजामैंसंदेहनहोयजैवहुरिसारसहितहोयनिःसारनाहीहोयवहुरिजामैंनिर्णयगूढहोय॥ ८

अर्थगंभीरहोय॥वहुरिजाकूअर्थजामैंनिर्दोषहोयवहुरिहेतुसहितहोयवहुरिसत्यार्थहोयऐसाहोसूत्र
हैसोइसप्रकरणकेसर्वसूत्रनिकाऐसास्वरूपजाननां॥ छ॥ इहांप्रमाणकूंहीहेतुकह्यासोअसिद्धनाही
हैजातैंसर्वहीप्रमाणकास्वरूपकहनेंवालेनिकैप्रमाणसामान्यविषैविप्रतिपत्तिकाअभावहैप्रमाणसा
मान्यप्रसिद्धहैजोऐसैंनाहीमानियेतोअपनांइष्टतत्त्वकूंसाधनांपरकाइष्टतत्त्वकूंदूषणदेनांनहोयप्र
माणविनांकाहैतैंसाधैकाहैतैंदूषै॥ छ॥ इहांतर्ककेंजोधर्मीहीकूंहेतुकह्यंप्रतिज्ञार्थकदेशभयासोअसि
द्धनामाहेत्वाभासभया॥ताकासमाधान॥जोऐसैंनाहीप्रमाणकाविशेषकूंधर्मीकरिअरुप्रमाण॥
सामान्यकूंहेतुकहेतिनिकैदोषनाहीआवैहै॥इसहीवचनतैंयाहेतुकूंअपक्षधर्मकहैसोभीनाहीहै
जातैंसामान्यहैसोसमस्तविशेषनिमैंव्यापकहोयहैसोपक्षकाधर्महीहै॥वहुरिहेतुकैपक्षकाधर्म
पणांकाबलकरिसाध्यप्रतिगमकपणांनाहीहैसाध्यविनांनहोनांइसबलतैंहीसाध्यप्रतिगमकप
णांहै॥सोयहुसाध्यान्यथानुपपत्तिकहियेसोइहांप्रमाणनामाहेतुकैस्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकज्ञानना
मासाध्यतैंनियमकरियाहैसोविपक्षजोसंशयादिकतिनिविषैयहसाध्यान्यथानुपपत्तिनाहीहैसोही
बाधकप्रमाणहैताकेबलतैंनिश्चयस्वरूपहै॥इसहीकथनतैंइसहेतुकैविरुद्धपणांवहुरिअनैकांतिक
पणांभीनिराकरणभयाऐसाजाननांजातैंविरुद्धहेतुकैअरव्यभिचारीहेतुकैअविनाभावकानियमकानि

श्वपसोईहैलक्षणजाकाऐसीव्याप्तिकाअयोगहैयातेप्रमाणत्वनामाहेतुतैंयथोक्तसाध्यकीसिद्धिहो
यहीहै॥ यहकेवलव्यतिरेकीहेतुहैतातैंसाध्यप्रतिगमकहीहै॥ जैसैंऐसेहेतुऔरभीकहैहै॥ जीवताश
रीरआत्मासहितहैजातैंप्राणादिसहितपणांहै॥ जोआत्मासहितनाहीहोयसोप्राणादिसहितनाही
होयश्वासोछ्वासादिक्रियाजामैंनाहीहोयजैसैंमृतकशरीरऐसैंप्राणादिमत्तपणांहेतुकेवलव्यतिरे
कीहैयाकाअन्वयव्याप्तिरूपदृष्टांतनाहीतातैंकेवलव्यतिरेकीकहियेतैसैंप्रमाणत्वनामाहेतुभीकेव
लव्यतिरेकीजाननांयाकाभीअन्वयव्याप्तिरूपदृष्टांतनाहीहै॥छ॥ इहांपहलैंकह्याथाजोप्रमाणसं
शयादिरहितवस्तुकूंजानैंहैसोसंशयादिककास्वरूपनकह्यासोऐसैंहैजोदोयपक्षसैंज्ञानसमा
नहोयनिश्चयनहोयताकेजैसैंस्थाणुथाताविषैअंधकारादिकेनिमित्ततैंसंशयउपज्याजोयहस्था।
णुहैकिपुरुषहैऐसैंदोऊपक्षमैंनिश्चयनभयाजोकहाहैसोतौसंशयहै॥ बहुरिदोऊपक्षमैंएककाअ
न्यथाकानिश्चयहोनांसोविपर्ययहैजैसैंस्थाणुथाताविषैऐसानिश्चयभयाजोयहपुरुषहीहै॥ ऐ
साविपर्ययहै॥ बहुरिअनध्यवसायजामैंचलतैंतृणादिकास्पर्शभयातहांऐसाज्ञानजोकछुहैऐसैं
जामैंसंशयभीनाहीअन्यथानिश्चयभीनाहीयथार्थनिश्चयभीनाहीसोअनध्यवसायहै॥ बहुरिअव्या
प्तअतिव्याप्तअसंभवितीनलक्षणाभासकहेतिनिकास्वरूपऐसाजोलक्ष्यकाएकदेशवर्तिकूंस्थापि॥ ९

८

ताकालक्षणकरियेसोजोलक्षणलक्ष्यकेसर्वविशेषभेदनिमैंनव्यापैकोईमैंहोयकोईविशेषमैंनहो
यसोलक्षणअव्याप्तस्वरूपहै॥ बहुरिजोलक्षणलक्ष्यस्थाप्यातामैंभीहोयअरजोलक्ष्यनाहीतामैंभीहो
यसोअतिव्याप्तहै॥ बहुरिजोलक्ष्यस्थाप्यातामैंनाहीसंभवैसोअसंभवीहै॥ सोइहांप्रमाणतौलक्ष्य
हैअरस्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकज्ञानलक्षणहै॥ सोज्ञानऐसाकहनेमैंतौसम्यक्ज्ञानकेपांचभेदहैं
तेपरोक्षप्रत्यक्षप्रमाणकेभेदहैंतिनिमैंसर्वमैंपाइएहैतातैंअव्याप्तलक्षणनाही॥ बहुरिव्यवसा।
यात्मकविशेषणतैंसंशयादिकअप्रमाणज्ञानहैंतिनिमैंव्यवसायकहियेयथार्थनिश्चयस्वरू
पपणांनाहीतातैंतिनिमैंव्यापैनाहीतातैंअतिव्याप्तनाही॥ बहुरिस्वविशेषणतैंअसंभवदोषभीनाही
हैजोआपकूंनजानैंसोपरकूंभीनजानैऐसाअसंभवदोषयामैंनाहीऐसैंत्रिदोषरहितलक्षणज्ञा।
ननांजोलक्ष्यअप्रसिद्धहोयताकाप्रसिद्धविरुद्धहोयसोलक्षणहोयहै॥छ॥ आगैंअबअपनांकह्या।
जोप्रमाणकालक्षणताकाज्ञानऐसाविशेषणकीयाताकूंसमर्थनरूपदृढकरतेसंतेआचार्यसू
त्रकहेहैं॥छ॥ हिताहितप्राप्तिपरिहारसमर्थंहिप्रमाणंततोज्ञानमेवतत्॥२॥ याकाअर्थहितकहियेजा
तैंहितकीप्राप्तिअहितकापरिहारविषैसमर्थप्रमाणहैतातैंऐसाज्ञानहीहै॥ अज्ञानरूपसन्निकर्षादि
कविषैयहसामर्थ्यनाही॥छ॥ तहांहिततौसुखहैजातैंसर्वप्राणीसुखहैजातैंसर्वप्राणीसुखहीकूं

याहैहैं। बहुरिसुखकाकारणहैसोभीहितहीहै। बहुरिअहितदुःखहैंसर्वप्राणीदुःखकूंदूरिकीयाचा
हैहैं। बहुरिदुःखकाकारणहैसोभीअहितहीहै। इहांदोऊनिकाद्वंद्वसमासहै। बहुरिप्राप्तिअरुपरिहा
रकाद्वंद्वसमासकरणांतादूंयथासंख्यलगावनांतवहितकीप्राप्तिअहितकापरिहारऐसाभया। इ
निदोऊविषैसमर्थकहियेकरनेंकीशक्तियुक्तऐसा। बहुरिहिशब्दहेतुअर्थमेंहैतातैंऐसाअर्थभया
जोहिताहितकीप्राप्तिपरिहारविषैसमर्थहैसोहीप्रमाणहै। तातैंप्रमाणपणांकरिमान्यांजोवस्तुसो
ज्ञानहीहोनेंयोग्यहै। अज्ञानरूपजेअन्यमतीनिरिमानेंसंनिकर्षआदिप्रमाणतेहितकीप्राप्तिअ
हितकापरिहारविषैसमर्थनाहीतातैंतेप्रमाणनाही। यासूत्रकाअनुमानप्रयोगऐसेंकरनां। प्र
माणज्ञानहीहैयहतौधर्मीअरसाध्यकेवचनरूपप्रतिज्ञाभई। बहुरिहिताहितप्राप्तिपरिहारस
मर्थपणांतैंयहसाधनकावचनरूपहेतुभया। बहुरिजोज्ञानहैसोहीऐसाहैअन्यऐसानाहीजै
सैंघटआदिजडपदार्थ। यहव्यतिरेकव्याप्तिरूपदृष्टांतकावचनसोउदाहरणभया। बहुरिऐसायह
प्रमाणहैयहउपनयभया। बहुरितातैंहिताहितप्राप्तिपरिहारविषैसमर्थजोप्रमाणसोज्ञानहीहै। य
हुनिगमनभयाऐसैंपांचअवयवरूपअनुमानकाप्रयोगयासूत्रकाहोयहैइहांहेतुअसिद्धनाहीहैजा
तैंपरीक्षावानपुरुषहैंतेहितकीप्राप्तिअहितकापरिहारकेअर्थिहीप्रमाणकूंविचारैहैं। निःप्रयोजनव्य

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊ दाजी स्मारक

सनमात्रहीप्रमाणकीकथनीनाहीकरैहैऐसैंसर्वहीप्रमाणकेकहनेंवालेमानेंहैं। छ। आगैंवौद्धम
तीकहैहैजोसंनिकर्षादिकअज्ञानरूपहीप्रमाणकूंमानैहैंतिनिकेनिराकरणकेअर्थिज्ञानहीकेप्र
माणपणांकह्यासोतौहोऊयाकूंहमनाहीनिषेधैहैं। बहुरितुमव्यवसायात्मकज्ञानकाविशेषण।
कीयासोयाविषैहमयुक्तिनाहीदेखैहैंजोयहतुमकैसैंकहौहौहमारैतौअनुमानप्रमाणकैतौव्यवसा
यात्मकपणांकरिप्रमाणपणांकाअंगीकारहै। बहुरिप्रत्यक्षप्रमाणकैतौनिर्विकल्पपणांहोनेंहीस
त्यार्थपणातैंप्रमाणपणांवणौहै। ऐसैंवौद्धकहैताकेसमाधानकेअर्थिसूत्रकहैहैं। छ। तन्निश्चया
त्मकंसमारोपविरुद्धत्वादनुमानवत्॥४॥ याकाअर्थ। ततकहियेप्रमाणस्वरूपकह्याजोज्ञानसो
निश्चयात्मककहियेनिश्चयस्वरूपहै। काहेतैंजातैंसमारोपकहियेसंशयादिकतिनितैंविरुद्धहैयथा
र्थहैजैसैंअनुमानहैतैसैं। छ। इहांयाकाप्रयोगऐसैं। ततकहियेसोप्रमाणपणांकरिमान्यावस्तु
यहुतौधर्मीभया। बहुरियहुनिश्चयात्मककहियेव्यवसायस्वरूपहै। यहुसाध्यहैदोऊमिल्याहुवा
पक्षहैयाकावचनकूंप्रतिज्ञाकहिये। बहुरिसमारोपविरुद्धपणांतैंयहुहेतुहैइहांसमारोपनामसं।
शयादिककाहै। बहुरिअनुमानवत्यहुदृष्टांतकावचनसोउदाहरणहै। इहांयहुअभिप्रायहैजोसंशय
विपर्ययअनध्यवसायस्वभावजोसमारोपतिसकाविरोधीजोवस्तुकाग्रहणकहियेजाननांसोहैलक्षण

जाका ऐसा व्यवसायस्वरूपपणां कूं होतैं ही अविसंवादीपणां कहिये बाधारहित सत्यार्थपणां सो व
१२ र्तौ है॥ बहुरि जो अविसंवादीपणां है सो ही प्रमाणपणां है॥ ऐसैं बौद्धमती नैं मान्यां जो च्यारि प्रकार का प्र
त्यक्षप्रमाण ताकै प्रमाणपणां कूं अंगीकार करनैं का इच्छक कहै है तौ समारोप का विरोधी जो ग्रहण ज्ञान ताका स्व
है लक्षण जाका ऐसा निश्चयात्मक ज्ञान कूं ही प्रमाण मानना योग्य है इहां बौद्धमती कहै है जो समारोप।
का विरोधी अर व्यवसायात्मकपणा दोउ रूप तौ एक ज्ञान ही कै भये तहां साध्यसाधनभाव एक ज्ञान ही।
कै कैसैं बणैं॥ ताकूं आचार्य कहै है ऐसैं न मानना जातैं इनि दोऊनि कै ज्ञानस्वभाव करि अभेद होतैं भी
व्यापक जो धर्म तिनि का आधारपणां करि भेद भी बणै है॥ जैसैं शीसं नामा वृक्ष है ताकै शीसंपणां कै वृ
क्षपणांतैं अभेद होतैं भी व्याप्यव्यापक धर्म कै आधारपणां करि भेद बणैं है॥ भावार्थ॥ व्यापक कै।
तौ व्याप्य बहुत हैं॥ बहुरि व्याप्य कै सो व्यापक एक ही है तहां व्यापक कूं तौ गम्य संज्ञा कही है अर व्या
प्य कूं गमक संज्ञा कही है॥ सो इहां व्यवसायस्वरूप ज्ञान तौ व्यापक है जातैं यथार्थ निश्चयात्मक जो प्र
माणज्ञान ता विषै भी वर्तै है॥ अर अन्यथा निश्चयात्मक जो विपर्ययज्ञान ता मैं भी वर्तै है॥ बहुरि समारो
प का विरोधीपणां है सो यथार्थ निश्चयात्मक ज्ञान विषै ही प्रवर्तै है विपर्यय विषै नाहीं है तातैं भेद है॥ जै
सैं वृक्षपणां तौ सर्ववृक्षनि मैं वर्तै है सो व्यापक है बहुरि शीसंपणां शीसंवृक्ष विषै ही वर्तै है तातैं व्याप्य १२

है तातैं सी सूंपणां [illegible] विषै गमक भया अर वृक्षपणां शीसं कै गम्य भया ऐसा जानना॥ तातैं साध्यसाधन
भाव बणैं है॥ बौद्धमती प्रत्यक्षप्रमाण का लक्षण कल्पनारहित अभ्रांत ऐसा कहै है ताकूं अविसंवादस्व
रूप कहै हैं अर्थक्रियाप्रापितिक कहै है वस्तु का प्राप्त करनैं वाला कहै हैं याही कूं वस्तु का प्रवर्तक कहै हैं अ
पनैं विषय का दिखावनैं वाला कहै हैं वस्तु विषै निश्चय नाहीं उपजावै नाहीं ऐसा कहै है सो ऐसा तौ व्यवसायात्म
क विशेषण कीयें ही बणैंगा॥ बहुरि अनुमान कूं बौद्धमती सविकल्प सामान्यमात्र विषयस्वरूप कहै
है ताकूं इहां दृष्टांत कीया है तौ जैसैं अनुमान कूं निश्चयस्वरूप सविकल्प मानै है तैसैं प्रत्यक्ष कूं भी मानूं सर्व
नूं सर्वथा निर्विकल्प कै प्रमाणपणां बणैं नाहीं॥ बहुरि इहां समारोप का विरोधी कह्या सो विरोध तीन।
प्रकार हो है॥ तहां एक तौ सहानवस्थानलक्षण जहां दोऊ विरोधी एकठे रहैं नाहीं जैसैं प्रकाश अर अं
धकार॥ बहुरि दूजा परस्परपरिहारलक्षण जैसैं एकठे तौ रहैं परंतु स्वरूप मिलै नाहीं जैसैं रूपगुण अर
रसगुण एक वस्तु मैं रहैं स्वरूप जुदा जुदा है ही॥ तीसरा वध्यघातकलक्षण परस्पर घात करै जैसैं सर्प
कै अर न्योल कै वैर होय॥ सो इहां समारोप कै अर यथार्थ निश्चयात्मक कै सहानवस्थानलक्षण विरो।
ध है यथार्थ निश्चय होय तहां समारोप संशय विपर्यय अनध्यवसाय रहै नाहीं॥ छ॥ आगैं अब प्रमाण का
लक्षण मैं अपूर्व विशेषण सहित अर्थ का ग्रहण है ताकूं समर्थन करि दृढ करता संता तिस कूं स्पष्ट करता

संतासूत्र कहै है ॥ अनिश्चितोऽपूर्वार्थः ॥४॥ याका अर्थ ॥ जाका पूर्वै निश्चय न भया होय ऐसा वस्तु
अपूर्वार्थ है ॥ तहां जो अन्य प्रमाण करि संशयादिक का व्यवछेद करि निश्चय न कीया ऐसा जो अर्थ कहिये
वस्तु सो अपूर्वार्थ है ॥ ऐसा कहनैं करि ईहा ज्ञान का विषय वस्तु कूं पहलैं अवग्रहादि करि ग्रहण कीया
ताकै ग्रहीतग्राहीपणां होतैं भी पूर्वार्थपणां नाहीं है जातैं ईहादि ज्ञान का विषयभूत वस्तु अवग्रह के ग्रहैं।
पीछैं जो अवांतर विशेष कहिये अन्य विशेष सो अवग्रहादि करि निश्चय नाहीं होहै तातैं पूर्वार्थ नाहीं है
अपूर्वार्थ ही है ॥ आगैं कहै है जो अपूर्वार्थ कह्या सो याही प्रकार है कि कोई अन्य भी प्रकार है ऐसैं पू
छैं सूत्र कहै है ॥ दृष्टोऽपि समारोपात्तादृक् ॥५॥ याका अर्थ ॥ जो वस्तु पूर्वै देख्या होय प्रमाणतैं निश्चय
कीया होय पीछैं ता विषै संशयादिक जो समारोप सो होय जाय तौ सो वस्तु तादृक् कहिये विनां निश्चय की
या समान है अपूर्वार्थ है ॥ तहां दृष्टोपि कहिये अन्य प्रमाण करि ग्रह्या होय तौ भी तादृक् कहिये अपूर्वार्थ
ही है ॥ इहां ऐसा अर्थ भया जो अनिश्चित ऐसैं पूर्वै कह्या सो ही केवल अपूर्वार्थ नाहीं है देखे विषै भी संशया।
दिक होय जाय तौ सो भी अपूर्वार्थ है ॥ इहां ऐसा अर्थ है जो अन्य प्रमाण करि पहली ग्रह्या था सो धूं।
धला आकारपणां करि निर्लेपन होय सो भी वस्तु अपूर्व है जातैं तिस विषै प्रवर्त्या जो समारोप कहिये संश
यादिक तिनिका व्यवछेद नाहीं है ॥ आगे जे ज्ञान कूं स्वप्रकाशक नाहीं मानै हैं ते कहै हैं जो विज्ञान कै अपूर्वा १२

र्थ व्यवसायात्मकपणां तौ होउ परंतु स्वव्यवसायपणां हम नाहीं जानैं हैं ऐसैं कहै ता कूं उत्तर का सूत्र क
है है ॥ स्वोन्मुखतया प्रतिभासनं स्वस्य व्यवसायः ॥६॥ याका अर्थ ॥ अपनैं सन्मुखपणां करि ॥
अपनां प्रतिभासनां सो अपनां व्यवसाय है ॥ अपनैं सनमुखपणां सो तौ स्वोन्मुखता कहिये ॥ ऐसे
अपनां अनुभवता करि प्रतिभासनां प्रतीति होनां सो स्वस्य व्यवसाय कहिये ॥ तहां मैं मेरे तांई जा॥
नूं ऐसी प्रतीति जाननी ॥ इहां दृष्टांत का सूत्र कहै है ॥ अर्थस्येव तदुन्मुखतया ॥७॥ याका अ
र्थ ॥ जैसैं अर्थ कहिये अन्य पदार्थ ता कै सन्मुख होय ता कूं जानै है तैसैं ही आप कै सन्मुख होय अप।
नी तरफ देषै तब आप कूं जानैं ॥ इहां तत् शब्द करि तौ अर्थ का ग्रहण करनां जैसैं अर्थ के सन्मुख
पणां करि प्रतिभासनां होय तब तब अर्थ का निश्चय होहै तैसैं अपनैं सन्मुखपणां करि अपनां प्रति
भासनां होय तब अपनां निश्चय होहै ॥ आगै इहां उल्लेख कहै हैं दृष्टांत दार्ष्टांतिक का उदाहरण कूं
उल्लेख कहिये ॥ घटमहमात्मना वेद्मि ॥८॥ याका अर्थ ॥ मैं आप ही करि घट है ता हि जानूं हूं ॥ इहां
अहं ऐसा तौ कर्ता घट कर्म है आत्मना ऐसा करण है वेद्मि ऐसी क्रिया है सो जैसैं आप आप करि
पर वस्तु कूं जानै है तैसैं आप आप करि आप कूं भी जानै है ऐसा जाननां ॥ आगैं इहां नैयायिक नै
कहै है ज्ञान है सो अन्य पदार्थ कू ही निश्चय करै है कर्म ही कूं जानै है आप कू नाहीं जानै है आप कर

णहै। तथाआत्माजोकर्त्ताहैताकूंभीनाहीजानैंहै। तथाफलरूपक्रियाहैताकूंभीनाहीजानैहैइहांजै
नमतअपेक्षाअज्ञानकानाशहैनांहैयोपादेयकाजाननांतथावीतरागतारूपाहैनांऐसाप्रमा
णकाफलजाननांवहुरिमीमांसकनिमैंभट्टमतवालेकहैहैजोकर्त्ताअरुकर्मकूंज्ञानजानैहैआ
पकरणहैसोआपकूंआपनाहीजानैहैअरक्रियारूपफलकूंभीनाहीजानैंहै। वहुरिमीमांसकम
तमैंहीजैमिनीयमतहैतेकहैहै। कर्त्ताकर्मक्रियाकूंज्ञानजानैहैअरुआपकरणहैसोआपकूंआ
पनाहीजानैंहैवहुरिमीमांसकमतमेंहीप्रभाकरकामतहैसोकहैहैकर्मक्रियाहीकूंज्ञानजानैहैआ
त्माकर्त्ताकूंअरआपकरणकूंनाहीजानैंहै। सोयेसर्वहीमतप्रतीतिवाधितहैंऐसैंदिखावतासंता
सूत्रकहैहै॥ छ॥ कर्मवत्कर्तृकरणक्रियाप्रतीतेः॥ १०॥ याकाअर्थ॥ ज्ञानविषैजैसैंकर्मकीप्रतीतिहै
तैसैंहीकर्त्ताकरणक्रियाकीप्रतीतिहै। ऐसैंपूर्वसूत्रकाहेतुरूपयहुसूत्रहैतातैंपंचमीविभक्तिअंतमें
है॥ छ॥ तहांज्ञानकाविषयभूतवस्तुहैसोतौकर्मकहियेहै। जातैंकर्मकास्वरूपऐसाहैजोक्रियाकेव्या
प्यहोयव्याप्तहोनैंयोग्यहोयतथारचनैंयोग्यहोयतथाविकारकरनैंयोग्यहोयसोइहांज्ञप्तिक्रिया
केव्याप्यज्ञानकाविषयवस्तुहीहै। वहुरिकर्मवत्कह्यासोयहउपमाअलंकाररूपदृष्टांतकावचनभ
या। वहुरिकर्त्ताआत्माहैवहुरिकरणप्रमाणरूपज्ञानहै। वहुरिक्रियाप्रमितिहै। तिनिकाद्वंद्वसमासक २३

रिप्रतीतिशब्दतैंषष्ठीतत्पुरुषसमासकरणांताकेअंतविषेहेतुअर्थमैंपंचमीविभक्तिकरनी। इहांइति
मैंकाऐसीपंचमीकीसंज्ञाहैसोजैनेंद्रव्याकरणअपेक्षाहै। ऐसैंपहलैंसूत्रकह्यातामैंअनुभवका
उल्लेखहैताविषैयथाअनुक्रमसंबंधकरणांतकऐसाअर्थहोयहैजोज्ञानजैसैंअपनांविषयभूतव
स्तुजोकर्मताकीप्रतीतिकरैहै। तैसैंहीकर्त्ताआत्माकीतथाकरणरूपआपकीतथक्रियाकीप्रतीति
करैहैयातैंजैसैंघटकूंमैंआपकरिजानूंहूंऐसीप्रतीतिकरैहैतैसैंहीकर्त्ताकरणक्रियाविषैभीमैंइ
निकूंजानूंहूंऐसीप्रतीतिकरैहैयामैंवाधानाहीहैअनुभवसिद्धहैइहांऐसाजाननांजोएकहीज्ञानमैं
कर्त्ताआदिअनेककारकअवस्थाभेदविवक्षाकरिसंभवैहैतातैजैनमतस्याद्वादहैतामैंअपेक्षातैंविरो
धनाहीहैसर्वथाएकांतीनिकेविरोधआवैहै॥ छ॥ आगैंकोईकहैजोयहकर्त्ताआदिकीप्रतीतिकहीसो
तौशब्दकाउच्चारमात्रहीहैवस्तुकारस्वरूपकावलतैंतौनाहीउपजीकहनेंमात्रहैवस्तुस्वरूपऐसैंना
ही। ऐसाप्रश्नहोतैंसूत्रकहैहै॥ छ॥ शब्दानुच्चारणेपिस्वस्यानुभवनमर्थवत्॥ ११॥ याकाअर्थ॥॥
यहकर्त्ताआदिकीप्रतीतिज्ञानकैहोहैसोशब्दकाउच्चारविनाभीहोहैऐसैंआपकाअनुभवआपकैहै
जैसैंअन्यअर्थकाअनुभवनहैतैसैंहीआपकाहै॥ छ॥ तहांजैसैंघटआदिकजेशब्दहैंतिकाउच्चारकीया
विनाभीघटआदिवस्तुकाज्ञानविषैतदाकारअनुभवहोयहैतैसैहीमैंहौंऐसाजोअंतरंगकेविषैसन्मु॥

परी॰मु॰ १५

खहै तैं आपका तदाकारपणां करि प्रतिभासद्दोयहै शब्दके उच्चार कीयें विषें विनाही आपकरि अ
अनुभवकी जियेहै ॥ आगैं इसही अर्थ कूं युक्तिपूर्वक अन्यवादी का उपहाससहित वचन जैसें हो
यतैसूत्र कहै है ॥ को वा तत्प्रतिभासिनमर्थमध्यक्षमिच्छंस्तदेव तथा नेच्छेत् ॥ १२ ॥ याका अर्थ ॥
तिस ज्ञानकरि प्रतिभास्या जो अर्थ कहिये वस्तु ताकूं प्रत्यक्ष इष्ट करता संता पुरुष ऐसा कौन है जो ॥
तिस ज्ञानही कूं प्रत्यक्ष इष्ट न करै इष्ट करैही करै ॥ इहां को वा ऐसा कहने तैं तौ लौकिक जन तथा परी
क्षक जन सर्व ही लेरों ॥ बहुरि तत्प्रतिभासिनं कहिये तिस ज्ञानकरि प्रतिभासनेंका जाका स्वभाव हो
य सो लीजिये ॥ ऐसा जो प्रत्यक्ष विषयरूप वस्तु ताकूं प्रत्यक्ष इष्ट करता पुरुष सो ऐसा कौन है जो त
देव कहिये सोही ज्ञानता हि तथा काहिये प्रत्यक्षपणां करि नाही इष्ट करै अपितु कहिये निश्चय तें इष्ट
करैही करै ॥ जातैं विषयी जो ज्ञान ताका प्रत्यक्षपणां धर्म है सो उपचार करि ताके विषयभूत पदार्थ
कूं भी प्रत्यक्ष कहिये है मुख्य तौ प्रत्यक्षपणां ज्ञानका धर्म है इहां ऐसा जाननां जो मुख्य का अभाव है तैं
बहुरि प्रयोजन अरु निमित्त होतें उपचार प्रवर्ते है सो इहां अर्थके तौ प्रत्यक्षपणां मुख्य नाही है अरु
प्रत्यक्षपणां मुख्य धर्म ज्ञानका है सो ताके विषयभूत अर्थ विषै प्रत्यक्षपणां का उपचार है सो प्रयो
जन तौ इहां व्यवहारका प्रवहार का प्रवर्तनां है अरु निमित्त इहां ज्ञानकै अरु वस्तुकै विषय विषयी भा १४

व संबंध है सो है ऐसा जाननां जो ऐसैं न मानिये तौ अप्रामाणिकपणां कहिये अपरीक्षकपणां का प्रसं
ग आवै है ॥ आगैं इहां इसका उदाहरण कहै है ॥ प्रदीपवत् ॥ १३ ॥ याका अर्थ ॥ जैसैं दीपककै प्र
त्यक्षता अर प्रकाशता विना तिसकरि भासे जे घटादिक पदार्थ तिनिकै प्रकाशता प्रत्यक्षता न बणैं तैसें
प्रमाणस्वरूप ज्ञानकै भी जो प्रत्यक्षता न होय तौ तिसकरि प्रतिभास्या अर्थकै भी प्रत्यक्षता न बणें ॥ इहां
नाम्यपक्कहै है ताका प्रयोग ज्ञान है सो अपनें प्रतिभास करनें विषै आपनें अन्य जो समानजाती पदार्थ अ
र्थ तिसकी अपेक्षा न वांछै है ॥ यह तौ धर्मि साध्यका समुदायरूप पक्षका वचन सो प्रतिज्ञा है प्रत्यक्ष पदा
र्थका गुण होतें अर इष्ट जो शक्ति ताकी व्यक्तिरूप अनुपाधिकरणपणांतैं ॥ यह हेतु है ॥ बहुरि प्रदीप भा
सुराकारवत् ॥ यह उदाहरण है ॥ इहां भावार्थ ऐसा जो ज्ञान अपनें जाननें विषै अन्य ज्ञानकी अपेक्षा
न करै है आपही आपकूं जानै है जातैं ज्ञान आत्मा ही का गुण है सो जाननेंकी शक्तिकी व्यक्तिरूप करण
अवस्थाकूं प्राप्त होय है आपकी प्रमिति प्रति आपही करण है जैसें दीपककी प्रकासरूप लोय है सो
आपके प्रकाशनें मैं अन्य लोयकी अपेक्षा नाही करै है आपही आपकूं प्रकट होय है ऐसैं जाननां ॥
आगैं ॥ कोई आशंका करै है जो प्रमाणका लक्षण कह्या सो ऐसा तौ होउ तथापि इस प्रमाणकी प्रमाणता
स्वतः कहिये आपही तैं होय है कि परतः कहिये अन्यतैं होय है जो स्वतैं ही कहोगे तौ अविप्रतिपत्ति होयगी ॥

खहीतैं आपका तदाकारपणां करि प्रतिभासहोयहै शब्दके उच्चारकी पेंविषैं विनाही आपकरि अ
अनुभवकीजियेहै ॥ छ ॥ आगैं इसही अर्थकूं युक्तिपूर्वक अन्यवादीका उपहाससहित वचन जैसैं हो
यतैसैं सूत्र कहै है ॥ छ ॥ को वा तत्प्रतिभासिनमर्थमध्यक्षमिच्छंस्तदेव तथा नेच्छेत् ॥ १२ ॥ पाका अर्थ ॥
तिस ज्ञानकरि प्रतिभास्या जो अर्थ कहिये वस्तु ताकूं प्रत्यक्ष इष्ट करता संता पुरुष ऐसा कौन है जो ॥
तिस ज्ञानहीकूं प्रत्यक्ष इष्ट न करै इष्ट करैही करै ॥ छ ॥ इहां कोवा ऐसा कहनेतैं तौ लौकिक जन तथा परी
क्षक जन सर्वही लेरोां ॥ बहुरि तत्प्रतिभासिनं कहिये तिस ज्ञानकरि प्रतिभासनेंका जाका स्वभाव हो
यसो लीजिये ॥ ऐसा जो प्रत्यक्ष विषयरूप वस्तु ताकूं प्रत्यक्ष इष्ट करता पुरुष सो ऐसा कौन है जो त
देव कहिये सोही ज्ञान ताहि तथा कहिये प्रत्यक्षपणां करि नाही इष्ट करै अपितु कहिये निश्चयतैं इष्ट
करैही करै ॥ जातैं विषयी जो ज्ञान ताका प्रत्यक्षपणां धर्म है सो उपचार करि ताके विषयभूत पदार्थ
कूंभी प्रत्यक्ष कहिये है मुख्य तौ प्रत्यक्षपणां ज्ञानका धर्म है इहां ऐसा ज्ञाननां जो मुख्यका अभाव है तैं
बहुरि प्रयोजन अरु निमित्त होतैं उपचार प्रवर्त्ते है सो इहां अर्थके तौ प्रत्यक्षपणां मुख्य नाही है अरु
प्रत्यक्षपणां मुख्य धर्म ज्ञानका है सो ताके विषयभूत अर्थ विषै प्रत्यक्षपणां का उपचार है सो प्रयो
जन तौ इहां व्यवहारका प्रवर्तनां है अरु निमित्त इहां ज्ञानकै अरु वस्तुकै विषयविषयीभा १४

वसंबंध है सो है ॥ ऐसा ज्ञाननां जो ऐसैं न मानिये तौ अप्रामाणिकपणां कहिये अपरीक्षकपणां का प्रसं
ग आवै है ॥ छ ॥ आगैं इहां इसका उदाहरण कहै है ॥ छ ॥ प्रदीपवत् ॥ १३ ॥ पाका अर्थ ॥ जैसैं दीपक कै प्र
त्यक्षता अर प्रकाशता विना तिस करि भासे जे घटादिक पदार्थ तिनिके प्रकाशता प्रत्यक्षता न वणैं तैसें
प्रमाण स्वरूप ज्ञानकैभी जो प्रत्यक्षज्ञान होय तौ तिसकरि प्रतिभास्या अर्थकैभी प्रत्यक्षता न वणैं ॥ छ ॥ इहां
तात्पर्य कहै है ताका प्रयोग ज्ञान है सो अपनें प्रतिभासकरनें विषै आपनैं अन्य जो समानजातीय अन्य अ
र्थ तिसकी अपेक्षा न करै है ॥ यह तौ धर्मि साध्यका समुदायरूप पक्षका वचन सो प्रतिज्ञा है प्रत्यक्ष पदा
र्थका गुण होतें अर हूए जो शक्तिनाकी व्यक्तिरूप अनुपायिकरण पणांतैं ॥ यह हेतु है ॥ बहुरि प्रदीपभा
सुराकारवत् ॥ यह उदाहरण है ॥ छ ॥ इहां भावार्थ ऐसा जो ज्ञान अपनें जाननें विषै अन्यज्ञानकी अपेक्षा
न करै है आपही आपकूं जानै है जातैं ज्ञान आत्माही का गुण है सो जाननेंकी शक्तिकी व्यक्तिरूप करण
अवस्थाकूं प्राप्त होय है आपकी प्रमिति प्रति आपही करण है जैसैं दीपककी प्रकाशरूप लोय है सो
आपके प्रकाशनेंमैं अन्य लोपकी अपेक्षा नाही करै है आपही आपकूं प्रकाशै है ऐसैं ज्ञाननां ॥ छ ॥
आगैं। कोई आशंका करै है जो प्रमाणका लक्षण कह्या सो ऐसा तौ होउ तथापि इस प्रमाणकी प्रमाणता
स्वतः कहिये आपहीतें होय है कि परतः कहिये अन्यतैं होय है जो स्वतैं ही कहोगे तौ अविप्रतिपत्ति होयगी ॥

अापकै अन्यथाभी ग्रहण करै तौ ताका निषेधका हेतैं होय परंतु। बहुरि परतैं ही कहोगे तो अनवस्था नाम दू
षण आवैगा जातैं प्रमाण की प्रमाणता अन्यतैं होय तब तिस अन्य की प्रमाणता काहेतैं होय बहुरि ति
सकी भी अन्यतैं कहियो तो कहूं ठहरना नाही तब अनवस्था भई। ऐसैं दोऊ आशंका का निराकरण
करि अपना मत स्थापते संते सूत्र कहै है। इहां ऐसा भावार्थ जो मीमांसक मती तो प्रमाण का प्रमाणपणां
स्वतः कहै है अप्रमाणपणां परतः कहै है। बहुरि सांख्यमती प्रमाणपणां तो परतः अप्रमाणप
णां स्वतः कहै है। बहुरि बौद्धमती प्रमाणपणां अप्रमाणपणां दोऊ ही स्वतः कहै है। बहुरि नैयायि
कमती दोऊ ही परतः होय है ऐसैं कहै है ऐसैं बहुत वादीनि करि अन्य अन्य प्रकार कहनेंतें संशय
उपजै है ताते कथंचित् स्वतः कथंचित् परतः ऐसें स्याद्वादतैं यथार्थ सिद्धि होय है ऐसैं सूत्र कहै है
॥ तत्प्रामाण्यं स्वतः परतश्च ॥ १४ ॥ याका अर्थ। तिस प्रमाण का प्रामाण्य कहिये प्रमाणपणां
कथंचित् आपही तैं होय है कथंचित् परतैं होय है। तहां सूत्रनिके संप्रदायमैं ऐसी परिभाषा है जो
वाक्य कहिये सूत्र है ते सोपस्कार कहिये अन्य पदनिका अध्याहार मेलना सहित होय हैं सो इहां ऐसी
प्रक्रिया करणी। जो अभ्यास दशा विषै तो प्रमाण का प्रमाणपणां आपही तैं होय है। बहुरि अनभ्यासद
शा विषै परतैं होय है। ऐसैं कहनेंतैं दोऊ एकांतनका निराकरण भया इहां कथंचित् अनभ्यासदशा विषै

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजीइत्यस्य स्मारकम्

परतैं प्रमाणपणां कहनें मैं अनवस्था जैसैं एकांत कहनेमैं आवै है तैसें समान ना ही आवै है जातैं अभ्य
स्त विषयस्वरूप जो अन्य ज्ञान ताकरि आपही तैं प्रमाणपणां होय है ताकरि अनवस्था का परिहा
र होय है ऐसा अंगीकार हमनैं कीया है। अथवा प्रमाण का प्रमाणपणां उत्पत्ति विषै तो परतैं ही
होय है। जातैं विशिष्ट नवीन कार्य कारण तौ विशिष्ट नवीन कारणतैं ही होय है। बहुरि विषय का ज्ञाननें
रूप तथा विषय विषै प्रवर्त्तनें रूप जो प्रमाण का कार्य ता विषै अभ्यासदशा मैं तो आपही तैं प्रमा
णता है। बहुरि अनभ्यासदशा विषै परतैं प्रमाणता होय है। ऐसा निश्चय है इहां अभ्यासदशा तो
सो कहिये जहां वारवार ग्रहण होय। अर अनभ्यास जो प्रथम ही ग्रहण होय सो कहिये जैसैं जा गांव
मैं आप वसै ताका सरोवर का जल लै आपकै अभ्यासमैं आय रह्या होय तहां तिसका जल का प्रमा
णपणां तथा जलज्ञान का प्रमाणपणां आपकै आपही तैं होय है ताकी प्रमाणता करणें मैं अन्य प्र
माणादिक का सहाय चाहै नाही तिस सरोवर के समीप जातैं ही स्नान करनां जल भरनां जल भरनां
पीवनां आदि कार्य निःशंक पणैं करै है। सो इहां तो अभ्यासदशा विषै स्वतः प्रामाण्य भया बहुरि सो
ही पुरुष अन्य ग्रामादिक जाय तहां मार्ग मैं दूरितैं जल का निवास देखै तहां अपनें ज्ञानकी तथा तिस
जलरूप विषय की प्रमाणता आई न ही विचारनैं लगा यह जल है कि भाडली है कि कांशपूलि रह्या

है किसी कूं अन्यथा दीषै है ऐसा संशय उपज्या तहां जे जलका प्रमाणता करनेके कारण पूर्वैं अ
भ्यासमैं थे जो जहां अन्य लोक जल भरि ल्यावते होय तथा जल भरते होय तथा घट आदि जलके
पात्र जहां दीषते होय तथा कमलनिकी सुगंध आवती होय मींडक बोलते होय इत्यादि कारणनि
तैं तिस जलका प्रमाणता आवै तहां अनभ्यास दशा विषै परतैं प्रमाणपणां कहिये॥ बहुरि अस्व
लितैंमें परहीतैं कह्या सो अंतरंग तौ ऐसा ही ज्ञानावरणका क्षयोपशम अर वाह्य पापकर्म आदि
दोषरहित अपनां ज्ञान होय बहुरि ज्ञानके कारण जे इंद्रियादिक ते निर्दोष निर्मलता आदि गुण
करि युक्त होय तब नवीन प्रमाणतारूप कार्य उपजै जातैं विशिष्ट कार्य होय जो विशिष्ट कारणतैं
ही होय॥ बहुरि विषयका ज्ञाननें रूप क्रिया है लक्षण जाका अर विषय विषै प्रवृत्ति होनां है लक्ष॥
ण जाका ऐसा जो प्रमाणका कार्य ता विषै अभ्यास दशा विषै तौ प्रमाणकी प्रमाणता आपहीतैं हो
य है अर अनभ्यास दशा विषै परतैं होय है ऐसा निश्चय कीजिये है॥ ८ ॥ इहां मीमांसक मती कहै है।
जो प्रमाणपणांकी उत्पत्ति विषै विज्ञानके कारण जे निर्दोष नेत्रादिक तिनितैं भिन्न अन्य कारण
की अपेक्षा प्रमाणपणां है सो असिद्ध है अन्य कारण नाहीं है तातैं प्रमाणका प्रमाणपणां तिस प्रमाणहीं
तैं हो है जातैं तिस प्रमाणतैं अन्य वस्तुका ही अभाव है अर जो कहोगे अन्य कारण नेत्रादिकके निर्मल १६

पणां आदि गुण है तैं है तौ यह कहनां वचनमात्र है वस्तुभूत नाहीं॥ जातैं विधिकी मुख्यता करि अथवा
कार्यकी मुख्यता करि गुणनिकी प्रतीति नाहीं है॥ प्रमाण सिवाय गुण न्यारे किछू भासते नाहीं प्रत्य
क्ष करि तौ किछु गुण प्रमाणतैं न्यारे दीषैं नाहीं॥ जातैं प्रत्यक्ष तौ इंद्रियनिकरि ज्ञाननां है सो इंद्रियनि
की प्रवृत्ति अतींद्रिय विषै होय नाहीं इंद्रियनितैं किछू न्यारे ही गुण दीषै नाहीं॥ बहुरि अनुमानकरि कि
छु गुणनिका लिंग दीषै नाहीं ताकरि अनुमान कीजिये इंद्रियनिकरि लिंग ग्रहण होय तब अनुमान
होय है॥ अर लिंगका भी लिंग अनुमानकरि ग्रहण करनां कहिये तौ अनवस्था आवै है तातैं प्रमाण
तैं न्यारे गुण प्रमाणसिद्ध नाहीं॥ बहुरि प्रमाणकी अप्रमाणता तौ आपहीतैं होय है अर प्रमाणता
परहीतैं होय ऐसा विपर्यय भी कह्या न जाय॥ जातैं पक्षधर्म सपक्षधर्म सपक्षे सत्व विपक्षाद्व्या
वृत्ति इनि तीन रूप सहित जो लिंग तिसहीतैं केवल अनुमान प्रमाणकै प्रमाणपणां उपजता दे
षिये है अन्वयव्यतिरेक करि ऐसें ही उत्पत्ति दीषै है॥ अन्य प्रकार तौ नाहीं॥ बहुरि ऐसें ही प्रत्यक्ष॥
विषै भी लगावणां जो निर्दोष नेत्रादिक करि ही प्रमाणपणां उपजै है अन्य प्रकार नाहीं तैसें ही आग
म विषै भी लगावणां जो आप्तका कह्यापणां आगममैं गुण है तैं आगमका प्रमाणपणां तिस।
गुणतैं नाहीं है तिस आगम विषै गुणनितैं दोषनिका अभाव है अर दोषनिके अभावतैं संशय विप

र्यपास्वरूपजोअप्रमाणपणांताकाअभावहोतैंस्वाभाविकप्रमाणपणांनिर्बाधआपहीतिष्टैहै। ता
तैंयहठहरीजोप्रमाणपणांउत्पत्तिविषेअन्यसामग्रीकीअपेक्षानाहीकरैहै। बहुरिविषयकाजाननें
कीक्रियारूपजोअपनांकार्यताविषेअपनेंजाननेंकीभअपेक्षानकरैहैजोप्रमाणआपआपकूंजा
नैंतबअन्यविषयकूंजाणेंऐसीअपेक्षानाहीचाहैहै। तातैंआपकाप्रमाणपणांजानैंविनाहीज्ञा
नकैविषयकेजाननेंकीक्रियारूपकार्यदेषियेहै। बहुरिकहोगेजोज्ञाननक्रियामात्रतौप्रमाणका
कार्यनाही। जातैंज्ञाननक्रियामात्रतौमिथ्याज्ञानविषैभीपाइयेहै ज्ञाननक्रियाकाविशेषहैसोतौ।
पहलीप्रमाणकीप्रमाणताग्रहणहोयतबनपजै। सोऐसाकहनांभीबालककाविलासहैविना
समझ्यांकहनांहैजातैंप्रमाणकाप्रमाणपणांग्रहणकेउत्तरकालमैंउत्पत्तिअवस्थातैंज्ञाननक्रि।
याकाविशेषकछूभासैनाहीजैसाज्ञाननांप्रमाणपणांग्रहणहोतैंपहैतौसाहीविनाग्रहणकीयेंहो
यहैज्ञाकाप्रमाणपणांग्रहणकीयाजोयहमेराज्ञानप्रमाणहैतिसतैंभीविषयकेजननेंमैंतौकिछुवि
शेषभासताहीनाही। निर्विशेषविषविषयकिउपलब्धिहै। बहुरिकहोगेजोजाननेंमात्रकातौसीपकेवि
षैरूपकाज्ञानभयाताभैंभीसद्भावहैसोयाकैभीप्रमाणकाकार्यपणांकाप्रसंगआवैहै। तौरऐसैंतौज
बहोयजोवस्तुविषेअन्यथापणांकीप्रतीतिअरुअपनेंकारणकरिउपज्यादोषकाज्ञानइनिदोऊनि १७

करिनिराकरणनकीजियेसोइहांसीपविषेरूपाकाज्ञानहोयतौताकानिराकरणहोयहैजोयहरूपा
नाहीसीपहैसीपहै बहुरिनेत्रनिमैंदोषहैतातैंरूपादीषैहैऐसैंतिसज्ञानकाबाधकहैतातैंतिस
केप्रमाणपणांकाप्रसंगनाहीआवैहै। तातैंजिसवस्तुविषेप्रमाणकाकारणकातौदोषका।
ज्ञानअरुबाधककीप्रतीतिनहोयतहांप्रमाणकाप्रमाणपणांआपहीतैंहोयहै। बहुरिअ।
सैंअप्रमाणपणांविषेनाहीहैअप्रमाणपणांपरतैंहीहोयहै। जातैंविज्ञानकेकारणतैंभिन्न
जोदोषस्वभावरूपसामग्रीताकीअपेक्षासहितकरिअप्रमाणपणांउपजैहै। बहुरिअप्रमा
ताकीनिवृत्तिस्वरूपजोअप्रमाणकाकार्यताविषैअपनांअप्रमाणतारूपस्वरूपकाग्रहण
कीसापेक्षाहैहीसोजैतैंअपनीअप्रमाणताकूंनजाणेंतैतैंअपनांअन्यथापणांरूपजोविषय
तातैंपुरुषकूंननिवृत्तिरूपकरैहैअप्रमाणताकूंजाणेंतबहीविषयकाअन्यथापणांजाणिछो
डै। ऐसैंमीमांसकस्वतःप्रमाणकीपक्षकूंदृढकीया। यवयाकानिराकरणआचार्यकरैहैं जोय
हमीमांसकनैंकह्यासोसर्वहीवडेअज्ञानरूपअंधकारकाविलासहैसोहीकहियेहै। प्रथ
मतौप्रामाण्यकीउत्पत्तिविषैअन्यसामग्रीकीअपेक्षापणांअसिद्धकह्यासोअसिद्धनाहीहै। आगम
केआप्तकाकह्यापणांरूपजोगुणताकासंनिधानहोतैंसतैंहीआप्तप्रणीतवचनविषैप्रमाणतादे।

षियें है। जातें जिसकै अभावतें तौ अनुत्पत्ति अर जिसकै सद्भावतें उत्पत्ति होय सो तिसका कारण होय
है ऐसा लोकमें प्रसिद्ध है॥ सो आगमकी प्रमाणता सत्यार्थ आप्त ज्ञानतें होय है नहीं तें नाहीं होय है॥ सो
मीमांसकनें कह्या जो विधिकी मुख्यता करि तथा कार्यकी मुख्यता करि गुणनिकी प्रतीति नाहीं
है तहां प्रथम तौ आप्तके कहे शास्त्र विषै गुणनिकी प्रतीति नाहीं है ऐसा कहना अयुक्त है जातें ऐ
सें होय तौ आप्तके कहे पणेंकी हानिका प्रसंग आवै है अनाप्तका वचनके समान ठहरै है॥ अर
जो कहै है नेत्र आदिकै विषै गुणनिकी अप्रतीति है तौ सो भी अयुक्त है नेत्रनिकै निर्मलपणां आदि
गुण हैं ते स्त्री बाल कगुवाल सर्वकै प्रसिद्ध है सर्व जानैं हैं जो ए नेत्र निर्मल हैं ए निर्मल नाहीं हैं॥ ब
हुरि जो कहै है निर्मलपणां तौ नेत्रका स्वरूप ही है गुण नाहीं है तौ हेतुकै अविनाभावकरि रहितपणां
है सो भी स्वरूपकी विकलता ही है दोष नाहीं है ऐसें गुणका निषेधतें सें ही दोषका निषेध दोऊ
समान भये॥ बहुरि कहै है जो स्वरूपकी विकलता है सो ही दोष है तौ लिंगकै तथा नेत्रादिककै ति
सका स्वरूपका सकलपणां है सो ही गुण है ऐसें क्यों न कहिये॥ ऐसें ही आप्तके कहे शास्त्र विषै भी॥
मोह राग द्वेष आदि लक्षण दोषका अभाव सो ही यथार्थ ज्ञानादि लक्षण गुणका सद्भाव कूं अंगी।
कार करना मीमांसककूं अन्य प्रमाण विषै ऐसें न मानैं सो उन्मत्तकैसें नाहीं उन्मत्त ही है॥ बहुरि मीमांस १८

कनें कह्या तौ शास्त्र विषै गुण तौ हैं परंतु प्रमाणकी उत्पत्ति विषै ते व्यापार नाहीं करै हैं दोषका अभाव है
सो ही प्रमाणकी उत्पत्ति विषै व्यापार करै है सो यह कह्या तौ सत्य परंतु युक्त नाहीं॥ जातें कहनें मात्र ही
करि साध्यकी सिद्धिका अयोग है॥ जातें गुणनितें दोषनिका अभाव है॥ ऐसें कहनें विषै तौ अन्तर नहीं
कारण है अन्य किछू नाहीं है भावार्थ यह भूलि करि कहै है॥ फेरि मीमांसक कहै है॥ जो अनुमान विषै
तीनारूप सहित जो लिंग तिसही मात्रकरि उपजी प्रामाण्यकी उपलब्धि होय है॥ सो ही तहां हेतु है
ताकूं कहिये ऐसें नाहीं है॥ याका उत्तर तौ पहलें ही दीया था तहां तीनरूपपणां है॥ सो ही गुण है।
जैसें तिसकी विकलता कहिये तीनरूपपणांसंरहितता सो ही दोष है ऐसें हेतु है सो भलै प्रका
र मान्यां हूवा है॥ ऐसें ही अप्रामाण्य विषै भी कह्या जाय है तहां दोषनितें गुणनिका अभाव है।
तिनिके अभावतें प्रमाणपणांका भाव ही तें अप्रमाणपणां स्वाभाविक तिष्ठै ही है॥ ऐसें अप्रामा
ण्य स्वतें ही आवै है ताका भिन्न कारणतें उपजनेका वर्णन उन्मत्तभाषित ही ठहरै है॥ भावार्थ जो मी
मांसक प्रामाण्य तौ स्वतें कहै है अर अप्रामाण्य परतें कहै है सो इहां दोऊ ही स्वतें होय है ऐसें दि
खाय तिसका मत खंडकीया है॥ बहुरि विशेष कहै है॥ जो गुणनितें दोषनिका अभाव है॥ ऐसें कह
ता जो मीमांसक सो ऐसें याके कहनेंमें पङ्क्या जो गुणनितें ही गुण होय हैं॥ जातें अभावकै अन्यभा

वस्वभावरूपणां है। अभाव भी भाव ही स्वरूप है। तातैं अप्रामाण्य का अभाव है सो ही प्रामाण्य है सो ग
न्हैं ही कहनें मैं तो परकी पक्ष का निराकरण होय नाही जातैं यह कहनां तो परपक्ष का विरोधक नाही। व
हुरि अनुमान तैं भी गुणप्रतीति मैं आवै है। सो ही कहिये है प्रामाण्य है सो विज्ञान के कारण तैं भिन्न।
जे कारण तिनि तैं उपजै है। जातै प्रामाण्य है सो विज्ञान तैं अन्य है अरु कार्य है। जैसैं अप्रामाण्य है।
ऐसा प्रयोग है। तथा अन्य प्रयोग कहै है। प्रमाण अर प्रामाण्य दोऊ भिन्न कारण तैं उपजै है। जातैं
ए भिन्न कार्य है। जैसैं घट अर वस्त्र भिन्न कार्य है। सो घट तौ मांटी नामा कारण तैं वणैं अर वस्त्र सूत
नामा कारण तैं वणैं ऐसैं भिन्न कार्य होय सो भिन्न कारण हीतैं य। तातैं यह ठहरी जो प्रामाण्य है सो
उत्पत्ति विषै परकी अपेक्षा सहित है भावार्थ पर तैं उपजै है। वहुरि तैसैं ही प्रमाण का कार्य जो विष
य का जानने रूप क्रिया स्वरूप तथा विषय विषै प्रवृत्ति स्वरूप ता विषै अपनां ग्रहण की अपेक्षा नाही
है ऐसा एकांत नाही है मीमांसक नैं कह्या था जो अपनां स्वरूप का आप करि जानने विषै पर की अपे
क्षा नाही है सो कोई अभ्यस्त विषय होय तहां ही पर की अपेक्षा का अभाव का व्यवस्थापन है। अर अ
नभ्यस्त विषय होय तहां तो जल मरीचिका का साधारण प्रदेश होय तहां जल का ज्ञान पर का ज्ञान
पर की अपेक्षा ही तैं होय है या का प्रयोग ऐसा यह जल सत्य है जातै जैसा जल का आकार होय तैसा।

विशिष्ट आकार धारी पणां या मैं है या का समर्थन जो यह है पाणी भरनहारी का समूह है मींडकनि के
शब्द है कमलनि का गंध आवै है इनि सहित है जैसैं प्रत्यक्ष देख्या जल होय तैसैं अनुमान ज्ञान तैं तथा
जल की अर्थक्रिया का ज्ञान तैं यह पहलै जल का ज्ञान हूवा था तैसा ही ता की प्रमाणता कहिये यथार्थप
णां सो वहुत काल पर्यंत कल्पिये है जातैं पहलै अनुमान प्रमाण के स्वतः सिद्ध प्रामाण्य भया ति
स तैं इस जल ज्ञान के प्रमाणता भई तातैं पहलै अनभ्यस्त मैं पर तैं प्रमाणता कहिये वहुरि मीमां।
सक नैं कह्या था जो प्रामाण्य के ग्रहण के उत्तर काल मैं उत्पत्ति अवस्था तैं जाननें मैं किछू विशेष
नाही भासै है। जो प्रमाण उपजै तैं जैसा था जैसा ही पीछैं है ता का उत्तर जो अभ्यस्त विषय विषै विशे
षन भासता कहै तो यह तो हम भी मानै है। जातैं तहां पहलै ही निःसंदेह विषय का जाननें का विशे
ष का अंगीकार है। वहुरि अनभ्यस्त विषय विषै कहै तो जाननें मैं विशेष है ही प्रामाण्य ग्रहण के
उत्तर काल मैं विषय का अवधारण कहिये निश्चय रूप स्वभाव लीयें प्रतिभास भया यह ही विशे
ष प्रतिभास भया। पहलै तो प्रमाण अप्रमाण रूप साधारण जानना भया था पीछैं विशेष भया।
वहुरि मीमांसक कहै है जो प्रामाण्य के अर जानन क्रिया के तो अभेद भाव है इनि मैं पहली पीछैं होनां
कैसैं वणै। ता कूं कहिये है जो ऐसैं नाही है जातैं सर्व ही जाननें की क्रिया प्रमाण स्वरूप नाही है अर प्रा।

माणपहैसोज्ञानतक्रियास्वरूपहैह्यातातैंकथंचितभेदभेदभयातातैंदोषनाहीं॥ बहुरिमीमांसक।
नैंकह्याजोबाधकअरकारणदोषकाज्ञानइनिदोऊनिकरिप्रामाण्यकानिराकरणहोयहैसोय
हकहनांभीतिःफलहै॥ जातैंअप्रामाण्यविषैभीऐसैंकह्याजायहै॥ सोहीकहियेहै॥ पहलैंतोज्ञान
अप्रमाणरूपहीउपजैहै॥ पीछैंबाधारहितताअरगुणकाज्ञानहोयताकेउत्तरकालविषैतिस
अप्रमाण॥ रूपज्ञानकानिराकरणहोयहै॥ तातैंयहनिश्चयभयाजोप्रामाण्यअथवाअप्रामा।
ण्यअपनेंकार्यविषैकोईजायगांअभ्यासकीअपेक्षास्वतःहोयहैकोईजायगांअनभ्यासकीअ
पेक्षापरतैंहोयहैसोऐसैंहीनिर्णयकरणांयोग्यहै ऐसैंबौद्धमतीतौप्रमाणकीप्रमाणताआपही
तैंमानैंहैअरनैयायिकपरतैंहीमानैंहैअरमीमांसकउत्पत्तिअरज्ञप्तिविषैप्रमाणतादोऊआप
हीतैंअरअप्रमाणतापरहीतैंमानैंहैअरसांख्यमतीप्रमाणतातौपरतैंमानैंहैअप्रमाणताआ
पहीतैंमानैंहैतिनसर्वनिकानिराकरणस्याद्वादतैंहोयहै॥ छ॥ आगैंइहाटीकाकारकृतश्लोक।
है॥ देवस्यसंमतमपास्तसमस्तदोषंवीक्ष्यप्रपंचरुचिरंरचितंसमस्तमाणिक्यनंदिविभुनाशि
ष्यबोधहेतोर्मानस्वरूपममुनास्फुटमभ्यधायि॥१॥ याकाअर्थ॥ देवस्यकहियेअकलंकदेवना
माआचार्यताकासमस्तदोषरहितविस्तारकरिसुंदरभलैप्रकारमान्यांऐसाजोन्यायग्रन्थमैंप्र

स

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
ग्रन्थ भाऊदाजीइत्याख्यस्मारकम्

माणकास्वरूपताहिविचारिकरिमाणिक्यनंदिनामाजेसमर्थआचार्यतिनिनैंइसपरीक्षामुख॥
शास्त्रविषैसंक्षेपकरिरच्याजोप्रमाणकास्वरूपतिसकूंबालकजेअल्पज्ञानीतिनिकैज्ञानकार
नैंअर्थिमैंअनंतवीर्यआचार्यप्रगटकरिकरिकह्याहै॥ छ॥ छप्पय॥ आपजानिपरवस्तुअपूर्व
रवकानिश्चयकरकरणरूपजोज्ञानताहिभाष्याप्रमाणवर॥ उपजैपरतैंआपआनकूंगहैअ
भ्यासैविनअभ्याससहायआनकालियेंप्रकासैं॥ अकलंकदेवजैसैंकह्यामाणिकनंदिविचा।
रिउरभाष्योस्वरूपसंक्षेपयह ग्रंथपरीक्षाद्वारधुर॥१॥ इतिपरीक्षामुखकीलघुवृत्तिकीवचनि।
काविषैप्रमाणकास्वरूपकाउद्देशसमाप्तभया॥१॥ आगैंप्रमाणकास्वरूपकीविप्रतिपतिदूरि
करिअरअबसंख्याकीविप्रतिपतिनिराकरणकरतासंताआचार्यसकलप्रमाणकेभेदनि
कीरचनांकासंग्रहजामैंपाइयेअरप्रमाणकीसंख्याजामैंपाइयेऐसासूत्रकहैहै॥ छ॥ तद्द्वेधा
॥१॥ याकाअर्थ॥ सोप्रमाणदोयप्रकारहै॥ छ॥ इहांतत्शब्दकरितौप्रमाणकापरामर्शकरनां॥ सो
हीप्रमाणपहलैंस्वरूपकरिनिश्चयकीयासोदोयप्रकारहै॥ इहांएवकारअवधारणअर्थमैंले।
णां जोसंक्षेपकरिप्रमाणकीसंख्यादोयहैएकतीनआदिनाहीहै॥ यामैंप्रमाणकेजेतेभेदहैंति
निसर्वकाअंतर्भावहै॥ छ॥ आगैंजोप्रमाणकीसंख्यादोयभेदरूपकहीसोदोयपणांप्रत्यक्षअनुमा

नभेदकरिभीसंभवैहैताकीआशंकादूरिकरनेंकूंप्रमाणकेजेसमस्तभेदतिनिकासंग्रहकरनेंवाली
ऐसीसंख्याकूंप्रगटकरैहै ॥ ७ ॥ प्रत्यक्षेतरभेदात् ॥ २ ॥ याकाअर्थ ॥ पहलेसूत्रमैंकह्याजोप्रमाणकी
दोयसंख्यासोप्रत्यक्षअरपरोक्षऐसैंदोयभेदतैंहै ॥ तहांप्रत्यक्षकालक्षणआगैंकहसीतिसतैंइत
रकहियेअन्यपरोक्षऐसैंदोयभेदतैंप्रमाणकीसंख्यादोयरूपहै ॥ अन्यमतीनिकरिकल्पितजोप्र
माणकीएकदोयतीनच्यारिपांचछहप्रकारसंख्यातिनिकानियमविषैसमस्तप्रमाणकेभेदनिका
अंतर्भावकीयानजायहै ॥ सोहीकहियेहै ॥ प्रथमतौचार्वाकमतवालाएकप्रत्यक्षप्रमाणहीमानैहै
ताविषैअनुमानकाअंतर्भावहोयसकैनाहीहै ॥ जातैंअनुमानतैंप्रत्यक्षविलक्षणस्वरूपहै ॥ तिनि
दोऊनिकेसामग्रीअरस्वरूपभेदरूपहैंन्यारेन्यारेहैं ॥ इहांचार्वाककहैहै ॥ प्रमाणतौएकप्रत्यक्षहीहैदू
जाअनुमानादिकरूपपरोक्षप्रमाणकहौहौ ॥ सोपरोक्षप्रमाणनाहीहैजातैंपरोक्षप्रमाणमैंविसं
वादआवैहै ॥ सोदिखावैहै ॥ देखोअनुमानप्रमाणकास्वरूपऐसाकह्याहैजोनिश्चितअविनाभावस्व
रूपजोहेतुतातैंलिंगीजोसाध्यताकेविषैजोज्ञानसोअनुमानहैऐसाअनुमानप्रमाणमाननेंवाला
कामतहै ॥ तहांलिंगदोयप्रकारतामैंएकतौस्वभावलिंगताविषैवस्तुकाअन्यथापणांदेखियेहै ॥ सोही
कहियेहैएकसापलारसकरिसहितजोआमलातेरसदेशकालसंबंधीदेखियेहैंतेदेशांतरकालांत २१

रतथाअन्यद्रव्यकासंबंधहोनेंतैंअन्यप्रकारभीदेखियेहैं ॥ तातैंजोस्वभावहेतुकरिअनुमानकीजियेहैतौ
तामैंव्यभिचारआवैऐसाअनुमानकीजियेजोआमलाहोयहैतेकसायलाहोयहैं तौकोईदेशकाल ॥
अन्यद्रव्यकेसंबंधतैंरसअन्यप्रकारहोयतबअनुमानमैंव्यभिचारआवै ॥ अथवाकोईदेशमैंआम्र
वृक्षहैंकोईदेशमैंलताआकारआम्रहैंअथवाकोईदेशमैंशीसूंवृक्षहैकोईदेशमैंशीसूंलताकूंक
हैहैंतहांकोईऐसाअनुमानकरैजोयहवृक्षहैजातैंशीसूंहैतौजिसदेशमैंलताकूंशीसूंकहैहैता
तैंव्यभिचारभयाऐसैंहीकार्यलिंगमानियेतामैंभीव्यभिचारहैजैसैंधूमतैंअग्निकाअनुमानकी
येहैसोधूमइंद्रजालकेघड़ेमैंअग्निविनादेखियेहैतथावंबीमैंधूमअग्निविनानीसरतीदेखियेहैता
तैंअग्निकाअनुमानव्यभिचारीहोयहै ॥ तातैंएकप्रत्यक्षहीप्रमाणहैयाहीकेअविसंवादकपणां
हैनिर्बाधसत्यार्थपणांहै ॥ ताकासमाधानआचार्यकरैहै ॥ जोयहकह्यासोबालकहियेअज्ञानीता
काविलाससारिखाभासैहैजातैंजोवार्त्ताकहीसोनुपपत्तितैंअन्यथाबर्णातीनकहीकहियेहै ॥ इहां
दोयपक्षपूछियेजोपरोक्षकैप्रमाणपणांनिषेधैहैसोयाकेउत्पत्तिकेंकारणकेअभावतैंनिषे
धैहैकियाकेआलंबनकेअभावतैंनिषेधैहै ॥ तहांप्रथमतौपहलापक्षजोउत्पादककारणकाअ
भावसोतौनाहीबणैहैजातैंयाकाउत्पादककारणसुनिश्चितभईजोसाध्यतैंअन्यथाअप्राप्तिता

कानियमका निश्चय सो है लक्षण जाका ऐसे साधन कहिये हेतु ताका सद्भाव है॥ बहुरि दूजा उत्तर पक्ष जो
आलंबन का अभाव सो भी नाही है जातैं याका आलंबन जो अग्नि आदिक सो समस्त जे विचार करनें
विषै चतुर हैं चित्त जिनिका तिनिकै सदा काल प्रतीतिमैं आवै है अग्निकूं आलंब्यकरि अनुमान उपजे।
सो आलंबन का अभाव कैसैं कहिये॥ अर जो स्वभावहेतु कै व्यभिचार की संभावना कही सो भी अ।
योग्य है॥ जातैं स्वभावमात्र ही हेतु नाही है जो व्याप्य रूप स्वभाव होय सो व्यापक प्रतिगमक है हो।
य है सो ही हेतु होय यातैं व्याप्य कै व्यापकतैं व्यभिचार नाही है जो व्यभिचार होय तौ वह व्याप्य ही न कहि
ये॥ इहां अन्य विशेष कहै है॥ जो ऐसैं अनुमान कूं व्यभिचारीका रहकरि उत्थापन करनें वाला जो चार्वाक॥
ताकै प्रत्यक्ष प्रमाण भी नाही ठहरैगा॥ ताही भी अविसंवादपणा अर मुख्यपणां ये दोऊ ही अनुमान
विनां निश्चय नाही होगा जातैं प्रमाणपणांकै अर अविसंवादकपणांकै तथा मुख्यपणांकै अवि।
नाभावीपणां है सो अनुमान मानमान्यां विनां कैसैं निश्चै होय प्रमाणका सत्यार्थपणां तौ अनुमान
ही करै है॥ बहुरि जो कार्य नामा हेतुकै भी व्यभिचार बताया अन्यथा का संभावन कीया सो भी विनां विचा॥
र्यां कीया॥ नीकैं विचार्या परीक्षारूप कीया कार्य सो कारणतैं नाही व्यभिचरै है कारणकूं साधै ही है॥ जैसा
धूम अग्निका कार्य पर्वतके लरूआदि विषै प्रतिसघन धवलपणां करि फैलता पाइये है तैसा इंद्रजाल ２２

के घटआदि विषै नाही देषिये है॥ बहुरि जो कह्या वंबी विषै अग्नि विनां धूमका सद्भाव है सो हम पूछैं हैं तं।
हां पडूं वंबी अग्निस्वभाव है कि अनग्निस्वभाव है॥ जो अग्निस्वभाव है॥ जो अग्निस्वभाव है तौ अग्नि ही है
तिसतैं भया धूमकै अन्यथाभाव कैसैं कल्पिये॥ अर जो अग्निस्वभाव नाही है तौ तिसतैं भया धूम ही ना
ही तब तिसं विना अग्नि भया धूम कैसैं कहिये अग्नितैं व्यभिचार कैसैं मानिये॥ सोही कह्या है इहां कैसें
क तत्तं वदेता का अर्थ॥ जो शक्रमूर्द्धा कहिये वंवी सो जो अग्निस्वभाव है तौ अग्नि ही है॥ अर अग्निस्व
भाव नाही है तहां धूम कैसैं होय॥ छ॥ बहुरि विशेष कहै है जो चार्वाक प्रत्यक्ष एक प्रमाण मानैं है सो पर
शिष्यकूं प्रत्यक्ष प्रमाण कैसें करैगा पर पुरुषकी आत्मा तौ प्रत्यक्ष ही करि ग्रहण करिवे कूं असमर्थ है
अर कहैगा जो वचन आदिका पर्वके देषनेतें परके बुद्धि आदि जानिये है तौ कार्यतैं कारणका अनुमा
न आया ही अनुमानका निषेध कैसैं करै है॥ बहुरि जो कहै है लोकव्यवहार की अपेक्षा अनुमान मानिये ही है
परलोककी अभाव है ताकूं कहिये जो आदिकके सद्भाव विषै ही अनुमानका निषेध कीजिये है जातैं पर।
लोकका अभाव है ताकूं कहिये जो परलोकका अभाव कैसैं मानैं है जो कहैगा मैरे परलोककी उपलब्धि
नाही मोकूं दीषै नाही तातैं अभाव मानूं हौं तौ अनुपलब्धि नामा लिंग करि उपज्या अनुमान एक और आ
या निषेध तौ न भया॥ बहुरि प्रत्यक्षका प्रमाणपणां भी स्वभावहेतुतैं उपजी जो अनुमिति ताकूं अनुमान भी क

।इहिपेतिसविनानवर्णांगासोपहपहलैंकहुआपेहैंपातैंअवकाहेकूं कहैं रसअनुमानकासमर्थनवौद्ध
मतकाआचार्यधर्मकीर्त्तिनैंकीपाहैताकाश्लोकहैताकाअर्थ प्रत्यक्षप्रमाणसिवायअन्यप्रमाण।
कासद्भावतीनहेतुनेंहोपहै प्रथमतौप्रमाणअरअप्रमाणसामान्यकाठहरनांप्रत्यक्षसिवायअ
न्यप्रमाविनाहोपानाहीप्रत्यक्षमैंविषयपहीप्रहणभयाहोपताकानिषेधकूंअन्यप्रमाणचाहि।
परहसरैंअन्यकीवुद्धिकाजाणपणांप्रत्यक्षतैंनाहीतातैंअन्यप्रमाणचाहियेजाकरिअन्यकीवुद्धि
काज्ञानहोप सोवचनआदिकार्यनितैंअनुमानहीपहैतीसरापरलोकआदिअदृष्टवस्तुकानिषे
धकरनेकूंअन्यप्रमाणचाहिपे ऐसेसौगतजोवौद्धमतीसोचार्वाकएकप्रत्यक्षप्रमाणमानैंता
केहूजाअनुमानप्रमाणकासद्भावदिषापअरआपकास्थापनेकूंअनुमानकासमर्थनकरिकहै
है जोप्रत्यक्षअरअनुमानएदोपप्रमाणहैंतहांआचार्यकहैहै ऐसेंदोपप्रमाणमानताजोवौद्ध
सोभीयुक्तवादीनाहीहै जातैंस्मृतिनामाप्रमाणविसंवादरहितनिर्वाधहैताकासद्भावहै जोपाकूंवि
संवादसहितकहकरिप्रमाणनमानिपेतौदेनैंलेनैंआदिकाप्रवहारकालोपकीप्राप्तिआवैहै
पहलैंकाहूकूंधसोंप्यापीछैंताकूंपादिकरैमांगोवहुरिजाकूंसोंप्याताकूंपादिकरिकेदेहैइसकूं
मैंपनेसोंप्याथासोपहप्रत्यभिज्ञानहीनहोपतवसोंप्याधनमांगेदेसोस्मृतिकूंप्रमाणभूतनमा

निपेतौदेनेंलेनेंकाव्यवहारनाहीहोप वहुरिवहकहैजोस्मृतितैंअनुभवनकीयेवस्तुविषैहोपहै
सोजिसकालस्मृतिहोपतिसकालअनुभूयमानजोवस्तुजाविषैस्मृतिभईसोवस्तुविद्यमानना
हीतातैंविषयरहितजोस्मृतिसोतौप्रमाणभूतनाहीताकूंकहियेजोऐसेंनाही जौतिसकालविष
यविद्यमाननाहीहैतौऊअनुभवनकीयाथाजोवस्तुतिसकाआलंवनतैंस्मृतिभईतातैंनिरालंव
ननाहीनिरालंवनतौजवहोपजोअकस्मात्विनाअनुभूतवस्तुविषैस्मृतिहोपसोऐसेंहोयना
ही अरऐसैंअनुभूतवस्तुविषैस्मृतिहोतैंभीनिरालंवनकहियेअरअप्रमाणकहियेतौप्रत्यक्षकैं
भीअनुभूतवस्तुविषैअप्रमाणपणांठहरै वौद्धमतीप्रत्यक्षकूंअतीतपदार्थविषयरूपभीकहै
हैतातैंस्मृतिअतीतानुभूतार्थविषयतैंअप्रमाणकहैगातौप्रत्यक्षभीऐसाठहरैगाऐसैंकह्या
हैअथवाअनुमानकरिपहलैंअग्निकानिश्चयभयापीछैंताविषैप्रत्यक्षप्रवर्त्यासोऐसाप्रत्यक्ष
भीअप्रमाणठहरैगा अरअपनांजोविषयहैताकाप्रतिभासनाप्रमाणकहियेतौअपनांविषय
काप्रतिभासनांतौस्मरणविषैभीहैहीयाकूंअप्रमाणकैसैंकहिये वहुरिविसेषकहैहै जोस्मृ
तिकूंअप्रमाणकहियेतैअनुमानकैप्रमाणपणांकीवार्त्ताभीकहनादुर्लभहोहै जातैंस्मृतिकरिव्या
प्तिकूंयादिकीयेंअनुमानहोपहैविनांस्मृतिव्याप्तिकास्मरणनाहीतवअनुमानकाउत्थानकाहेतैंहोप

तातैयहकहनांजोस्मृतिकैप्रमाणतानाहीजातैंअनुमानकेप्रमाणपणांकीयाहीतैंप्राप्तिहैयहुनहो
यतोअनुमानकेप्रमाणपणांकीप्राप्तिनाहीहै॥ऐसैंयहुस्मृतिहैसोबौद्धमतीमान्यांजोप्रत्यक्षअनु
मानरूपप्रमाणकेदोयपणांकीसंख्याकानियमताहिबिगाडैहैनिषेधैहैतातैंहमारीचिंताकरि
कहासाध्यहै॥तैसैंहीप्रत्यभिज्ञानप्रमाणहैसोभीबौद्धकीदोयपणांकीसंख्याकानियमकानिरा
करणकरैहै॥तिसप्रत्यभिज्ञानकाभीप्रत्यक्षअनुमानविषेअंतर्भावनहोयहै॥इहांबौद्धमतीत
र्ककरैहै॥जोप्रत्यभिज्ञानविषेतत्कहियेसोहैऐसातौस्मरणभयाअरइदंकहियेयहुहैऐसा
प्रत्यक्षभयाऐसैंएदोयवचनभयेइनितैंन्यारातीसरातौज्ञानभयानाहीताकूंहमप्रत्यभिज्ञानमा
नैंअरताकूंन्याराप्रमाणकहैयातैंतिसप्रत्यभिज्ञानकरिप्रमाणकीसंख्याकानिषेधकैसें।
होय॥ताकासमाधानआचार्यकरैहैजोयहकहनांभीयुक्तनाही॥जातैंप्रत्यभिज्ञानकाविषयरू
पजोपूर्वापरकाजोडरूपवस्तुभूतअर्थताकूंस्मृतिअरुप्रत्यक्षएदोऊहीग्रहणकरनेंकूंसमर्थ
नाहीहैं॥पहलीअरपिछलीदोऊअवस्थाविषेवातेनेंवालाजोएकद्रव्यसोप्रत्यभिज्ञानकाविष
यहैसोयहुस्मरणकरियहणमैंआवैनाहीजातैंस्मरणकातौपूर्वैंअनुभवनताकाभयासोही॥
विषयहैबहुरिप्रत्यक्षकरिभीग्रहणमैंआवैनाहीजातैंप्रत्यक्षकाविषयतौवर्तमानअवस्थाही

है बहुरिबौद्धनैंकह्याजोस्मरणअरप्रत्यक्षतैंन्यारातौप्रत्यभिज्ञानतीसराज्ञाननाहीसोयहक
हनांभीअयुक्तहैपूर्वोत्तरअवस्थाविषेअभेदकाग्रहणकरनेवालातीसराप्रत्यभिज्ञानप्रति
भासमैंआवैहैस्मृतिप्रत्यक्षमैंकोईएककेतौपूर्वोत्तरअवस्थाविषेव्यापकजोअभेदताका॥
ग्रहणस्वरूपपणोनाहीहैजातैंइनिदोऊनिकेविषयन्यारेन्यारेहैंबहुरियहुप्रत्यभिज्ञानप्रत्य।
क्षविषैंअंतर्भावहोयनाहीतथाअनुमानविषेअंतर्भावहोयनाहीजातैंप्रत्यक्षतौवर्तमाननिक
टवर्तीवस्तुकूंग्रहणकरैहैयाकायहहीविषयहै॥अरअनुमानहैसोअविनाभूतजोलिंगताक।
रिसंभावितजोवस्तुताकूंग्रहणकरैहैयाकायहुविषयहै॥पूर्वोत्तरपर्यायव्यापीजोएकपणांसो
प्रत्यक्षअनुमानकाविषयनाही॥बहुरियहप्रत्यभिज्ञानहैसोस्मारणविषेभीअंतर्भूतनाहीहैजा
तैपूर्वोत्तरएकपणांस्मारणकाभीविषयनाहीहै॥बहुरिइहांकोईकहैजोसंस्कारअरस्म
रणकासहायकरिएइंद्रियहैतैहीप्रत्यभिज्ञानकूंउपजावैहैहैंसोजोइंद्रियतैंउपजैसोप्रत्यक्षही
हैतातैंप्रत्यभिज्ञानन्याराप्रमाणनाही॥ताकूंआचार्यकहैहैजोऐसाकहनेवालातौअतिमूर्खहीहै
जातैंअपनेंविषयकूंमुख्यकरिप्रवर्तताजोइंद्रियताकेसैंकडांसहकारीकासहायमिलैतौऊ।
अन्यकेविषयविषेप्रवर्तनेंरूपजोअतिशयताकाअयोगहैइंद्रियअपनेंअपनेंविषयविषैहीप्र

वर्त्तैहैं ऋर यह ऋतीतवर्त्तमान ऋवस्था विषे व्यापी जो एकद्रव्य सो इंद्रियनिका विषय नाही ऋन्य ही है
इंद्रियनिका विषय तौ रूपऋादिक ही हैं एतावन्मात्र ही विषय विषै चरितार्थ हैं ॥ बहुरि ऋदृष्ट जो पुण्य
पाप कर्म तिसके सहकारीपणां की ऋपेक्षा स्वरूप होय करि भी इंद्रिय इस पूर्वापर ऋवस्था का ए
कत्व विषै नाही प्रवर्त्तै हैं तहां भी पूर्वोक्त दोष ही ऋावै है सहकारी के बल तैं इंद्रिय ऋपने विषय सिवा
य प्रवर्त्तै नाही ॥ बहुरि विशेष कहै है जो ऋदृष्ट कहिये पूर्वकृत कर्म ऋर धारणा ज्ञानरूप संस्कार ऋा
दि की ऋपेक्षा तैं प्रत्यक्ष के एकत्व विषय विषै प्रवर्त्तना कह्या तौ ऐसें प्रवर्त्तना ऋात्मा ही कै तिस ए
कत्व का विज्ञान क्यों न कल्पिये जातैं देषिए है जो स्वप्न सारस्वत चांडालिक ऋादि विद्या के संस्का
र तैं ऋात्मा के विशिष्ट ज्ञान की उत्पत्ति होय है ॥ तहां ऋतीत ऋनागत वर्त्तमान के लाभ ऋलाभ की॥
सूचना जातैं होय सो स्वप्न विद्या कहिये ॥ बहुरि ऋन्य तैं ऐसा न बणै ऐसा वादीपणां कवीश्वर
पणां ऋादि का करणहारी सारस्वत विद्या है ॥ बहुरि नष्ट मुष्टि ऋादि की सूचना जातैं होय ऐसी॥
चांडालिक विद्या है ॥ इहां बहुरि नैयायिक मती तर्क करै है ॥ जो ऋंजन ऋादि के संस्कार बिनां भी ने।
के ऐसा ऋतिशय देषिये है ताका समाधान ॥ ऋाचार्य कहै है ऐसें नाही है जातैं नेत्र के ऋतिशय है।
य है सो ऋपने विषय विषय विषै ही होय है ऋपनां विषय कूं नाही उलंघै है ऐसा तौ नाही जो ऋंजन के

संस्कार तैं नेत्र ऋपनां विषय सिवाय जो रस गंध ऋादि तिनिकों जाणैं ॥ सो ही कह्या है उक्तं च श्लोक है ताका
ऋर्थ ॥ जहां ऋतिशय देषिये है सो ऋपने विषय कूं उलंघि करि नाही होहै ॥ श्रोत्र का प्रवृत्ति तैं रूप
विषै तौ ऋतिशय होय नही जो होय तौ दूरवर्त्ती तथा सूक्ष्म वस्तु के देषने विषै नेत्र के ऋतिशय
होय ॥ इहां नैयायिक फेरि कहै है जो यह श्लोक तौ सर्वज्ञ के निषेध के ऋर्थि मीमांसक नैं कह्या
है इहां तुमनैं कह्या सो मिलै नाही यह दृष्टांत विषम है ॥ ताका समाधान जो इहां दृष्टांत इंद्रियनि
के ऋन्य कूं विषय विषै प्रवर्त्तनै का ऋतिशय का ऋभाव मात्र दिषावनैं की समानता मात्र कू॥
ह्या है तातैं वणै है दृष्टांत का सर्व ही धर्म तौ दार्ष्टांत विषै होय नाही जो सर्व ही धर्म मिलै तौ दृष्टांतना।
ही दार्ष्टांत ही होय है ॥ तातैं यह निश्चय भया जो प्रत्यक्ष ऋनुमान तैं न्यारा ही प्रत्यभिज्ञान वस्तुभूत है
जातैं इसकी सामग्री ऋर स्वरूप दोऊ ही भेदरूप न्यारे ही हैं ॥ बहुरि यह प्रत्यभिज्ञान ऋप्रमाण ना
ही है जातैं इस प्रत्यभिज्ञान तैं ऋर्थ कूं जाणि करि तिस विषै प्रवर्त्तनेवालां के ऋर्थक्रिया मैं वि
संवाद नाही है ॥ जैसें प्रत्यक्ष करि विषय विषैं प्रवर्त्तनैं वाले के विसंवाद नाही तैसैं इहां भी नाही ब
हुरि इस प्रत्यभिज्ञान का विषय पूर्वोत्तर ऋवस्था का एकपणां है ताका लोप की जिये तौ बंध मोक्ष ऋा।
दि की व्यवस्था बहुरि ऋनुमान प्रमाण की व्यवस्था न ठहरै ॥ जातैं एकत्व विना बंध्या सो ही छूट्या ऐसें

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी इत्याख्यस्मारकम्

नठहरैनथाअनुमानकासाधनजोलिंगताकासंबंधकाग्रहणएकत्वविनाकैसैंहोयवहुरियाप्रत्य
भिज्ञानकाविषयविषैवाधकप्रमाणभीनाहीहैजोवाधकहोयतौप्रमाणपणांनमानिये।जातैंप्र॥
त्यक्षकैअरअनुमानकैतिसप्रत्यभिज्ञानकेविषयविषैप्रवृत्तिहीनाहीवाधककैसैंहोयअरप्रवृ
त्तिहोयतौतिसकासाधकहीहोयवाधकतौनहोयतहांवहुतकहनेकरिपूरीपडौप्रत्यभि
ज्ञानप्रमाणन्याराहीहै।वहुरितैसैंहीवौद्धकीप्रमाणसंख्याकानिरोधीवाधारहिततर्कनामाप्रमाण
आवैहीहै।सोयहतर्कनामाप्रमाणप्रत्यक्षविषैअंतर्भूतनाहीहोहै।जातैंसाध्यकैंअरसाधनकै
जोव्याप्यव्यापकभावहैताकासमस्तपणांकरिसर्वक्षेत्रकालकाग्रहणतर्ककाविषयहैसोप्र
त्यक्षकाविषयनाहीहै।यहइंद्रियप्रत्यक्षहैसोसर्वदेशकालसंबंधीजेव्यापारहैंतिनिकूंकरनेंकूं
समर्थनाहीजातैंयहप्रत्यक्षप्रमाणविचाररहितहै।अरइंद्रियनिकेसमीपवर्तीपदार्थयाकाविषय
है।वहुरितर्ककेविषयकूंअनुमानभीग्रहणकरनेंकूंसमर्थनाहीहै।जातैंयाकाभीजिसदेशआदि
मैंतिष्ठतापदार्थहैसोहीविषयहै।व्याप्तिसर्वदेशकालसंबंधीहैसोअनुमानकाविषयनाहीं।वहुरिजो
व्याप्तिकूंअनुमानकाविषयमानैंतौतहांदोयपक्षपूछियेजोव्याप्तिकूंग्रहणकरैसोअनुमानमा।
नतिसव्याप्तिसूंसिद्धभयासोहीहैकिअन्यअनुमानहैजोकहैगातिसव्याप्तिसूंसिद्धभयासोहीहै। २६

तौतहांइतरेतराश्रयनामादूषणआवैगाजातैंपहलैंव्याप्तिग्रहणहोयतवपीछैंअनुमानसिद्धहोयवहु
रिअनुमानसिद्धभयेंपीछैंव्याप्तिग्रहणहोयऐसैदोयनिंदोऊकीसिद्धिनाहीहै।वहुरिकहैजोअन्यअ
नुमानतैंअविनाभावस्वरूपव्याप्तिग्रहणहोयहैतौअनवस्थानामादूषणरूपीवैरीतिसपक्षकूंभ
खिजायहै।तातैंअनुमानतौव्याप्तिकेग्रहणविनाहोयनाहीअरव्याप्तिअन्यअनुमानकरिग्रहणहो
यतौतिसअनुमानकीव्याप्तिअन्यअनुमानकरिहोयऐसैंकहूंठहरैनाहीतवअनवस्थादूषणआ
वै।तातैंअनुमानकाविषयव्याप्तिनाहीसिद्धहोयहै।वहुरिसांख्यमतीआदिकरिकल्प्याजोआगम
उपमानअर्थापत्तिअभावप्रमाणतिनिकरिभीसमस्तपणांकरिअविनाभावस्वरूपव्याप्तिका
ग्रहणनाहीहै।जातैंतिनिप्रमाणनिकैंअपनेंअपनेंविषयकाग्राहकपणांहैतातैंव्याप्तितिनि।
प्रमाणनिकाव्याप्तिविषयमानैंभीनाहीहैं।तहांआगमकाविषयतौवस्तुकासंकेतकरिग्रहणक
रनांहैअरउपमानकाविषयसादृश्यभावहै।अर्थापत्तिकाविषयअर्थकाअन्यथानहोनांहैएकव
स्तुकीसामर्थ्यतैंअन्यअर्थआयपडैसोअर्थापत्तिहै।वहुरिअभावकाविषयअभावहीहैइनिकावि
षयव्याप्तिनाही।इहांवौद्धमतीकहैहैजोप्रत्यक्षकेपीछैविकल्पहोयहैविचारहोयहैतातैं।साध्यसा
धनभावकाज्ञानसमस्तपणांकरिहोयहैतातैंतिसव्याप्तिकेग्रहणकैअर्थिअन्यप्रमाणनाहीहैरतां॥

ताकासमाधानआचार्यकरैहै जोयहकहनेंवालाभीयुक्तवादीनाही।जातैंइहांताकूंदोयप्रश्नपूछिये॥
जोतिसविकल्पकैप्रत्यक्षकरिग्रहै विषयकाव्यवस्थापकपनांहै किप्रत्यक्षकरिग्रह्यानाही।ऐसेविषय
काव्यवस्थापकपनांहै।जोकहैगाप्रत्यक्षकरिग्रहैविषयकूंहीथापैहै।तौदर्शनस्वरूपप्रत्यक्षकी॥
ज्योंताकेपीछैंभयानिर्णयकैभीनियतविषयपणांहीठहरया।व्याप्तितौताकाविषयनठहरैगा।बहु
रिकहैगाजोप्रत्यक्षकरिनाहीग्रह्याविषयकूंथापैहै।तौयामैंभीदोयपक्षहै।प्रत्यक्षकैपीछैंभयावि
कल्पज्ञानहैसोप्रमाणहैकिअप्रमाणहै।जोकहैगाप्रमाणहैतौप्रत्यक्षअनुमानसिवायतीसराप्र
माणआया।जातैंदोऊप्रमाणमैंयाकाअंतर्भावनाहीहोयहै।बहुरिकहैगाअप्रमाणहैतौतिसतैं
अनुमानकीव्यवस्थानठहरैगी।जातैंव्याप्तिकेज्ञानकूंअप्रमाणमानैंतिसपूर्वकअनुमानभीप्रमा
णनठहरैगा।जातैंसंदिग्धआदिजोलिंगतातैंउपज्याअनुमानकैप्रमाणताकाप्रसंगआवैगा।ता
तैंव्याप्तिकाज्ञानजोतर्कसोविचारसहितविसंवादरहितप्रमाणप्रत्यक्षअनुमानदोयप्रमाणतैंन्या
राहीमाननांयोग्यहै।यातैंबौद्धकरिमान्यांजोप्रमाणकेदोयकीसंख्याकानियमसोनाहीहै।याही
कथनकरिअनुपलंभकहियेजाकासद्भावग्रहणनाहीतिसतैंबहुरिकारणकाअरव्यापककाअ
नुपलंभतैंकार्यकारणभावअरव्याप्यव्यापकभावकाज्ञानहोयहैयहहीव्याप्तिकाज्ञानहैऐसा॥ २७

कहनांभीनिराकरणकीया।जातैंअनुपलंभतौप्रत्यक्षकाविशेषहै अरकारणआदिकाअनुपलंभ
हैसोलिंगहैसोलिंगकरिउपज्याअनुमानहै।यातैंप्रत्यक्षअनुमानकरिव्याप्तिग्रहणमैंपहलैंदोषदि
खायेतेहीजाननें।इसहीकथनकरिप्रत्यक्षकाफलजोऊहापोहजोपहलैंतर्कनयजैंजोयहकैसैंहै
पीछैंताकानिराकरणकरैऐसाविकल्पज्ञानताकरिव्याप्तिकाज्ञानहैऐसावैशेषिकमतीमानैंहै
ताकाभीनिराकरणकीया।जातैंप्रत्यक्षकाफलकूंप्रत्यक्षअथवाअनुमानकहैतौतेतौव्याप्तिकूंवि
षयकरैंनाहीअरतिननैंअन्यकहैतौन्याराप्रमाणठहरयाही।बहुरिकहैजोव्याप्तिकाजाननेरूपवि
कल्पतौफलहैसोफलतौप्रमाणठहरैनाहीतौयहकहनांभीयुक्तनाही।जातैंफलहैतौकयातैंअ
नुमानहोयहैसोअनुमानयाकाफलहैताकाकारणपणांकीअपेक्षायाकैभीप्रमाणपणांयुक्तहै
यामैंविरोधनाही।जैसैंइंद्रियकैअरअर्थकेजुडनैरूपसन्निकर्षहोयताकाफलजोविशेषणका
ज्ञानताकेविशेष्यकाज्ञानस्वरूपजोफलताकीअपेक्षाकरिप्रमाणमानियेहैतैसैंयहूभीमाननां
यातैंवैशेषिककरिमान्यांजोऊहापोहविकल्पताहीकैप्रमाणांतरपणांआवैहैप्रमाणपणांकूंउ
लंघिनाहीवर्तै।याहीकथनकरितीनच्यारिपांचछहप्रमाणकीसंख्याकहनेंवालेजेसांख्यअरअक्ष
पादकहियेनैयायिकअरप्रभाकरजैमिनीयमीमांसकतेअपनेंअपनेंप्रमाणकीसंख्याकूंथापैंतिनकूं

ताका समाधान आचार्य करै है जो यह कहनें वाला भी युक्त वादी नाहीं। जातैं इहां ताकूं दोय पक्ष पूछिये॥
जो तिस विकल्पकै प्रत्यक्ष करि ग्रहे विषयका स्थापकपनां है कि प्रत्यक्ष करि ग्रह्या नाहीं ऐसे विषय
का व्यवस्थापकपनां है। जो कहैगा प्रत्यक्ष करि ग्रहे विषयकूं ही थापै है। तौ दर्शन स्वरूप प्रत्यक्षकी॥
ज्यों ताकै पीछैं भया निर्णयकै भी नियत विषयपणां ही ठहरया व्याप्तिनै ताका विषय न ठहरैगा। बहु
रि कहैगा जो प्रत्यक्ष करि नाहीं ग्रह्या विषयकूं थापै है। तौ यामैं भी दोय पक्ष है। प्रत्यक्षकै पीछैं भया वि
कल्पज्ञान है सो प्रमाण है कि अप्रमाण है। जो कहैगा प्रमाण है तौ प्रत्यक्ष अनुमान सिवाय तीसरा प्र
माण आया। जातैं दोऊ प्रमाणमैं याका अंतर्भाव नाहीं होय है। बहुरि कहैगा अप्रमाण है तौ तिसतैं
अनुमानकी व्यवस्था न ठहरैगी जातैं व्याप्तिके ज्ञानकूं अप्रमाण मानैं तिस पूर्वक अनुमान भी प्रमा
ण न ठहरैगा जातैं संदिग्ध आदि जो लिंग तातैं उपज्या अनुमानकै प्रमाणताका प्रसंग आवैगा। ता
तैं व्याप्तिका ज्ञान जो तर्क सो विचार सहित विसंवादरहित प्रमाण प्रत्यक्ष अनुमान दोय प्रमाणतैं न्या
रा ही माननां योग्य है। यातैं बौद्ध करि मान्यां जो प्रमाणकै दोयकी संख्याका नियम सो नाहीं है। याही
कथन करि अनुपलंभ कहिये जाका सद्भाव ग्रहण नाहीं तिसतैं बहुरि कारणका अर व्यापकका अ
नुपलंभतैं कार्यकारणभाव अर व्याप्यव्यापकभावका ज्ञान होय है यह ही व्याप्तिका ज्ञान है ऐसा॥ २७

कहनां भी निराकरण कीया। जातैं अनुपलंभ तौ प्रत्यक्षका विशेष है अर कारण आदिका अनुपलंभ
है सो लिंग है सो लिंग करि उपज्या अनुमान है यातैं प्रत्यक्ष अनुमान करि व्याप्तिग्रहणमैं पहलैं दोष दि
खाये तेही जाननें। इस ही कथन करि प्रत्यक्षका फल जो ऊहापोह जो पहलैं तर्क नैयनें जो यह कहैं है
पीछैं ताका निराकरण करै ऐसा विकल्पज्ञान ताकरि व्याप्तिका ज्ञान है ऐसा वैशेषिक मातौ मानैं है
ताका भी निराकरण कीया जातैं प्रत्यक्षका फलकूं प्रत्यक्ष अथवा अनुमान कहै है तौ ते तौ व्याप्तिकूं वि
षय करैं नाहीं अर तिनतैं अन्य कहै है तौ न्यारा प्रमाण ठहरया ही। बहुरि कहै है जो व्याप्तिका जाननेरूप वि
कल्प तौ फल है सो फल तौ प्रमाण ठहरै नाहीं तौ यह कहनां भी युक्त नाहीं जातैं फल है तौ कहातैं अ
नुमान होय है सो अनुमान याका फल है ताका कारणपणांकी अपेक्षा याकै भी प्रमाणपणां युक्त है
यामैं विरोध नाहीं। जैसैं इंद्रियकै अर अर्थकै जुड्नैंरूप सन्निकर्ष होय ताका फल जो विशेषणका
ज्ञान ताकै विशेष्यका ज्ञानस्वरूप जो फल ताकी अपेक्षा करि प्रमाणपणां मानिये है तैसैं यहू भी माननां
यातैं वैशेषिक करि मान्यां जो ऊहापोह विकल्प ताहीकै प्रमाणांतरपणां आवै है प्रमाणपणांकूं उ
लंघि नाहीं वर्त्तै याही कथन करि तीन च्यारि पांच छह प्रमाणकी संख्या कहनेंवाले जे सांख्य अर अक्ष
पाद कहिये नैयायिक अर प्रभाकर जैमिनीय मीमांसक तेऊ अपनें अपनें प्रमाणकी संख्याकूं थापैं तिनकूं

समर्थनाहीहैं ऐसैंप्रतिपादनकीया निश्चयकरनां ऐसैं कह्या जो न्यायतिसकरि सन्निपत्यभिज्ञानत
र्कइनितीनप्रमाणनिकैं तिनिसांख्यमती आदिनिकरिमानेंप्रमाणकी संख्याका विपक्षपणांहे सत्य॥
ताद्वितिनिकेप्रमाणकी संख्याकूं निराकरणकरेहैं ऐसैं प्रत्यक्षपरोक्षके भेदतैं प्रमाणदोयहीहैं
यहठहरया ॥ छ ॥ आगैं प्रथाम प्रमाणका भेदजो प्रत्यक्ष ताकें निरूपणकरनेंकूंसूत्रकहैहैं ॥ छ ॥
विशदंप्रत्यक्षं ॥ ३ ॥ याका अर्थ ॥ विशदकहियेस्पष्ट जोज्ञान सोप्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ छ ॥ इहांज्ञान
कीतौ अनुवृतिकरणी अर प्रत्यक्षहैसोतौधर्मीहै ॥ अर विशदज्ञान स्वरूपसाध्यहै ॥ अरु प्रत्यक्षप
णांहेतुकरणं सोहीप्रयोगकहियेहै ॥ प्रत्यक्षहै सो विशदज्ञानस्वरूपहीहै ॥ जातैं प्रत्यक्षहै जोवि
शदज्ञानस्वरूपनाही ॥ सोप्रत्यक्षनही ॥ जैसैं परोक्ष ॥ इहां विवादमैं आया प्रत्यक्ष है तातैं विशदज्ञा
नस्वरूपहीहै ऐसैं अनुमानकेपांचअवयवरूपप्रयोगया सूत्रकाहै ॥ इहांकोईकहै जो इहप्रत्य
क्षपणांहेतुकीया सोसूत्रमेंतौ एकधर्मीहीकह्या इहप्रत्यक्ष ऐसा याति सहीकूंहेतुकीया सोपक्ष
का वचनरूप जो प्रतिज्ञा ताका अर्थ का एकदेश कूंहेतुकीया सोपहहेतु असिद्धहै ताका समाधान
आचार्य कहैहैं जो प्रतिज्ञा कह्याहै अर तिसका एकदेश कह्याहै ॥ नववहकहै जो धर्मका अर धर्मी ।
का समुदायसो प्रतिज्ञाहै ताका एकदेश धर्मी अथवा धर्महै सो तिसमें तैं एककह्या सोही प्रतिज्ञा २८

काएकदेशहै ऐसा धर्मीहेतुअसिद्धहै ॥ ताकासमाधान ॥ जोधर्मीकैहेतुपणांकहतैं असिद्धपणां
का अप्रयोगहै ॥ जातैं तिसधर्मीकै पक्षके प्रयोगकालविषैजैसैं असिद्धपणांनाहीहै तैसैंहीहेतुकेप्र
योगविषैभी असिद्धपणांनाहीहै धर्मी प्रसिद्धहीकह्याहै ॥ वहुरिवहकहैहै जो धर्मीकूंहेतुकहतैं अ
नन्वयपनामादोष आवैहै ॥ जातैं धर्मी साध्यनैं अन्वयस्वरूपनाही ॥ ताकासमाधान जो ऐसैंनाहीहै ।
इहांप्रत्यक्षविशेषतौधर्मीहै अर प्रत्यक्षसामान्यहैसोहेतुकीयाहै सो सामान्यहै सो विशेषविषै
अन्वयरूपहैही जातैं सामान्यहै सो विशेषविनानाहीहोहै ॥ वहुरिकहै जो साध्य जो धर्म ताकैहेतु
पणांहोतैं प्रतिज्ञाका एकदेशस्वरूप असिद्धहेतुहोहै किनाही ता कूं कहियेजो ताकेप्रतिज्ञाका ए
कदेशपणंतैं असिद्धपणांनाहीहै साध्यकै तौस्वरूपहीकरि असिद्धपणांहै जो प्रतिज्ञाकाएकदे
शपणां करि असिद्धपणां कहियेतौ धर्मी भी प्रतिज्ञाका एकदेशहै ताकरि व्यभिचार होयहै ॥ वहुरि
कहै जो इहां धर्मीकूंहेतुकीया अर व्यतिरेक व्याप्तिरूप व्यतिरेकही दृष्टांतकह्या ॥ सोतपक्षविषैपाई
ए तिनाही तातैं अनन्वयदोष आया ॥ ताकासमाधान जो यह भी असत्य है ॥ जातैं बौद्धमती सर्ववस्तु कै ।
क्षणभंगका संगम है सोही स्वरूप है ऐसैं मानैं है न्याय सत्त्व कूं हेतुकरैहैं कि जो जो सत् है सो सर्व क्ष
णभंग है सो ऐसा सत्त्वनामा हेतु कै सपक्ष नाही जातैं सर्व ही पक्ष मैं आय गये सो ऐसे हेतु भी अन

न्यपदोषरूपभयेतवहेतुकाउदयनाहीहोहै॥ अरकहैंऐसेहेतुके विपक्षविषेबाधकप्रमाणकाभावहै
अरपक्षमैंव्यापकपणांहैतातैंदोषनाही अन्वयवानपणां तौहमाराभीहेतुऐसाहीहैयाकैवांकैसामा
न्यनताभईतवदोषकाहेकाहै॥ छ॥ आगैंप्रत्यक्षविशदज्ञानकूंकह्यासोविशदपणांकास्वरूपकहै
है॥ छ॥ प्रतीत्यंतराव्यवधानेनविशेषवत्तया वाप्रतिभासनं वैशद्यं॥ ४॥ याकाअर्थ॥ जोअन्यप्रती
तिवीचिमैंनआवैआपहीजानैंअरविषयकूंविशेषनिसहितपणांकरिजानैंसोविसदपणांहै॥ छ॥
तहांएकप्रतीतिनैं दूसरीअन्यप्रतीतिहोयसोप्रतीत्यंतरकहिये॥ तिसकरिजावैअव्यवधानहो।
यवीचिमैंअन्यप्रतीतिनआवै॥ तिसअव्यवधानकरिजोप्रतिभासनांसोवैशद्यकहियेइहांजोअ
वायज्ञानकेअवग्रहईहाप्रतीतिकरिव्यवधानहैअवायकैपहलीअवग्रहईहाकीप्रतीतिहोय
होयहैतोकतिसअवायज्ञानकैपरोक्षपणांनाहीहै॥ जातैंइहांविषयजोपदार्थअरविषयीजो
विषयकाजांनैंनैंवालाज्ञानताकैभेदकरिप्रतीतिनाहीहै॥ जहांविषयविषयीकेभेदहोतैंव्यव।
धानहोयतहांपरोक्षपणांहोहै॥ इहांजोअवग्रहकाविषयहैताकीतिसहीकरिप्रतीतिहैईहा।
काविषयहैताकीतिसहीकरिप्रतीतिहैअवायकाविषयहैताकीतिसहीकरिप्रतीतिहेपरंतुयेसारे
प्रत्यक्षहीहैंअरइनिकाविषयप्रत्यक्षहीहैप्रतीत्यंतरनकहियेयातैंऐसानाहीजोजोजाकाविषयहैता॥

कीप्रतीतिपहलैंअन्यकीप्रतीतिवीचिमैंआवैंतवहाय॥ वहुरिकोईकहैजोऐसैंहैतोपहलैंअग्नि
काअनुमानभयाहोयपीछैंसोहीपुरुषअग्निकूंदेखैतवअग्निकादेखनांकैपरोक्षपणांआवैहै॥ ता
कूंकहियेजोयहकहनांअयुक्तहै जातैंइहांदेखनांप्रत्यक्षहैभिन्नविषयपणांकाअभावहैतातैं
प्रतीत्यंतरनाहीदेखनैंतैंप्रतीतिभईहैसोहीप्रत्यक्षहैऐसैंनाहीजोपहलैंअनुमानप्रतीतिभईति
सतैंप्रत्यक्षकीप्रतीतिभईइहांअग्निवस्तुहैताकूंअनेकप्रमाणकरिअपनैंअपनेविषयरूप
जाननैंमैंदोषनाही॥ जातैंविसदृशसामग्रीकरिउपजैजोभिन्नविषयविषेप्रतीतिसोप्रतीत्यं
तरकहियेहै॥ तातैंपहलैंअनुमानकीप्रतीतिभईसोअपनैंविषयविषेभईअरप्रत्यक्षप्रतीतिभई
सोअपनेंविषयविषेभईइनिकैपरस्परकार्यकारणभावनाहीहै॥ वहुरिविशदपणांकेवलए
तावन्मात्रहीनाहीहै॥ यामैंविशेषनिसहितपणांकरिभीप्रतिभासनांहै॥ वस्तुकाआकारवर्णर
सगंधस्पर्शआदिकेजेविशेषतिनिकरिवस्तुकासर्वस्वदेखनांसोवैशद्यहै॥ छ॥ आगैंसोप्रत्यक्षदो
यप्रकारहै॥ एकमुख्यप्रत्यक्षदूजासोव्यवहारिकप्रत्यक्ष सोआचार्यदोऊनिकूंमनमैंधारियहलैं॥
सांव्यवहारिकप्रत्यक्षकीउत्पत्तिकरनैंवालीसामग्रीअरतिसकेभेदनिकासूत्रकहैहैं॥ छ॥ इंद्रियानि
द्रियनिमित्तं देशतः सांव्यवहारिकं॥ ५॥ याकाअर्थ॥ इंद्रियअरमनहैकारणजाकूंऐसाजोएक

देशविशदज्ञान सो सांव्यवहारिकप्रत्यक्ष है ॥ छ ॥ इहां विशद अर ज्ञान की अनुवृत्ति लेणी याते देशतैं विश
दज्ञान होय सो सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष प्रमाण है ऐसा अर्थ भया । तहां समहिये समीचीन भला प्रवृ
त्ति निवृत्तिरूप जो व्यवहार सो संव्यवहार है तिस विषै होय सो सांव्यवहारिक कहिये बहुरि कैसा
है इंद्रिय कहिये नेत्र आदिक अर अनिंद्रिय कहिये मन ए दोऊ हैं निमित्त कहिये कारण जाकूं सो ।
इंद्रिय मन समस्त भी कारण हैं अर व्यस्त कहिये न्यारे न्यारे भी है तहां इंद्रियनिकै प्रधानपणांतैं
मन के सहाय तैं उपजै सो तौ इंद्रियप्रत्यक्ष है बहुरि कर्म के क्षयोपशमतैं विशुद्धि होय ताकी अपे
क्षा सहित जो मन तिस ही तैं उपजै सो अनिंद्रियप्रत्यक्ष है तहां इंद्रियप्रत्यक्ष है सो अवग्रह ईहा अ
वाय धारणा भेदनैं च्यारि प्रकार हैं सो भी बहु अबहु बहुविध एकविध क्षिप्र अक्षिप्र अनिसृत निसृत
अनुक्त उक्त ध्रुव अध्रुव इनि बारह विषयनिके भेदनिकरि अठतालीस भेद होय हैं ते पांचूं इंद्रियप्र
ति होय हैं सो दोयसै चालीस होय ऐसैं ही मन के प्रत्यक्ष के अठतालीस मिलाये दोयसै अठ्यासी
भी होय हैं सो ये तौ अर्थ की अपेक्षा भये बहुरि व्यंजन विषय का अवग्रह ही होय है सो मन अर नेत्र
द्वारे नाही होय तातैं च्यारि इंद्रियनिकै द्वारे बहु आदि बारह विषय का अवग्रह होय ताकै अठता
लीस भेद होय सर्व भेले कीये इंद्रिय अनिंद्रिय प्रत्यक्ष के तीनसै छत्तीस भेद होय हैं इहां प्रश्न जो स्व ३०

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

संवेदन नाम प्रत्यक्ष अन्य है सो क्यों न कह्या ताका समाधान जो ऐसैं न कहनां जातैं सो स्वसंवेदन सुखज्ञा
न आदिका अनुभवनवन स्वरूप है सो मानसप्रत्यक्ष मैं आय गया अर इंद्रियज्ञान का स्वरूप का संवे
दन सो इंद्रियप्रत्यक्ष मैं आय गया जो ऐसैं न मानिये तो तिस ज्ञान कै अपने स्वरूप का निश्चय करनेका
रनेका अयोग आवै है बहुरि स्मरण आदिका स्वरूप का संवेदन है सो मानसप्रत्यक्ष ही है अन्य नाही
है सो स्वसंवेदन प्रत्यक्ष कहिये ही है परंतु जुदा भेद नाही ॥ छ ॥ आगैं नैयायिक कहै है जो प्रत्यक्ष का
उत्पादक कारण कह्या जो ग्रंथकार इंद्रियादिककूं कारण कहै तैसैं ही अर्थ अर आलोक कूं का
रण क्यों न कह्या अर्थ कहिये वस्तु ताकरि भी ज्ञान उपजै है अर आलोक कहिये प्रकाश ताकरि भी ज्ञा
न उपजै है इनिकूं बिना कहैं कारणनिका सकलपणां का संग्रह न भया तब शिष्यजनकै भ्रम ही रहै
गा जातैं कारण एते हैं ऐसा निश्चय न होयगा जो परमकरुणावान भगवान हैं तिनिके शिष्यजनके
भ्रम होय ऐसी चेष्टा न होय है ऐसी आशंका नैयायिक की दूरि करनें कूं सूत्र कहै है ॥ छ ॥ नार्थालोकौ
कारणं परिच्छेद्यत्वात्तमोवत् ॥ ६ ॥ याका अर्थ ॥ अर्थ कहिये वस्तु अर आलोक कहिये प्रकाश ए दोऊ क
ही सांव्यवहारिकप्रत्यक्ष कूं कारण नाही है जातैं ये परिच्छेद्य कहिये ज्ञाननैं योग्य ते पर हैं जैसैं अंधकार
ज्ञेय है तैसैं ही ए हैं ॥ याका अर्थ ॥ सुगम है तातैं टीकाकार टीका न करी है ॥ छ ॥ इहां बौद्धमती तर्क करै है

जो बाह्य आलोक का अभाव सो ही अंधकार है इसतैं न्यारा किछू अंधकार वस्तु है नाहीं। तातैं सूत्र मैं अंधकार का दृष्टांत साधन विकल है यामैं साधन नाहीं। ताकूं आचार्य कहै हैं जो ऐसें नाहीं है जो ऐसें होय तौ बाह्य प्रकाश कूं भी ऐसें कहिये जो अंधकार का अभाव सो ही प्रकाश है सिवाय अन्य किछू वस्तु नाहीं। ऐसें तो तेजवान पदार्थ हैं तिनि का असंभव आवै है। सो याका विस्तार करि निरूपण प्रमेयकमलमार्तंड या की बडी टीका ता का नाम या का अलंकार है तामैं प्रतिपादन कीया है सो जाननां। छ। आगैं इस सूत्र के साध्य कूं साधनें विषै अन्य हेतु कहै हैं। छ ॥ तदन्वयव्यतिरेकानुविधानाभावाच्च केशोण्डुकज्ञानवन्नक्तंचरज्ञानवच्च ॥ ७ ॥ याका अर्थ। अर्थ अर आलोक के सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष के कारणपणां का अन्वय व्यतिरेक का अनुविधान का अभाव है ऐसा नियम नाहीं जो अर्थ आलोक होतैं तौ ज्ञान उपजै अर न होतैं न उपजै। जैसैं केशनि का गुच्छा का ज्ञान होय है काहू के माछरनि का समूह मस्तक परि उडै था सो काहू कूं केसनि का भ्रम कारी था ऐसैं तो अर्थ ज्ञान का कारण नाहीं है अर अंधकार मैं बिलाव आदि कूं दीखै है तातैं प्रकाश ही ज्ञान का कारण नाहीं। छ। इहां कारण कार्य के व्याप्ति का प्रयोग करै है। जो जाकै अन्वय व्यतिरेक का जोड नकरै सो तिस का कार्य नाहीं। जैसैं केशन का भ्रम का ज्ञान सो ज्ञान अर्थ का अन्वय व्यतिरेकपणां नाहीं करै है। अर्थ तो मांछरनि का समूह था अर ज्ञान केशनि का ३२

भ्रम का भया तैसें ही आलोक जो प्रकाश है तहां यह विशेष है जो नक्तंचर का दृष्टांत है नक्तंचर बिलाव आदि हैं तिनि कूं अंधार मैं दीखै है जो प्रकाश ही ज्ञान का कारण होय तौ तिनि कूं अंधकार मैं ज्ञान कैसें होय इहां बौद्धमती तर्क करै है जो विज्ञान है सो अर्थ करि उपजै अर्थ के आकार होय सो अर्थ का ग्राहक होय ज्ञान की अर्थ तैं उत्पत्ति न मानिये तौ विषय प्रतिनियम का अयोग ठहरै घट के ज्ञान का घट ही विषय। ऐसा नियम न ठहरै। बहुरि अर्थ तैं उपजनां है सो आलोक जो प्रकाश तामैं अविशिष्ट है तातैं ताद्रूप्य कहिये तदाकार होनां तिस सहित ही जो तदुत्पत्ति कहिये अर्थ तैं ज्ञान का उपजनां ताकै विषय प्रतिनियम रूप हेतुपणां है। ज्ञान ज्ञेय का भिन्नकाल है तौ क ग्राह्यग्राहकभाव का अविरोध है। तैसें ही हमारे कह्या है इहां श्लोक कहै है ताका अर्थ। कोई पूछै जो ज्ञान का भिन्नकाल होय सो ग्राह्य कैसें होय। सो ताकूं कहै है जो जे युक्ति के जाननें वाले हैं ते ऐसैं कहै हैं। यह जो हेतुपणां है अर्थ के ज्ञान की उत्पत्ति का कारणपणां है सो ही ग्राह्यपणां है कैसा है यह हेतुपणां अर्थ के आकार कूं ज्ञान मैं अर्पण करनें विषै समर्थ है ॥ भावार्थ ॥ जो अर्थ कै ज्ञान का उपजावनापणां है सो ही तिस अर्थ के आकार होनां ज्ञान कै करै है। छ। ऐसी बौद्ध कै आशंका होतैं सूत्र कहै है। छ ॥ अतज्जन्यमपि तत्प्रकाशकं प्रदीपवत् ॥ ८ ॥ याका अर्थ ॥ जो ज्ञान अर्थ करि न उपज्या है तौऊ अर्थ का प्रकाशक है जैसैं दीपक घट आदि अर्थ तैं उपज्या नाहीं तौऊ तिनि का प्रकाशक है तैसैं ज्ञान

नां ॥ छ ॥ तहां अर्थ करि जन्य नाहीं है तौ कहा ताका प्रकाशक है ऐसा अर्थ भया सो इहां अतज्जन्य ऐसा शब्द है
ता करि अतदाकार कहिये अर्थाकार न होय तौ कहा ताका प्रकाशक है ऐसा ऐसा भी ग्रहण करनां ॥ बहुरि दी
उही अर्थमें प्रदीपका दृष्टांत है ॥ जैसें दीपक है घटादिक करि जन्यपणां नाहीं न था तिनिके आकारपणां है
प नाहीं तौऊ तिनिकूं प्रकाशै है तैसें ज्ञानकै भी है ऐसा अर्थ भया ॥ इहां बौद्ध कहै है जो अर्थतैं तौ उपज्या ना
हीं अर अर्थकै आकार न भया ऐसे ज्ञानकै अर्थका साक्षात्कारी पणां कहोगे तौ नियमरूप दिशा देश
कालवर्ती जे पदार्थ तिनिका प्रकाश प्रतिनियमका अभाव होनेतैं सर्व ही विज्ञान अप्रतिनियतविषय
कहिये न्यारे न्यारे नियमरूप विषयका ग्राहक ऐसा ज्ञान ठहरैगा ॥ ऐसी बौद्धकी आशंका होतें सूत्र कहै है ॥
॥ छ ॥ स्वावरणक्षयोपशमलक्षणयोग्यतया हि प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति ॥ ९ ॥ या का अर्थ ॥
अपनां आवरण जो ज्ञानावरण वीर्यांतराय कर्म ताका क्षयोपशम सो है लक्षण जाका ऐसी जो यो
ग्यता ता करि प्रतिनियत नौ जो जिस ज्ञानका अर्थ होय सो ही विषय ताकूं व्यवस्थापै है ॥ छ ॥ तहां अप
नां आवरण तिनिका क्षय कहिये उदयका अभाव बहुरि तिनि ही का सत्ता अवस्थारूप उपशम ए दोऊ है
लक्षण जाका ऐसी जो योग्यता सो यह तौ कारणरूप है ता करि प्रतिनियत जो अर्थ ताहि स्थापन क
रै है अपनां विषय करै है सो ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण है ऐसा सूत्रमैं वाक्यशेष है बहुरि हि शब्द है सो यस्मा ३२

त् अर्थमैं है तातैं ऐसा अर्थ भया जो जातैं ऐसैं है तातैं बौद्ध आशंका करी थी जो प्रतिनियत अर्थकी व्य
वस्था न होगी सो ऐसा दोष नाहीं है ॥ इहां यह तात्पर्य है जो ताद्रूप्य कहिये तदाकारपणां अर तदुत्पत्ति क
हिये तिसतैं उपजनां अर तदध्यवसाय कहिये तिस स्वरूप अर्थका निश्चय पणा तीनूं कल्पि करि भी यो
ग्यता अवश्य माननें योग्य है ॥ इस विना तीनूं ही व्यभिचार सहित तौ है ॥ सो ही दिखावै है ताद्रूप्यकै समान
अर्थ करि व्यभिचार है जो ज्ञान तदाकार पणातैं उपजै सो जिस पदार्थतैं उपजै तिस समान अन्य पदार्थ
कूं तिस काल क्यों जानैं नाहीं सो पदार्थ भी तौ तिस ही आकार है यह ही व्यभिचार ॥ बहुरि तदुत्पत्तिकै इं
द्रिय आदि व्यभिचार है ॥ इंद्रियतैं उपजै है अर इंद्रियनिकूं तिस काल क्यों नाहीं जानैं यह ही व्यभिचार ब
हुरि तिनि दोऊनिकै भी समान अर्थ समनंतर प्रत्यय करि व्यभिचार है ॥ पहले क्षण जैसैं नीलका ज्ञा
न भया सो ही दूसरे क्षण सो ज्ञान तिस नील ज्ञानका उपजावनहारा है ॥ अर तिसतैं तदाकार भी है अर पहले ॥
क्षण का ज्ञानकूं क्यों जानैं नाहीं यह ही व्यभिचार बहुरि ताद्रूप्य तदुत्पत्ति तदध्यवसाय इनि तीनूंनिकै धौ
ला संखकै विषै पीलेका ज्ञान होय तहां व्यभिचार है ॥ काहूकै नेत्रविषै कामला रोग था ताकूं धौला संख
पीला ही ध्यात हूं पीला आकार करि पीला आकारका ज्ञान उपज्या बहुरि जो तदाकार ज्ञान अर तिसका
निश्चय भया सो ऐसा ज्ञान करि दूजै क्षण तैसा ही ज्ञान उपज्या सो तदाकार भी है तिसका निश्चयस्वरूप भी

है अर पहले क्षण का पाता का ज्ञानकूं क्यों नाही जानै यह ही व्यभिचार है ऐसैं त्यारयोंही प्रकार यह व्यभिचा
र भया तातैं क्षयोपशमलक्षणयोग्यता माननां श्रेष्ठ है ॥ इस ही कथन करि जो बौद्धनैं ऐसैं कह्या ताका
श्लोक कहै ताका अर्थ प्रत्यक्षज्ञान निर्विकल्प है ताहि अर्थरूपता विना अन्य कोई अर्थ करि नाही रचै है अ
र्थरूपता ही प्रत्यक्षरूप निर्विकल्पज्ञानकूं अर्थ करि जोडै है तातैं प्रमेय का जानना प्रमाण का फल है
प्रमेयरूप होनां सो ही ताका प्रमाण है ऐसैं कहनां निराकरण कीया जातैं समान अर्थनिकै आकार
भये जे अनेक ज्ञान तिनि विषै प्रमेयरूप होनेंका सद्भाव है बहुरि बौद्धमती पुरुष सारूप्य मानैं है सो स
मानपरिणामरूप सामान्य ही सारूप्य है सो सामान्यकूं वस्तुभूत नाही मानैं है सो अवस्तुभूत होय सो का
हे का सारूप्यता तातैं यह ही ठहरै है जो क्षयोपशमलक्षण योग्यता है सो ही विषयप्रतिनियम का कारण
है ॥ आगैं कोई ऐसा मानैं है जो अर्थ है सो ज्ञान का कारण है याही तैं अर्थ ज्ञेयरूप कहिये है ऐसा मत
कूं निराकरण करै है ताका सूत्र ॥ कारणस्य च परिच्छेद्यत्वे करणादिना व्यभिचारः ॥१०॥ याका
अर्थ ॥ जो कारणकै परिच्छेद्यत्व कहिये ज्ञेयपणां मानिये तौ नेत्रादिक करण हैं तिनि करि व्यभिचार होय है
ते कारण तौ हैं अर परिच्छेद्य नाही हैं आपकूं आप नाही जाणैं हैं ॥ इहां वह कहै के जो हम कारणपणांतैं
परिच्छेद्यपणां नाही कहै हैं परिच्छेद्यपणांतैं कारणपणां कहै हैं जो ज्ञेय होय सो कारण होय तौ ऐसैं। ३३

कहैं केशानि कहैं केशानिका ऊमका आदिक करि व्यभिचार होय है सो पूर्वैं कह्या ही था काहू के मस्तग परि मे
छर उडै थे सो काहूकूं केशानका ऊमका दीख्या सो तेमां छर ज्ञान के कारण न भये ॥ आगैं अब अतींद्रि
य प्रत्यक्ष जो मुख्य प्रत्यक्ष ताहि कहै है ॥ सामग्रीविशेषविश्लेषिताखिलावरणमतीन्द्रिय
मशेषतो मुख्यम् ॥११॥ याका अर्थ ॥ सामग्री जो द्रव्य क्षेत्र काल भाव लक्षण ताका विशेष जो स
र्वकी पूरणता एकता मिलनां ता करि दूरि भये हैं अखिल कहिये समस्त आवरण जाकै ऐसा बहु
रि अतींद्रिय कहिये इंद्रियनिकूं उल्लंघ्य वर्तै बहुरि अशेषतः कहिये समस्तपणां करि विशद कहि
ये स्पष्ट ऐसा ज्ञान मुख्य प्रत्यक्ष है ॥ इहां कोई पूछै समस्तपणां करि विशदपणां विषै कहा कारण है
ताकूं कहिये जो ज्ञान का प्रतिबंधक जो कर्म ताका अभाव कारण है ॥ हम ऐसैं कहै हैं ॥ फेरि पूछै न
ही भी कहा कारण है ताकूं कहिये अतींद्रियपणां अरु अनावरणां है ऐसैं कहै हैं फेरि पूछै यह भी।
काहे तैं है ताका समाधानकूं सूत्र कहै है ॥ सावरणत्वे करणजन्यत्वे च प्रतिबंधसंभवात् ॥ १२॥
याका अर्थ ॥ जो ज्ञानकै आवरणसहितपणां होय अर इंद्रियजन्यपणां होय तौ प्रतिबंध संभवै
तौ निरावरण अतींद्रिय होय सो ही मुख्य प्रत्यक्ष है ॥ इहां कोई कहै है कि अवधि मनःपर्यय ज्ञान काई।
स सूत्र करि यह लक्षण न भया तातैं यह लक्षण अव्यापक है ताकूं आचार्य कहै हैं ऐसैं न कहनां ति निशे।

क्रुनिकै भी अपनें विषय विषै समस्तपणां करि विशदपणां आदि धर्म संभवै है वहुरि ऐसें मतिश्रु
तज्ञानकै अपनें विषय विषै भी विशदपणां नाहीं है ऐसैं अतिव्याप्ति दूषणका भी परिहार रह्या ॥ सो यह अ
तीन्द्रिय अवधि मनःपर्यय केवल के भेदतैं तीन प्रकार मुख्य प्रत्यक्ष है जातैं ए आत्मा के संनिधिमात्र की
अपेक्षा तैं उपजैं हैं ॥ अन्य इंद्रिय आदि की अपेक्षा इनिकै नाहीं हैं ॥ छ ॥ इहां मीमांसक मती भट्टमतका
आशय लेय कहै है ॥ जो समस्त विषय विषै विशदका अवभासनें वाला ज्ञान कै अर तिस ज्ञान सहि
त पुरुषकै प्रत्यक्ष आदि पांच प्रमाण का विषयपणांका अभावपणां करि अभावप्रमाण सो ही
भया विषम सर्प्य ताकरि नष्ट भई है सत्ता जाकी तिसपणांतैं कोंनकै मुख्य प्रत्यक्ष होय है ॥ भावार्थ ॥
सर्वका जाननैं वाला ज्ञान अर सर्वज्ञ ए पांचूं ही प्रमाण का विषय नाहीं अभावप्रमाणका विषय है ता
तैं अभाव ही सिद्ध होय है सो ही कहै है प्रथम तौ प्रत्यक्ष प्रमाण है ताका सर्वज्ञ विषय नाहीं ॥ जातैं प्रत्यक्ष
के तौ रूपादिक नियमरूप जे विषय तिनि विषै प्रवर्तनपणां है ॥ इंद्रिय प्रत्यक्ष जो विषय संबंधरूप होय
अर वर्त्तमान होय ताही विषय प्रवर्त्तै है ॥ सो समस्तका ज्ञाता सर्वज्ञ इंद्रियनितैं संबद्ध नाहीं वर्त्तमान ना
हीं ॥ वहुरि अनुमानतैं भी ताकी सिद्धि नाहीं है ॥ जातैं ग्रहणकीया है संबंध जानैं ऐसा पुरुषकै वस्तुका ए
कदेश दिखनैं तैं दूरिवर्ती वस्तु विषै वुद्धि होय है ॥ सो सर्वज्ञका सद्भावतैं अविनाभावी कार्यलिंग तथा ॥ ३४

स्वभावलिंग हम नाहीं देखै हैं जातैं अनुमान करैं जातैं सर्वज्ञके जानैं पहली तिसका स्वभाव अर तिस
का कार्य जो तिसकै सद्भावतैं अविनाभावीका निश्चय करनैंका असमर्थपणां है ॥ वहुरि आगम प्रमा
णकरि भी ताकी सिद्धि नाहीं है ॥ इहां दोय पक्ष आगम नित्यरूप तिसकै सद्भावकूं जनावै है कि अनित्य
आगम जनावै है ॥ तहां नित्य आगम तौ ताका सद्भाव नाहीं जनावै है जातैं नित्य तौ अर्थवादरूप है प्र
योजनमात्रकूं कहै है ॥ अपौरुषेय वेद है सो कर्म। विशेष जोपत आदि शुभकार्य ताका संस्तवन कहि
ये प्रशंसादिक ताकै विषै प्रवीण है सो पुरुष विशेषका जनावनहारा नाहीं पुरुषतौ आदि लीयें है ॥
अर नित्य आगम वेद है सो अनादि है सो अनादिकै आदिमान पुरुषका कहनां वणैं नाहीं ॥ वहुरि जो
अनित्य आगम स्मृति पुराण आदि है ते सर्वज्ञकूं साधै है ॥ ऐसैं कहिये ॥ तौ तिस अनित्य आगमकै
भी सो सर्वज्ञका कह्या कहिये तौ सर्वज्ञका निश्चय पहलैं कीयां विनां ता का प्रमाणपणां का निश्चय
नाहीं होय है ॥ वहुरि इतरेतराश्रय नामा दोष आवै है ॥ सर्वज्ञ के कहे पणांतैं तौ तिस आगम का प्र
माणपणां सिद्ध होय अर तिस आगमका प्रमाणपणांकी सिद्धितैं सर्वज्ञकी सिद्धि होय ऐसैं इत
रेतराश्रय दोष होय ॥ वहुरि अ सर्वज्ञका कह्या आगमका प्रमाणपणां ही नाहीं ताकै सर्वज्ञका प्ररूप
णा विषै प्रवीणपणां है ऐसा कहनां ही अतिशय करि असंभाव्य है ॥ वहुरि सर्वज्ञ समान अन्य का ग्रहण का

असंभवतैं उपमानप्रमाणताका सद्भाव नाही जनावै है॥ बहुरि अर्थापत्तिप्रमाण है सो भी सर्वज्ञका
जनावनैं वाला नाही है॥ जातैं याका अनन्यथाभूत वस्तुतैं जानना है सो कोई ऐसा वस्तु नाही जो सर्व
ज्ञ विना न होय ताकरि अर्थापत्ति सर्वज्ञाकूं जनावै बहुरि जो धर्मादिक पदार्थ है तिनिका उपदेश है।
ताकरि अर्थापत्ति होय ऐसैं कहिये तौ धर्मआदिका उपदेश तौ व्यामोहतैं भी संभवै है॥ जातैं उपदेश
दोय प्रकार है सम्यक् उपदेश मिथ्या उपदेश॥ तहां मनुआदि ऋषि भये हैं तिनिका तौ सम्यक् उप
देश है॥ जातैं तिनिकै यथार्थज्ञानका उदय है सो वेदमूलक है वेदतैं उपज्या है बहुरि बुद्धआदिकै उप
देश है सो व्यामोहपूर्वक है॥ जातैं तिनिके ज्ञान वेदतैं उपज्या नाही तै वेदार्थके जाननैं वाले नाही॥ ता
तैं सर्वज्ञपणांकूं ही प्रमाणका विषयनाही तहां अभावप्रमाण ही की प्रवृत्ति है॥ ताकरि सर्वज्ञाका अ
भाव ही जानियै है पांच प्रमाणका तौ व्यापार भावके अंश विषै ही होय है॥ ऐसैं भट्टमतीअपनां म
तका समर्थन की या अब इहां आचार्य ताका प्रतिविधान करै है॥ प्रथम तौ कह्या जो सर्वज्ञ के प्रत्य
क्षादिक प्रमाणका अविषयपणां है॥ सो अयुक्त है॥ जातैं तिस सर्वज्ञका ग्राहक अनुमानप्रमाणका सं
भव है॥ सो ही कहै है कोई पुरुष सकल पदार्थका साक्षात् करनेवाला है॥ जातैं तिनि पदार्थनिके ग्रह
णकरनेका स्वभावपणां के होतैं संतैं प्रक्षीणप्रतिबंधप्रत्ययपणां है भावार्थ सूक्ष्मआदि पदार्थनिकूं

ग्रहण करनेका पुरुषका स्वभाव है सो ज्ञानका प्रतिबंधक कर्मकै नाश भयें ज्ञान प्रगट होय है॥ जो।
जिसका ग्रहणस्वभावपणांकूं होतैं प्रक्षीणप्रतिबंधप्रत्यय होय सो तिसका साक्षात् करनेवाला है
यजैसैं जाका तिमिरहरि भया ऐसा नेत्र सो रूपका साक्षात् करनेवाला होय सो इहां तिसके ग्रहणरूप
स्वभावपणांके होतैं प्रक्षीणप्रतिबंधप्रत्ययस्वरूप विवादमैं आया कोई पुरुष है ऐसैं व्यारि प्रयोग
का अनुमानकरि सर्वज्ञका सद्भाव मीमांसककूं आचार्यनैं बताया॥ बहुरि सकलपदार्थनिका ग्रहण।
स्वभावपणां कह्या सो आत्माकै असिद्ध नाही है॥ जातैं आत्माका ऐसा स्वभाव न मानिये तौ वेदतैं स
कलपदार्थका ज्ञान होय ऐसैं कहनेंका अयोगआवै है॥ जो सैं आंधे पुरुषकै आरसेसं रूपकी प्रती
तिका अयोग होय तैसें॥ बहुरि व्याप्तिज्ञानकी उत्पत्ति केवलतैं समस्तपदार्थसंबंधी परोक्षज्ञानका।
संभव मानिये ही है॥ इहां केवल एक ज्ञानके विशदपणां जो स्पष्टपणां प्रत्यक्षपणां ताही विषै विवा
द है॥ तहां आवरणका दूरि होनां ही कारण है जैसैं धूलि तैं आवरणतथा वरफका आवरण कोई प
दार्थकै होय सो आवरण दूरि होय तब पदार्थ स्पष्ट दीखै तैसैं ज्ञानके कर्मका आवरण दूरि होय तब।
ज्ञान स्पष्ट प्रगटै है॥ बहुरि पूछै है जो प्रक्षीणप्रतिबंधप्रत्ययपणां कैसैं है॥ ताका समाधानकूं प्रयोग क
रै है॥ दोषअरु आवरण कोई पुरुषविषै मूलतैं नाश होय है॥ जातैं इनिकी हानि वधती वधती देखिये है सो

परी०मु० जाकी वधती हानि है सो कोई विषे मूलतें समस्त भी नाश होय है ॥ जैसें अग्निके पुटका पाकतें दूरि भये हैं ॥
३७ कीट अरकालिमा आदिक अंतरंग बहिरंग दोऊ मल जाके असे सुवर्ण शुद्ध होय है तैसें ही वधती वधती
हानिरूप दोष अर आवरण हैं ॥ असा प्रयोग जाननां ॥ बहुरि विवादमैं आया जो ज्ञान ताकै आवरणकै
सौं सिद्ध है जातैं प्रतिषेध है सो विधिपूर्वक है ॥ इहां कहिये है ॥ विवादमैं आया जो ज्ञान सो आवरणसहित है
जातैं अपने विषयकूं अविशदपणां करि जनावनहारा है ॥ जैसें रजकरि तथा धूमवरफ आदिकरि पदा
र्थ अंतरित होय है आछादित होय है तैसें है ॥ बहुरि कोई कहै आत्मा तौ अमूर्तीक है सो अमूर्त्तपणांतें आ
वरणका अयोग है सो असें नाहीं है ॥ चैतन्यकी शक्ति अमूर्तीक है तो कुमदिरा तथा मांचरणंको हूं आ
दिक रियाकै आवरण होय है ॥ कोई कहै मदिरादिक करि तौ इंद्रियकै आवरण है तौ असें भी नाहीं है ॥ जातैं इं
द्रिय तौ अचेतन है सो आवरण भये भी अनावरण समान ही है ॥ बहुरि स्मरण आदिका प्रतिबंधका अ
योग होय मतवालाकै स्मरण नाहीं है जो इंद्रियही कै आवरण होय तौ मदोन्मत्तकै स्मरण कैसें न
होय ॥ बहुरि मनकै भी आवरण न कहिये जातैं आत्मा विनां अन्य मनका निषेध आगें करेंगे ॥ तातैं अ
मूर्तीककै आवरणका अभाव नाहीं है ॥ तातैं न कूहूरण स्वभावपणां होतैं पक्षीणप्रतिबंध प्रत्ययपणां है
तु है सो असिद्ध नाहीं है ॥ बहुरि यह हेतु विरुद्ध भी नाहीं है ॥ जातैं विपरीत जो विपक्ष आत्माकै सूक्ष्मादिग्र ३६

हण स्वभावका अभाव ताविषै निश्चयस्वरूप जो अविनाभाव ताका अभाव है ॥ बहुरि यह हेतु अनैकां ॥
तिक भी नाहीं है जातैं एकदेशकरि तथा सामस्त्यकरि विपक्षकै विषै हेतिका अभाव है ॥ बहुरि कालात्य
यापदिष्ट भी नाहीं है जातैं यातैं विपरीत अर्थका स्थापनें वाला प्रत्यक्ष प्रमाण तथा आगमप्रमाणका
अभाव है ॥ बहुरि सत्प्रतिपक्ष भी यह हेतु नाहीं है जातैं इसका प्रतिपक्ष साधनें का हेतु का अभाव है ॥
इहां मीमांसक कहै है जो याका प्रतिपक्षका स्थापनका अनुमान यह है ताका प्रयोग ॥ विवादमैं आया जो
पुरुष सो सर्वज्ञ नाहीं है ॥ जातैं वक्ता है पुरुष है हस्तादिकसहित है असें तीन हेतुनैं पुरुष सर्वज्ञ नाहीं ॥ जि
सें हम रेकगेलै चालता पुरुष सर्वज्ञ नाहीं तैसैं ॥ ताका समाधान आचार्य करै है जो यह कहनो सुंदर नाहीं
जातैं वक्तापणां आदि तीन हेतु कहे ते समीचीन भले हेतु नाहीं ॥ इहां तीन पक्ष पूछिये जो वक्तापणां क
ह्या सो प्रत्यक्ष अनुमानतैं विरुद्ध अर्थका वक्तापणां कह्या कि अविरुद्ध अर्थका वक्तापणां कह्या कि वक्ता
पणां सामान्य कह्या ॥ इनि तीन सिवाय चौथी गति नाहीं है ॥ तहां प्रथम पक्ष तौ न बणै है ॥ याकै तौ सिद्ध ॥
साध्यपणांका प्रसंग है जातैं प्रत्यक्ष अनुमानतैं विरुद्ध अर्थ कहै है सो वक्ता सर्वज्ञका है का ॥ बहुरि दूस
रा पक्ष कह्या सो यह विरुद्ध है जातैं प्रत्यक्ष अनुमानतैं अविरुद्ध अर्थ कहै है सो असा वक्तापणां तौ ज्ञान।
कै अतिशय विनां न बणै जामै ज्ञान वढता होय सोही वक्ता सत्यवादी होय ॥ बहुरि वक्तापणां सामान्य है सो।

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊ दाजी इस्लाउद्वस्मारकम्

भीविपक्षतैंअविरुद्धहैतातैंप्रकरणगोचरजोसाध्यअसर्वज्ञपणांताकूंसाधनेंनिषेसमर्थनाही॥ज्ञान॥
कीवधवारीहोतैंवक्तापणांकीहानिदीषैनाही॥ज्ञानकीवधवारीवाकैवचनकीप्रवृत्तिकीवध
वारीकाभीसंभवहै॥इसहीकथनकरिपुरुषपणांहेतुभीनिराकरणकीया॥पुरुषपणांहोतैंजोरागा
दिदोषदूषितहोयतौसिद्धसाध्यताहीहै॥ताकेंसर्वज्ञपणांकाअभावसिद्धहीहै॥अररागादिदोषक
रिदूषितनाहीहोयतौहेतुविरुद्धहैवीतरागविज्ञानआदिगुणनिकरियुक्तपुरुषपणांकासर्वज्ञवि
नाअयोगहै॥बहुरिपुरुषपणासामान्यहैसोसंदिग्धविपक्षव्यावृत्तिकहैअसर्वज्ञपणांकाप्रवि
नाअयोगहै॥ऐसैंसकलप
पक्षसर्वज्ञपणांसोकोईपुरुषमेंहोयभीहैतातैंविपक्षतैंव्यावृत्तिसंदेहरूपहै॥ऐसैंसकलप
दार्थकासाक्षात्कारीपणांकोईपुरुषकेसिद्धहोयहै॥इसअनुमानतैं॥यातैंपांचप्रमाणकाविषय
सर्वज्ञनाहीऐसैंकहनांअयुक्तहै॥बहुरिअसर्वज्ञवादीकहैहैजोइसअनुमानविषैसामान्यसर्वज्ञ
पणांसिद्धभयासोयहसर्वज्ञपणांअरहंतकैहैकिअन्यकैहै॥जोकहोगेअन्यजेबुद्धआदितिनिकैहै
तौअरहंतकेवाक्यअप्रमाणठहरैंगे॥बहुरिकहोगेअरहंतकैहैतौआगमकरिसामर्थ्यकरि।
अथवाअसाधारणकहियेअविनाभावीलिंगपणांताकरिअथवाताकादृष्टांतकाअनुग्रहकरितिस
हेतुतैंअरहंतकौंसर्वज्ञजाननेंकाअसमर्थपणांहै॥जातैंहेतुकैअन्यपक्षजोबुद्धादिकतिनिविषै ३७

भीसमानवृत्तिहैजैसैंहेतुतैंअरहंतकेसाधियेतैसैंहीबुद्धआदिकेभीसिद्धहोयगा॥ऐसैंअसर्वज्ञवा
दीमीमांसकआदिककहैहै॥सोयहकहनांतिनिकैअपनेंघातकैअर्थिकृत्यकहियेकरततितथा
शास्त्रविशेषतथामारीकाजगावनांहै॥जातैंऐसेविशेषकापूछनांहैंसोतौसर्वज्ञसामान्यकामान
नेंपूर्वकहैसोसर्वज्ञसामान्यमान्यांतवअपनीपक्षकाघातभया॥अरजोसर्वज्ञसामान्यनमानि
येतौकाहूहीकेसर्वज्ञपणांनाहीहै॥ऐसैंहीकहनांबहुरिप्रसिद्धअनुमानविषैभीइसदोषकासंभ
वकरिजातिनामादूषणरूपउत्तरहोयहैसोहीकहियेहैजैसैंकाहूनैंअनुमानकीयाजोशब्दनित्यहैजातैं
प्रत्यभिज्ञानकरिजान्यांजायहै॥ऐसैंकहतैंजातिवादीकहैहैशब्दकूंव्यापकरूपनित्यसाधियेहैकि॥
अव्यापकरूपनित्यसाधियेहै॥जोअव्यापकरूपनित्यसाधियेहैतौव्यापकपणांकरिमान्यांजोशब्द
सोकिछूभीअर्थकूंपुष्टनाहीकरैहै॥व्यापकमाननांनिरर्थकठहरया॥मीमांसकशब्दकौंव्यापक
मानैंहै॥बहुरिजोव्यापकरूपशब्दनित्यसाधियेतौआगमकरिअथवासामर्थ्यकरिअथवाअपनी
शक्तिकरितथादृष्टांतकेअनुग्रहकरिव्यापकपणांनाहीनिश्चयहोयहैजातैंअव्यापकनित्यपक्ष॥
विषैभीयाकीसमानवृत्तिहै॥तातैंजातिउत्तरहोयहै॥दोऊपक्षविषैप्रश्नउत्तरसमानहोयजायतहां
जातिनामादूषणहोयहै॥ऐसैंपूर्वैंसर्वज्ञकासाधनरूपहेतुकह्यासोनिर्दोषहैतातैंसर्वज्ञसिद्धहोयहै

वहुरि जो अभावप्रमाणकरि सर्वज्ञका सत्ताका सीभूतकरी कही सो भी अयुक्त है। तिस सर्वज्ञका ग्राहक अ
नुमानप्रमाणका सद्भाव होतैं पांच प्रमाणका अभाव है मूल जाका ऐसा जो अभावप्रमाणताकी उत्प
त्तिकी सामग्रीका अयोग है। जातैं हे मीमांसक तेरे ही मतमैं ऐसैं कह्या है ताका श्लोक है ताका अर्थ वस्तुका स
द्भावकूं ग्रहणकरि वहुरि ताका प्रतियोगीकूं यादि करि इंद्रियनिकी अपेक्षा रहित मनं संबंधी नास्तिता
का ज्ञान उपजै है। अन्य प्रकार नाही उपजै है ऐसैं होतैं तीन काल तीन लोक स्वरूप जो वस्तु ताका सद्भा
वका ग्रहण विषै कोई काल कोई क्षेत्र विषै ग्रहण कार्या जो सर्वज्ञ ताका स्मरण होतैं कोई क्षेत्र काल
विषै ताकी नास्तिताका ज्ञानस्वरूप अभावप्रमाण युक्त है। अन्य प्रकार नाही है सो कोई छद्मस्थ असर्व
ज्ञजनकै तीन जगत तीन कालका ज्ञान नाही वणै है तातैं सर्वज्ञ अतींद्रियका ज्ञान न होय है यह सर्वज्ञप
णां चेतन्यका धर्म है तातैं अतींद्रिय है सो भी असर्वज्ञजनका विषय नाही। ऐसैं होतैं अभावप्रमाण
कैसैं उदयकूं प्राप्त होय। असर्वज्ञ पुरुषकै तिस सर्वज्ञकै अभावका उपजावनैंकी सामग्रीका संभव॥
का अभाव है। वहुरि जो असर्वज्ञकै सर्वकाल सर्वक्षेत्रका ज्ञान मानि सर्वज्ञकै अभावका उपजनैंकी साम
ग्री मानिये तौ ऐसैं जाननैंवाला ही कै सर्वज्ञपणां ठहर्या। वहुरि कहै है जो इस क्षेत्र कालमैं सर्वज्ञका अभाव
साधिये है तौ यह युक्त नाही यामैं सिद्धसाध्यपणांका प्रसंग आवै है। कोई क्षेत्र कालकी अपेक्षा सर्वज्ञ। ३८

का अभाव सिद्ध ही है सिद्धकूं कहा साधिये। तातैं मुख्य अतींद्रियज्ञान समस्तपणांकरि विशद ऐसा सिद्ध
भया वहुरि सर्वज्ञका ज्ञान अतींद्रिय है तातैं अपवित्रका देखनां तिसका रसका आस्वाद करनां ऐसा दो
ष भी निराकरण भया अशुच्यादिक देखनां रसका आस्वाद करनां दोष तो इंद्रियज्ञान अपेक्षा कह्या है
वीतरागकै यह दोष नाही। वहुरि पूछै है जो अतींद्रियज्ञानकै विशदपणां कैसैं है हम तौ नेत्रादिकतैं स्प
ष्टज्ञान होता जानै हैं। ताका समाधानः जैसैं सांचा स्वप्नका ज्ञानकै तथा भावनाका ज्ञानकै विशदपणां
है तैसैं इंद्रियनि विना भी विशदपणां जाननां। जातैं देखिये है भावनांकै वलतैं दूर देश अन्य देशवर्ती वस्तु
कौ विशद जानिये है। जैसैं कह्या है ताका श्लोक है ताका अर्थ। कामी जनकूं वंदीखानैंमैं दीया सो क
है है देखो यह गुरु आज्ञा आघातु आ जो वंदीखानांका घर तहां ऐसा अंधकार जो सूईकै मुखकै अग्रभागक
रि भी भेद्या न जाय तहां मेरे नेत्र मीचि करि मैं देखी तौ ऊति सखीका मुख मौकूं प्रगट दीखै है। ऐसा कामू का
मीका वचन है सो ऐसैं वस्तु तत्त्वदा उदाहरण है इंद्रियनिकै संबंध विना केवल मनकै ही द्वारे विशद स्पष्ट प्रति
भास होय है ऐसैं मीमांसककूं उत्तर दीया॥छ॥ अव इहां नैयायिक वोलै है जो सर्वज्ञपणांकी तौ सिद्धि
भई परंतु आवरणकै अभावतैं सर्वज्ञपणां है यह नाही वणै है। शरीर इंद्रिय लोक आदि एकार्यै है तिनिकै
निमित्तपणांकरि सर्वज्ञकी सिद्धि होहै। वहुरि इहां शरीर आदि कार्यनिका होनां वुद्धिवान पुरुषकरि कीयें हो

यहै सो। अप्रसिद्ध नाही है। जातैं अनुमान प्रमाण आदिकैं तैं इहनीकैं प्रसिद्ध होय है। सो ही कहिये है। ताका प्र
योग करै है नाही निश्चयमैं आये विवादमैं आये जे पृथिवी पर्वत वृक्ष शरीर आदि कसो कोई बुद्धिमा
न पुरुष के रचे हैं तिस हेतु कहैं जातैं एकार्य रूप हैं कार्य होय सो कीयां विनां होय नाही। बहुरि इनिका उपादा
न अचेतन है। बहुरि इनिका संनिवेश कहिये आकारादिकी रचना सो भलै प्रकार कहै। ऐसै आकारादिक
बुद्धिमान पुरुष विना होय नाही। जैसैं वस्त्र आदिका वर्णवणे वाला कारीगरनि कीया यथास्थान रचना।
वर्णवेनै सैंएभी काइनै वर्णये हैं। बहुरि आगम भी तिस सर्वज्ञ का प्रतिपादक सुणिये है। सो वेद का वच
न है। विश्वतश्चक्षु कहिये सर्वतरफ जाकै नेत्र हैं समस्त कूं देखै है। उत विश्वतोमुखः कहिये अथवा स
र्वतरफ जाका मुख है। बहुरि विश्वतो बाहुः कहिये सर्वतरफ जाका भुजानिका व्यापार है। उत विश्वतः
पात कहिये सर्वतरफ जाके पग हैं सर्वव्यापक है। बहुरि संवाहुभ्यां धमति कहिए पुण्यपापनैं सबकूं।
जोडैं सर्वप्राणीनिकै पुण्यपापका संयोग करै है। ऐसा संपतत्रैः द्यावाभूमीजनयन् देव एक कहिये एक।
देव ईश्वर है सो पृथिवी आकाशा कूं परमाणूनि करि उपजावता संतावर्तै है। बहुरि व्यास का वचन ऐसा है
ताका श्लोक है ताका अर्थ। यह जंतु कहिये जीव सो अज्ञानी है आपहू आपकै सुख अर दुःख करिवे कूं असम
र्थ है यातैं ईश्वर का प्रेरया हूवा स्वर्ग तथा नरक कूं गमन करै है। बहुरि ऐसैं भी न कहनां जो अचेतन जे परमा।

णु आदिकारण तिनि ही करि कार्य की निष्पत्ति होय है। तातैं बुद्धिवान कारण का अनर्थकपणां है। जातैं अचे
तन के कार्य की उत्पत्ति विषै आप ही तैं व्यापार करणे का अयोग है जड आप ही कार्य करि सकै नाही। जैसैं को
लीकी राछ वेम तुरी अरु तंतु इनिनैं आप ही तैं वस्त्र वणै नाही कोली पुरुष व्यापार करै तब वणै। बहुरि ऐसैं
चेतन कै भी अस्वचेतन पूर्वक कार्य करनां नाही है। जातैं यामैं अनवस्था आवै। ईश्वर है सो सकल पुरुषनितैं
बडा है समर्थ है अतिशय की हद कूं प्राप्त है सर्वज्ञ वा बीज कहिये जगत का कारण सर्वज्ञ सो ही ही वीज है। बहुरि
क्लेश कर्म विपाक आशय इनि करि अपरामृष्ट है रहित है। बहुरि अनादिभूत अविनाशी ज्ञान का संभव जा
कै है। ऐसै ही पतंजलि नैं कह्या है। क्लेश कहिये अविद्या ।१। अस्मिता ।२। रागद्वेष ।३। अभिनिवेश ।४। त
हां अविद्या तौ विपरीत ज्ञान नां सो है। बहुरि अस्मिता कहिये अहंकार राग द्वेष कहिये सुख दुःख तथा ता
के साधन विषै प्रीति अप्रीति अभिनिवेश कहिये अपनां ईश्वरपणां का भंग का भय। ए तौ क्लेश के विशे
ष। बहुरि कर्म कहिये धर्म अधर्म के साधन यज्ञ अरु ब्रह्महत्यादिक बहुरि विपाक कहिये जाति आयु।
भोग तहां जाति देव मनुष्य आदिपणां आयु कहिये आयुर्बल सुखदुःख का भोगनां सो भोग ए विपाक।
के विशेष। बहुरि आशय कहिये निवृत्ति तांई जो भाव लग्या रहै सो है सो ऐसे भाव निकरि सर्वज्ञ पुरुष स्प
र्शित कैं नाही है सो सर्वही विषै गुरु है वड है काल करि जाका विछेद नाही है। ऐसैं पतंजलि के वचन है। बहु।

रि अवधूत जो सन्यासीनिका आचार्य ताके ऐसे वचन हैं। श्लोक का अर्थ। हे भगवन् एते विशेषण तेरे ही हैं प्रथ
म तौ जो काहू करि हस्या न जाय ऐसा ऐश्वर्य तेरे ही है। बहुरि स्वभाव ही तैं विरागता तेरे ही है। बहुरि स्वभाव
तैं नयजीतसितातेरै ही है बहुरि इंद्रियनिका वशिकरना तेरै ही है। बहुरि अत्यंत सुख तेरे ही है। बहुरि आवर
णरहित शक्ति तेरे ही है बहुरि सर्व विषयका जाननहारा ज्ञान तेरे ही है। ऐसा अवधूतका वचन है ऐसें ईश्व
र सर्वतैं बडा है ता तैं कार्य के करनैं मैं अनवस्था नाही है। बहुरि इहां ईश्वरकी सिद्धि कूं कार्यत्व नामा हेतु
है सो असिद्ध नाही है। अवयवसहितपणां करि कार्यत्वकी सिद्धि है जो अवयवनिकरि सहित होय सो का
र्य है सो कीया ही होय। बहुरि यह हेतु विरुद्ध भी नाही है। जातें याका विपक्ष जो विना कीया होना ता विषै वृत्ति
का अभाव है। बहुरि अनैकांतिक भी नाही है। विपक्ष जे परमाणु आदि तिनि विषै याकी अप्रवृत्ति है पर
माणु आप कार्य नाही। बहुरि प्रकरणसम भी नाही है जातैं प्रतिपक्षकी सिद्धिका कारण जो अन्य हेतु
ताका अभाव है। बहुरि इहां कोई कहै याका प्रतिपक्षका साधन हेतु है ताका प्रयोग तनु आदि बुद्धि।
मानहेतुक नाही हैं। जातें देख्या है कर्ता जाका ऐसा जो प्रासाद आदिक तिनितैं यह तनु आदि विलक्षण
है प्रासाद आदि सारिखे नाही। जैसें आकाश आदिक है ऐसें याका प्रतिपक्षका हेतु है तनु आदिक कै।
अकर्त्ताकूं साधै है तातैं कार्यत्व हेतु प्रकरणसम है ताकूं नैयायिक कहै है यह कहना अयुक्त है। जातैं इस ४०

हेतु कै असिद्धपणां है। संनिवेशविशिष्टपणां करि प्रासादादिक तैं समानजातीयपणां करि शरीरादिकका
नुपलंभ है जैसें प्रासादादिकका आकाररचनाविशेष है तैसें ही शरीरादिकका आकार ऐसा ही रचना
विशेष है बहुरि कहोगे जैसा प्रासादादिक विषै संनिवेशविशेष देखिये है तैसा तनु शरीर आदि विषै
नाही। तौ सर्व ही एकसे सर्वस्वरूप तौ होय नाही कोई मैं किछू विशेष होय कोई मैं किछू होय अतिशयस
हित संनिवेश होय सो सा। हित शप कर्त्ताकूं जनावै है। जैसें प्रासादादिक प्रासाद सुंदर रचना तव जानिये च
तुर कारीगरनैं बणाया है। बहुरि कोईका तौ कर्त्ता दृष्ट है जानिये है फलाणां नैं बणाया है अर कोईका कर्त्ता।
अदृष्ट है जाणां न जाय है तौ इन दोऊ निनैं तौ बुद्धिवानका कर्या अर बुद्धिमानकी यास्वप मेवं है ऐसा
सिद्ध होय नाही। मणि मोती आदिका कर्त्ता कौणनैं देख्या ये स्वयमेव भये दृष्ट हैं ऐसैं संनिवेशविशेष
हेतु सिद्ध है इस ही कथन करि अचेतन उपादानपणां आदि हेतु भी दृढ कीया। ऐसैं बुद्धिमान हेतुक तनु आदि
हैं ऐसा भले प्रकार कारकत्व आदि भाव वर्णां है। इस ही हेतु तैं सर्वज्ञपणां सिद्ध होय है ऐसे नैयायिकनैं अप
नां मत दृढ कीया। ताका समाधान आचार्य करे है। जो यहु सर्वज्ञ कहनां अनुमानरूप सद्भाव करनें कूं धन क
रि रहित दरिद्री के वचन है। जातें कार्यत्व आदि हेतुक हेतिनि कै असम्यक् हेतुपणां करि तिनि करि उपज्या
तानकै मिथ्यारूपपणां है। सो ही कहिये है पहले यह कार्यत्व नामा हेतु कह्या सो याका कहा स्वरूप है स्वकारण।

सत्तासमवायस्वरूपकार्यत्वहै। किअभूत्वाभावित्वहै। किअक्रियादर्शीकेंकृतबुद्धिउत्पादकपणांहै। किकार
णकेव्यापारकेंअनुविधायीपणांहै इनिसिवायगतिकाअभावहै। असैंव्यारिपक्षपूछियेहैं तहांजोआदि
कापक्षकहैगातौयोगीश्वरनिकेंसमस्तकर्मकानाशनामा जोकार्यसोभीकार्यवपक्षपक्षमैंहीहैताविषै
कार्यत्वनामाहेतकीअप्रवृत्तिहैयातैंहेतुभागसिद्धहोयगा जोहेतुपक्षकेकोईदेशमैंनव्यापैसोभा
गासिद्धकहियै। सोइसकर्मकानाशविषैस्वकारणसमवायभीनाहीं अरसत्तासमवायभीनाहीं। ब
स्तुकीसत्तासूंएकतानाहोयसोतौसत्तासमवायकहियेबहुरिवस्तुकेकारणसूंएकताहोयसोस्वकारणसम
वायकहिये। सोकर्मकानाशप्रध्वंशनामाअभावस्वरूपहैसोयामैंसत्ताभीअरसमवायभीनाहीं। जातैंस
त्तातौद्रव्यगुणक्रियाकेंआधारमानियेहै। बहुरिसमवायद्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषइनिपांच
पदार्थमैंवर्त्तनैंवालामानियेहै यहनैयायिकवैशेषिककामतहै। तहांपृथ्वी १ अप १ तेज १ वायु १
आकाश १ दिशा १ आत्मा १ काल १ मन १ एनवतौद्रव्यमानैंहैं बहुरिबुद्धि १ सुख १ दुःख १ इच्छा
१ द्वेष १ प्रयत्न १ संस्कार १ धर्म १ अधर्म १ रूप १ रस १ गंध १ स्पर्श १ संख्या १ परिमाण
१ पृथक्त्व १ संयोग १ विभाग १ परत्व १ अपरत्व १ गुरुत्व १ द्रवत्व १ स्नेह १ शब्द १ एचौ
ईसगुणमानैंहैं बहुरिप्रसारण १ आकुंचन १ उत्क्षेपण १ गमन १ आगमन १ एपांचकर्ममा

Dr BHAU DAJI MEMORIAL

नैंहैं। परसामान्यअपरसामान्यएदोयप्रकारसामान्यमानैंहैं विशेषअनेकहैंसोइनिमैंअभावनाहीं
अभावनामापदार्थसातवांन्यारहै। बहुरिकहै जोअभावकापरित्यागकरिइहांभावहीविवादास्पा
दकरिपक्षकीयाहैतातैंतुमनैंदोषबतायासोइहांनाहीप्रवेशकरैहै। ताकूंकहियेजोअभावकूंका
र्यकापक्षमैंनलीजियेतौमुक्तिकेअर्थीजेमुनितिनिकेंईश्वरकाआराधनांअनर्थकठहरैगा। जातैंति
सकर्मनाशकेकार्यविषैईश्वरकाआराधनांकिछूकरनैंवालानाहीं। बहुरियहसत्तासमवायकार्य
कास्वरूपमाननांविचारकीयेसैंकडांप्रकारकरिखंड्याजायहैतातैंकार्यत्वहेतुस्वरूपासिद्धहै
जातैंसौसत्तासमवायपदार्थनिकेंउत्पत्तिभयेंहोयहै किनयजतेंकैंहोयहै। जोकहैगाउत्पत्तिभयें
होयहैतौतहांभीपूछियेजोछतेनिकेंहोयहै किअणछतेनिकेंजोकहैगाअणछतेनिकेंहोयहैतौ
गदहाकैसींगआदिकेंभीसत्तासमवायकाप्रसंगआवेगा। बहुरिकहैगाजोछतेपदार्थनिकेंहोय
है तौतहांपूछियेजोसत्तासमवायतैंहोयहै किआपहीतैंहोयहैतहांप्रथमसत्तासमवायतैंकहैगा
तौअनवस्थाकाप्रसंगआवेगा। जातैंपहलैंपूछ्याथाजोछतेपदार्थकेहोयहै किअणछतेनिकेंसो
हीविकल्पफेरिपूछियेतबअनवस्थाचलीजायबहुरिकहैगापदार्थनिकेंआपहीतैंसत्तासमवायहै
तौजुदासत्तासमवायकामाननांअनर्थकहै बहुरिदूजाकहैजोपदार्थउपजतेसतेनिकेंसत्तासमवा

पर्य है। जातैं पदार्थनिकी निष्पत्ति अर संबंध इनि दोऊनिकै एककालपणांका अंगीकार है। तो पूछिये
जो यह सत्तासंबंध है सो उत्पादतैं भिन्न है कि अभिन्न है। जो कहैगा भिन्न है तौ उत्पत्तिकै असत्वतैं अविशे
ष भया तौ उत्पत्तिकै अर अभावकै भेद कैसैं भया। बहुरि कहैगा उत्पत्ति करि सहित वस्तुकै सत्व है तातैं
उत्पत्ति भी तैसा नाम पावै है तौ ऐसा कहनां भी मूर्खपणां करि ही है। जातैं इहां उत्पत्तिका सत्वका वि
चार है तहां वस्तुका सत्व कहनां कैसैं बनैगा। बहुरि यामैं इतरेतराश्रय दोष आवैगा। वस्तु विषै उ
त्पत्तिका सत्व होतैं तिस ही काल भया सत्तासंबंधका निश्चय होय अर तिसका निश्चय होय तब ही ति
स वस्तुकै सत्व करि उत्पत्तिका सत्वका निश्चय होय ऐसैं इतरेतराश्रय होय है। बहुरि इस दोषकै
दूरि करनेकी इच्छा करि उत्पत्तिकै अर सत्तासंबंधकै एकता मानियै तौ सत्तासंबंध ही कार्यत्व भया ता
तैं बुद्धिमानहेतुकपणांकै ही तैं आकाश आदिकरि हेतुकै अनैकांतिक भया जातैं आकाश आदि विषै स
त्तासंबंध तौ है अर कार्यपणां नाहीं नित्य वस्तुकै कार्यपणां होय नाहीं तातैं बुद्धिमानहेतुकपणां भी नाहीं
ऐसैं सत्तासमवाय तौ कार्यत्व नाहीं तैसैं ही स्वकारणसंबंध भी कार्यत्व नाहीं जो अवस्था सत्तासंबंधमैं है सो
ही इहां भी लगावणां। बहुरि कहै है तौ स्वकारणसमवाय अर सत्तासमवाय दोऊ संबंध कार्यत्व है। तो सो
भी युक्त नाहीं है। तिनि संबंधनिकै भी कदाचित्कालपणां होतैं तौ समवायकै अनित्यताका प्रसंग आवै जैसैं ४२

घटआदिककै अनित्यता है तैसैं। बहुरि सदाकाल कहै है तौ सर्वकाल तिस कार्यपणांका उपलंभ कहिये प्रा
प्तिका प्रसंग आवै। बहुरि इहां कहै है जो वस्तुनिकै उत्पादककारणनिकी निकटता न होय तब सम
वाय न होय यातैं सर्वकाल उपलंभका प्रसंग न आवै है तहां पूछिये है जो वस्तुकी उत्पत्तिकै अर्थि तौ
कारणनिका व्यापार है। अर उत्पाद स्वकारणसत्तासमवायस्वरूप है। सो यह सर्वकाल है ही ऐसैं
तौ कारणका ग्रहण अनर्थक ही है। बहुरि कहै है जो वस्तुकै कारणका ग्रहण उत्पत्तिकै अर्थि तौ ना
ही अभिव्यक्तिकै अर्थि है। सो यह भी कहनां वार्तामात्र ही है। वस्तुकै उत्पादकी अपेक्षा करि अभिव्य
क्ति कहनां बणैं नाहीं। वस्तुकी अपेक्षा अभिव्यक्ति कहिये तौ ताविषै रणकै आवनै पहलैं भी कार्यव
स्तुका सद्भावका प्रसंग आवै है। बहुरि उत्पादिककै अभिव्यक्ति भी असंभवरूप है। जातैं स्वकारणसं
बंध है लक्षण जाका ऐसा जो उत्पाद ताकै वस्तुकै कारणकै व्यापार पहलैं सद्भाव नाहीं तैं वस्तुका स
द्भावका प्रसंग आवै है। जातैं वस्तुकै सत्वका सो ही लक्षण इहां है। सो पहलैं सत्तरूप होय ताकै ही को
ई कारण करि आछादित होयपनांकी अभिव्यंजक करि अभिव्यक्ति होय है जैसैं घटआदि वस्तु अंधकार करि
आछादित होयपनव दीपक आदि अभिव्यंजक करि ताकी व्यक्ति होय है तैसैं इहां भी जाननां। तातैं अभिव्यक्ति
कै अर्थि कारणका ग्रहण करनां युक्त नाहीं। तातैं स्वकारणसत्तासंबंध तौ कार्यत्व नाहीं है। ६। बहुरि

अभूत्वाभावित्वनामा दूसरा पक्ष है सो भी कार्यत्वना ही है। ताकै भी विचारका सहवापणां नाही है परीक्षा
कीयें अयुक्त ही है। जातें अभूत्वाभाविपणां है सो पहलें नहीं पकरि आगामी होयतां कू कहियें है। सो
भिन्नकाल विषै जो दोय क्रिया ता का आधारभूत जो कर्ता ता कै सिद्धि होतें सिद्धि होय है। जातें अतीत।।
कालवाची जो क्त्वाप्रत्ययांत पद करि विशेषित जो वाक्य का अर्थपणां तिसरूप है। जैसें भुक्त्वा व्रज
ति इत्यादि वाक्यार्थ है कोई पुरुष भोजन करि चलै है। तहां भुक्त्वा ऐसा तो अतीत काल भया पीछैं च
लै है सो यह भावी काल है सो इहां दोऊ काल विषै क्रिया दोय का आधार पुरुष है सो इहां कार्यत्व।
विषै भवन अभवन कहिये होना न होना रूप जो दोय क्रिया ता का आधारभूत एक कर्ता का अनुभव
नाही है। जातें अभवन का आधार कै अविद्यमानपणां करि भवन का आधार कै विकै विद्यमान।
पणां करि भाव अभाव का एक आश्रय कै विरोध है भावार्थ कार्य है सो भावस्वरूप ही है अभावस्वरूप
नाही है। अर जो अविरोध मानिये तो तिनि दोऊनि कै पर्यायमात्र करि ही भेद आवै वस्तुभेद नाही आवै
अथवा कोई प्रकार अभूत्वाभावित्व है सो कार्यत्वका स्वरूप होऊ। तो ऊ तनु आदिक सर्व विषै नाही मा
नें तैं हेतु भागासिद्ध होय है। जातैं हमारे पृथिवी पर्वत समुद्र उद्यान आदि पहली न होय करि होते नही।
मानिये हैं। जातैं हमारे जैनीनि कै पृथ्वी आदिका सदाकाल अवस्थान मानें हैं। बहुरि कहै है जो पृथिवी आ ४२

दि कै अवयवसहितपणां करि आदिसहितपणां साधिये है। सो ऐसा कहनां भी विना सोचि करि कह्या
है। जातैं इहां दोय पक्ष पूछिये अवयवनि विषै अवयवी की प्रवृत्ति है कि अवयवनि करि आरंभिये है
यातैं है इनि दोऊ ही पक्षनि विषै अवयवसहितपणां की अनुपपत्ति है। जो प्रथम पक्ष लीजिये तो अ
वयवसामान्य करि अनेकांत है। जातैं अवयवसामान्य है सो अवयवनि विषै वर्तै है अर कार्य नाही
है। बहुरि दूसरा पक्ष जो अवयवनि करि अवयवी आरंभिये है तो साध्य तैं अविशिष्ट है जातैं आदिस।।
हितपणां साधिये है सो ही अवयवनि करि आरंभिये है ऐसा हेतु कह्या पामै साध्य तैं विशेष कह्या भ
या। बहुरि कहै है जो प्रदेससंनिवेश है आकाररूप रचनाविशेष है सो ही सावयवपणां है सो ही घट आदि
की ज्यों पृथिवी आदि विषै पाइए है यातैं अभूत्वाभावित्व ही कहिये है। सो ऐसैं कहनां भी सुंदर नाही। सं।।
निवेश कै भी विचारका असहपणां है परीक्षा कीयें बणै नाही है। इहां दोय पक्ष पूछिये प्रदेससंनिवेश है
सो अवयवनि का संबंध है। कि रचनं का विशेष है। जो कहै है अवयवनि का संबंध है तौ आकाश आ।
दि करि अनेकांत होगा जातैं आकाश कै समस्त मूर्तीक द्रव्य का संयोग है कारण आकं ऐसा प्रदेशनि
का नानापणां का सद्भाव है। इहां कहै है जो आकाश कै विषै तौ प्रदेश उपचरित है तौ समस्त मूर्तीक द्रव्यनि
का संबंध कै भी उपचरितपणां आप्यात व आकाश कै सर्वगतपणां भी उपचरित व हस्या।। नव ऐसा कै

अर्थक्रियाकारीपणांनठहरैगा॥श्रोत्रइंद्रियआकाशतैंजुदैतवशब्दआकाशकागुणहैसोग्रहणहोयहै
ऐसैंनैयायिकमानैंहैंसोसंबंधउपचरितठहरैतवश्रोत्रकैअर्थक्रियाकारीपणांशब्दकाग्रहणक
रनांहैसोनवणैंगा॥तातैंआकाशउपचरितप्रदेशरूपमान्यांहै॥वहुरिकहैहैजोधर्मअधर्मकेसंस्कारतैं
श्रोत्रतैंअर्थक्रियाहोयहै॥ताकूंकहियेजोउपचरिततौअभावरूपहैसोताकैतिनिधर्मादिकरिउपका
रकाप्रयोगहैजैसैंगदहाकेसींगकैंकछूकाहूकरिउपकारनहोयतैसैंहै॥तातैंअवयवनिकासंबं
धस्वरूपजोसंनिवेशकह्यासोतौकिछूभीनाही॥वहुरिदूसरीपक्षरचनाविशेषहैसोमानियेतौहमा
रैजैनिनिकैपृथ्वीआदिरचनाविशेषकूंसावयवरूपकार्यस्वरूपनाहीमानियेहैतातैंयहहेतुभाग
सिद्धहै सोयहदूषणअवस्थितहोयहै॥ऐसैंअभूत्वाभावित्वहैसोविचारमैंनाहीवणैंहै॥वहुरिजोस
रापक्षअक्रियादर्शीकैंकृतवुद्धिकाउत्पादकपणांहै याकाअर्थयहजोकार्यकेउपजनैंकीक्रियातौन
देषीतौकृताविषैंऐसीवुद्धिउपजैजोयहकाहूनैंकीयाहैसोयहकार्यपणांमानियेतौतहांदोयपक्ष
पूछियेहै॥सोऐसीवुद्धिउपजैजोयहलैकाहूनैंसंकेतकीयाहोयजोऐसातौकीयाहीहोयहैताकैउप
जैहैकिविनाहीसंकेतउपजैहै॥जोकहैगासंकेतकेतकरनैंवालेकैउपजैहै॥तौआकाशआदिकैंभीवुद्धि
मानकरिकीयापणांठहरैगा॥तहांभीकहूंखोदिकरिमांटीकाढैतवखानांहोयजायआकाशप्रगटहो

यतहांऐसीवुद्धिउपजैहैजोयहआकाशकाहूनैंकीयाहैजातैंपूर्वैंखोदतादेष्याथातथाकाहूकेवच
नतैंनिश्चयकीयाथातहांऐसासंकेतभयाथाजोखोदैतैंआकाशनीकसैंहैतातैंइहांकृतवुद्धिउपजैहै
इहांकहैजोयहवुद्धितौमिथ्याहैतौतेरीभीवुद्धिअन्यविषैंकार्यकीउपजैहैसोमिथ्याक्योंनहोय॥वाधाका।
सद्भावअरप्रतिप्रमाणविरोधकाअन्यविषैंसमानपणांहै॥जोआकाशविषैंकृतवुद्धिमेंवाधकवतावैगा
सोहीतन्वादिकमैंआवैगावहुरिकर्ताकाग्रहणदोऊहीजायगांप्रत्यक्षनाहीहै॥इहाप्रमाणकीसमा।
नताकाप्रयोगऐसाएथिवीआदिकहैतेवुद्धिमानहेतुकनाहीहैंजातैंहमआदिकैंनाहीग्रहणक
रनेंयोग्ययाकापरिमाणअरआधारहैंजैसाआकाशआदिककापरिमाणआदिनाहीग्रहणमेंआ
वेहैंतैसैंयहूभीहैऐसाप्रमाणएथिवीआदिकाकर्ताकानिषेधकासमानहै॥तातैंकृतसमयकहि
येजानिंसंकेतकीयाताकैंतोएथिवीआदिकविषैंकृतवुद्धिकाउपजावनहारापणांनाहीहै॥वहुरि
अकृतसमयकहियेनाहीकीयाहैसंकेतजानैंताकैभीकृतवुद्धिकाउपजावनहारानाहीहै॥जातैंयह
असिद्धहैविनासंकेतकीयेंकृतवुद्धिउपजैनाहीजोउपजैतौविप्रतिपत्तिनाहीहोयसर्वहीकैंउपजैको
ईकहैजोअग्निशीतलहैतौजाकेअग्निकासंकेतनाहीसोऐसैंजानैंजोशीतलहीहोगीयामैंसंदेहनउ।
पजैतैसैं॥एथिवीआदिकार्यकाहूकैंकीयेवतावैतौकीयेहीमानैंनकीयेवतावैतैविनाकीयेहीमानैं॥वहु

पिवोथापक्षकारण व्यापारानुविधायिपणां है। याका अर्थ यह जो जैसा कारण का व्यापार होय तिस
के अनुसारि तैसारि तैसा ही कार्य होय। सो इहां दोय पक्ष पूछिये। तहां जो कारणमात्र ही की अपेक्षा
कहै तौ पक्ष विरुद्ध होय जातैं कार्य तौ अनुमानके ये भी होय है सो विपक्षकूं साध्या। तब कारण विशे
ष जो ईश्वर ताकी सिद्धि न भई तातैं विरुद्ध भया। बहुरि कारणविशेष की अपेक्षा कहै। तौ इतरेतराश्र
यनामा दूषण आवै। कारणविशेष जो बुद्धिमान ता तिसकी अपेक्षा करि कारणव्यापारानुविधा॥
यित्वस्वरूप कार्यत्व सिद्ध होय अर तिसतैं ताके विशेष की सिद्धि होय ऐसैं इतरेतराश्रय भया बहु
रि इहां संनिवेशविशिष्टपणां अर अचेतनउपादानपणां ये दोऊ भी हेतु हैं ते कहे जे दोष तिन क
रि दुष्ट है निर्बाध नाही तातैं त्यारे नाही विचारे हैं संनिवेशविशिष्ट तौ सुख आदि विषै नाही वर्तै तातैं भा
गासिद्ध हैं सुख आदि कार्य तौ हैं अर रचनाविशेषरूप नाही हैं बहुरि अचेतनोपादानपणां ज्ञानस्व
रूप कार्य विषै नाही तातैं भागासिद्ध है ज्ञान कार्यरूप तौ है अर अचेतनोपादानरूप नाही ऐसैं भागा
सिद्ध नामा दूषण तहां भी सुलभ है। बहुरि हेतु विरुद्ध है। जातैं दृष्टांत के अनुग्रह कहिये घट आदि दृ
ष्टांत का बलताकरि शरीररहित सर्वज्ञपूर्वक साधनकी या है अर घर का कर्त्ता कुंभकार है सो सशरीर स।
हीत असर्वज्ञ है तातैं हेतु विरुद्ध होय है। बहुरि कहै जो ऐसैं तौ धूमतैं अग्नि का अनुमान कीजिये है तामैं भी ४५

पह दोष आवैगा। सो देखनाही आवै है। जातैं तहां तिणांकी अग्नि तथा पान आदि की अग्नि सर्व ही अग्नि
मात्र विष्यापू जो धूम सो देषिये है तैसैं इनि हेतुनिमैं नाही देषिये है जो सर्वज्ञ तथा असर्वज्ञ जे कर्त्ता॥
का विशेष ताका आधार जो कर्त्तापणां सामान्य तिसकरि कार्यत्व नामा हेतु की व्याप्ति है। ऐसैं नाही देषि
ये है अर सर्वज्ञ जो कर्त्ता ताकी इस अनुमान पहलैं असिद्धि है इस ही अनुमान करि कर्त्ता साधिये है ब
हुरि ए हेतु व्यभिचारी हैं बुद्धिवान कारण विना भी बीजली आदि कार्य प्रगट होय हैं। बहुरि सूता आदि पु
रुष की अवस्था विषै बुद्धिपूर्वक विना भी कार्य होते देषिये हैं। बहुरि कहै जो शिव तिनि कार्यनि विषै।
भी अवश्य कारण है तौ ऐसा कहनां अति मुग्ध का विलास है। जातैं तहां शिव का व्यापार का असंभव है॥
जातैं शिव शरीररहित है अर ज्ञानमात्र ही करि कार्यकारीपणां बणै नाही। बहुरि इच्छा अर प्रयत्न ए दोऊ
शरीर विना संभवै नाही। ताका असंभव आप्तपरीक्षा आदि ग्रंथनि विषै पुरातन बडे आचार्यनि करि वि
स्तार करि कह्या है तातैं इहां नाही कहिये है। बहुरि जो महेश्वर कै क्लेश आदि रहितपणां अर निरतिशय
पणां अर ऐश्वर्य आदि साहितपणां कह्या सो सर्व ही आकाश के कमल की सुगंधता का वर्णन सा दिषा
है जातैं जाका आधार ईश्वर सिद्ध होय नाही तातैं हमारै आदरने योग्य नाही। तातैं महेश्वर कै सर्वज्ञपणां
कहै है सो नाही है। ऊ। बहुरि बुद्ध कै सर्वज्ञपणां कहै है सो भी नाही है जातैं ताका सद्भाव का कहनेवाला जनावनैवा

लाप्रमाणका अभाव है। तहां प्रथम तौ प्रत्यक्ष प्रमाण ताकूं जनावनें वाला नाही है। जो प्रत्यक्ष ब्रह्म दीषै तौ वि
प्रतिपत्ति नाही होय संदेह काहे कूं होय। बहुरि अनुमान भी ताकी सिद्धि करनें वाला नाही है जातैं ब्रह्मतैं अ
विनाभावी जो लिंग ताका अभाव है लिंग विनां अनुमान कैसें होय इहां ब्रह्मवादी कहै है प्रत्यक्ष प्रमाण
ब्रह्मका ग्राहक है ही जातैं नेत्र नुपमिकरि देषें लगता ही निर्विकल्प अभेदरूप सत्तामात्र की विधि दीषै है
ताका विषयपणां करि प्रत्यक्ष कानुत्पत्ति है। सर्व वस्तु एक सत्तारूप भासैं है। बहुरि जो सत्ता है सो ही
परमब्रह्मका रूप है। सो ही हमारे कह्या है। ताका श्लोकका अर्थ। प्रथम ही आलोचना कहिये दर्शन
मात्र ज्ञान है सो निर्विकल्पक है भेदरहित है जैसा बालक तथा मूक कहिये गूंगा बहरा आदि के ज्ञा
न होय है तैसा होय है सो पहली शुद्ध वस्तु तैं उपज्या है। भावार्थ शुद्ध सत्तामात्र अभेद ब्रह्मका रूप है। बहु
रि कोई कहै है विधि की ज्यौं परस्पर जुदा पणां रूप निषेध भी प्रत्यक्ष करि प्रतीति मैं आवै है तातैं विधि निषेध
रूप की सिद्धि होय है सो असैं नाही है जातैं प्रत्यक्ष का विषय निषेध नाही है। सो भी हमारे कह्या है। ताका।
श्लोकका अर्थ। पंडितपुरुष हैं ते प्रत्यक्ष प्रमाणकूं विधान करनें वाला कहै हैं। जातैं एकत्व जो अद्वैत ताके
कहनें वाला आगम है सो तिस प्रत्यक्ष करि न बाधिये है बहुरि अनुमान तैं भी ब्रह्मका सद्भाव भाइये है। ताका
प्रयोग। ग्राम वा गआदि पदार्थ हैं ते प्रतिभासमात्र मैं सर्व प्रवेश करि रहे हैं। जातैं प्रतिभासमानपणां सव ४६

डाक्टर भाऊदाजी स्मारक
DR. BHAU DAJI MEMORIAL

कै पाइये है। जो प्रतिभासै है सो सर्व प्रतिभास के मध्य प्राप्त भया जैसें प्रतिभास का स्वरूप असैं ही सर्व।
विवाद मैं आये पदार्थ प्रतिभासै हैं। असैं व्यारि प्रयोगरूप अनुमान तैं ब्रह्म सिद्ध होय है। बहुरि तिसके
आगम मैं भी वचन बहुत पाइए हैं। जो हूवा अर जो होयगा बहुरि यह वर्तमान है सो सर्व एक पुरुष ही
है असा वचन है। बहुरि श्लोक है ताका अर्थ। इदं सर्व कहिये यह जो प्रत्यक्ष सर्व दीषै है सो निश्चय।
तैं ब्रह्म है इस जगत मैं नानारूप किछू वस्तु नाही है अर लोक है सो तिस ब्रह्म के आराम कहिये विव
र्तरूप पर्यायनिकूं देषै है तिसकूं कोई न देषै है। असा वेद का वचन सुनिये है। इहां कोई पूछै परमब्रह्म
कै ही परमार्थ सत्त्व होतें घट आदि का भेद भासै है सो कैसैं है सो असा तर्क इहां नाही करनां जातैं सर्व।
ही घट आदि वस्तु हैं ते तिसके विवर्तपणां करि भासै हैं जैसें दर्पण के विषैं प्रतिबिंब प्रतिभासै है तैसें
है एक ही वस्तु के अपरमार्थरूप अनेक प्रतिबिंब प्रतिभासैं सो विवर्त कहिये। बहुरि एसैं ही भेद है
तिनिकै ब्रह्मका विवर्तपणां असिद्ध नाही जातैं प्रमाणकरि सिद्धि होय है। ताका प्रयोग। विवादमैं आ
या जो विश्वलोक सो एक कारणपूर्वक है। जातैं एकरूप तैं जुडि रह्या है। जैसैं घट हांडी हांकणां डीवा
आदिक हैं ते माटी स्वरूप हैं तातैं अन्वयरूप हैं सो एक माटी नामा कारणपूर्वक ही हैं। तैसे सतरूप करि जुडे।
सर्व वस्तु हैं तैसैं ही आगम भी ताका साधक है। ताका श्लोकका अर्थ जैसैं मांकडी है सो जालाके तंतुनिका

एक कारण है अथवा जैसें जलका चंद्रकांतमणि कारण है अथवा जैसें कूंपलनिका वडवृक्ष कारण
है तैसें सर्व जीवनिका एक ब्रह्म कारण है ॥ ऐसें ब्रह्मवादीनें अपना मत दृढ कीया ॥ अब ताकूं आचार्य
कहै है हे ब्रह्मवादी यह तैरा कहना जैसें मदिराका रसकूं पानकरि गदगद वचन कहै तैसें है अथवा
मांचरणं की हूं याप्त करि गहलाहोय मूर्ख विलास रैपथा कथंचित कहै तैसा है जातैं यह विचारमैं आ
वैनाही परीक्षामैं न आयसकै है जातैं जो तैं प्रत्यक्षकै सत्ता विषयपणां कह्या तहां दोय पक्ष पूछिये हैं ॥ नि
र्विशेष सत्ता विषयपणां कह्या कि विशेष सहित सत्ता का जनावनहारा कह्या ॥ तहां प्रथम पक्ष तौ न।
बणै है ॥ जातैं सत्ता कै सामान्यरूपपणां है तातैं विशेष की अपेक्षा रहितपणां करि सत्ताका प्रतिभास
होय नाही जैसैं गोत्व सामान्य है सो कावरा धोला आदि विशेष रहित प्रतिभासता नही ॥ जातैं ऐसा कह्या
है जो विशेषरहित सामान्य है सो सुसाकै सींगसमान अवस्तु है ॥ वहुरि सामान्यरूपपणां सत्ताका सत्
सत् ऐसा अन्वयरूप बुद्धिका विषयपणां करि प्रसिद्ध ही है ॥ वहुरि दूसरा पक्ष कहैगा तौ परमपुरुष की
सिद्धि न होयगी जातैं परस्पर न्यारे न्यारे हैं आकार जिनिकै ऐसे विशेषनिका प्रत्यक्ष तैं प्रतिभास होय
है वहुरि अनुमानका साधन कह्या जो प्रतिभासमानपणां सो भी सम्यक् समीचीन नाही जातैं विचारमैं व॥
णता नाही ॥ तहां दोय पक्ष पूछे हैं यह प्रतिभासमानपणां स्वतैं होय है कि परतैं होय है जो कहैगा स्वतैं होय

है तौ नाही वणैगा ॥ जातैं हेतु असिद्ध है ॥ जातैं पदार्थनिका स्वयमेव प्रकाशन है तौ नेत्रमीचिये अथवा प्रका॥
शनाही होय तहां भी प्रतिभासनें होऊ ॥ सो नाही हो है तातैं असिद्ध है ॥ वहुरि कहैगा परतैं होय है तौ विरुद्ध है प
रतैं प्रतिभासनां परविनां न वणैं ॥ वहुरि प्रतिभासमात्र भी नाही सिद्ध होय है जातैं तिस प्रतिभासकै ताकै
विशेषनितैं अविनाभावीपणां है वहुरि प्रतिभासकै विशेष मानिये तौ द्वैतका प्रसंग आया ॥ वहुरि कि।
छू विशेष कहै है ॥ अनुमानका उपायभूत जे धर्मी हेतु दृष्टांत ए प्रतिभासैं हैं कि नाही जो कहैगा प्रतिभासैं
है तौ प्रतिभासमांही प्रवेश भये प्रतिभासैं हैं कि तातैं वाह्य न्यारे प्रतिभासैं हैं ॥ जो कहैगा प्रतिभासमां ही।
प्रतिभासैं हैं तौ साध्यकै मांही ही आय पडे तिनितैं अनुमान कैसें होय ॥ वहुरि प्रतिभासकै वाह्य प्रति।
भासैं है तौ हेतु के तिनि ही करि व्यभिचार भया ॥ वहुरि जो कहै प्रतिभासैं नाही है तौ धर्मी आदिका व्यवस्था
का अभाव है तब तिनि विनां अनुमान कैसैं होयगा ॥ वहुरि ब्रह्मवादी कहै है ॥ जो अनादि अविद्याके उदयतैं प
ह सर्व अंस वह है ॥ न सो आचार्य कहै है ऐसें कहनां भी महा अज्ञानका विलास है ॥ जातैं अविद्या विषै भी पहलें
कहे जे दोष तिनिका प्रसंग है ॥ वहुरि कहै जो अविद्या सर्व विकल्पनितैं रहित है तातैं दोष नाही ॥ ऐसैं है सो।
यह कहनां भी अतिमुग्धका वचन है ॥ जातैं अविद्याका कोई ही रूप करि प्रतिभासका अभाव होतैं तिसका स्वरूप
ही अवधारणमैं आवै नाही ॥ वहुरि अवर भी इहां विस्तार करि विचार है सो देवागमस्तोत्रका अलंकार जो अष्ट

परी० मु० ४९

सहस्री ताविषैं है तातैं इहां विस्तार न कीजिये है। बहुरि समस्त भेदनिकै परम ब्रह्म का विवर्त्त पणां कह्या
तहां एकरूप करि अन्वयपणां हेतु है सो अन्वय करनेवाला अरु अन्वीयमान कहिये जाका अन्वय करिये
सो वस्तु दोय परनि दोऊनि करि अविनाभावीपणां करि पुरुषाद्वैतकूं निषेधै है यातैं अपनां इष्ट जो अद्वैत ब्रह्म
ताका विघातकारीपणांतैं विरुद्ध है। बहुरि अन्वितपणां है सो एक हेतु कहे घट आदिक विषै अर अनेक
हेतु कहे स्तंभ कुंभ कमल आदि विषै दोऊ विषै पाइए है तातैं अनेकांतिक है। बहुरि पूछिये जो यह अद्वैत ब्र
ह्म है सो जगतनामा कार्यकौं न अर्थि करै है। तहां च्यारि पक्ष हैं एक तौ अन्यका प्रेर्या करै दूसरैं कृपाकै व
शतैं करै तीसरां क्रीडाकै वशतैं करै चौथें स्वभावहीतैं करै। तहां जो कहै अन्यका प्रेर्या करै है तौ स्वाधीनप
णांकी हानि भई अर द्वैतका प्रसंग भया। बहुरि कृपाकै वशतैं करनां कहै तौ कृपा विषै दुखीनिका तौ न।
करनैं का प्रसंग आवै जगतमैं दुःखी हैं ही। अर तिस कै कृपाका करणां तौ परकै उपकार करणैं तैं वणैं
बहुरि सृष्टि रचैं पहली प्राणी हैं नाहीं तिनिकी कृपा कै अर्थि नवीन सृष्टि रचै तौ कृपाकै अर्थि रचनां युक्त हो
य। बहुरि कृपा विषै तत्पर होय ताकै प्रलय का विधान युक्त होय नाहीं। बहुरि कहै है प्रलय तौ प्राणीनिकै अ
दृष्ट जो पाप ताके वशतैं होय है तौ ऐसैं तौ स्वाधीनपणांकी हानि ही यहै है कृपा विषै तत्पर होय ताकैं पीड़ा
का करणां अर अदृष्ट पापताकी अपेक्षाका अयोग है। ३ बहुरि क्रीडाकै वशतैं करनां कहै तौ क्रीडा अर्थि प ४८

वृत्ति करनैंमैं प्रभुपणां नाहीं। जैसैं बालक क्रीडा करनैंकूं उपाय गींदड़ी आदि वणावैं तैसैं ठहरै यामैं कहा वड़ा
ई। बहुरि क्रीडाकूं उपाय वणाया जो जगत अर याकरि साध्य जो सुख ताकी एककाल उत्पत्ति भई चाहिये जातैं
समर्थ कारणकै होतैं कार्यका अवश्य होनां होय जो समर्थ कारण न होय तौ अनुक्रमतैं भी तिसतैं कार्य न हो
य जैसैं दीपक है सो कज्जलका पाडनां तेल शोषणां बातीका बालनां प्रकाश करनां एककाल करै है यह
सामर्थ्य है अर ऐसैं न होय तौ अनुक्रम करि भी एक कार्य न होय। बहुरि कहै है ब्रह्म स्वभावहीतैं जगत कूं र
चै है। जैसैं अग्नि स्वभावहीतैं बालै है पवन स्वभावहीतैं चलै है तौ यह कहनां भी अज्ञानका वचन है॥
यहलैं कहै जे दोष तिनिमैं नाहीं सर्व दोष आवै हैं। सो ही दिखावै है ताका प्रयोग। समस्त अनुक्रमतैं उ
पजता जो विवर्त्तका समूह। सो एककाल उपजै। जातैं तिस सहकारीकारणकी अपेक्षा कीजिये सो।
भी ब्रह्म स्वकरि साधनैं योग्य है ताका एककाल संभव है। भावार्थ सर्व ही ब्रह्मके कार्य मानिये हैं तहां ब्र
ह्म तौ समर्थ कारण है ही बहुरि सहकारी चाहै तौ भी तिस ही का कार्या होय तब सर्व जगत एककाल उप
ज्या चाहिये। बहुरि अग्नि पवनका उदाहरण दीया ताकौं भी विषमपणां है। कोई काल विषै स्वहेतु जो का
ष्टादिक ताकरि उपज्या अग्निकै दहन करनैं की शक्तिस्वरूप है तिस देशकालमैं भया ताहीहै अर ब्रह्म वि
षै तौ नित्यपणां सर्वव्यापीपणां अर सर्वसामर्थ्यस्वरूप एकस्वभावरूप कारणकरि उपजावापणां है॥

सो देश काल का न्यारा न्यारा नियमरूप कार्यनि विषै वर्णों नाहीं। सो ऐसैं ब्रह्म की असिद्धि होतैं वेदनि मैं ना।
की सुप्त अवस्था का कहनां अरु ताकी जागृत अवस्था का कहनां अर तिस परमपुरुष नामा महा भूतना
का निश्वास वेद है ऐसा कहनां आकाश के कमल की सुगंध का वर्णन सारिखा है। सो अग्राह्य पदार्थ है
विषय जाका तिस स्वरूप होनैं तैं आदरनैं योग्य नाहीं है अर सत्यार्थ कूं कौन आदरै बहुरि जो ब्रह्म के साधनैं
विषै आगम प्रमाण कह्या सर्वं वै खल्विदं ब्रह्म इत्यादि बहुरि ऊर्णनाभ इत्यादि सो सर्व ही कहै विधान।
करि अद्वैत का विरोधी है यातैं अवकाश नाहीं पावै है। बहुरि आगम कूं अपौरुषेय कहै है सो वर्णों नाहीं
या का विस्तार आगैं कहसी तातैं पुरुषोत्तम परमेब्रह्म कहैं सो भी परीक्षा मैं नाहीं आवै है। ऐसैं मुख्यप्र
त्यक्ष का वर्णन कीया तहां सर्वज्ञ की सिद्धि यथार्थ करी अन्यवादी की बाधा का परिहार कीया। इहां टी।
काकार छत श्लोक है प्रत्यक्षेतरभेदभिन्नममलं मानं द्विधैवोदितं देवैरीमगुणैर्विचार्य विधिवत्संख्या
ततेः संग्रहात् मानानामिति तन्निरिगप्यभिहितं श्री स्वनंद्याद्यैः पैस्तद्व्याख्यानमदो विशुद्धधिषणैर्वोद्ध
व्यमव्याहतं ॥१॥ या का अर्थ॥ देवैः कहिये श्री अकलंकदेव आचार्य जैसे विधि जिनागम मैं है तैसैं।
विचारि अर प्रत्यक्ष परोक्ष भेद करि भिन्न निर्दोष प्रमाण दोय प्रकार ही कह्या कैसे हैं आचार्य दीप्त कहि
ये देदीप्यमान है सम्यग्दर्शन आदि गुण जिनि मैं बहुरि प्रमाणनि की संख्या की पंक्ति का संग्रह कहिये ४९

संक्षेप तैं तिनि प्रमाणनि का उपदेश श्री माणिक्यनंदि नामा आचार्य भी ऐसैं ही कह्या। बहुरि तिनि का
व्याख्यान यह मैं अनंतवीर्य आचार्य नैं कीया है सो विशुद्धबुद्धीनि कै माननैं योग्य है कैसा है व्याख्यान अ
व्याहत कहिये बाधा रहित है ॥१॥ बहुरि श्लोक मुख्यसंव्यवहाराभ्यां प्रत्यक्षमुपदर्शितं देवैस्तमुपजी
वद्भिः सूरिभिर्ज्ञापितं मया ॥२॥ या का अर्थ॥ प्रत्यक्ष प्रमाण मुख्य संव्यवहार के भेद करि दोय प्रकार
अकलंकदेवजी नैं कह्या सो ही माणिक्यनंदिजी नैं दिखाया सो ही मैं अनंतवीर्य नैं जणाया है ॥छ॥ सवइया
तेईसा॥ श्री अकलंक मुनीश भणे परतक्ष परोक्ष प्रमाण जु दोऊ। नाम धि रूप रतक्ष कह्यौ व्यवहार
यथारथ भेद है सो ऊ। माणिक्यनंदि लयो अनुसार कह्यो तसु आगम जान हु काऊ। वृत्ति रची जु अनंतसु
वीर जिनेश कथा मय मैं सब जो ऊ ॥१॥ ॥छ॥ ऐसैं परीक्षामुख नाम प्रकरण की लघुवृत्ति की वचनिका
विषै द्वितीय समुद्देश समाप्त भया ॥२॥ आगैं अब प्रत्यक्ष परोक्ष भेद करि प्रमाण दोय प्रकार कह्या ता
विषै प्रथम भेद जो प्रत्यक्ष ताका व्याख्यान करि अरु परोक्ष प्रमाण कूं कहै है ॥छ॥ परोक्षमितरत् ॥१॥
या का अर्थ॥ प्रत्यक्ष तैं इतर कहिये अन्य विलक्षण सो परोक्ष है॥छ॥ इहां कह्या जो प्रत्यक्ष ताका प्रति
पक्षी कूं इतर शब्द कहै है तातैं तिस प्रत्यक्ष तैं इतर ऐसा पाइये सो परोक्ष प्रमाण है प्रत्यक्ष का स्वरू
प विशद कह्या था इहां अविशद ग्रहण करनां॥छ॥ आगैं या के सामग्री अर स्वरूप भेद कहनें संतैं सूत्र क

है हैं ॥ छ ॥ प्रत्यक्षादिनिमित्तं स्मृतिप्रत्यभिज्ञानतर्कानुमानागमभेदं ॥ २ ॥ याका अर्थ ॥ प्रत्यक्ष आदि प्र
माण हैं निमित्त जाकूं ऐसा परोक्ष प्रमाण है ताके पांच भेद हैं स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क अनुमान आगम
ऐसें तहां प्रत्यक्ष अर आदि शब्द करि परोक्ष ग्रहण करनां एक दोऊ निमित्त हैं उत्पत्तिकूं कारण हैं सो
तो यथा अवसर निरूपण करियेगा ॥ बहुरि प्रत्यक्ष आदि हैं निमित्त जाकूं ऐसा समास करनां स्मृति आ
दि विषै द्वंद्व समास करणां ॥ छ ॥ आगें अनुक्रम में आया जो पहलें स्मृति प्रमाण ताहि दिषावतेसंते सूत्र क
है हैं ॥ छ ॥ संस्कारोद्बोधनिबंधना तदित्याकारा स्मृतिः ॥ ३ ॥ याका अर्थ ॥ संस्कार का जो उद्बोध कहिये प्रगट
होणां सो है निबंधन कहिये कारण जाकूं बहुरि तत् कहिये जो पूर्वें अनुभव में आया था ताका सो है ऐ
सैं याकिआवनां ऐसा जाका आकार है ऐसी स्मृति है ॥ स्मृति भवति ऐसी क्रिया सूत्र में वाक्यशेषतें लेणीं
॥ छ ॥ आगें याका उदाहरण कहै हैं ॥ छ ॥ स देवदत्तो यथा ॥ ४ ॥ याका अर्थ ॥ जैसें पहलें काहू पुरुषकूं दे
ष्याथा सो वर्त्तमान मैं मन विषै याद आया जो सो फलाणां पुरुष ऐसा स्मृति प्रमाण है ॥ छ ॥ आगें प्र
त्यभिज्ञान प्रमाण कहनें का अवसर है सो कहै है ॥ छ ॥ दर्शनस्मरणकारणकं संकलनं प्रत्यभिज्ञानं त
देवेदं तत्सदृशं तद्विलक्षणं तत्प्रतियोगीत्यादि ॥ ५ ॥ याका अर्थ ॥ वर्त्तमानका दर्शन पूर्व देष्याताका स्मर
ण ये दोन्यों हैं कारण जाकूं ऐसा जो जोडरूप ज्ञान ताकूं प्रत्यभिज्ञान कहिये ॥ सो च्यारि प्रकार है वर्त्तमान मैं का ५०

हू वस्तुकूं देषि करि अर ताकूं पूर्वें देष्याथा ताकूं यादि करि ऐसा जांन्यां जो यह सो ही है ऐसा तो एकत्व प्रत्य
भिज्ञान है ॥ बहुरि वर्त्तमान मैं देष्या तिस सारिषा पूर्वें देष्याथा ताकूं यादि करि ताकूं जांन्यां जो यह ति
स सारिषा है सो सादृश्य प्रत्यभिज्ञान है ॥ बहुरि वर्त्तमान मैं काहूकूं देषि करि तिसतें विलक्षण पूर्वें
देष्याथा ताकूं यादि करि तिसतें विलक्षण जांन्यां जो यह तिसतें विलक्षण है सो तद्विलक्षण प्रत्यभि
ज्ञान है ॥ बहुरि पूर्वें देष्याथा तिसका वर्त्तमान मैं प्रतियोगी कहिये जिसतें अवश्य जोड मिलि जाय
ऐसा अन्य पदार्थकूं देषि जांन्यां जो यह तिसका प्रतियोगी है सो तत्प्रतियोगी प्रत्यभिज्ञान है आ
दि शब्दतें और भी पूर्वापर का जोडरूप ज्ञान होय सो जाननां ॥ ईहां दर्शन स्मरण कारणपणांतें साद
श्यादिक जाका विषय होय सो भी प्रत्यभिज्ञान ही कह्या है ॥ बहुरि जिनिके मतमैं सादृश्य विषयकूं
उपमान नामा जुदा प्रमाण कह्या है तिनिके मतमैं वैलक्षण्यादिक जाका ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ विषय ऐ
सा ज्ञान भी अन्य प्रमाण ठहरैगा सो ही कह्या है ॥ सा ॥ का श्लोक का अर्थ ॥ प्रसिद्ध पदार्थ के समान धर्म
पणांतें साध्यका साधनां सो तौ उपमान प्रमाण नियें तौ तिसके असमान विलक्षण धर्मतें साध्य सा
धनां सो प्रमाण कहा कहिये किछू कह्या चाहिये बहुरि जहां संज्ञा जो नाम रूप पदार्थ ताका प्रतिपाद
न जो संज्ञा पहलें सुणीथी तातें जोडरूप प्रतिपादन करिये सो प्रमाण न्यारा कहनां ऐसें उपमानकूं

परी० मु० न्याराप्रमाणमानिंदोषआवैहै ॥ छ ॥ वहुरियहयातेंअल्पहैयहयातेंवहुतहैयहयातेंदूरहैयहयातेंनिक
५१ टहै यहयातेंऊंचाहैयहयातेंनीचाहै ॥ वहुरिइनिकेनिषेधयहयातेंअल्पनाहींहैइत्यादि ॥ ऐसेंप्रत्य
क्षदेष्यापदार्थविषैपरस्परअपेक्षातेंअन्यभावकानिश्चयहोयहै ॥ सोयेअन्यप्रमाणठहरैंतबअ
पनेंइष्टजोप्रमाणकीसंख्याताकाविघटनहोयहै ॥ तातेंउपमानप्रमाणन्यारामाननांयुक्तनाहीं ॥ छ ॥
आगैंइनिप्रत्यभिज्ञानकाभेदनिकाअनुक्रमकरिउदाहरणदिषावतासंतासूत्रकहैहै ॥ छ ॥ यथा
सएवायंदेवदत्तःगोसदृशोगवयःगोविलक्षणोमहिषःइदमस्माद्दूरंवृक्षोयमित्यादि ॥ ६ ॥ याका
अर्थ ॥ जैसेंकाहूपुरुषकूंदेषिकरिकहैहैयहयहपहलेंदेष्याथासोहीपुरुषहैयहतोएकत्वप्रत्यभिज्ञा
नकाउदाहरणभया ॥ वहुरिकाहूनैंवनविषैगवयनामतिर्यंचप्राणीदेषिकरिजाण्यांजोगऊयहप
हलैंदेष्याथातिससारिषायहगवयहैयहसादृश्यप्रत्यभिज्ञानकाउदाहरणहै ॥ वहुरिभैंसाकूंदेषि
करियहजान्यांजोयहपहलेंगऊदेष्याथातातेंविलक्षणयहभैंसाहै ॥ यहतद्विलक्षणप्रत्यभिज्ञानकाउदा
हरणहै ॥ वहुरिकाहूवस्तुकूंनिकटदेषिकरिअन्यकाहूकूंऐसेंजान्यांजोयहयातेंदूरहैयहतत्प्रति
योगीप्रत्यभिज्ञानकाउदाहरणहै ॥ वहुरिकाहूवृक्षकूंदेषिकरिवृक्षसामान्यकीसंज्ञाकूंयादिकरि
जानैंजोयहवृक्षहैयहभीप्रत्यभिज्ञानहै ॥ वहुरिआदिशब्दकरिअन्यभीउदाहरणहैंजैसेंपहलेंसुण्या ५१

Dr BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊ दाजी स्मारक

थानथादेष्याथाजोजलकाअरदूधकाभिन्नकरनेंवालाहंसहोयहै ॥ वहुरिकाहूंजलदूधकूंभिन्नकर
तादेषिजान्यांजोयहहंसहैयहभीप्रत्यभिज्ञानभया ॥ वहुरियहलीसुण्यांथाजोछहपादकाभ्रमरहोय
है ॥ वहुरिछहपाददेषिकरिपहलैंसुण्यांताकूंयादिकरिजाण्यांजोयहभ्रमरहै ॥ यहभीप्रत्यभिज्ञानभ
या ॥ वहुरिपहलैंसुण्याथाजोसातपानजाकैएकलगमैंहोयसोविषमच्छदवृक्षहोयतबसातपत्रदे
षिपहलैंसुण्यांताकूंयादिकरिजान्यांजोयहविषमच्छदहैभीमसेनीकर्पूरकीउपजावनेंवालीकेलि
ताकूंभीविषमच्छदकहैहैं ॥ यहभीप्रत्यभिज्ञानहै ॥ वहुरिपहलैंसुण्यांथाजोपंचवर्णकामेचकनामारत्नहो
यहैतबकाहूंपंचवर्णकादेषिकरिपहलैंसुण्यांताकूंयादिकरिजानैंयहमेचकनामरत्नहैयहभीप्र
त्यभिज्ञानभया ॥ वहुरिपहलैंसुणीथीजोजाकैकुचवडेभारेविस्तारसहितहोयसोस्त्रीहोयहैपीछैंभा
रेस्तनदेषिपहलैंसुणीकूंयादिकरिजानैंजोयहस्त्रीहै ॥ यहभीप्रत्यभिज्ञानहै ॥ वहुरिपहलैंसुण्याथाजो
जाकैएकसींगरवगहोयसोगैंडाहोयहैपीछैएकसींगदेषिपहलैकूंयादिकरिजाण्यांजोयहगैंडाहै ॥ यह
भीप्रत्यभिज्ञानहै ॥ वहुरिपहलैंसुण्यांथाजोजाकैआठपगहोयसोसरभहोयहैपीछैंआठपगदेषिपह
लैंसुणेंकूंयादिकरिजाण्यांजोयहसरभहैसरभऐसानामअष्टापदकाहै ॥ यहभीप्रत्यभिज्ञानहै ॥ वहुरि
पहलैंजाण्यांथाजोजाकैसुंदरमस्तकपरिसटाकहियेकेसनिकीलरीवहुतहोयसोसिंहहोयहैपीछैं

सदाकूं देषिकरि पहलैं जाएयां कूं यादि करि जांनें प्रत्यभिज्ञान है ऐसैं इनिकूं आदि देकरि उदाहरण हैं
इनिके नामके शब्द सुणि वहुरि तैसा ही हंस आदिकूं देषिकरि षहु लैं सुणे कूं यादि करि तैसें ही प्र
तीति करैं तब तिनिका संकलन रूप जो ज्ञान भया सो प्रत्यभिज्ञान कह्या है। जातैं इनिमैं देषनां
अर यादि करनां ए दोऊ कारन सर्वमैं समान हैं वहुरि अन्यमतीनिकै न्यारे प्रमाण ठहरे हैं ता
तैं उपमान प्रमाण आदि विषै इनिका अंतर्भाव नाहीं है। यहै तव प्रमाण की संख्या विगडै है छ॥
आगैं ऊह कहिये तर्क प्रमाण का कहनेंका अवसर पाया है ताकूं कहै हैं छ॥ उपलंभानुप
लंभनिमित्तं व्याप्तिज्ञानमूहः॥ इदमस्मिन्सत्येव भवत्यसति न भवत्येवेति च॥७॥ याका अर्थ॥
उपलंभ तौ प्राप्ति अनुपलंभ अप्राप्ति ए दोऊ हैं निमित्त जाकूं ऐसा व्याप्तिका ज्ञान सो ऊह कहिये
तर्क प्रमाण है तहां यह या कै होतैं संतैं ही होय ऐसा तौ अन्वय वहुरि यह न होय तौ नहीं ही होय ऐसा
व्यतिरेक ऐसैं दोऊनितैं व्याप्तिज्ञान होय है। इहां उपलंभ तौ प्रमाणमात्रका ग्रहण करनां॥
जो प्रत्यक्षही कूं उपलंभ शब्द करि ग्रहणा कीजिये तौ अनुमान के विषय जे साधन तिनि विषै व्याप्ति
का ज्ञान न होय॥ इहां कोई कहै है व्याप्ति तौ सर्वोपसंहार वती है सर्वक्षेत्र कालका संग्रह करि प्रतीति
कीजिये है सो अतींद्रिय तौ साध्य होय अर ताका साधन भी अतींद्रिय होय तौ तिस साध्य करि साधन कै

व्याप्ति कैसें जानी जाय। ताका समाधान जो ऐसैं नाहीं है जैसें प्रत्यक्ष के विषय साध्य साधन होय तिनि वि
षै व्याप्ति जानिये है तैसैं ही अनुमान कै विषय साध्य साधन कै विषै भी व्याप्ति जाननेंका अविरोध है जा
तैं व्याप्तिका ज्ञाना जो तर्क ताकै परोक्षपणां मानिये है इहां याका उदाहरण कहै है सूत्र॥ यथाग्नावेव
धूमस्तदभावे न भवत्येवेति च॥८॥ याका अर्थ॥ जैसैं अग्निकै होतैं ही धूम होय अग्निका अभाव होतैं
धूम नाहीं होय। ऐसैं। इहां अतींद्रिय साध्य साधनका उदाहरण ऐसा जो जैसैं सूर्य कै गमन शक्ति स
हितपणां साध्य करै अर गतिमानपणांकूं हेतु करै सो ए दोऊ ही अतींद्रिय हैं सूर्यकी गमन शक्ति दी
षै नाहीं अर चालता भी दीषै नाहीं सो यह आगमगम्य है वहुरि याका समर्थन यह जो जब दूरि देश॥
जाय तब जानिये चाल्यै है ऐसैं अनुमान दृढ होय है। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां छ॥ आगैं अनुमान अ
नुक्रममैं आया ताका लक्षण कहै है छ॥ साधनात्साध्यविज्ञानमनुमानं॥९॥ याका अर्थ॥ सा
धन कहिये हेतु तातैं साध्य कहिये साधनें योग्य जो वस्तु ताका विज्ञान होय सो अनुमान प्रमाण है छ॥
आगैं साधन का लक्षण कहै है छ॥ साध्याविनाभावित्वेन निश्चितो हेतुः॥१०॥ याका अर्थ॥ साध्य
तैं अविनाभावीपणां करि जो निश्चय कीया होय सो हेतु है साधन के वचन कूं हेतु कहिये॥ इहां वौद्धमती
कहै है जो हेतु का लक्षण तीन रूपपणां ही है ताकै होतैं ही हेतु कैं असिद्ध आदि दोषका परिहार वणै है

सोहीकहियेहै ॥ प्रथमतौहेतुपक्षकाधर्महोयतब असिद्धपणांदोषकापरिहारहोयतातैंताकेअर्थिहे
तुकूंपक्षधर्मरूपकहिये ॥ बहुरिसपक्षविषैजाकासत्वहोयसोविरुद्धपणांके निराकरणकेअर्थि
है ॥ बहुरिविपक्षविषैजाकाअसत्वहोयसोअनैकांतिककेनिषेधकेअर्थिहैऐसैंतीनरूपहेतुकेसो
हीकहीहै ॥ श्लोककाअर्थ ॥ दिग्नागनामाबौद्धमतकाआचार्यहेतुकैतीनरूपनिरूपणवर्णनकीयाहैजा
तैंएतीनरूपअसिद्धविरुद्धव्यभिचारीजेहेतुसदूषणतिनिकेप्रतिपक्षीहैं ॥ ताकासमाधानआचार्यक
रैहैजोयहकहनांअयुक्तहै ॥ जातैंअविनाभावकानियमकानिश्चयहीतैंतीनूंदोषनिकापरिहारवणैंहै।
अविनाभावहैसोसाध्यविनानवणनांहैएसअविनाभावपणांकूंहीअन्यथानुपपन्नपणांऐसानां
मकहियेसोयहअन्यथानुपपन्नपणांअसिद्धहेतुकैसंभवैनाही ॥ जातैंऐसाकह्याहैजोअन्यथानुप
पन्नपणांअसिद्धकैनाहीसिद्धहोयहै ॥ बहुरिविरुद्धहेतुकैभीतिसकेलक्षणकीउपपत्तिनाहीवणैहैजा
तैंविपरीतअविनाभावस्वभावरूपविषैसाध्यतैंअविनाभावनियमलक्षणकीअनुपपत्तिहैजातैंदोऊ
निकैविरोधहै ॥ बहुरिव्यभिचारीहेतुविषैभीतिसप्रकृतकहियेकह्यालक्षणकाअवकाशनाहीहै ॥ जातैंवि
रुद्धविषैहेतुसोहीहेतुइहांजाननां ॥ तातैंहेतुकास्वरूपअन्यथानुपपत्तिहीश्रेष्ठहै ॥ अरतीनरूपताश्रेष्ठना
हीहै ॥ जातैंतिसत्रिरूपताकेहोतैंभीयथोक्तलक्षणकाअभावहोतैंहेतुकैसाध्यप्रतिगमकपणांनाहीदेखिये ५३

है ॥ सोहीकहियेहै जैसैंकाहूकेपहलैंपांचपुत्रभयेथेतेस्यामभयेथेतिनिकूंदेखिकरितिनिकज्योंहीता
कीस्त्रीकेगर्भविषैतिष्ठताकैभीतिसकैपुत्रपणांनामाहेतुतैंस्यामपणांसाधैतैंतीनरूपपणांतौसंभ
वैहै जातैंगर्भमैंतिष्ठताकैतिसकेपुत्रपणांहैयहतौपक्षधर्मपणांभयाबहुरिसपक्षअन्यपुत्रनिमैं
तिसकेपुत्रपणांहै ॥ हीबहुरिअन्यकेपुत्रमैंगोरपणांहैतिनिविपक्षनितैंव्यावृत्तिहैहीऐसैंतीनरूप
होतैंभीसाध्यजोस्यामपणांतिसप्रतिगमकपणांनाहीगर्भमैंतिष्ठताकौतिष्ठताभगोरभीहोयतौ
बाधककहा ॥ इहांबौद्धकेहैहैजोइसहेतुमैंविपक्षतैंव्यावृत्तिनियमरूपनाहीदीखैहैतातैंगमकप
णांनाहीताकूंकहियेजोयहकहनांभीमुग्धकाविलासहैजातैंतिसविपक्षतैंव्यावृत्तिकहियेन्याराप।
णांकैसोअविनाभावरूपपणांहै ॥ अन्यदोषरूपकासद्भावहोयअरुविपक्षतैंव्यावृत्तिनहीयतौहेतु
कैअपनेंसाध्यकीसिद्धिप्रतिगमकपणांकीअनिष्टिहोतैंसोविपक्षतैंव्यावृत्तिहीहेतुकानिर्बाधलक्ष
णकरनां जातैंताकासद्भावहोतैंअन्यदोषरूपकीअपेक्षाविनाहीसाध्यप्रतिगमकपणांवणैंहैइ।
हांउदाहरण ॥ जैसैंअद्वैतवादीकेप्रमाणहै ॥ जातैंअपनेंइष्टकासाधनअनिष्टकादूषणकीअन्यथा
अप्राप्तिहैप्रमाणविनासाधनदूषणवणैंनाही ॥ इसहेतुमैंपक्षधर्मपणांनाहीहै ॥ सपक्षविषैअन्वय
भीनाहीहैकेवलएकअविनाभावमात्रहीकारिसाध्यप्रतिगमकपणांकीप्रतीतिहैसाध्यकूंसाधैहै ॥ बहुरि

वौद्धादिकनैंभोरभीकहीहै। जोपक्षधर्मपणांकाअभावहोतैंभीहेतुकूंगमककहियेतौकाककेकृष्णप
णांतैंप्रासादकहियेमहलधवलतैं हैं ऐसेहेतुकैभीगमकपणांआवैहै भावार्थकोईश्वेतमहल
थातापरिकाकवैठाथातहांकाकूनैंकह्याजोमहलकूंधवलकहियेहैसोकाककेकालापणांकीअ
पेक्षातैंसाधियेहै ऐसैंकहैंकाककाकृष्णपणांपक्षजोप्रासादताकाधर्मनाहीअरपक्षधर्मविनाहे
तुकेगमकपणांनाहीताकासमाधानआचार्यकरैहैजोयहकहनांभीइसहीकथनकरिनिराकरण
कीयाजातैंअन्यथानुपपत्तिकावलहीकरिपक्षधर्मरहितहेतुकैभीसाधुपणांमान्यांहैसोइसतैंप्र
योगमैंसोअन्यथानुपपत्तिनाहीहैतातैंहेतुकास्वरूपअविनाभावहीप्रधानहैजाकूंअन्यथानुपपत्ति
भीकहिये सोहीअंगीकारकरनां जातैंअविनाभावकूंहोतैंतीनरूपपणांनहोतैंभीहेतुकैसाध्यप्रति।
गमकत्वकादर्शनहै तातैंतीनाहूंरूपपणांहेतुकालक्षणनाहीहै तातैंयाकैअव्यापकपणांहै सोही
कहियेहैवौद्धआपमानैंहैजोजहांसर्वपदार्थनिकेक्षणिकपणांसाध्यथापियेहैताकासत्वआदि
साधनथापियेहैताकासपक्षनाहीहैसर्वहीकूंसाधतैंपक्षमेंसर्वआयगयेसपक्षनरह्यातवतहांत्रिरू
पपणांकीहानिभईतौहूगमकपणांमानैंहैं वहुरिइंसहीकथनकरिनैयायिककैहेतुकैंपंचरूपपणांमा
नैंहैसोभीनाहीवर्णेहैऐसाकह्याजाननांपक्षधर्मपणांवहुरिसंपक्षेसत्वपणांसोतौअन्वयरूपअरवि ५४

पक्षतैंव्यावृत्तिपणांसोव्यतिरेकरूप अरअवाधितविषयपणां असत्प्रतिपक्षपणांऐसेंपांचलक्षण
हैं तिनिकैभीअविनाभावहीकाविस्तारपणांहै पंचरूपपणांअविनाभावहीकाविशेषहैजोवाधितविष
यहैसोजाकाविषयसाध्यहीवाधासहितहोयताकैअविनाभावकीअयोग्यहै जाकैप्रतिपक्षीसहितपणां
होयताकीज्योंऐसैंजाननां वहुरिसाध्याभासाजाकाविषयताकैअसम्यक्हेतुपणांहैसमीचीनहेतुपणां
नाही जातैंजैसापक्षकह्यातैसाताकाविषयकाअभावहैतिसहीदोषकरिसोहेतुदोषसहितहै यातैं।
यहनिश्चयभयाजोसाध्यतैंअविनाभावीपणांकरिनिश्चितहोयसोहीहेतुहै ॥छ॥ आगैंअविनाभावका
भेददिषावतेसंतेसूत्रकहैंहैं ॥छ॥ सहक्रमभावनियमोविनाभावः॥१२॥ याकाअर्थ॥ साध्यसाधनकै।
कारणककालहोनेंकानियमसोतौसहभावनियमकहिये॥ वहुरिजहांकालभेदकरिसाध्यसाधनकाअ
नुक्रमतैंहोयसोक्रमभावनियमहैऐसैंअविनाभावनियमदोयप्रकारहै॥छ॥ आगैंसहभावनिय।
मकाविषयदिषावतेसंतेसूत्रकहैंहैं॥छ॥ सहचारिणोर्व्याप्यव्यापकयोश्चसहभावः॥१३॥ याका
अर्थ॥ सहचारीनिकेजैसैंरूपरसकेएकवस्तुविषैयुगपतरहनेंकानियमहै॥ वहुरिव्याप्यव्यापककै।
जैसैंवृक्षपणांकैअरुशीसंपणांकैव्याप्यव्यापकभावनियमहैऐसेंसूत्रविषैसप्तमीविभक्तिकरिवि।
षयदिषायाहैसोसहभावनियमजाननां॥छ॥ आगैंक्रमभावनियमकाविषयदिषावतेसंतेसूत्रकहैंहैं॥

॥छ॥ पूर्वोत्तरचारिणोः कार्यकारणयोश्च क्रमभावः॥ १३॥ पाका अर्थ॥ पूर्वोत्तरचारि कहिये पहलीपीछैं
होय तेहू कृतिकानक्षत्रका उदय अर रोहिणीका उदय पूर्वोत्तरचारी हैं तिनिकै क्रमभावनियम है बहुरि का॥
र्यकारणकैं जैसैं धूमकै अर अग्निकै कार्यकारणभाव है तिनिकै क्रमभावनियम है। आगैं इस प्रकारका
अविनाभावका ग्रहण कैसे प्रमाणकरि होय है तहां कहै हैं है प्रत्यक्ष प्रमाणकरि तौ ग्रहण नाही जातैं प्रत्य
क्षका विषय तौ निकटवर्ती वस्तु है बहुरि अनुमान करि भी ग्रहण नाही जातैं प्रकृत अनुमानकरि ग्रहण
मानियै तौ इतरेतराश्रय दूषण आवै अर अन्य अनुमान करि मानियै तौ अनवस्था दूषण आवै बहुरि आ
गम आदिका भी यह अविनाभाव विषय नाही जातैं तिनिका न्यारा न्यारा विषय है सो प्रसिद्ध है। तातैं अविनाभा
वकी काहू प्रमाणकरि प्रतिपत्ति नाही। ऐसी आशंका होतैं ताका ग्राहक प्रमाणका सूत्र कहै हैं ॥छ॥ तर्क
स्तन्निर्णयः॥ १४॥ पाका अर्थ॥ पूर्वैं कह्या है लक्षण जाका ऐसा जो तर्क प्रमाण ताका दूसरा नाम ऊह है
तातैं तिस अविनाभावका निर्णय होय है अविनाभाव ताका विषय है ॥छ॥ आगैं अब साध्यका लक्षण कहै हैं
॥छ॥ इष्टमबाधितमसिद्धं साध्यं॥ १५॥ पाका अर्थ॥ जो साधनैं योग्य होय सो साध्य कहिये तिस साध्यके तीन
विशेषण हैं। साधनैवालेकै इष्ट होय जाकूं साधनैका अभिप्राय होय ऐसा। बहुरि जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणकरि
बाध्या न जाय ऐसा बहुरि जो पहलैं सिद्ध न कीया होय ऐसा सो साध्य है ॥छ॥ इहां अन्यवादी दूषण कहै हैं जो इष्ट। ५५

कूं साध्य कहैं आसन शयन भोजन यान मैथुन इत्यादिक भी इष्ट हैं ते साध्य ठहरै हैं। ताकूं आचार्य कहै हैं ऐसी
कहनैवाले अतिमूर्ख हैं जातैं विना अवसर कहनैवालाकै अतिप्रलापीपणा है। इहां तौ साधनका अधि
कार कीया है जो साधनका विषय होय ताकी अपेक्षा इहां इष्ट कह्या है ॥छ॥ आगैं आर्यनैं कह्या जो साध्यका
लक्षण ताके विशेषणनिकूं सफल करते संते प्रथम ही असिद्ध विशेषणकूं दृढ करनैंकूं सूत्र कहै हैं
॥छ॥ संदिग्धविपर्यस्ताव्युत्पन्नानां साध्यत्वं यथा स्यादित्यसिद्धपदं॥ १६॥ पाका अर्थ॥ संदिग्ध विपर्य
स्त अव्युत्पन्न इनिकै साध्यपणां जैसैं होय इस हेतुतैं साध्यका असिद्धपदरूप विशेषण है ॥छ॥ तहां काहू
क्षेत्रमैं अंधकार आदिके निमित्ततैं खडा पदार्थ देखि विचारै जो यह स्थाणु है कि पुरुष है ताका निश्चय ना
होय तातैं दोऊ तरफ स्पर्शै तार है ऐसे संशयकरि व्याप्त जो वस्तु सो तौ संदिग्ध है। बहुरि सत्यार्थतैं
विपरीत वस्तुका निश्चय करनैवाला जो विपर्यय ज्ञान ताका विषयभूत जो वस्तु जैसैं सीप विषै रूपका
ज्ञान तहां रूपा आदि विपर्यस्त वस्तु है। बहुरि नाम जाति संख्या आदि विशेषनिका ज्ञान विना जो अनिर्णीत
विषयरूप वस्तु निश्चय विना ग्रहण करनां जाका होय सो वस्तु अव्युत्पन्न है व्युत्पन्न अनध्यवसाय ज्ञानका
विषय जाननां। इनि तीननिकै साध्यपणां कहनैंकै अर्थि असिद्धपदका ग्रहण है ऐसा अर्थ जाननां।
॥छ॥ आगैं अब इष्ट अर अबाधित इनि दोऊ विशेषणनिका सफलपणां दिखावते संते सूत्र कहै हैं

हैं ॥ छ ॥ अनिष्टाध्यक्षादिबाधितयोः साध्यत्वं माभूदितीष्टाबाधितवचनं ॥ १७ ॥ पाका अर्थः ॥ अनिष्टके अ
रप्रत्यक्षादिप्रमाणकरि बाधितनिके साध्यपणां जैसैं न होय इस हेतुतैं इष्ट अर अबाधित ऐसा वचन है। त
हां अनिष्ट तौ जैसैं मीमांसककै शब्दकै अनित्यपणां है जातैं मीमांसक शब्दकूं नित्य मानैं है सो अनित्य।
साधै तौ अनिष्ट होय। बहुरि शब्दकै अश्रावणपणा कहिये श्रोत्रके सुणनैं मैं न आवणां साधै तौ प्र।
त्यक्षप्रमाणकरि बाधित होय अर आदि शब्दकरि अनुमान आगम लोक स्ववचनकरि बाधितले ऐंणं इनि
का उदाहरण अकिंचित्कर हेत्वाभासका निरूपण करसी तिसके अवसरमैं ग्रंथकार आप विस्तार
करि कहसी। यातैं इहां न कहिये हैं। इहां साध्यका असिद्ध विशेषण तौ प्रतिवादी जो पीछैं उत्तर कहै ता।
हीकी अपेक्षा करि है। जातैं पहलै पक्ष स्थापे ऐसा जो वादी ताकै साध्य प्रसिद्ध है। बहुरि इष्ट पद है सो वा
दीकी अपेक्षा ही है ऐसा विशेष दिखावनेंकूं सूत्र कहै है ॥ छ ॥ न चासिद्धवदिष्टं [redacted] प्रतिवादिनः
॥ १८ ॥ पाका अर्थ ॥ जैसें प्रतिवादीकी अपेक्षा साध्य असिद्धकूं कहिये है तैसैं ताकै इष्टसा नाहीं है ॥ छ
इहां ऐसा प्रयोजन है। जा साध्यके सर्व ही विशेषण सर्वकी अपेक्षा नाहीं हैं। कोई कोईकी अपेक्षा है
कोई कोईकी अपेक्षा है। बहुरि असिद्धवत् ऐसा व्यतिरेककूं मुख्यकरि उदाहरण दीया है जैसें अ सि
द्ध प्रतिवादीकी अपेक्षा है तैसैं इष्टता की अपेक्षा नाहीं है ऐसा अर्थ है ॥ छ ॥ आगैं पहू काहेतैं कह्या ऐ।

सैं पूछैं सूत्र कहै है ॥ छ ॥ प्रत्यायनाय हीच्छा वक्तुरेव ॥ १९ ॥ पाका अर्थ ॥ परकूं प्रतीति उपजावनेंकूं इच्छा व
क्ताहीकी है तातैं इष्ट वादीहीकी अपेक्षा ही की अपेक्षा है जो इच्छाका विषयपना कूं इष्ट कहिये ताकी पर।
कूं प्रतीति करनें वाला ही उपजावै तातैं ताही की इच्छा कही ॥ छ ॥ आगैं पूछैं है कि यह साध्य धर्म है कि इस
साध्यधर्म करि विशिष्ट धर्मी है ऐसैं प्रश्न होतैं तिसका भेद दिखावते संते सूत्र कहै हैं ॥ छ ॥ साध्यं धर्मः
क्वचित्तद्विशिष्टो वा धर्मी ॥ २० ॥ पाका अर्थ ॥ धर्म है सो साध्य है। बहुरि कोई जायगां तिस साध्यधर्म
करि विशिष्ट धर्मी है सो साध्य है। जाकै आधार साध्य वस्तु होय सो धर्मी कहिये तिसकी अपेक्षा साध्य
कूं धर्मी कहिये इहां ऐसा अर्थ है। जो व्याप्तिकालकी अपेक्षा करि तौ साध्य नामा धर्म ही साध्य है। बहुरि
कोई जायगां प्रयोगकालकी अपेक्षा तिस साध्यधर्मकरि विशिष्ट धर्मी साध्य है। जातैं सूत्रके वाक्य हैं
ते उपस्कार सहित होय हैं सूत्रमैं पद उपरितैं ल्याइ राताकूं उपस्कार कहिये। सो इहां अपेक्षा का पद
उपरितैं आया है। इहां भावार्थ ऐसा जो धर्मी कै साध्यपणां तौ प्रयोगकालही विषै कोई ठिकाणैं है ज
हां अनुमानके प्रतिज्ञा हेतु आदि अवयव वचनकरि कहिये ताकूं प्रयोग कहिये अर जहां व्याप्ति जनाइ
ये तहां साध्यधर्म हीतैं जो दिये है साधनके व्याप्ति साध्यधर्म हीतैं है ॥ छ ॥ आगैं साध्यधर्मकरि विशिष्ट जो
धर्मी तिसका नामांतर कहिये अन्य नाम कहै है ॥ छ ॥ पक्ष इति यावत् ॥ २१ ॥ पाका अर्थ ॥ जाकै आधार सा

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

ध्यहोयसोधर्म्मीकहियेनाहीकाहूसरानामपक्षभीहै छ इहांप्रश्न जोधर्मधर्म्मीकासमुदायसोपक्ष
हैऐसापक्षकास्वरूपपुरातनआचार्यअकलंकदेवआदिकरिकह्याहै सोइहांधर्म्मीहीकूंपक्षकह्या
सोसिद्धांतकाविरोधकैसेंनभया ताकासमाधानआचार्यकरैहै जोऐसैंनाहीहै जातैंसाध्यजोधर्म्म
ताकेआधारपणाकरिविशेषितरूपकीयाजोधर्म्मीताकूंपक्षवचनकरिकहतैंभीदोषकाअवकाश
नाहीहै रचनाकाविचित्रपणांमात्रकरितात्पर्यकानिराकरणनाहीहोहै तातैंसिद्धांतकाअविरोध
है छ इहांबौद्धमतीकहैहै धर्म्मीकूंपक्षकह्यासोतौहोउ परंतुधर्मीहैसोविकल्पबुद्धिकैविषैवर्त्तैमा
नहीहैअरवस्तुस्वरूपनाहीहैजातैंअनुमानअनुमेयकाव्यवहारसर्वहीबुद्धिकरिकल्पियेहैबुद्धिक
रिकल्पेजेधर्मधर्म्मीतिसन्यायकरिबाह्यताकासत्वहैकिनाहीहैऐसीअपेक्षानाहीकरैहैऐसाहमारै
कह्याहै सोताकेनिराकरणकेअर्थिआचार्यसूत्रकहैहै छ ॥ प्रसिद्धोधर्म्मी ॥२२॥ धर्म्मीहैसोप्रसि
द्धहैकल्पितहीनाहीहै छ इहांयहअर्थहै जोबाह्यअरअंतरंगपदार्थकानाहीहैआलंबनभावजाकै
ऐसीविकल्पबुद्धिहैसोहीधर्म्मीकूंस्थापैहैसोऐसैंनाहीहै जोधर्म्मीअवस्तुस्वरूपहोयतौतिसकै॥
आधारजोसाध्यसाधनताकैभीवस्तुस्वरूपपणांनहोयजातैंअनुमानकीबुद्धिकैपरंपराकरिभीवस्तुकी
व्यवस्थाकाकारणपणांकाअयोगहोयतातैंविकल्पकरिअथवाअन्यप्रमाणकरिस्थापनकीयाजो ५७

पर्वतआदिकसोअनुमानकाविषयस्वरूपहोतासंताधर्म्मीपणांकूंपावैहै ऐसानिश्चयभया जोध
र्म्मीप्रसिद्धहै बहुरितिसकीप्रसिद्धिहैसोकोईविषैतौविकल्पतैंहैकोईविषैप्रमाणतैंहैकोईविषैप्रमा
णअरविकल्पदोऊनितैंहै ऐसैंएकांतकरिविकरिविकल्पविषैहीव्यापारकैअथवाप्रमाणप्रसिद्ध
हीकैधर्म्मीपणांनाहीहै छ आगैंमीमांसककहैहैजोधर्म्मीकीविकल्पतैंप्रतिपत्तिहोतैंतुमारैसाध्यकहा
है ऐसीआशंकाहोतैंसूत्रकहैहै छ ॥ विकल्पसिद्धेतस्मिन्सत्तेतरेसाध्ये ॥२३॥ याकाअर्थ ॥ तिसधर्म्मी
कूंविकल्पसिद्धहोतैंसत्ताअरइतराकहियेअसत्ताएदोऊसाध्यहैं इहांसुनिर्णीतकहियेभलेप्रकारनि
श्चयकीयाजोअसंभवद्बाधकप्रमाणताकाबलकरितौसत्तासाध्यहै बहुरियोग्यजोअनुपलब्धिता
काबलकरिअसत्तासाध्यहैऐसैंसत्ताअसत्तासाध्यहैऐसावाक्यशेषलेणां छ इहांउदाहरण।
कहैहै छ ॥ अस्तिसर्वज्ञोनास्तिखरविषाणं ॥२४॥ याकाअर्थ ॥ सर्वज्ञहै इहांतौविकल्पसिद्धजोस
र्वज्ञधर्म्मीताविषैसत्तासाध्यहै बहुरिखरविषाणनाहीहैइहांगदहाकैसींगविकल्पसिद्धधर्म्मीहै
ताविषैअसत्तासाध्यहै यासूत्रकाअर्थसुगमहैसोटीकाकारटीकानलिखीहै छ इहांमीमांसकक
हैहै जोअसिद्धहैसत्ताजाकीऐसाजोधर्म्मीताविषैसद्भावअरअभावअरभावाभावइनितीन्हूंहीध
र्मनिकैअसिद्धविरुद्धअनेकांतिकपणांहै तातैंअनुमानकेविषयपणांकाअयोगहै तातैंसत्ताअरअस

ताकै साध्यपणां कैसैं वणैं सो ही कह्या है॥ श्लोक का अर्थ॥ जो सत्ता साधिये है सो तहां हेतु भाव का धर्म है
तौ असिद्ध है अर अभाव का धर्म है तौ विरुद्ध है दोऊ का धर्म है तौ व्यभिचारी है सो ऐसी सत्ता कैसैं साधिये ता
का समाधान आचार्य करै है जो यह कहनां अयुक्त है जातैं मानस प्रत्यक्ष विषै भावरूप ही धर्मी का प्र
तीतपणां है बहुरि कहै है तिस धर्मी की सिद्धि मानस प्रत्यक्ष मैं होतैं ताका सत्त्व भी आय गया तातैं अनुमा
न व्यर्थ है सो ऐसैं नाही है। तिस का सत्त्व अंगीकार भया तौऊ परवादी धीठपणांतैं प्रतिपक्षीपणातैं अं
गीकार न करै तब तिसकूं सिद्ध करनेंकूं अनुमान का सफलपणां है बहुरि कहै है जो मानस प्रत्यक्ष मैं
आकाश का फूल का भी सद्भाव की संभावनातैं अतिप्रसंग आवै सो ऐसैं भी नाही है जातैं आकाश के
फूल का ज्ञान कै बाधक प्रतीति करि निराकरण भई है सत्ता जाकी ऐसा असत्त्वै रूप वस्तु विषय पणां
करि ताकै मानस प्रत्यक्षाभासपणां है बहुरि इहां कहै जो ऐसैं होतैं घोडाके सींग इत्यादि कनैं धर्मीप
णांकै सैं वणैंगा तौ ऐसा तर्क नाही जातैं धर्मी का प्रयोगकाल विषै बाधक प्रत्यय का उदय
नाही है तातैं धर्मी का सत्त्व की संभावना है बहुरि सर्वज्ञादिक धर्मी विषै साधक प्रमाण का अभावप
णां करि सत्त्व प्रति संशय वर्त्तावै तौ संशय नाही है सुनिश्चितासंभवद्बाधकप्रमाणपणां करि जैसैं सु
खआदि कै विषै सत्त्व का निश्चय है तैसैं सत्त्व का निश्चय है तहां संशय का अयोग है सुनिश्चितासंभवद्बा

धक प्रमाण ताकूं कहिये जहां भलैप्रकार निश्चय की पाय असंभवता बाधक प्रमाण होय भावार्थ बाध
क प्रमाण निश्चयतैं न होय। आगैं प्रमाणसिद्ध अर उभयसिद्ध जो धर्मी तिनि विषै साध्य कहां है ऐसी
आशंका होतैं सूत्र कहै हैं॥ ॥ प्रमाणोभयसिद्धे तु साध्यधर्मविशिष्टता॥ २५॥ याका अर्थ॥ प्रमाण
सिद्ध अर प्रमाणविकल्पसिद्ध इनि दोऊ धर्मी विषै साध्य जो धर्म ताकरि विशिष्टता जो धर्मीपणां
सो ही साध्य है। इहां पहले सूत्र मैं साध्य ऐसा द्विवचन है तौऊ अर्थ के वशतैं इहां एकवचन ही संबंध
करनां साध्य धर्मविशिष्टता साध्या ऐसें बहुरि प्रमाण अर उभय कहिये प्रमाण विकल्प दोऊ ऐ
सैं दोय भांति करि सिद्ध जो धर्मी ता विषै साध्य जो धर्म ताकरि विशिष्टता साध्य है दोऊ प्रकार के ध
र्मी विषै जो साध्य का पूर्व स्वरूप कह्या सो ही धर्म ताकरि सहितपणां साध्य है जहां जे सा साध्य ही
पनै सो ही करि युक्त धर्मी साध्य है इहां यह अर्थ है जो प्रमाण करि प्राप्त भया भी वस्तु विशिष्ट धर्मी
कै आधारपणां करि विवाद मैं आवै सो साध्यपणां कूं नाही उलंघै साध्य होय यही ऐसैं ही प्रमाणविक
ल्पसिद्ध विषै भी जो डिलेगां॥ ॥ आगैं प्रमाणसिद्ध अर उभयसिद्ध दोऊ धर्मी अनुक्रमकरि दि
खावै तैसैं तें सूत्र कहै हैं॥ ॥ अग्निमानयं देशः परिणामी शब्द इति यथा॥ २६॥ याका अर्थ॥ यह प्र
देश अग्नि सहित है यहतौ प्रत्यक्ष प्रमाणसिद्ध धर्मी है बहुरि शब्द है सो परिणामी है इहां शब्द धर्मी है सो

उभयसिद्ध है जो शब्द श्रवणमैं आया सो तो श्रवण प्रमाणतैं सिद्ध है अर अन्यदेशकालवर्ती शब्द विकल्प
सिद्ध है ॥ छ ॥ इहां अग्निजहां साधिये है सो प्रदेश प्रत्यक्ष प्रमाण करि सिद्ध है । बहुरि शब्द है सो उभयसिद्ध है
जातैं अल्पज्ञानवाले पुरुषनि करि अनिश्चित दिशा देश काल विषैं व्याप्त जे सर्व शब्द ते निश्चय करनें
कूं समर्थ नाहीं हूजिये है । बहुरि सर्वज्ञकै तिसका निश्चय है तौऊ तिस प्रति अनुमानका निरर्थकप
णां है । अनुमान तौ अल्पज्ञ ही करै है ॥ छ ॥ आगैं प्रयोगकालकी अपेक्षा साध्यधर्म विशिष्ट धर्मीका
नियम दिया पर अर व्याप्तिकालकी अपेक्षा साध्यका नियम दिखावता संता सूत्र कहै है ॥ छ ॥ व्याप्तौ तु
साध्यं धर्म एव ॥ ३७ ॥ याका अर्थ ॥ व्याप्ति विषैं साध्य है सो धर्म ही है याका अर्थ सुगम है यातैं टीका
नाहीं इहां अर्थ ऐसा जो जिस धर्मी विषैं जो साध्य साधिये ताकूं तिस धर्मीका धर्म कहिये ऐसा साध्य जो
धर्म सो ही साधनैं योग्य है व्याप्ति साध्य साधन ही कै होय है ॥ छ ॥ आगैं धर्मीकै भी साध्यपणां होतें कहा दो
ष है ऐसें पूछें सूत्र कहै है ॥ छ ॥ अन्यथा तदघटनात् ॥ ३८ ॥ याका अर्थ ॥ जो धर्मीकूं साध्य करिये तौ ध
र्मीकै अर साधनकै व्याप्ति बणैं नाहीं ॥ छ ॥ इहां अन्यथा शब्द है सो पहलैं व्याप्ति विषैं साध्य धर्म कह्या ति
सतैं विपर्यय अर्थमैं है । तातैं ऐसैं कहनां जो धर्मीकै साध्यपणां होतैं व्याप्ति बणैं नाहीं यह सूत्र पूर्व सू
त्र कह्या तिसरूप है धूमके दर्शनतैं सर्व जायगा पर्वत अग्निमान है ऐसी व्याप्ति नाहीं करी जाय है । जातैं या

मैं प्रमाणतैं विरोध आवै है ॥ छ ॥ आगैं बौद्धमती कहै है जो अनुमान विषैं पक्षका प्रयोगका असंभव है
तातैं प्रसिद्धो धर्मी इत्यादि वचन अयुक्त है । जातैं तिस धर्मीकै सामर्थ्यलब्धपणां है सामर्थ्यतैं जाणि
ये है । बहुरि जाणें पीछैं भी ताका वचन कहनां सो पुनरुक्तताका प्रसंग आवै है । जातैं ऐसा कह्या है जो अ
र्थतैं आय प्राप्त हूवा तौऊ ताका फेरि वचन कहनां सो पुनरुक्त है । ऐसैं सौगतनैं पक्ष करी ताका
निराकरणकूं आचार्य सूत्र कहै है ॥ छ ॥ साध्यधर्माधारसंदेहापनोदाय गम्यमानस्यापि पक्षस्य
वचनं ॥ ३९ ॥ याका अर्थ ॥ पक्ष है सो साध्य जो धर्म ताका आधार है तातैं साध्यकों साधिये तब ऐ
सा संदेह पड़ै जो कोंन जायगां इस साध्यकूं साधिये है ताके संदेह दूरि करनेंकूं जाणनेंमैं भी आया जो
पक्ष ताका वचन । करि प्रयोग करनां ॥ छ ॥ साध्य सो ही धर्म ताका आधार ता विषैं संदेह पड़ै जो अग्नि
कूं पर्वत आदिमैं साधिये है कि महानस आदिमैं ऐसा संदेहका अपनोद जो दूरि करनां तिसकै अ
र्थि गम्यमान भी जो साध्यका आधार पक्ष ताका वचन कहनां प्रयोग करनां । इहां पक्षका गम्यमा
नपणां ऐसैं है जो साध्य साधनकै व्याप्य व्यापकभावका दिखावनैंकी अन्यथा अप्राप्ति है । साध्य सा
धनकै व्यापकभाव दिखावातैं तिसकै आधारस्वरूप पक्षकूं भी जानिये है तौऊ परकै संदेह दूरि करनें
कूं पक्षका वचन कहनां युक्त है । आगैं याका उदाहरण कहै है ॥ छ ॥ साध्यधर्मिणि साधनधर्मावबोधना

[redacted] पपक्षधर्मोपसंहारवत्॥ ३०॥ याका अर्थ॥ साध्यकरि विशिष्ट जो धर्मी पर्वतादिक ता
विषै साधन धर्म का जाननें कै अर्थि जैसैं पक्ष धर्म का उपसंहार रूप जो उपनय ताका प्रयोग करि
ये है तैसैं पक्ष का भी प्रयोग करनां॥ छ॥ साध्य करि विशेषण रूप जो धर्मी पर्वतादिक तहां साधन ध
र्म के जाननें कै अर्थि जैसैं पक्षधर्म का उपसंहार रूप उपनय कहिये है॥ जातैं पक्षधर्मी जो हेतु ताका उ
पसंहार कहिये संक्षेप करनां सो उपनय है जैसैं अग्निमान् साध्य का प्रयोग विषै धूमवान् यहु है ऐसा
उपनय कहनां ताकी ज्यों पक्ष का भी प्रयोग युक्त है॥ इहां यहु अर्थ है॥ जो साध्य तैं व्याप्त जो साधन ताके॥
दिखावनें करि तिस हेतु के आधार का जाणपणां होतैं भी नियम रूप जो धर्मी ता का संबंधीपणां।
के दिखावनें कूं जैसैं उपनय का प्रयोग करिये है तैसैं। साध्य कै विशिष्ट जो धर्मी ता का संबंधीपणां
जनावनें कूं पक्ष का भी वचन कहनां बहुरि किछू विशेष कहै है॥ जो हेतु का प्रयोग करिये है ताका।
समर्थन भी अवश्य कहनें योग्य होय है॥ जातैं विना समर्थन हेतुपणां का अयोग है॥ ऐसैं होतैं सम
र्थन का प्रयोग तैं ही हेतु कै सामर्थ्य सिद्धपणां होय तब हेतु का प्रयोग भी अनर्थक ठहरै है॥ इहां कोई
जो हेतु का प्रयोग न करिये तौ समर्थन किसका कहिये तौ ताकूं कहिये जो पक्ष का प्रयोग न का प्रयोग न
करिये तौ हेतु किसका कहिये ऐसैं यहु प्रश्नोत्तर समान है॥ तातैं कार्य स्वभाव अनुपलंभ ऐसैं तीन भेद।

करि हेतु कूं कहता तथा पक्षधर्मपणां आदि तीन प्रकार हेतु कूं कहकरि ताका समर्थन करता जो बौद्ध॥
मती ता करि पक्ष का प्रयोग भी अंगीकार करनें योग्य ही है॥ इहां भावार्थ ऐसा जो बौद्धमती अनुमान का
प्रयोग करता व्युत्पन्न पंडितनि कै एक हेतु ही मानैं है ताकूं कह्या है जो पक्ष का वचन भी माननें योग्य है जा
तैं पक्ष कहे विना साध्य जाठिका तैं साधिये तामें संदेह रहै है तौ पक्ष के वचन विनां हू दिखाया नाही बहुरि
हेतु का समर्थन बौद्ध करै है ताकूं चेत कराया जो जा हेतु का समर्थन है तु कह्या तब पहला हेतु तौ पक्ष
का प्रयोग निषेध कीये हेतु का भी प्रयोग अनर्थक ठहरै है समर्थन ही कहनां युक्त ठहरै है तातैं पक्ष
का ही वचन पहलैं क्यौं न कहनां ऐसैं जाननां॥ छ॥ आगैं इस ही अर्थ के कहनें कूं सूत्र कहै है॥ छ॥
को वा त्रिधा हेतुमुक्त्वा समर्थयमानो न पक्षयति॥ ३१॥ याका अर्थ॥ कौ वा कहिये वादी प्रतिवादी॥
ऐसा कौन है जो तीन प्रकार हेतु कूं कहि करि ताका समर्थन का समर्थन करता संता तिस हेतु कूं।
पक्ष न करै करै ही करै॥ छ॥ इहां कौ ऐसा कहनें तैं वादी प्रतिवादी कोई लेणां बहुरि वा शब्द है सो निश्च
य अर्थ में है॥ सो युक्ति करि पक्ष प्रयोग का अवश्यभाव होतैं निश्चयपनैं कौन पक्ष नाही करै है अव॥
श्य करै ही है॥ कह्या करता संता हेतु का समर्थन करता संता हेतु कूं कहकरि ही समर्थै है विना कहें ना
ही समर्थै है॥ इहां समर्थन का स्वरूप ऐसा जो हेतु का असिद्धपणां आदि दोष का परिहार करि अपनें

साध्यकूं अर साधन कूं सामर्थ्य रूप प्ररूपण करनैं कूं समर्थ वचन होय सो ही समर्थन है। सो हे
तु के प्रयोग के पीछैं बौद्धमती करि अंगीकार कीया है तातैं सूत्र में तत्का ऐसा वचन है। अब इहां
सांख्यमती कहै है जो पक्ष का प्रयोग तौ हो हु। परंतु पक्ष हेतु दृष्टांत भेदकरि अनुमान के तीन ही
अवयव हैं। बहुरि मीमांसक कहै है प्रतिज्ञा हेतु उदाहरन उपनय भेदकरि च्यारि अवयव स्वरूप
अनुमान है। बहुरि योग कहिये नैयायिक कहै है प्रतिज्ञा हेतु उदाहरण उपनय निगमन भेद तैं पां
च अवयव स्वरूप अनुमान है। तिनि के मत कूं निराकरण करते संते अपने मत विषै सिद्ध जो अनु
मान के अवयव सो पतिनि ही कूं दिखावते संते सूत्र कहै हैं छ एतद्द्वयमेवानुमानांगं नोदाहरणं।
३२॥ या का अर्थ॥ अनुमान के अवयव पक्ष अर हेतु ए दोय ही हैं अर उदाहरण नाही है छ ए पक्ष
अर हेतु तिनि का द्वय कहिये द्विक सो ही अनुमान के अंग हैं अधिक नाही हैं। इहां एवकार करि उदा
हरण आदिका निषेध सिद्ध होते भी परमत के निराकरण के अर्थि फेरि उदाहरण नाही है ऐसा व
चन कह्या है छ आगैं सो उदाहरण कहा साध्य की प्रतिपत्ति के अर्थि है कि हेतु के अविनाभाव के नियम
के अर्थि है कि व्याप्ति के स्मरण के अर्थि है ऐसैं तीन विकल्प करि तिनि कूं दूषण रूप करते संते सूत्र क।
है हैं छ॥ नहि तत्साध्यप्रतिपत्त्यंगं तत्र यथोक्तहेतोरेव व्यापारात्॥ ३३॥ या का अर्थ॥ यह उदाहरण है

सो साध्य की जो प्रतिपत्ति ता का अंग नाही है जातैं साध्य विषै तौ जैसा हेतु कह्या तिस ही का व्यापार है। इ
हां तत् कहिये उदाहरण सो साध्य की प्रतिपत्ति कहिये साध्य का ज्ञान ता का अंग कारण नाही है ऐसा सं
बंध करनां। जातैं तिस साध्य की प्रतिपत्ति विषै यथोक्त जो साध्य तैं अविनाभावीपणां करि निश्चय कीया
हेतु तिस ही का व्यापार है। छ आगैं दूसरे विकल्प कूं शोधता संता सूत्र कहै है छ॥ तदविनाभावनिश्च
यार्थं वा विपक्षे बाधकप्रमाणबलादेव तत्सिद्धेः॥ ३४॥ या का अर्थ॥ तत् ऐसी अनुवृत्ति लेणी बहुरि
नाभाव निश्चय करनें कै अर्थि नाही है। जातैं विपक्ष विषै बाधक प्रमाण के बल तैं ही अविनाभाव।
निश्चय की सिद्धि होय है। बहुरि किछू विशेष कहै है। जो उदाहरण तौ व्यक्ति रूप है सामान्य के बहुत।
विशेष होय तिनि मैं एक विशेष कूं व्यक्ति कहिये सो व्याप्ति कूं समस्त पणें करि कैसें गमक होय ति।
स व्यक्ति विषै व्याप्ति के अर्थि अन्य उदाहरण हेरणां पडै है ताकै भी व्यक्ति रूप पणां करि सामान्य रूप
जो व्याप्ति ता का निश्चय करनें का असमर्थपणा है यातैं और और उदाहरण की अपेक्षा होतैं अनव॥
स्था दूषण होय है सो ही सूत्र मैं कहै है छ॥ व्यक्तिरूपं च निदर्शनं सामान्येन तु व्याप्तिस्तत्रापि तद्विप्रतिपत्ता
व अनवस्थानं स्याद्दृष्टांतांतरापेक्षणात्॥ ३५॥ या का अर्थ॥ निदर्शन कहिये उदाहरण सो तौ व्यक्ति रूप।

डाक्टर भाऊदाजी इत्यस्य स्मारकम्
Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

हैजिससाध्यसाधनकेजोकियेतहांहीलागो वहरिव्याप्तिहैसोसामान्यकरिहैसर्वसाध्यसाधननमैंव्यापैहै
सोएकउदाहरणतैंव्याप्तिकानिश्चयनाहीहोयतहांदूसरीजायगांउदाहरणकेविषेभीतिसव्याप्तितें।
साध्यसाधनजोकियेतवअन्यदृष्टांतचाहियेऐसैंअन्यअन्यदृष्टांतकीअपेक्षाकरनेंतैंअनवस्थाहोहै
छ आगैंतीसराविकल्पविषेदूषणकहैहै छ नापिव्याप्तिस्मरणार्थंतथाविधहेतुप्रयोगादेवत
त्सिद्धेः॥३६॥पा॰का॰अर्थ॥ यहउदाहरणव्याप्तिकेस्मरणकहियेयादिकरनेंकेअर्थिनाहीहै जा
तैंअविनाभावस्वरूपहेतुकेप्रयोगकरनेंहीतैंतिसव्याप्तिकास्मरणहोहै छ ग्रह्याहैसाध्यतैंसंबंध
जानैंऐसापुरुषकेहेतुदिषावनेंहीकरिव्याप्तिकीसिद्धिहोहै जानैंसंबंधनग्रह्याहोयताकेसौवदृष्टां
तकरिभीस्मरणनहोयजातैंस्मरणतोजिसकापहलीअनुभवहोयताहीकाहोयहैऐसाभावार्थ
है छ आगैंऐसैंसोइसउदाहरणकेप्रयोगकेसाध्यपदार्थप्रतिउपयोगीपणांनाहीहैउलटासं
शयकाकारणपणांहीहैऐसेंदिषावेहै छ तत्परमभिधीयमानंसाध्यधर्मिणिसाध्यसाधनेसं
देहयति॥३७॥पा॰का॰अर्थ॥सोउदाहरणपरंकहियेकेवलकह्याहूवासाध्यकेधर्मीविषैसा
ध्यअरसाधनकूंसंदेहसहितकरेहै छ जातैंदृष्टांतकाधर्मीविषैसाध्यतैंव्याप्तजोसाधनताकूं
दिषावतैंभीसाध्यकेधर्मीविषैतिससाध्यकाअरसाधनकानिर्णयकाकरनेंकाअशक्यपणांहै ६२

ऐसावाक्यत्रोपहैभावार्थ उदाहरणकह्याहूवासाध्यसाधनकूंसंदेहरूपकरैहै छ आगैंइसही
अर्थकूंव्यतिरेककूंप्रधानकरिदृढकरनेसंनेकहैहैं छ कुतोऽन्यथोपनयनिगमने॥३८॥पा॰का॰
अर्थ॥जोउदाहरणकहेंसंदेहनउपजतातोउपनयअरनिगमनइनिदोऊनिकाप्रयोगकाहेकूं
करतेजातैंयहजान्यांजोउदाहरणकेप्रयोगतैंसंशयहोहै छ आगैंनैयायिककहैहैजोउपनय
निगमनइनिदोऊनिकेभीअनुमानकाअंगपणांहैजोइनिकाप्रयोगनकीजियेतोनिर्दोषिसा
ध्यकीसिद्धिकाअयोगहै तिसकेनिषेधकेअर्थिसूत्रकहैहै छ नचतेतदंगेसाध्यधर्मि
णिहेतुसाध्ययोर्वचनादेवासंशयात्॥३९॥पा॰का॰अर्थ॥तेउपनयनिगमनभीतिसअनुमा
नकेअंगनाहीहैंजातैंसाध्यकेधर्मीविषेहेतुअरसाध्यकेवचनहीतैंसंशयकानिराकरणहै
उपनयनिगमनकास्वरूपआगैंकहसीअरइहांएवकारकरिऐसाजाननांजोदृष्टांतआदिके
प्रयोगविनाहीप्रतिज्ञाहेतुतैंहीसाध्यकीसिद्धिहोयहैसंशयमिटिजायहैऐसाभावार्थहै छ
आगैंविशेषकहैहैजोदृष्टांतादिककहकरिभीहेतुकासमर्थनअवश्यकरनांजातैंविनास।
मर्थ्याहेतुकैअहेतुपणांहैयातैंसोसमर्थनहीश्रेष्टहैजोहेतुस्वरूपहैअथवाअनुमानकाअ
वयवभीसमर्थनहोउ जातैंसाध्यकीसिद्धिविषेनाहीकाउपयोगहैउदाहरणआदिकअनुमान

केअवयवनाहींहैंइसहीअर्थरूपसूत्रकहेहै ॥ छ ॥ समर्थनंवावरंहेतुरूपमनुमानावयवोवा
स्तु साध्यस्तदुपयोगात ॥ ४० ॥ याका अर्थ ॥ हेतुका समर्थन है सो ही श्रेष्ठ है सो हेतुरूप ही है अर
यहु समर्थन अनुमान का अवयव भी होहु जातैं साध्य विषै तिसका उपयोग है साध्य यातैं दृढ होय
है इहां सूत्रमैं पहला वाशब्द है सो नियम के अर्थि है वहुरि दूसरा वाशब्द है सो अन्यारोपक्षके सूच
नैंकूं है अवशेषया सूत्रका अर्थ सुगम है ॥ छ ॥ आगैं पूछै है कि दृष्टांत आदिक विवादरहित वुद्धी
निका समझावनैंका असमर्थपणां है तातैं पक्ष हेतुकै प्रयोगमात्र ही करि तिनिकै साध्यकी।
प्रतिपत्ति कैसें होय ऐसैं पूछै सूत्र कहै है ॥ छ ॥ वालव्युत्पत्त्यर्थं तत्त्रयोपगमे शास्त्र एवासौ ॥
न वादेनुपयोगात ॥ ४२ ॥ याका अर्थ ॥ वाल कहिये अल्पज्ञानी तिनिकै ज्ञान होनेंकै अर्थि उदा
हरण उपनय निगमन ए तीन अवयव तिनिका अंगीकार होतैं भी शास्त्र ही विषै तिनिका माननां
है अर वाद विषै नाहीं है जातैं वाद विषै इनिका उपयोग नाहीं प्रयोजन नाहीं ॥ जातैं वादकै काल विषै
शिष्य समझावनैं नाहीं व्युत्पन्न तिनिहीका वादकै विषै अधिकार है ॥ जे न्याय विषै प्रवीण हैं तिनिहीका
वाद विषै अधिकारीपनां है ॥ छ ॥ आगैं वाल जे अल्पज्ञानी तिकै समझावनैंकै अर्थि उदाहरण आदि
तीन प्रयोग शास्त्र विषै अंगीकार कीया तिनि तीननिका स्वरूप दिषावै है ॥ छ ॥ दृष्टांतो द्वेधा [illegible]न्वय ६३

तिरेकभेदात ॥ ४२ ॥ याका अर्थ ॥ जा विषै साध्य साधन ये दोय अंत कहिये धर्म अन्वयकूं मुख्यकरि
तथा व्यतिरेककूं मुख्यकरि प्रत्यक्ष दृष्ट होय सो दृष्टांत है याका अर्थ ऐसा जो दृष्ट कहिये प्रत्यक्ष देषे
हैं अंत कहिये साधनलक्षणधर्म जहां ऐसा दृष्टांत शब्दका अर्थ है सो दोय प्रकार है अन्वयदृष्टांत
व्यतिरेकदृष्टांत तहां प्रथम अन्वयदृष्टांतकूं दिषावतें संतें सूत्र कहै हैं ॥ छ ॥ साध्यव्याप्तं साधनं
यत्र प्रदर्श्यते सोन्वय दृष्टांतः ॥ ४३ ॥ याका अर्थ ॥ जा विषै साध्य करि व्याप्त जो साधन सो नियमरू
प दिषाइए सो अन्वयदृष्टांत है ॥ इहां व्याप्तिपूर्वकपणां करि दिषावै ऐसा अभिप्राय है ॥ जैसैं जहां ज
हां धूमसहितपणां है तहां तहां अग्निसहितपणां है जैसैं रसोई का स्थान ॥ ऐसैं अन्वयदृष्टांत जा
ननां ॥ छ ॥ आगैं दूसरा भेद दिषावै है ॥ छ ॥ साध्याभावे साधनाभावो यत्र कथ्यते स व्यतिरेकदृष्टांतः ॥
४४ ॥ याका अर्थ ॥ जाकै न होतैं जो न होय सो व्यतिरेक कहिये सो यहु जहां प्रधान होय सो व्यतिरेक
दृष्टांत है सो इहां साध्यका अभाव होतैं साधनका अभाव ही है ऐसा नियम जाननां जैसैं तहां अग्नि
नाहीं तहां नियम करि धूम नाहीं जैसैं जलका निवास ॥ ऐसैं व्यतिरेकदृष्टांत जाननां ॥ छ ॥ आगैं अनुक्र
ममैं आया जो उपनय ताका स्वरूप निरूपण करै है ॥ छ ॥ हेतोरुपसंहार उपनयः ॥ ४५ ॥ याका अर्थ ॥
इहां पक्षमैं ऐसा अध्याहार लेणां ॥ ताकरि यह अर्थ है जो पक्ष विषै हेतुका संक्षेप करिये सो उपनय है ४५।

मवानपणांहेतुतैंअग्निमानपणाकाहूजायगांसाधेताकादृष्टांतकहिकरिअरहेतुकूंपक्षकाविशे
षणकरैजैसैंकहैजोपहधूमवानहैऐसाकहनांउपनयहै याकीनिरुक्तिऐसैंहैउपनीयतेकहिये
फेरिउधारियेहेतुजाकरिसोउपनयहै ऐसाजाननां ॐ आगेंनिगमनकास्वरूपदिषावेहैं ॐ॥
प्रतिज्ञायास्तुनिगमनं॥४६॥याकाअर्थः॥जहांप्रतिज्ञाकाउपसंहारकरियेसोनिगमनहै इहांउ
पसंहारकीअनुवृत्तिलेणी प्रतिज्ञाकूंसाध्यजोधर्मताकरिविशिष्टपणांकरिदिषावनां जैसैंपहलैं
प्रतिज्ञाकरैजोपहपर्वतअग्निमानहैपीछैंहेतुदृष्टांतउपनयकहकरिफेरिप्रतिज्ञाकूंसकोचिकरि
नियमकरैजोतातैंअग्निमानहीहैऐसैप्रतिज्ञाकासंक्षेपकरनांसोनिगमनहै ॐ आगेंअन्यवा
दीतर्ककरैजोशास्त्रविषैदृष्टांतआदिकहनैंही ऐसानियमातोमान्यांनाहीतवआचार्यइहांतितिनि
नतिकूंकैसैंदिषाये ताकासमाधान जोइहांऐसातर्कनकरनां जातैंआपआचार्यइनितीनूंनिकूं
अंगीकारनकीयेहैं तोकजिनमतकेअनुसारीआचार्यनिनैंशिष्यकेवशकरिप्रयोगकीपरिपाटीतैं
मानेंहैंसोप्रयोगकीपरिपाटीतिनिकास्वरूपजिनिनैंनजान्याहोयतिनिकरिकरीजायनाहीइसहेतु।
तेंतिनिकास्वरूपभीशास्त्रविषैकहनांहीयोग्यहै ऐसैंसोअनुमानमतभेदकरिदोयअवयवतीन॥
अवयवच्यारिअवयवपांचअवयवस्वरूपमानियेहैसोअनुमानदोयप्रकारहै ऐसैंदिषावतेसंते ६४

सूत्रकहैंहैं॥ॐ॥तदनुमानंद्वेधा॥४७॥याकाअर्थः॥सोअनुमानदोयप्रकारहै ॐ आगेंसोदोय
प्रकारपणांकूंकहैंहैं॥स्वार्थपरार्थभेदात्॥४८॥याकाअर्थः॥स्वार्थानुमानपरार्थानुमानऐसैंभे
दकरिदोयप्रकारहै ॐ अपनींअरपरकीजोअनुमानविषैअन्यथामानिताकादूरिहोनायाकाफ
लहैतातैंदोयहीप्रकारहैऐसाअभिप्रायजाननां ॐ आगेंस्वार्थानुमानभेदकूंकहैहैं॥स्वार्थ
मुक्तलक्षणं॥४९॥याकाअर्थ॥साधनात्साध्यविज्ञानंअनुमानंऐसापूर्वैंअनुमानकालक्ष
णकह्याथासोहीस्वार्थानुमानजाननां॥ॐ॥आगैंदूसराअनुमानकाभेदकूंदिषावतेसंतेसूत्रक
हैंहैं॥ॐ॥परार्थंतुतदर्थपरामर्शिवचनाज्जातं॥५०॥याकाअर्थ॥तिसस्वार्थानुमानकाजोअर्थ
साध्यसाधनहैलक्षणजाकातिसकूंजोअपनांविषयकरैप्रगटकरैऐसाजाकास्वभावहोयसो
तदर्थपरामर्शीकहियेऐसाजोवचनतिसतैंजोउपज्याहोयज्ञानसोपरार्थानुमानहैभावार्थस्वा
र्थानुमानकावचनतैंपरकेअनुमानहोयसोपरार्थानुमानहैइहांनैयायिककहैहैं॥पंचावयव।
रूपवचनात्मकपरार्थानुमानप्रसिद्धहैसोइहांस्वार्थानुमानकाअर्थकाप्रतिपादकवचनकरि
उपज्याज्ञानकूंपरार्थानुमानपणांकहनाजोआचार्यसोतिसवचनकूंकैसैंग्रहणनकीया॥ताकास
माधानआचार्यकरैहैजोऐसैंनकहनां॥जातैंवचनतोअचेतनहैसोअचेतनकैसाक्षात्प्रमितिजोप्र

माणकपाफलताकाकारणपणांनाहीहै॥ तातेंमुख्यप्रमाणपणांकाअभावहै॥ बहुरिमुख्यअ
नुमानकेकारणपणांतेंतिसवचनकेंउपचारिअनुमानकाव्यपदेशकहियेनामकहनांसो
नाहीनिवारणाकीजियेहै॥ छ॥ आगेंपरार्थानुमानकेवचनकैंजोकह्याउपचारकरिपरार्थानुमा
नपणांसोहीआचार्यसूत्रकरिकहैहै॥ छ॥ तद्वचनमपि तद्धेतुत्वात्॥५१॥ याका अर्थ॥ तिसप
रार्थानुमानकावचनहैसोभीपरार्थानुमानहै॥ जातेंज्ञानरूपजोपरार्थानुमानताकाकारणहै॥ छ॥
इहांऐसाजाननांजोउपचारहैसोमुख्यकाअभावहोतैंप्रयोजनअरनिमित्तहोतैंप्रवर्तेहै॥ तहां।
वचनकेमुख्यअनुमानपणांकातौअभावहै॥ अरतिसकाकारणपणांहैसोहीपरार्थानुमान
पणांविषैनिमित्तहै॥ तातैंपरार्थानुमानकाप्रतिपादकवचनभीपरार्थानुमानहै॥ ऐसासंबंधक
रनां॥ जातैंकारणविषैकार्यकार्यकाउपचारहोयहै॥ अथवापरार्थानुमानकाप्रतिपादकजोव।
क्ताताकाअनुमानसोहैकारणजाकूंऐसापरार्थानुमानकावचनसोभीअनुमानहैऐसासंबं
धकरनांइसपक्षविषैकार्यविषैकारणकाउपचारहोयहै॥ बहुरिवचनकैंअनुमानपणांकहनैं
प्रयोजनऐसाजोअनुमानकेप्रतिज्ञाआदिअवयवहैंतिनिकाशास्त्रविषैव्यवहारहैसोहीप्रयोज
नहैजातैंज्ञानस्वरूपअनुमाननिरंशहैअभेदरूपहैतातेंअवयवरूपभेदकाव्यवहारनाहीकीयाजा

यहैवचनकरिअवयवनिकाप्रयोगरूपव्यवहारप्रवर्तैहै॥ छ॥ आगेंसोऐसैंसाधनात्साध्यवि
ज्ञानमनुमानंऐसाअनुमानकासामान्यलक्षणहैसोहीअनुमानदोयप्रकारहैऐसैंतिसकेप्रका
रविस्तारसहितकहकरिअवसाधनहैसोलक्षणकह्याताकीअपेक्षाकरिकहैहैतोऊअतिसंक्षेप
करिभेदरूपकीयेंदोयप्रकारहैऐंकैसेहैंहै॥ छ॥ सहेतुर्द्वेधोपलब्ध्यनुपलब्धिभेदात्॥५२॥ याका
अर्थ॥ सोहेतुदोयप्रकारहै उपलब्धिअनुपलब्धिऐसेंदोयभेदतैं॥ छ॥ याकाअर्थसुगमहै॥ जोप
दार्थविद्यमानभावरूपग्रहणमैंआवैसोउपलब्धिकहियेबहुरिजोपदार्थग्रहणमैंनाहीआवैअभा
वरूपसोअनुपलब्धिकहिये॥ छ॥ आगेंअन्यवादीकहैंहैजोउपलब्धिहैसोविधिहीकासाधकहै॥ बहुरि
अनुपलब्धिहैसोप्रतिषेधहीकासाधकहैऐसानियमहैतहांआचार्यतिसकेनियमकूंनिषेधकरता।
संतासंताउपलब्धिकेंअरअनुपलब्धिकैंअविशेषकरिविधिप्रतिषेधकासाधकपणांहैऐसैंकहैहै
॥छ॥ उपलब्धिर्विधिप्रतिषेधयोरनुपलब्धिश्च॥ छ॥५३॥ याकाअर्थ॥ उपलब्धिहैसोविधिअरप्र
तिषेधदोऊनिकीसाधकहै॥ बहुरिअनुपलब्धिभीतैसैंहीदोऊनिकीसाधकहै॥ याकाअर्थपहलैं
कह्यासोहीहै॥ छ॥ आगेंअवउपलब्धिकाभीसंक्षेपकरिविरुद्धअविरुद्धभेदतैंदोयप्रकारपणांदि
खावतेसंतेअविरुद्धउपलब्धिकेविधिसाध्यहोतैंविस्तारतैंभेदकहैंहैं॥ छ॥ अविरुद्धोपलब्धिर्विधौषो

टा॥ व्याप्यकार्यकारणपूर्वोत्तरसहचरभेदात्॥५४॥ याका अर्थ॥ अविरुद्धोपलब्धिकहियेसाध्यतैंवि
रुद्धनाहीऐसीजोप्राप्तिसोविधिकहियेवस्तुकासद्भावताकूंसाधैऐसीछहप्रकारहैसाध्यतैंव्याप्यस्व
रूपसाध्यकाकार्यसाध्यकाकारणसाध्यतैंपूर्वैंप्रवर्त्तै॥साध्यतैंपीछैंरहैसाध्यकीसाथिहीरहैऐ
सैंछहभेदहैं॥ इहांसूत्रविषैसमासऐसैंकरनांपूर्वचउत्तरसहचरइनितीनशब्दनिकाद्वंद्वसमासकरि
पीछैंचरशब्दकरणोसोद्वंद्वतैंचरशब्दप्रत्येकलगावणां॥तबपूर्वचरउत्तरचरसहचरऐसाहोय
पीछैं॥व्याप्यआदिकरिद्वंद्वकरणांतातैंपूर्वोक्तअर्थभया॥इहांसौगतकहियेबौद्धमतीसोक
हैहै॥विधिकासाधनदोयप्रकारहीहैस्वभावअरकार्यऐसें॥बहुरिकारणकैतौकार्यतैंअविना
भावकाअभावहै॥तातैंसाध्यकालिंगनाही॥जातैंकारणहैंतेकार्यसहितअवश्यहोयनाहीऐ।
सावचनहै॥बहुरिइहांकहैगेजोजाकारणकासामर्थ्यकाहूतैंरुकैनाहीऐसाकारणहैसोकार्य
प्रतिगमकहोयहैसोऐसाकहनांनबणैगा॥जातैंसामर्थ्यतौइंद्रियगोचरनाहीजोकारणमैंवि
द्यमानभीहैतौताकानिश्चयहोयपरि।कैनाही॥ताकासमाधानआचार्यकरैहैंऐसाकहनांविना
विचारैंहै॥ऐसैंदिखावनैकूंसूत्रकहैहै॥ ८ रसादेकसामग्र्यनुमानेनरूपानुमानमिच्छद्भिरिष्टमेवकिं ६६
चित्कारणंहेतुर्यत्रसामर्थ्याप्रतिबंधकारणांतरावैकल्ये॥५५॥ याका अर्थ॥ आस्वादमैंआयाजो

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊ दाजी ... ग्रन्थ संग्रह

रसतातैंतिसकैउपजावनहारीफलआदिसामग्रीताकाअनुमानकीजियेहै॥पीछैंतिसअनुमान
तैंरूपकाअनुमानहोयहै॥ऐसैंमानताजोबौद्धमतीताकरितानैंकिछूकारणकूंहेतुमान्यांहीजि
सकारणविषैसामर्थ्यकारोकनैवालानहोयतथासहकारीअन्यकारणकाविकलपणांनहो
यसमस्तसहकारीआयमिलैतिसकारणकैकार्यजोसाध्यताप्रतिगमकपणांहोयहै॥जातैंप
हलारूपकाक्षणहैसोअपनांसजातीयजोपिछलारूपकाक्षणस्वरूपकार्यताहिकरतासंता।
हीरूपनैंविजातीयजोरसतिसस्वरूपकार्यकूंकरैहै॥ऐसैंरसतैंरूपकाअनुमानकूंइष्टकरता
मानताजोबौद्धमतीसोकिसहीकारणकूंहेतुइष्टकरैहीहैमानैंहीहै॥जातैंपहलारूपकाक्षणहै
तातैंअपनांसजातीयरूपकादूसराक्षणाकैव्यभिचारनाहीहैउत्तरक्षणनामाकार्यकूंउपजावै
हीहै॥जोऐसैंनमानैंतौरसकैहीकालरूपकीप्राप्तिकाअयोगठहरै॥बहुरिअंत्यक्षणनैंप्राप्तभया
जोकारणतथाअनुकूलमात्रहीकूंनाहीलिंगमानिएहैजाकरिमणिमंत्रआदिकरिजाकीसामर्थ्यह
कनैंतेंतथाअन्यसहकारीकारणकासकलपनांनहोनैंतैंकार्यनाहीउपजावैतबकारणनामाहे
तुकैव्यभिचारीपणांआवैअरदूसरैक्षणकार्यप्रत्यक्षदेखिकरिकारणमांनितिसकारणतैंअनुप्रा
नकारियेतबअनुमानकैअनर्थकपणांआवैहमनैंतौकार्यतैंअविनाभावीपणांकरिनिश्चयकीयाऐ

सौं जो छत्र आदि कारणनिकूं छाया आदि का लिंगपणां करि अंगीकार कीया है जहां जाकी सामर्थ्य तौ का
हू करि रुकै नाहीं अर सहकारी अन्य कारण का सकलपणां होय कोई सहकारी घटता न होय ऐसा
निश्चयतैं कारणकूं हेतु मान्यां है सो तिसही कारणकै लिंगपणां है अन्य जामैं व्यभिचार दीखै सो का
रण हेतु नाहीं है तातैं बौद्धका है सो दोष नाहीं है इहां भावार्थ यह जो बौद्धमती कारणकूं तौ हेतु क
हैं नाहीं अर मानैं ऐसैं जो कानैं अंधारेमैं बिजौरा आदि फलका रसका आस्वादनता का अनुमान भ
या जो यह रस बिजौरा आदिका है पीछें तिस बिजौरा आदि कारणतैं ताके रूपका अनुमान कीया।
सो ऐसे अनुमानमैं तौ कारण हेतु आया ही अर यामैं व्यभिचार भी नाहीं जातैं सर्व तत्वकूं क्षणिक
मानि ऐसैं कहै है पहला क्षण तौ कारण है अर अनंतर क्षण ताका कार्य है सो पहले रूपके क्षण पि
छला रूप क्षणकूं उपजाया तैसैं ही पहले रसकै क्षण पिछले रसक्षणकूं उपजाया ऐसैं दोऊ।
समान कारण अर कार्य भये तहां कारणतैं कार्यका अनुमान निर्व्यभिचार होय है ऐसा नाहीं जो
प्रथम क्षण रहै जे क्षणका अनुकूल मात्र ही कारण है जातैं इहां तिसकी सामर्थ्य कोई रोकनेंवाला
कोई नाहीं अर सहकारीकी घटती नाहीं अथवा अंतक्षणमात्र नाहीं जातैं कार्य न उपजै अर जब
कार्य अवश्य उपजै तब व्यभिचार काहेका है का। ऐसैं जामैं व्यभिचार नाहीं सो कारण हेतु अव

श्य मानना योग्य है ॥ छ ॥ आगैं अब पूर्वचर अर उत्तरचर हेतुका स्वभाव कार्य कारणनामा हेतुनि विषै
अंतर्भाव नाहीं है तातैं न्यारे ही भेद हैं ऐसैं दिखावै है ॥ छ ॥ न च पूर्वोत्तरचारिणोस्तादात्म्यं तदुत्पत्ति
र्वा कालव्यवधाने तदनुपलब्धेः ॥ ५६ ॥ याका अर्थः ॥ पूर्वचर अर उत्तरचर हेतुकै तादात्म्य अर तदु
त्पत्ति नाहीं है । जातैं इनिकै कालका व्यवधान है कालका वीचिमैं अंतर है सो जहां व्यवधान होय
तहां तादात्म्य अर तदुत्पत्तिकी अप्राप्ति है ॥ तादात्म्य तौ स्वभाव अर स्वभाववान्कै कहिये अर तदु
त्पत्ति कार्य कारणकै कहिये ॥ भावार्थ ॥ साध्य साधनकै तादात्म्य संबंध होतैं स्वभावहेतु विषै अं
तर्भाव होय ॥ अर तदुत्पत्ति संबंध होतैं कार्य अथवा कारण विषै अंतर्भाव होय सो पूर्वचर उत्त
रचर हेतुकै कालका अंतर है तातैं दोऊही संबंध नाहीं तातैं स्वभाव कार्य कारणमैं इनिका अंतर्भा
व न होय ॥ जो सहभावी होय तिनिकै ही तादात्म्य संबंध होय ॥ अर अनंतर होय तिनिकै ही हेतु क
हिये कारण अर फल कहिये कार्य ऐसा भाव होय कालकै अंतरमैं ते दोऊ ही भाव नाहीं इहां तर्क
करै है ॥ जो कालका व्यवधान कहिये अंतर होतैं भी कार्य कारणभाव देखिये है जैसैं जागताकी द
शाका ज्ञानकै अर सोय करि फेरि जागताकी दशाका ज्ञानकै कार्य कारणभाव है तथा मरणकै अ
रिष्टकैं आवतैं अरिष्टकै कार्य कारणभाव है ऐसा तर्कका परिहारकैं अर्थि सूत्र कहै है ॥ छ ॥ भा

व्यतीतयोर्मरणजाग्रद्बोधयोरपिनारिष्टोद्बोधौप्रतिहेतुत्वं ॥५७॥ पाठका अर्थ ॥ आगामी होगा ऐसा
तौ मरण अर पहलैं जागै था ताका अतीत ज्ञान इनि दोऊनिकै मरणकै पहलैं आया जो अरिष्ट।
अर सूतां पीछैं जाग्यां की अवस्था का ज्ञान इनिकै कारणकार्यभाव नाहीं है अरिष्ट तौ आवै अर
मरण होय तथा नाहीं भी होय अर सूता जागै तब पूर्वली बात यादि आवै तथा नाहीं यादि आवै
॥ याही का समर्थन करै है सूत्र ॥ तद्व्यापाराश्रितं हि तद्भावभावित्वं ॥५८॥ इहां हि शब्द हेतु अ
र्थ मैं है तातैं यह अर्थ है ॥ जातैं तिस कारणकै सद्भाव होतैं कार्य का होना है सो कार्य मैं है सो।
कारणकै व्यापार कै आश्रय है तातैं जो पूर्वैं कहे जाग्रद्दशा अर प्रबुद्धदशा का ज्ञान अर म
रण अर अरिष्ट इनिकै तौ कारणकै अर कार्य कै काल का अंतर रहै तब कौ है रणकै व्यापार का आ
श्रय काहे का तातैं कार्यकारणभाव नाहीं है ॥ इहां यह अर्थ ॥ जो अन्वयव्यतिरेककरि निश्चय।
रूप सर्वत्र कार्यकारणभाव है सो एक कार्य प्रति कारणकै व्यापार की अपेक्षा लीयें ही हो है जै
सैं कुंभार कै कलश प्रति होय है जो कुंभार होय तौ कलश होय न होय तौ न होय तैसैं है सो जे अ
तिव्यवहित काल कै अंतर सहित होय तिनि विषै कारण का व्यापार का आश्रितपणां कहां ॥ भा
वार्थ ॥ ऐसा तर्क कीया जो कोई पुरुष रात्रिकूं जागै तैं कार्य विचारि सूता पीछैं प्रभाति जाग्या तब जो ६८

विचार्या था सो याद आया तहां पहली अवस्था का ज्ञान पीछली अवस्था का ज्ञानकूं कारण
भया ॥ बहुरि मरण तैं कै पहलैं अरिष्ट आवै है तिनिकूं मरणका कारण है ऐसैं काल कै अंतर रहैं तैं
भी कार्यकारणभाव हो है ताका समाधान आचार्य कीया जो ऐसैं नाहीं जातैं कार्य है सो कार
णकै व्यापार कै आश्रय है सो जिनिकै काल का अंतर रहै है तिनिकै कारण का व्यापार का आश्र
य कहां तैं होय कार्यकारण कै तौ अन्वयव्यतिरेकपणां है जो कारण होय तौ कार्य होय ही हो
य कारण न होय तौ कार्य न होय सो जहां काल का अंतर होय तहां कारणकै व्यापार का आ
श्रय कार्य कै संभवै नाहीं विना व्यापार कार्य होय नाहीं ऐसा जानना ॥ आगैं सहचर हेतु
कै भी स्वभाव कार्य कारण हेतुनि विषै अंतर्भाव नाहीं है ऐसा दिखावै है ॥ सहचारिणोर
पि परस्पर परिहारेणावस्थानात्सहोत्पादाच्च ॥५९॥ पाठका अर्थ ॥ जे सहचारी कहिए एक का
ल लार रहै है तिनिकै भी तादात्म्य अर तदुत्पत्ति नाहीं हो है जातैं परस्पर स्वरूप भेद करि परि
परिहार पाइए है अर एक काल दोऊ का उत्पाद है तातैं व्याप्यव्यापकभाव अर कार्यकारण
भाव नाहीं है ॥ तातैं न्यारा ही हेतुपणां है इहां यहु अभिप्राय है ॥ परस्पर परिहार करि जिनिका
ग्रहण होय है तिनिकै तादात्म्य नाहीं तातैं तौ स्वभावहेतु विषै अंतर्भाव नाहीं अर जिनि की सा।

थिउत्पत्ति है तिनिका कार्यविषै तथा कारणविषै अंतर्भाव नाही। जातैं एककालवर्त्तै जिनिकै का
र्यकारणभाव नाही है जैसैं गऊ कै वावां दाहिणां सींग है तिनिकै साथि उत्पत्ति है परस्पर कार्यका
रणभाव नाही तैसें ज्ञानका वऊरि एक कालन्नपजैं तिनिकै कार्यकारणभाव मानियै तौ कार्य
कारणकै प्रतिनियमका अभावका प्रसंग आवै इहां एकवस्तुविषै दोय भाव तिष्ठै तौ ऊतिः
निकै स्वरूपभेदतैं तादात्म्य न कहिये जैसैं रूप रसमैं स्वरूपभेद है अर एक वस्तुमैं दोऊ हैं ही व
ऊरि जिनिकै साथि उत्पाद नाही ऐसे धूम अग्नि आदि तिनिकै कार्यकारणभाव है ही तातैं सह
चर न्यारा ही हेतु है ॥ छ ॥ आगैं अव कहे हेतुनिके उदाहरण कहै है तहां प्रथम ही क्रममैं आया
जो व्याप्य नामा हेतु ताहि उदाहरणरूप करतें संतें है जे अन्वय व्यतिरेक तिनिकूं प्रधान का
रि शिष्य के आशय के वशतैं कहै है जे अनुमानके प्रतिज्ञादिक पांच अवयव तिनिकूं दिषावैं हैं
॥ छ ॥ परिणामी शब्दः कृतकत्वात् य एवं स एवं दृष्टो यथा घटः कृतकश्चायं तस्मात्परिणामीति य
स्तु न परिणामी स न कृतको दृष्टो यथा वंध्यास्तनंधयः कृतकश्चायं तस्मात्परिणामी ॥ ६ ॥ याका
अर्थ ॥ शब्द है सो परिणामी है यह तौ प्रतिज्ञा है जातैं कहे है यह हेतु है जो कृतक है सो परिणामी देषियै है
जैसैं घट है यह अन्वय व्याप्तिपूर्वक उदाहरण है वऊरि यह शब्द कृतक है यह उपनय है वऊरि तातैं परि
णामी है यह निगमन है ऐसैं तौ अन्वय व्याप्ति करि पंच अवयव दिषाये वऊरि परिणामी नाही है सो
कृतक नाही है देषियै है जैसैं वांझ का पुत्र यह व्यतिरेक व्याप्तिपूर्वक उदाहरण है अर यह शब्द कृत
क है तातैं परिणामी है ऐसे व्यतिरेक व्याप्ति करि दिषाये ते पांचूं ही समझनैं इहां अपनी उत्पत्ति विषै
जो परकै व्यापारकी अपेक्षा करै ऐसा भाव होय सो कृतक कहिये सो ऐसा कृतकपणां कूटस्थ
जो सदाकाल एकरूप वस्तु है ऐसा नित्यपक्ष विषै नाही वणै है वऊरि क्षणिक जो समय सम
य अन्य अन्य ही होय ता विषै भी नाही वणै है तातैं परिणामीपणां होतैं ही वणै है ऐसैं आगैं क
हसी इहां परिणामी की निरुक्ति ऐसी जो पूर्व आकार का तौ परिहार उत्तर आकार की प्राप्ति
अर दोऊमैं स्थिति ऐसा जाका लक्षण सो परिणाम सो जाकै होय सो परिणामी कहिये वऊरि
कृतकका ऐसा स्वरूप कहनैंतैं कार्यपणां काकोई स्वरूप कहै है जो स्वकारणसत्तासमवायकूं
कार्यत्व कहिये तथा अभूत्वाभावित्वकूं कार्यत्व कहिये तथा अक्रियादर्शीनोपि कृतबुद्धिउत्पाद
कत्वं ऐसा कहै है तथा कारणव्यापारानुविधायित्वं ऐसा कहै है ते सर्व निराकरण कीये कृतकका
ऐसा ही अर्थ सर्वत्र जाननां ऐसैं कृतकपणां हेतु है सो शब्दकै परिणामीपणांकूं साधै है सो परिणा
मीपणांतैं व्याप्य है तातैं व्याप्य नामा हेतु भया ॥ छ ॥ आगैं कार्य हेतुकूं कहै है ॥ छ ॥ अस्त्यत्र देहिनि बुद्धि र्व्या

हारादेः ॥६१॥ पाका० अर्थः पाप्राणी विषै बुद्धि है जातैं याकै वचनादिक की प्रवृत्ति है इहां आदि शब्द
तैं व्यापार आकार विशेष आदि लेरौं। वचनादिक अतुरता आदि बुद्धि विना होय नाहीं ऐसैं बुद्धि का
कार्य वचनादिक हैं ते बुद्धिनामा कारण जो साध्य ताकूं साधैं हैं तातैं कार्यनामा हेतु भया छ आगैं कारण
हेतुकूं कहै है छ ॥अस्त्यत्र छाया छत्रात॥६२॥ पाका० अर्थ॥ इहां छाया है जातैं छत्र देखिये है कहूं आ
पणां छत्र देख्या तब जो याकै नीचैं छाया भी है जहां छत्र है जहां छाया होय ही ऐसैं छत्रनामा का
रण हेतु छायानामा साध्यकूं साधै है तातैं कारण हेतु भया छ आगैं पूर्वचर हेतुकूं कहै है छ
उदेष्यति शकटं कृत्तिकोदयात ॥६३॥ पाका० अर्थ॥ रोहिणी नक्षत्र ऊगिसी जातैं कृतिका न
क्षत्र का उदय देखिये है इहां मुहूर्तां तैं ऐसा संबंध करणां जातैं ऐसा नियम है जो कृतिका का उद
य भयें पीछैं एक मुहूर्त मैं रोहिणी का उदय होय है सो पहलैं कृतिका का उदय देख्या तब जाणी रोहि
णी एक मुहूर्त मैं अवश्य ऊगिसी ऐसा पूर्वचर हेतु कृतिका का उदय भया छ आगैं उत्तरचर लि
गकूं कहै है छ ॥उदगाद्भरणिः प्राक्तत एव॥६४॥ पाका० अर्थ॥ भरणी नक्षत्र का उदय पहलैं भया
जातैं कृतिका का उदय देखिये है इहां मुहूर्त तैं पहलैं ऐसा संबंध करणां। काहूनैं कृतिका नक्षत्र का
उदय देखि करि जाण्या जो यातैं मुहूर्त पहलैं भरणी का उदय का नियम है सो वह भी उदय पहलैं भया। ७०

है यह भरणी के उदय पीछैं उदय है तातैं उत्तरचर हेतु कहिये छ आगैं सहचर लिंगकूं कहै है
छ ॥अस्त्यत्र मातुलिंगे रूपं रसात॥६५॥ पाका० अर्थ॥ इस मातुलिंग कहिये बिजौरा कै विषै रूप है जा
तैं रस है काहूनैं अंधारे मैं मातुलिंग का रस का स्वाद लीया तब जाण्यां यह है तामैं रूप भी है। इहां रस
हेतु है सो रूप तैं सहचर है ऐसैं अविरुद्धोपलब्धि हेतु के छह भेद कहे छ आगैं विरुद्धोपल
ब्धिकूं कहै है छ ॥विरुद्धतदुपलब्धिः प्रतिषेधे तथा॥६६॥ पाका० अर्थः॥ साध्य तैं विरुद्ध जे पदार्थ ति
निसंबंधी जे व्याप्य कार्य कारण पूर्वचर उत्तरचर सहचर तिनि की उपलब्धि है सो प्रतिषेध साध्य
विषै तथा कहिये पूर्वोक्त प्रकार ही छह भेद रूप है छ आगैं तहां साध्य विरुद्ध व्याप्य उपलब्धिकूं
कहै है छ ॥नास्त्यत्र शीतस्पर्शः औष्ण्यात॥६७॥ पाका० अर्थः इस जायगां शीतस्पर्श नाहीं है जातैं उ
ष्णपणां है छ इहां शीतस्पर्श साध्य है सो प्रतिषेध रूप है तातैं विरुद्ध अग्नि है तिसतैं व्याप्य स्वरूप उ
ष्णपणां है सो शीतस्पर्श तैं विरुद्ध व्याप्योपलब्धि हेतु है छ आगैं विरुद्ध कार्य का उपलंभ कहै है छ
नास्त्यत्र शीतस्पर्शो धूमात॥६८॥ पाका० अर्थः॥ इहां शीतस्पर्श नाहीं है जातैं धूम है छ इहां भी प्रति
षेध रूप साध्य शीतस्पर्श है तातैं विरुद्ध अग्नि है ताका कार्य धूम है सो हेतु है शीतस्पर्श का प्रतिषेधकूं
है सो साध्य विरुद्ध कार्योपलब्धि हेतु भया छ आगैं विरुद्ध कारण की उपलब्धि कहै है छ ॥नास्मिन् श

रीतिणि सुखमस्तिहृदयशल्यात॥ ६९॥ याका अर्थ॥ इस प्राणी विषे सुख नाहीहै जातैंयाके हृदय
मैं शल्य है छ इहां सुखका विरोधी जो दुःखताका कारण जो हृदय शल्य सो है तुहै सो सुखके प्रति॥
षेधकूं साधैहै सो प्रतिषेध साध्य विषै विरुद्धकारणोपलब्धिहेतु भया छ आगैं विरुद्धपूर्वचरहे
तुकूं कहैहै॥ नोदेष्यति मुहूर्त्तांते शकटं रेवत्युदयात॥ ७०॥ मुहूर्त्तके अंतमैं रोहिणी नाही ऊगैगा
जातैं रेवतीका उदय है इहां रोहिणीके उदयतैं विरुद्ध जो अश्विनीका उदय ताके पूर्वचर रेवतीका
उदय है तु है सो रोहिणीके उदयका प्रतिषेधकूं साधैहै सो विरुद्धपूर्वचर हेतु भया॥ छ आगैं वि
रुद्धउत्तरचरलिंगकूं कहैहै छ॥ नोदगाद्भरणिर्मुहूर्त्तात पूर्वं पुष्योदयात॥ ७१॥ याका अर्थ॥ भ
रणी नाहीं ऊगी है मुहूर्त्ततैं पहली जातैं पुष्यका उदय है इहां भरणीके उदयतैं विरुद्ध पुनर्वसुका
उदय है ताके उत्तरचर पुष्यका उदय है तु है सो भरणीका उदयका प्रतिषेधकूं साधैहै सो विरु
द्धउत्तरचर हेतु भया छ आगैं विरुद्धसहचरहेतुकूं कहैहै छ॥ नास्त्यत्र भित्तौ परभागाभावो
ऽर्वाग्भागदर्शनात॥ ७२॥ याका अर्थ॥ या भीति विषै परले भागका अभाव नाहीहै जातैं वेलाएक
भाग देषियेहै छ इहां परले भागका अभावकै विरुद्ध जो तिस परले भागका सद्भाव ताके सहच
र जो वेलाभागताका दर्शन सो विरुद्धहेतु है ऐसें विरुद्धोपलब्धिहेतुके छह भेद कहे छ आगैं साध्य

डाक्टर भाऊदाजी स्मारक
Dr. BHAU DAJI
MEMORIAL

तैं अविरुद्ध जो अनुपलब्धि कहिए अप्राप्तिताके भेद कहैहै छ॥ अविरुद्धानुपलब्धिः प्रतिषेधे
सप्तधा स्वभावव्यापककार्यकारणपूर्वोत्तरसहचरानुपलंभभेदात॥ ७३॥ याका अर्थ॥
साध्यतैं अविरुद्धकी अनुपलब्धि सो प्रतिषेध साध्य विषै सात प्रकार है स्वभाव व्यापक का
र्य कारण पूर्वचर उत्तर सहचर इनि भेदनितैं छ इहां स्वभाव आदि पदनिका द्वंद्वसमास है ति
निका अनुपलंभ ऐसें पीछैं षष्ठीतत्पुरुष समास है छ आगैं स्वभावानुपलंभका उदाहरण
कहैहै छ॥ नास्त्यत्र भूतले घटोनुपलब्धेः॥ ७४॥ याका अर्थ॥ या पृथिवीतल विषै घट नाही
है जातैं अनुपलब्धि है दीषै नाहीहै छ इहां कोई कहै पिशाचका रूपकूं दीषै नाही तथा परमाणुआ
दि सूक्ष्मवस्तुका रूपकूं दीषै नाही तिनिका नास्तित्व नाही है तातैं हेतुकै व्यभिचार आवै है तो ताके प
रिहारकै अर्थि इहां अनुपलब्धि लक्षणप्राप्त पणां कहिये दृश्यपणां जामैं है अर दीषै नाही है ऐसा हेतु
का ऐसा विशेषण करि लेणां छ इहां केवल भूतल घटरहित स्वभाव है सो ही स्वभाव अनुपल
ब्धि है सो प्रतिषेध स्वरूप जो घट ताकै अविरुद्ध है सो घटके प्रतिषेधकूं साधै है तातैं स्वभावानुपलं
भ हेतु भया छ आगैं व्यापकानुपलब्धि हेतुकूं कहैहै॥ छ॥ नास्त्यत्र शिंशपा वृक्षानुपलब्धेः॥
७५॥ याका अर्थ॥ इस क्षेत्रमैं शीसं नाही है जातैं इसकी अनुपलब्धि है वृक्ष दीषै नाही छ इहां वृ

वृक्ष व्यापक है ताके अभाव होतैं तिसकै व्याप्य शीसपैं है ताका भी अभाव है सो वृक्ष की अनुपलब्धि शी
सपके प्रतिषेध कूं साधै है तातैं व्यापकानुपलब्धि हेतु है छ आगैं कार्य की अनुपलब्धि कूं कहै है छ ॥
नास्त्यत्राप्रतिबद्धसामर्थ्योग्निर्धूमानुपलब्धेः ॥ ७६ ॥ याका अर्थः ॥ इस जायगा नाहीं रुक्या है साम
र्थ्य जाका ऐसी अग्नि नाहीं है जातैं धूम की अनुपलब्धि है इहां अग्नि का कार्य धूम है सो अग्नि का वि।
शेषण कीया जो अप्रतिबद्धसामर्थ्य सो इस विशेषणतैं जो धूम नामा कार्य कूं अवश्य निपजा।
वै ऐसी अग्नि का प्रतिषेध है सो साध्य है इहां धूम नामा कार्य दीखै नाहीं पक्ष है तु अग्नि के प्रतिषे
ध कूं साधै है तातैं कार्यानुपलब्धि नामा हेतु भया छ आगैं कारण का अनुपलंभ कूं कहै है ॥ नास्त्य
त्र धूमोनग्नेः ॥ ७७ ॥ याका अर्थ ॥ इस जायगा धूम नाहीं है जातैं अग्नि नाहीं है इहां अग्नि धूम का
कारण है सो ताकी अनुपलब्धि तैं धूम का प्रतिषेध साध्या है तातैं कारणानुपलंभ हेतु भया छ ॥
आगैं पूर्वचर की अनुपलब्धि कूं कहै है छ ॥ न भविष्यति मुहूर्तान्ते शकटं कृत्तिकोदयानुपलब्धेः
॥ ७८ ॥ याका अर्थः ॥ मुहूर्त के अंत मैं रोहिणी का उदय न होसी जातैं कृतिका का उदय की अ
नुपलब्धि है नाहीं दीखै है इहां मुहूर्त के अंत में रोहिणी का उदय का प्रतिषेध साध्य है ताका कृतिका
के उदय का अनुपलंभ पूर्वचरानुपलब्धि हेतु है छ आगैं उत्तरचर की अनुपलब्धि कूं कहै है छ ॥ ७२

नोदगाद्भरणिर्मुहूर्तात्प्राक्तत एव ॥ ७९ ॥ याका अर्थ ॥ मुहूर्त पहली भरणि नाहीं ऊगी है जातैं
कृतिका का उदय की अनुपलब्धि है इहां मुहूर्त पहली भरणि के उदय का प्रतिषेध साध्य है ता
का कृतिका का उदय की अनुपलब्धि है तु है सो उत्तरचरानुपलब्धि हेतु भया छ आगैं सहचर
की अनुपलब्धि का अवसर है सो कहै है छ ॥ नास्त्यत्र समतुलायामुन्नामो ● नामानुपलब्धेः ॥ ८०
याका अर्थः ॥ इस बरोबरि डांडी की ताखड़ी कै विषै डांडी एक वोर ऊंची नाहीं है जातैं दूसरी वोर
नीची डांडी की अनुपलब्धि है एकै वोर नीचापणां एक वोर ऊंचापणां सहचर है तिनि मैं एक का
निषेध साध्य एक का निषेध हेतु भया सो सहचरानुपलब्धि हेतु है छ आगैं विरुद्ध कार्य आदिक
की अनुपलब्धि विधि विषै संभवै है ताके भेद तीन ही हैं तिनि कूं दिखावनें कूं कहै है छ ॥ विरुद्धानुपल
ब्धिर्विधौ त्रेधा विरुद्धकार्यकारणस्वभावानुपलब्धिभेदात् ॥ ८१ ॥ याका अर्थ ॥ साध्य तैं विरुद्ध की
अनुपलब्धि सो विधि साध्य विषै तीन प्रकार है विरुद्धकार्यानुपलब्धि कहिये साध्य तैं विरुद्ध पदा
र्थ का कार्य का अभाव बहुरि विरुद्धकारणानुपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध पदार्थ का कारण का
अभाव बहुरि विरुद्धस्वभावानुपलब्धि कहिये साध्य तैं विरुद्ध पदार्थ का स्वभाव का अभाव ऐसे तीन भे
द नितैं छ आगैं तिनि मैं विरुद्धकार्यानुपलब्धि कूं कहै है छ ॥ यथास्मिन्प्राणिनि व्याधिविशेषोस्ति

निरामयचेष्टानुपलब्धेः॥ ८२॥ याका अर्थ॥ इस प्राणी विषै रोग का विशेष है जातैं नीरोग चेष्टा की या
विषै अनुपलब्धि है इहां व्याधिविशेष का सद्भाव साध्य है तिसतैं विरोधी व्याधिविशेष का अभाव है ता
का कार्य नीरोगचेष्टा ताकी अनुपलब्धि हेतु है सो विरुद्ध कार्य की अनुपलब्धि नामा हेतु भया ॥ छ ॥ आ
गैं विरुद्ध कारण की अनुपलब्धि कूं कहै है ॥ अस्त्यत्र देहिनि दुःखमिष्टसंयोगाभावात् ॥ ८३॥ याका अ
र्थ॥ इस प्राणी विषै दुःख है जातैं इष्टसंयोग का याकै अभाव है इहां दुःख का विरोधी सुख ता का का र
ण इष्टकसंयोगता की अनुपलब्धि हेतु है सो दुःख कै सद्भाव कूं इष्टसंयोग का अभाव साधै है तातैं वि
रुद्ध कारणानुपलब्धि हेतु भया ॥ छ ॥ आगैं विरुद्धस्वभावानुपलब्धि कूं कहै है ॥ अनेकांतात्मकं व
स्त्वेकांतस्वरूपानुपलब्धेः ॥ ८४॥ याका अर्थ॥ वस्तु है सो अनेकांतस्वरूप है जातैं एकांतस्वरूप
की अनुपलब्धि है ॥ छ ॥ इहां अनेकांतात्मक का विरोधी नित्य आदि एकांत है सो लेणां बुद्धि तिसका
ज्ञान नाहीं लेणां जातैं एकांत का ज्ञान कै तौ मिथ्याज्ञानरूपपणां करि उपलंभ का संभव है एकां
त का स्वरूप अवस्तुभूत है ताकी अनुपलब्धि हेतु है सो वस्तु कूं अनेकांतस्वरूप साधै है तातैं
विरुद्धस्वभावानुपलब्धि हेतु भया ॥ छ ॥ आगैं पूछै है कि व्यापक विरुद्ध कार्यादिका बुद्धि परंपरा
करि अविरोधी कार्यादि लिंगनि का बुद्धि ताकरि उपलंभ का संभव है सो तिनि भी आचार्य क्यौं उदा

हरणरूप कीये नाहीं ऐसी आशंका होतैं सूत्र कहै है ॥ छ ॥ परंपरया संभवत्साधनमत्रैवांतर्भावनीयं
॥ ८५॥ याका अर्थ॥ परंपरा करि जे साधन कहिये हेतु संभवतै होंहि ते इनि कहै आदि हेतुनि विषै ही
अंतर्भाव करनैं ॥ छ ॥ आगैं तिस ही हेतु के उपलक्षण कै अर्थि दोय उदाहरण दिखावै है ॥ छ ॥ अभ
दत्र चक्रे शिवकः स्थासात् ॥ ८६॥ याका अर्थ॥ इस चाक विषै शिवक पहलैं हूवा है जातैं स्थास
देखिये है इहां ऐसा भावार्थ जो कुंभार चाक परि माटी का पिंड धरि वासण बणावै है तब पिंड के
आकार अनुक्रम तैं करै है तिनि की संज्ञा ऐसी शिवक छत्रक स्थास कोश कुसूल इत्यादि सो इहां
का हूंनै स्थास देख्या तब जान्यां जो इहां पहलैं शिवक भया था सो इस हेतु की संज्ञा तो कहां अन्या
का अंतर्भाव कौन मैं भया ऐसी आशंका होतैं कहै है कार्यकार्यमविरुद्धकार्योपलब्धौ ॥ ८७॥ याका
अर्थ॥ यह कार्य का कार्य है सो अविरुद्ध कार्योपलब्धि विषै अंतर्भाव करना इहां सूत्र विषै अंतर्भाव
नीयं ऐसा उपरले सूत्र तैं संबंध करणां पहलै शिवक का कार्य छत्रक भया ताका कार्य स्थास भया।
सो याकूं अविरुद्धकार्य की उपलब्धि विषै अंतर्भूत करणां ॥ छ ॥ आगैं दृष्टांतद्वार करि दूसरा उदाहरण
कहै है ॥ छ ॥ नास्त्यत्र गुहायां मृगक्रीडनं मृगारिसंशब्दनात् कारणविरुद्धकार्यं विरुद्धकार्योपलब्धौ
यथा ॥ ८८॥ याका अर्थ॥ इस पर्वत की गुफा विषै मृग का क्रीडना नाहीं है जातैं नाहर बोलै है इहां कार

णविरुद्धकार्यहैसोविरुद्धकार्यकीउपलब्धिविषैअंतर्भूतकारणपउसूत्रपहलेसूत्रकादृष्टांतरूप
हैजैसैंइहांअंतर्भावतैसैंपहलेसूत्रमैंअंतर्भावजाननांजातैंमृगकीक्रीडाकाकारणमृगहैताका
विरोधीमृगारिकहियेनाहरहैतिसकाकार्यसंशब्दनकहियेंबोलनांहैसोमृगकीक्रीडाकेअभा
वकूंसाधैहैतातैंहेतुहैयहु जैसैंविरुद्धकार्यकीउपलब्धिविषैअंतर्भूतहोयहैतैसैंपहलैंकह्या
सोतिसमैंअंतर्भूतजाननां छ आगैंबालकहियेअल्पज्ञानकैज्ञानकरनैकेअर्थिपांचअवय
वनिकाप्रयोगहैऐसैंकह्याथासोजोव्युत्पन्नहोयज्ञानवानहोयन्यायशास्त्रविषैप्रवीणहोय
तिसप्रतिप्रयोगकानियमकैसैंहैऐसीआशंकाहोतैंसूत्रकहैहै छ॥ व्युत्पन्नप्रयोगस्तुत
थोपपत्त्यान्यथानुपपत्त्यैववा॥ ९०॥ पाका अर्थ॥ न्यायशास्त्रकेविषैप्रवीणजोव्युत्पन्नता
प्रतिप्रयोगकीजियेसोदोयहीप्रकारहै॥ एकतौतथोपपतिकहियेसाध्यहोतैंहीहेतुकीउपपतिहै
दूसराअन्यथोपपतिकहियेसाध्यकाअभावहोतैंहेतुकीअनुपपतिहै ऐसैंदोयप्रकारहैंइनिमैं
ऐककाप्रयोगकरनांइहांव्युत्पन्नप्रयोगकासमासऐसाजोव्युत्पन्नकाप्रयोगऐसैंषष्ठीतत्पुरु
ष तथीव्युत्पन्नकेअर्थिप्रयोगऐसैंचतुर्थीतत्पुरुष छ आगैंतिसहीअनुमानकारूपकहैहै छ
अग्निमानयंप्रदेशस्तथैवधूमवत्त्वोपपत्तेर्धूमवत्त्वान्यथानुपपत्तेर्वा॥ ९१॥ पाका अर्थ॥ यहप्रदे ७४

शअग्निमानहैजातैंतैसैंहोतैंहीधूमवानपणांकीयामैंउपपतिहैधूमवानपणांवणैंहै॥ अथवाधूम
वानपणांकीअग्निमानपणंविनाअनुपपतिहैधूमवानपणांनाहीवणैंहै॥ ऐसोप्रयोगकरनां
छ आगैंपूछैंहैजोसाध्यसाधनतैंन्यारैऐसेदृष्टांतआदिककेभीव्याप्तिकीप्रतिपतिप्रतिउपयो
गीपणांहैएभीउपकारीहैंसोव्युत्पन्नकीअपेक्षाइनिकाप्रयोगकैसैंनाहीऐसैंपूछैंसूत्रकहैहै॥
छ॥ हेतुप्रयोगोहियथाव्याप्तिग्रहणंविधीयतेसाचतावन्मात्रेणव्युत्पन्नैरवधार्यते॥ ९२॥ पाका
अर्थ॥ व्युत्पन्नपुरुषहेतुकाप्रयोगकरैहैंतेजैसैंव्याप्तिग्रहणहोयजायतैसैंकरैहैं॥ सोतिसव्या
प्तिकूंव्युत्पन्नपुरुषतिसहेतुकेप्रयोगमात्रहीकरिअवधारणकरैहैंनिश्चयकरैंहैं इहांहिश
ब्दहैसोहेतुअर्थमैंहै॥ तातैंऐसाअर्थभयाजातैंतथाउपपतिअन्यथाअनुपपतिऐसैंअन्वयव्य
तिरेकरूपव्याप्तिकाग्रहणकूंनउलंघिकरिहेतुकाप्रयोगव्युत्पन्नकरैहैं॥ तातैंताकरिहीव्युत्पन्नहैंते।
व्याप्तिकानिश्चयकरिलेहैंदृष्टांतादिककाकिछप्रयोजननरह्या॥ दृष्टांतादिककेव्याप्तिकीप्रतिपति।
प्रतिअंगपणांजैसैंनाहीहैतैसैंपहलैंकहआयेइहांफेरिकाहेकूंकहिये छ आगैंदृष्टांतआदिका
प्रयोगहैसोसाध्यकीसिद्धिकेअर्थिभीफलवाननाहीहैऐसैंकहैहै छ॥ तावताचसाध्यसिद्धिः॥ ९२
पाका अर्थ॥ तावताकहियेविपक्षविषैजाकाअसंभवनिश्चितहोयऐसेहेतुकेप्रयोगमात्रहीकरिसा

ध्यकी सिद्धि है दृष्टांतादिकका प्रयोजन नाहीं ॥ छ ॥ आगें इस ही कारण करि पक्षका प्रयोग है सो भी स-
फल है ऐसें दिखावते संते कहै हैं ॥ छ ॥ तेन पक्षस्तदाधारसूचनायोक्तः ॥ ४३ ॥ याका अर्थ ॥ जा कारण
करि पूर्वोक्त विधान ही करि व्याप्तिकी प्रतिपत्ति होय तिस कारण करि तिसका आधारका सूचन कहि-
ये साध्यतैं व्याप्त जो साधन ताके आधारके सूचनेंकै अर्थि पक्ष कह्या है ॥ इस कहनें करि बौद्धमती क-
है है ताका निराकरण कीया ॥ बौद्धमतीका श्लोकका अर्थ ॥ जे साध्यव्याप्त साधनकूं नाहीं जानें हैं ति-
नि प्रति पंडितजन दृष्टांत विषै साध्य साधनभाव प्रकट करै है ॥ अर पंडितनिकूं तौ एक हेतु
ही कहनें योग्य है ॥ ऐसें बौद्धमती कहै है जो पंडितनिकै तौ एक हेतु ही प्रयोग युक्त है तिनिका निराक-
रण करि पक्ष हेतु दोऊ प्रयोगनिका स्थापन कीया है ॥ छ ॥ जातैं व्युत्पन्न प्रति जैसा कह्या तैसें हेतुका
प्रयोग करैं तौ ऊ पक्षके प्रयोग विना साधनके नियमरूप आधारपणांका निश्चय न होय ॥ ऐसें परो-
क्ष प्रमाणके भेदनि विषै अनुमानका निरूपण कीया ॥ छ ॥ आगें अनुमानका स्वरूप प्रतिपादन क-
रि अब अनुक्रममैं आया जो आगम ताका स्वरूपकूं निरूपण करनें कूं कहै हैं ॥ छ ॥ आप्तवाक्या-
दिनिबंधनमर्थज्ञानमागमः ॥ ४४ ॥ याका अर्थ ॥ आप्तका वाक्य आदि है कारण जाकूं ऐसा अर्थ-
का ज्ञान सो आगम प्रमाण है ॥ छ ॥ तहां जो जिस उपदेशादि कार्य विषै अवंचक होय सो तहां आप्त है ७५

ऐसे आप्तके वचन अर आदि शब्द करि अंगुली आदिकी समस्या लेणी सो है कारण जाकूं ऐसा अ-
र्थज्ञान ताकूं आगमप्रमाण कहिये ॥ इहां इस सूत्रकी पदव्यवस्था ऐसी ॥ जो अर्थज्ञान ही कहिये तौ प्र-
त्यक्ष आदितैं भी अर्थज्ञान होय है तिनि विषै अतिव्याप्ति होय तातैं वाक्यनिबंधन कह्या बहुरि ऐसें
भी कहै है हरेकके वाक्यनिबंधन विषै अतिव्याप्ति होय तातैं आप्त कह्या बहुरि ऐसें भी कहै आप्तका
वाक्य कानि करि सुण्यां तव श्रावण प्रत्यक्ष मतिज्ञानरूप सो व्यवहारिक प्रत्यक्ष भया ता विषै अति-
व्याप्ति होय या तैं अर्थज्ञान ऐसा कह्या ऐसें आगमका लक्षण निर्दोष है इहां अर्थ। का स्वरूप ता-
त्पर्यरूप जाननां ॥ बहुरि आप्त शब्दके ग्रहणतें मीमांसक आगमकूं अपौरुषेय मानें है ताका निरा-
करण है ॥ बहुरि अर्थज्ञान पद करि अन्यापोह कहिये अन्यके निषेधकूं बौद्धमती शब्दका अर्थ मा-
नैं है ताका निराकरण है तातैं अन्यापोह ज्ञान आगम प्रमाण नाहीं तथा शब्दका वेदई ऐसा अर्थ मानें
है जैसें काहूनैं कह्या जो घट ल्यावत वताकूं सुणि ऐसा विचारै ता जल भरनेंके अर्थि घट मंगावै है य-
ऊ वाक्य ऐसें सूचै है ॥ ऐसा अभिप्राय कल्प्य प्रवर्त्या वै सो ऐसा अभिप्रायकै अर्थपणांका निराक-
रण है ॥ तातैं अभिप्राय सूचन आगम प्रमाण नाहीं ॥ छ ॥ अब मीमांसक मतका विशेष जो भट्टमतति-
सकूं भी कहै हैं है जो यह आगमका लक्षण असंभवी है ॥ जातैं शब्दके नित्यपणांतैं अपौरुषेयपणां है ता-

तैं आप्तका कह्यापणांका अयोग है । बहुरि शब्दकै नित्यपणां है जातैं याकै अवयव जे अक्षर तिनिकै व्या
पकपणां है सर्व देशमैं अक्षर व्याप्त रहै हैं अर नित्य हैं तातैं शब्द भी नित्य ही है । बहुरि अक्षरनिका व्याप
कपणां असिद्ध नाहीं है । एक जायगां उच्चार रूप भया जो गोशब्दका गकारादिक अक्षर सो प्रत्यभिज्ञान
करि अन्य देश विषै भी ताका ग्रहण होय है जो एक देशमैं सुण्या था गकारादिक सो ही अन्य देशमैं सु
ण्यां तब जाण्यां जो सो ही यह गकारादिक है । बहुरि ताका नित्यपणां तिस प्रत्यभिज्ञान करि ही निश्च
य भया जातैं कालांतर कै विषै भी तिस ही गकारादिक का निश्चय होय है । बहुरि इस हेतु तैं भी नित्य
पणां निश्चय कीजियै जो शब्दकै संकेत की नित्यपणां विनां अप्राप्ति है । सो ही कहियै है । एक शब्द
का संकेत ग्रहण कीया जो यह शब्द या अर्थकूं कहै है पीछैं तिस शब्द का नाश होतैं अब जाका सं
केत ग्रहण न कीया ऐसा शब्द अस ही श्रवणमैं आया मानियै तौ इस विना संकेत ग्रहण कीये शब्द
तैं अर्थ की प्रतीति रूप ज्ञान कैसैं होय जो इस शब्द का यह ही अर्थ है अर अर्थरूप प्रतीति लीयें ज्ञान नहो
य ही है सो इहां भी संकेततैं ऐसा जानियै है कि यह है कि यह लैं सुण्यां था सो ही यह शब्द है प्रत्यभिज्ञा
न इहां भी सुलभ है इहां संकेत का उदाहरण ऐसा जो गोशब्दका संकेत खुर ककुद लांगूल सास्ना
दिक सहित अर्थ विषै है । बहुरि अक्षरनिकै अथवा शब्दकै नित्यपणां होतैं सर्व पुरुषनिकरि सर्वकाल

DR. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी स्मारक

मैं सुणनेंका प्रसंग आवै है ऐसा भी न माननां । जातैं शब्दकी अभिव्यक्ति कहियै श्रवणमैं आवै ऐसा
प्रगट होना सो सदाकाल नाहीं संभवै है । बहुरि याका असंभव का कारण यहु जो शब्दकै अभिव्यं
जक कहियै प्रगट करनेंवाले पवन हैं तिनिकै अक्षर अक्षर प्रति न्यारा न्यारापणां है तालुवा हो
ठ आदि संबंधी पवन न्यारे न्यारे हैं सो वक्ता कै प्रेरे पवन चलैं तब अक्षर प्रगट होय । बहुरि ऐसा ना
ही जो ए पवन नाहीं वर्णै है जातैं प्रमाणतैं पवन प्रसिद्ध है सो ही कहियै है । जे वक्ता के मुखके निक
ट देशवर्ती पुरुष हैं ते तौ अपनां स्पर्शन प्रत्यक्ष प्रमाण करि शब्दके व्यंजक पवननिकूं ग्रहण करैं
ही है जानैं ही हैं । बहुरि वक्ता तैं दूर देशवर्ती हैं ते मुखके समीप तिष्ठते जे तूल कहियै रज फूंफदा सू
क्ष्म तिनिकै चलनेंतैं अनुमानरूप जानैं हैं बहुरि सुननेंवालाका कानकै प्रदेशनि विषै शब्दकै सु
ननैं की अन्यथा अनुपपत्तितैं अर्थापत्ति प्रमाणतैं भी निश्चय कीजियै है जो पवन शब्दकूं न प्रेरै तौ
श्रोताका कानतांई कैसैं जाय तातैं पवनतैं शब्दकै अक्षरनिकी अभिव्यक्ति होय है तातैं सर्वकाल स
र्वकरि नाहीं सुणियै है । बहुरि अभिव्यक्तिपक्षमैं सर्वकरि सर्वकाल सुननेंका प्रसंगरूप दोष वतावै
तौ उत्पत्तिपक्षमैं भी एही दोष आवै है । भावार्थ मीमांसक शब्दकूं नित्य मानै है अर अभिव्यक्ति सदा नाहीं मा
नैं है ताकै पक्षमैं अनित्यपक्षकरि उत्पत्ति माननेंवाला जो नैयायिक सो दोष वतावै तौ ताकूं मीमांसक

कहै है जो अनित्यपक्ष मैं एही दोषवारा वरि आवै है सो ही कै है है सो है है यह शब्द है सो पवन अर आकाश
का संयोग सो तौ असमवायिकारण कहिये सहकारी कारण अर आकाश समवायिकारण है नि
तैं दिशा देश आदिका अविभाग करि उपजता होय है सो सौ सावै ही करि तौ सुननें न आवै नियमरूप
न्यारे न्यारे दिशा देश में तिष्ठते पुरुषनि करि यह है तैसैं ही नित्यपक्ष मैं अभिव्यंजमानाका कहिये प्रगट हो
ना सुनिये है॥ ऐसैं समान भया॥ बहुरि अभिव्यक्तिका संकरपणां भी नाही है जातैं यह भी दोऊ पक्ष मैं
समान है॥ सो ही कहिये है॥ जैसैं तालु आदिका संयोग तैं जो वर्ण जिस तैं उपजै है सो तिस ही तैं उप
जै है अन्यका संयोग तैं अन्य नाही करिये है तैसैं ही अन्य ध्वनिका अनुसारी ताल्वादि है तैं अन्य
ध्वनिका आरंभ नाही करै है तातैं संकरपणांका दोष बतावै तौ यह भी समान ही आवै है॥ तातैं उत्प
त्तिपक्ष अर अभिव्यक्तिपक्ष विषै समानपणां होतैं एक ही पक्ष विषै प्रश्न का अवसर नाही ऐसैं।
मीमांसक कहै है हमारा कहनां सर्व ही निश्चित है बहुरि कि छू और कहै है जो अक्षरनिकै अर
ति नित्यरूप जो ज्ञान ताकै कूटस्थ स्वरूप नित्यपणां भी मति होऊ तौऊ वेदकै अनादि परंपराक।
रि चल्या आवनें तैं नित्यपणा है तातैं आगमका पौरुषेयलक्षण कीया ताकै अव्यापकपणां दूष
ण आवै है बहुरि यह प्रवाह करि परंपरा करि नित्यपणां है सो अप्रमाणस्वरूप नाही है॥ अवा ७७

रभी या का कर्ता कोई दीषै नाही॥ बहुरि अतीत अनागत काल विषै या का कर्ता का अनुमान करावनें
वाला लिंगका अभाव है॥ जो साध्य साधन अतींद्रिय हैं तिनिका संबंध सदाकाल अतींद्रिय है॥ ताकों
इंद्रियनि करि ग्रहण करनें योग्यपणांका अभाव है॥ जातैं ऐसैं कह्या है जो लिंग प्रत्यक्ष करि ग्रह
ण होय सो ही है तिही तैं अनुमान होय है॥ ग्रहण कीया है संबंध जानैं ऐसे पुरुषकै एकदेश
कदेखनें तैं जो पदार्थ इंद्रियनि तैं न भिडै ऐसा परोक्ष ताका ज्ञान होय है सो अनुमान है॥ बहुरि
वेदके कर्ता की अर्थापत्तिप्रमाण तैं भी सिद्धि नाही होय है॥ जातैं जाके होतैं अवश्य अन्य अर्थ आ
पडै तिस तैं अर्थापत्ति होय सो ऐसा अनन्यथाभूत अर्थ का अभाव है॥ बहुरि उपमानप्रमाण भी वे
दका कर्त्ताका साधक नाही॥ जातैं उपमान उपमेय दोऊ ही प्रत्यक्ष नाही॥ यातैं केवल अभावप्रमा
ण ही वाकी रह्या सो वेदका कर्त्ताका अभाव ही कूं साधै है॥ बहुरि ऐसैं नाही कहनां जो पुरुषका स
द्भावका साधनां जैसैं दुःसाध्य है तैसैं या का अभावका भी साधनां दुसाध्य है या तैं संशयकी आपत्ति।
आवै॥ जातैं तिसकै कर्त्ताका अभावके साधक प्रमाण सुलभ हैं॥ प्रवार काल विषै तौ तिसकै अ।
भाव विषै प्रत्यक्षप्रमाण साधक है अतीत अनागत काल विषै अभावका साधक अनुमानप्रमा
ण है॥ इहां अनुमानके प्रयोग के दोय श्लोक कहै हैं तिनिका अर्थ॥ अतीत अनागत काल है तैं वेदके कर्त्ता

करिरहितहैं जातैं कालग्रैसाज्ञात्करिकहनैंयोग्यग्रर्थहै जैसाग्रवारकालतैसेहीतैभीकालोहैं। ब
हुरिकोई पूछै वेदकापरनांकेसैंहैतौताकूंकहियेजोवेदकापढनांहैसोसर्वहीवेदकेपरनेपूर्वकैहैय
हलेंपरेहैं तैग्रम्म्पकूंपरावैहैसैंहीपरिपारीचलीग्रावैहै जातैं वेदकाग्रध्ययनग्रैसेपदकरिवा।
च्यकहियेकहनैयोग्यग्रर्थहै। जैसैंग्रवारकोईपुढेहैसोग्रैसैंहीपरनेकीपरिपारीहै॥ छ ॥ वहुरितै।
सैंहीग्रन्यपयोगकहैहै॥ वेदहैसोग्रपौरुषेयहै॥ जातैंसंप्रदायकाग्रविछेदपणांहोतैंजाकाक
र्त्ताकास्मरणनाहीकथनीनाहीवेदकेसंप्रदायीकीपरिपारीमेंकाहूनैंकर्त्तादेष्यानाहीसुण्यो
नाहीकह्यानाही॥ जैसैंग्राकाशकाकर्त्ताकाहूनैंकत्यानीहीतैसैं॥ वहुरियथार्थप्रतिप्रमाणहैता।
करिवेदकेकर्त्ताकाग्रभावनिश्चयकीजियेहै जातैंवेदकीप्रमाणताहैलक्षणजाकाग्रैसाग्र।
न्यथाभूतपदार्थकादर्शनकहियेसद्भावदेषियेहै॥ जातैंधर्मग्रादिग्रतींद्रियपदार्थहै विषयजा।
काग्रैसाजोवेदताकाग्रल्पज्ञपुरुषनिकरिकनैंकाग्रसमर्थपणांहै ग्ररग्रतींद्रियपदार्थकादेष
नेंवालापुरुषकाग्रभावहीहै तातैंवेदकाप्रमाणपणांग्रपौरुषेयपणांहीकूंसाधैहै॥ ग्रैसैंमीमांस
कनैंग्रपनांवेदकैग्रपौरुषेयपणांकूंदृढकीयापौरुषेयग्रागमकूंदूषणादीया॥ छ ॥ ग्रवग्राचार्यया
काप्रत्युत्तरकीविधिकरैहै॥ प्रथमतौजोकत्याकिग्रक्षरनिकैव्यापीपणांविषैग्ररनित्यपणांविषै

प्रत्यभिज्ञानप्रमाणहैसोयहतौग्रसत्यहै॥ तिसविषैप्रत्यभिज्ञानकैप्रमाणपणांकाग्रयोगहैति
सविषैजोप्रभिज्ञानप्रमाणहोयतौएकवर्णकाग्रनेकदेशविषैसत्वहोतैंखंडरूपप्रतिपत्तिहो
यसोतौनाहीहै॥ एकदेशमेंएकवर्णग्रखंडग्रहणहोयहैदूसरेदेशमैंदूसरातिससारियाग्र।
खंडग्याराग्रहणहोयहैसो जोग्रक्षरसर्वदेशमेव्यापकहोयतौएकहीदेशमैंएकवर्णकास
मस्तपणांकरिग्रहणकैसैंवर्णांनाहीवर्णोंजोग्रैसैंहोयएकहीदेशमैंग्रक्षरसमस्तपणांकरि
यहणहोयतौव्यापकनठहरै ग्रैसैंभीव्यापकपणांमानियेतौघटग्रादिककैभीव्यापकपणांका
प्रसंगग्रावै॥ ग्रैसैंभीकह्याजायजोघटसर्वगतहैहै जातैंनेत्रग्रादिकेनिकटतैंग्रनेकदेशविषै
प्रतीतिमें॥ ग्रावैहैवहुरिजोकहैघरकैउपजावनहारेमांटीकेपिंडग्रादिकग्रनेकदेषियेहैतातैंग्र
नेकपणांहीहै॥ तथावडाघरछोटाघरग्रैसादेषियेहैतौयाहतौग्रक्षरनिविषैभीसमानहैतहां
भीवर्णवर्णप्रतिन्यारेन्यारेकारणतालुवाग्रादिककेसमस्तथातीव्रमंदग्रादिधर्मभेदकासं
भवकाग्रविरोधहै॥ वहुरितालुवाग्रादिककैग्रक्षरनिकाव्यंजकपणांग्रागैंदूरहीनिषेधकर।
सी॥ तातैंयहकथनदूराहीरह्यो॥ वहुरिमीमांसककहैहै जोग्रक्षरनिकैव्यापीपणांहोतैभीसर्वक्षे
त्रमेंसर्वस्वरूपकरिप्रत्ततिसहितहैतातैंतुमकहासोदोषनाही॥ ताकूंग्राचार्यकहैहैग्रैसैंहोतैंतौस

वैथा एकपणां का विरोध आवे है । जातैं देश का भेद करि एककाल सरैले वे स्वरूप करि सर्वक्षेत्रमैं प्रती
तमैं आवता के एकपणां वणैं नाही । यामैं प्रमाण विरोध है । ताका प्रयोग । गोशब्द का गकार आदि
अक्षर हैं ते प्रत्येक अनेक कहीए हैं जातैं एककाल भिन्न न्यारे न्यारे क्षेत्रनि विषै सर्वस्वरूप करि जैसा उच्चा
रे हैं ते साई । समस्तपणां करि प्रत्येक ग्रहण होय है जैसैं घट आदि न्यारे न्यारे देषिये है तैसैं । बहुरि
कहै है कि सामान्य पदार्थ सर्व जायगा प्रतीतिमैं आवे है अर एक है ताकरि हेतु कै व्यभिचार आवैगा ।
तो इहां सो व्यभिचार नाही है । सदृशपरिणामस्वरूप सामान्य कै भी अनेकपणां है बहुरि चंद्रमा सू
र्य आदि कूं एककाल अनेक क्षेत्रमैं तिष्टते पुरुष पर्वत आदि अनेक प्रदेशनि मैं तिष्टापणां करि
अनेक न्यारा न्यारा देषै हैं अर चंद्रमा सूर्य एक एक ही हैं तिनि करि भी व्यभिचार नाही है । जातैं ते अति
दूर कहीं हैं एक देशमैं तिष्टे हैं तो ऊ भ्रांति के वशतै अनेक क्षेत्रमैं न्यारे न्यारे तिष्टे दीषै हैं सो जो भ्रांति र
हित सत्यार्थ होय ताकै भ्रांतिसूं दीषे तिनि करि व्यभिचार की कल्पना करनी युक्त नाही । बहुरि जल
के पात्र विषै चंद्रमा सूर्य आदि का प्रतिबिंब न्यारा न्यारा दीषै अर चंद्रमा सूर्य एक एक ही हैं अर ते प्रति
बिंब भ्रांतिरूप भी नाही तिनि करि भी व्यभिचार नाही है जातैं चंद्रमा सूर्य आदि का प्रकाश की समीपता
की अपेक्षा करि जल तैसैं ही चंद्रमा सूर्य आदि के आकाररूप परिणमि जाय है यातैं न्यारा न्यारा अने

क प्रतिबिंब दीषै हैं ते अनेक ही कहैं हैं । तातैं अनेक प्रदेश विषै एककाल समस्तस्वरूप करि ग्रहण मैं आ
वै ऐसा एक विषय का असंभाव्यमानपणांतैं तिस विषै प्रवर्तमान जो प्रत्यभिज्ञान सो प्रमाण ना
ही यह निश्चय भया । तैसैं ही नित्यपणां भी प्रत्यभिज्ञान करि नाही निश्चय होय है जातैं नित्यपणां
है सो एक वस्तु कै अनेक क्षणमैं व्यापीपणां है । सो ऐसा नित्यपणां तो वीचिमैं अंतराल विषै स
त्ता का ग्रहण विनां निश्चय न कर्या जाय बहुरि प्रत्यभिज्ञान ही का बल करि अंतराल विषै सत्ता न
जाणी जाय है वीचिमैं सत्ता का संभवना ही सिद्ध होय है जातैं प्रत्यभिज्ञान कै सादृश्यतैं भी संभवनै
का अविरोध है । बहुरि घट आदि विषै भी ऐसा प्रसंग नाही आवै है । जातैं ताकी उत्पत्ति विषै अ
न्य अन्य माटी के पिंडस्वरूप कारण का असंभवपणां करि अंतराल विषै सत्ता का साधने का सम
र्थपणां है भावार्थ पहलैं घटकूं देष्या पीछै तिसही कूं फेरि देष्या तब एकत्व प्रत्यभिज्ञान भया जो य
हु घट सो ही है तहां कहै या कै अंतराल मैं सत्ता कैसैं सधी ताका समाधान कीया है जो अन्य अन्य मा
टी के पिंडतैं घट उपजै ताकी जुदी सत्ता होय परंतु अन्य माटी का पिंडतैं उपजनां नाही तातैं तिसही की स
त्ता सधी अर शब्द विषै ऐसैं नाही पहलैं शब्द सुण्यां ताका कारण अन्य ही था फेरि सुण्यां ताका का
रण अन्य है तातैं अपूर्व कारणनि का व्यापार संभवनैं तैं अंतराल विषै सत्ता का संभव नाही है बहुरि जो

औरकह्या। संकेतकी अन्यथा अनुपपत्ति है जो शब्द नित्य न होय तौ पदार्थ विषै संकेत नाही बणै सो ऐ॥
सा कहनां भी पुरुषका स्वरूप विना जाण्यां कहै है जातैं अनित्य विषै भी एकू जोडनां बणै है। सोही कहै
है। सत्य है संकेत जाका ऐसा जो दंडता का नाश होतैं अवगृहीत संकेत दंड अन्यहीका ग्रहणमैं आ
वै है ऐसैं होतैं तिस अगृहीत संकेत दंडतैं दंडी ऐसा कहनां न होय तैसैं ही ग्रहण करि है व्याप्ति जा
की ऐसे धूमका नाश होतैं अन्य धूमके देखनेतैं विना व्याप्ति ग्रहण अग्निका ज्ञान का अभाव होय सो
दंडीका व्यपदेश तथा धूमतैं अग्निका ज्ञान होय ही है अरतैं अनित्य है तातैं अनित्य विषै संकेत होय
ही है। बहुरि इहां कहै जो दंडी इत्यादि विषै तो सदृशपणांतैं यह प्रतीति होय है तातैं हमारा पक्षमें
दोष नाही तो इहां शब्द विषै भी सदृशपणांतैं अर्थकी प्रतीति होतैं कहा दोष है शब्दकूं नित्य मानि
बेका अभिप्राय कहा करनां ऐसैं मानें अंतराल विषै अदृष्ट सत्वकी भी कल्पनां न होय। बहुरि जो औ
र कह्या कि शब्दके व्यंजक पवनकै न्यारा न्यारापणां है। तातै एककाल सुननां न होय है सो भी कह
नां विना विचार्यां कह्या है। समान एक कर्ण इंद्रियकरि ग्रहणमें आवै अर समान ही जाका उदात्त।
अनुदात्तादि धर्म अर समान ही क्षेत्र विषै तिष्ठते विषय विषयी कहियै कर्ण इंद्रिय अर शब्द ति॥
नि विषै न्यारे न्यारे पवनकरि न्यारे न्यारे ग्रहणका नियमका अयोग है एकही कालग्रहण चाहिये।

सोही कहै है। श्रोत्र इंद्रिय है सो समान क्षेत्र विषै तिष्ठता समान इंद्रियकरि ग्रहण योग्य समान ही जि।
निका धर्म ऐसे जे गकारादि शब्द नाम पदार्थ तिनिका ग्रहणकै अर्थि न्यारा न्यारा संस्कारक करै तौ वा
ला पवनकरि संस्कार करनें योग्य नाही होय है एकही पवन संस्कारक तैं गकारादि पदार्थका ग्रा
हक होय है जातैं श्रोत्र है सो इंद्रिय है जे इंद्रिय हैं ते ऐसे ही हैं जैसें नेत्र इंद्रिय है सो अंजनादिकका
संस्कार एकही करि अपनां सर्व विषयकूं ग्रहण करै है तिस विषै न्यारा न्यारा अंजनादिकके संस्का
र नाही चाहै है। बहुरि शब्द है ते भी न्यारे न्यारे संस्कारक जे पवन तिनिकरि संस्कार करनें योग्य नाही है
जातैं समान इंद्रियकरि ग्रहण करनें योग्य समान धर्मस्वरूप समान क्षेत्रमैं तिष्ठै ऐसे होतैं एकका
ल इंद्रियकरि संबंधरूप होय है जैसैं घट आदि होय है। बहुरि कहै जो उत्पत्तिपक्षमैं भी यह दोष स।
मान है सो ऐसैं नाही है। जातैं माटीके पिंड अर दीपक इनिके दृष्टांतकरि कारक व्यंजक पक्षमें विशे।
षकी सिद्धि है। विद्यमान घटका माटीका पिंड तौ कारक कहैं अर दीपकता का व्यंजक है परंतु ऐसैं विशे
ष है जो एक घट करनेंकै अर्थि लीया एक माटीका पिंड सो तो एकही घटकूं करै है अन्यकूं नाही करै है
अर दीपक एक घटके प्रकाशनेंके अर्थि लीया सो तिस घटकूं प्रकाशै अर अन्यकूं भी प्रकासै। तैसें
शब्दका व्यंजक। एक पवन सो एककाल प्रकाशै तब सर्व शब्दका श्रवण एककाल ही चाहिये सो ना॥

परी०मु०
८१

हीहैयहदूषणहैसोअभिव्यक्तिपक्षमैंआवैअरउत्पत्तिपक्षमैंतौनाहीआवै॥ तातैंबहुतकहनेंकरि
पूरीपडोशब्दकेंउत्पत्तिपक्षहीमाननांयोग्यहै॥ बहुरिऔरकह्याजोप्रवाहकेंनित्यपणांकरिवेदकैं
अपौरुषेयपणांहै तहांदोयपक्षपूछनें शब्दमात्रकैंअनादिनित्यपणांहैकिंकेईविशिष्टशब्दनिकैं
अनादिनित्यपणांहै जोकहैगाशब्दमात्रकैंहै॥ तौजेशब्दलौकिकहैंतेहीवेदकेहैं॥ तातैंयहकहनां
तौअल्पलीभया॥ तौवेदहीअपौरुषेयहैअरलौकिकशब्दअपौरुषेयनाहीं॥ सर्वहीशास्त्रनि
केंअपौरुषेयताआवैगी॥ बहुरिकहैगाजोविशिष्टअनुक्रमरूपचलेआयेहैंतेहीशब्दअनादिनित्यपणे
कहियेहैं॥ तौइहांभीदोयपक्षपूछनें॥ तेशब्दजिनिकाअर्थजाननेंमेंआयाऐसेहैंकिजिनिकाअर्थ।
जाननेंमेंनआयाऐसेहैं॥ जोकहैगाउत्तरपक्षहै अर्थजाननेंमैंनआयाऐसेहैंतौति।निकैंअज्ञान।
स्वरूपअप्रमाणताकाप्रसंगआवैगा॥ बहुरिकहैगाआद्यकापक्षहैजोअर्थजाननेंमेंआयाऐसेहैं
तौपूछियेतिनिकाव्याख्यानकरनेंवालाअल्पज्ञहैकिसर्वज्ञहै॥ जोकहैगाअल्पज्ञहैतौजिनिवेद।
वाक्यनिकासंबंधकठिनहैजाननेंमेंनआवैतिनिकाअर्थअन्यथाभीहोयजायतबमिथ्यात्वस्वरू
पअप्रमाणपणांहोय॥ सोहीकहीहैताकाश्लोककाअर्थ॥ मेरायहअर्थहैअरयहनाहीहैऐसाशा
ब्दहीतौआपकहैनाहींपुरुषहीशब्दकाअर्थकल्पैहैंअरपुरुषहैंतेरागादिदोषनिकरिदूषितहैं॥ इहां ८१

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी स्मारक

विशेषऐसाजोअल्पज्ञताकाकह्याअर्थमैंविशेषनाहीतातैंकाहूनेंकह्याजोवेदकावचनहैजोअग्निहोत्रं
जुहुयात्स्वर्गकामः याकाअर्थऐसाजोस्वर्गकाइच्छकपुरुषहैसोअग्निहोत्रनेंहोमैं॥ तबकाहूनेंकह्या
याकायहअर्थनाहीयाकाअर्थऐसाहैजोअग्निहऐसाश्वानकानामहैताकाउअकहियेमांससोजुहु
यातकहिये॥ खायजोस्वर्गकाइच्छकहोयसोतयाअग्निऐसानामहैश्वानकाहैताकाहोत्रकहिये
मांससोखायऐसाभीअर्थक्योंनहोयऐसेअर्थअल्पज्ञकेकहेकहियेतौऐसैंहीसवैहीअर्थअल्प
ज्ञकेकहेहैंतेप्रमाणकैसैंहोहिंअथवायामैंसंशयउपजैजोयाकाकैसाअर्थहैतबअप्रमाण
पणांआवै॥ बहुरिदूसरापक्षजोवेदसर्वज्ञकरिजान्यांअर्थरूपहैसोहीअनादिपरंपरातैंच
ल्याआवैहैतौधर्मजैपतादिकतिनिषेचोदनांकहियेवेदवाक्यमैंप्रेरणांतिष्ठैहैसोहीहमारे
प्रमाणहैऐसाकहनांतौवाध्यागया॥ बहुरिअतीन्द्रियपदार्थप्रत्यक्षकरनेंविषैसमर्थजोपुरुषवे
त्ताकासद्भावहोमैंतिसकेवचनकेंभीचोदनाकीज्यों॥ अर्थनिश्चयकरावनेंवालापणांकरिप्र
माणपणांतैयहवचननतौवेदकेंपुरुषकाकीयापणांकाअभावकीसिद्धिकाप्रतिबंधकहोय॥ भा
वार्थसर्वज्ञतातैंशास्त्रनवअर्थकानिश्चयपनाकावचनसंहोयहीगाअरवेदकूंअपौरुषेयमाननांव्या
होयगा॥ बहुरिकहैजोवेदकावक्ताविअल्पज्ञपणांहोतैंभीयथार्थव्याख्यानकीपरंपराकरिसंप्रदायका

परी॰ मु॰
८२

संतानका विछेद नाहीं होनेकरि वेद सत्यार्थ ही मानिये है ताकूं कहिये ऐसैं नाहीं जातैं अल्पज्ञकै अती
न्द्रियपदार्थनिविषैनि:संदेह व्याख्यानका अयोग है जैसें अंधाकरि ग्रंथ्या जो अंधा ताकै अनिए देश
कूं छोडि वीछिन देशका मार्ग विषै प्राप्त करना वणै नाहीं ॥ बहुरि किंछू विशेष कहै है जो अनादितैं व्या
ख्यानकी परंपरातैं व्याख्या कहै है तो ऊ वेदका अर्थकूं संबंधकूं ग्रहणकरि पाछैं भूलनेतैं तथा
वचनकी प्रवीणता विना औरसूं और अर्थ करनेतैं तथा खोटे अभिप्रायतैं व्याख्यानका अन्यथा क
रनैंतैं निर्बाधतत्वका प्रकाशनका अयोगतैं अप्रमाणता नाहीं होय ॥ सो ही देखिये है अबारके पंडि
त भी ज्योतिषशास्त्रादिकविषै रहस्य यथार्थ ज्ञानतैं भी खोटे अभिप्रायतैं अन्यथा व्याख्यान करै
है बहुरि केई जानतें भी वचनकी प्रवीणता विना नीकैं कहि नाहीं जानैं तैं अन्यथा उपदेश करै है।
बहुरि केई वाच्यवाचकका संबंधभूलिकरि अयथार्थ कहै है ॥ जो ऐसैं न होय तौ वेदके वाक्य
के विषै भावना विधि नियोगरूप अर्थका अन्यथापणां करि विवाद कैसें होय ॥ भट्टके शिष्य तौ।
भावनाकूं वाक्यार्थ मानैं हैं वेदांती विधिकूं वाक्यार्थ मानैं हैं वेदांती विधिकूं वाक्यार्थ प्रभाकर वाला॥
नियोगकूं वाक्यार्थ मानैं हैं ॥ बहुरि मनु याज्ञवल्क्य आदि ऋषिनिकै श्रुतिका अर्थकै अनुसार स्मृति
के निरूपण विषै अन्य अन्य प्रकारपणां कैसैं होय ॥ तातैं प्रवाहपरिपाटी विषै भी वेदकै अयथार्थ ८२

पणां ही है ॥ यातैं यह ठहरी जो अतीतानागतकालविषै वेदका कर्त्ता नाहीं कालशब्दवाच्यपणां है
तु करि ऐसैं कल्प्या सो भी अपनें मतके निर्मूल करनेका हेतुपणां करि विपरीतसाधनतैं यह हेतु
हेत्वाभास ही है ॥ सो ही कहिये है ॥ इहां श्लोक कहै है ताका अर्थ अतीत अनागतकाल है ते वेदके ज्ञाताक
रि रहित है जातैं कालशब्दका अर्थ है जे कालशब्दकरि कहिये तैं ऐसे ही है जैसैं अबारका काल ब
हुरि विशेष कहै है कि कालशब्दका अर्थ अतीत अनागतकालका ग्रहण होनें होय सो तिनिका ग्र
हण प्रत्यक्षतैं होय नाहीं जातैं ते अतीत अनागतकाल इंद्रियगोचर नाहीं ॥ अर अनुमानतैं ति
निका ग्रहण होनेतैं भी साध्यकरि तिनिका संबंध निश्चय करनेकूं नाहीं समर्थ हूजिये है ॥ जातैं प्रत्य
क्षतैं ग्रहण कीया साधनकै ही साध्यका संबंध मानिये है सो है नाहीं ॥ बहुरि मीमांसक कालनामा
द्रव्य भी नाहीं मानै है ॥ बहुरि कहै है जो अन्यवादी काल मानै है तिनिकी ही मानि लेकरि तिनिकूं कह्या
है काल वेदकर्त्ताकरि रहित है ऐसा मानूं इनिकै व्याप्यव्यापकभाव है सो काल व्याप्यकूं मानो है
तौ वेदकर्त्ताकरि रहितपणा व्यापककूं भी मानूं ऐसा प्रसंगसाधनतैं बोष नाहीं ताकूं कहिये जो पर
कै तौ इहां साध्यसाधन कहिये वेदकै कर्त्ताकरि रहितपणांकै अर कालकै व्याप्यव्यापकपणांका।
अभाव है अबार भी देशांतरविषै वेदका कर्त्ता अष्टक देव आदिका बोद्धमती आदि निकै अंगीकार है।

वौद्धमतीवेदकाकर्त्ताअष्टकदेवकूंमानैंहैंवैशेषिकमतीब्रह्माकूंमानैंहैंजैनीकालासुरकूंमानैंहैं। व
हुरिजोऔरभीकह्या। वेदकाअध्ययनवेदकाअध्ययनपूर्वकहीहै। इत्यादिकसोभीविपक्षजेपुरुषके
कीयेशास्त्रतिनिकाअध्ययनताविषैभीसमानहै। जैसैंभारतकाअध्ययनहैसोसर्वहीगुरुकेअध्य
यनपूर्वकहैजातैंतिसकेअध्ययनपरकरिहीवाच्यअर्थहै। जैसैंअवारअध्ययनकीजियेहै। ऐसैं
समानजाननां। वहुरिऔरकह्या। जोवेदकाकर्त्ताकासंप्रदायमैंकथननाहीकिसीकूंयादिनाहीजो।
फलाणैंकर्त्ताकीयाहै ऐसाहीसंप्रदायचल्याआवैहैताकाविछेदभीनाहीहूवा। तहांकहियेजोइ
सहेतुमैंजीर्णकूपआरामवनआदिकरिव्यभिचारकिदूरिकरनेंकूंसंप्रदायकाविछेदनहोनां ऐसा
विशेषणकीयातौक विशेष्यजोकर्त्तायादिनाही ऐसाहैसोविचारकीयेंयाकाहीअयोगहैतातैंयहहे
तुनाहीयामैंतीनपक्षपूछियेकर्त्ताकायादिपणांवादीकेनाहीहै। किप्रतिवादीकैनाहीहैकिसर्वहीं।
केनाहीहै। जोवादीकेनाहीहैतौयामैंदोयपक्षपूछियेकर्त्ताकास्मरणकाअभाववादीकूंकर्त्तानाही
ष्यातातैंहैकिकर्त्ताकेअभावहीतैंहैजोकहैहैकर्त्तादीतातैंहैतौपिटकत्रयवौद्धकाग्रंथहैतानपिरक
वंदनपिरकवैसपिरकतिनिकैवोधकर्त्तामानैंहैतातैंअपौरुषेयपणांनाहीतौइसहीहेतुतैंवेदवि
षैअपौरुषेयपणांमतिहोहु। वहुरिजोकहैहैकर्त्ताकेअभावतैंहैतौजेकर्त्ताकाअभावकर्त्ताकेअस्मरण ८३

नैंमानैंतौयामैंइतरेतराश्रयदूषणआवैहै। कर्त्ताकाअभावतैंतौतिसकाअस्मरणसिद्धहोयअ
रतिसकेअस्मरणतैंतिसकाअभावसिद्धहोय। वहुरिकहैकिप्रमाणपणांकीअन्यथाअप्राप्तितैं
तिसकाअभावसिद्धहोहैजोकर्त्ताहोयतौप्रमाणपणांनहोय ऐसैंइतरेतराश्रयनाहीआवैहैतौ।
ऐसैंनाहीहैजातैंअप्रामाण्यकाकारणतौपुरुषविशेषताहीकाप्रामाण्यकरिनिराकरणहै। पुरु
षमात्रकातौनिराकरणहैनाही। वहुरिकहैजोअतींद्रियपदार्थकेदेषनेंवालाकाअभावतैंअन्यपु
रुषविशेषकैप्रमाणपणांकाकारणपणाकीअप्राप्तिहैयातैंसर्वथापुरुषकाअभावसिद्धहीहै।
तौताकूंकहियेजोसर्वज्ञकाअभावकाहेतैंहै। जोकहैप्रमाणपणांकीअन्यथाअन्यथाअप्राप्तितैंस
र्वज्ञकाअभावहैतौइतरेतराश्रयपणांहै। वहुरिकहैकर्त्ताकेअस्मरणतैंहैतौचक्रकनामादूष
णहै। वेदविषैकर्त्ताकेअस्मरणतैंतौसर्वज्ञकाअभावसिद्धहोयवहुरिसर्वज्ञकाअभावसिद्धहो
यतववक्ताकीअन्यथाअनुपपत्तिसिद्धहोयप्रमाणपणांकीअन्यथाअनुपपत्तिसिद्धहोयतववकर्त्ताका
अभावसिद्धहोयतिसकूंसिद्धहोयतिसकूंसिद्धहोतैंकर्त्ताकाअस्मरणसिद्धहोयताकिसिद्धहोतैं।
फेरिसर्वज्ञकाअभावसिद्धहोय ऐसैंचक्रककाप्रसंगहोयहै। छ। वहुरिकहैसर्वज्ञकाअभावअभाव
प्रमाणतैंसिद्धहोयहैतौताकूंकहियेजोसर्वज्ञकासाधकअनुमानप्रमाणकाप्रतिपादनपहलैंकीया

हीयातातैं अभावप्रमाणकाउत्थानकाअयोगहै जातैं पांचप्रमाणभाव रूप हैं तिनिका अभाव होय तब अभावप्रमाणकी प्रवृत्ति होय ॥ ऐसैं मीमांसकनैं कह्या है ताका अन्तोक है ताका अर्थ जिस वस्तु के स्वरूपविषै पांचप्रमाण न उपजैं तहां वस्तु का अभाव का ज्ञान होने के अर्थि अभाव कै प्रमाणता है ऐसें कह्या है ॥ तातैं वादीकै तो वेदका कर्त्ता का अस्मरण नाहीं वर्णै है ॥ बहुरि हूजा पक्ष जो प्रतिवादीकै है ऐसैं कहै तौ ताकै भी नाहीं वर्णै है जातैं प्रतिवादी कर्त्ता वेदका स्मरण करै ही है बहुरि सर्व ही कै कहै तौ नाहीं वर्णै है जातैं वादीकै वेदका कर्त्ता का अस्मरण है तौऊ प्रतिवादीकै स्मरण है बहुरि मीमांसक कहै है जो प्रतिवादी वेदविषै अष्टक रेवकूं आदि देकरि बहुत कर्त्ता स्मरै हैं यातैं स्मरण कै विवादतैं प्रमाणता नाहीं तैसैं सर्वकै कर्त्ता का अस्मरण ही सिद्ध होय है ताकूं कहिये जो कर्त्ता का विशेषविषै ही विवाद है कर्त्ता सामान्यविषै तौ विवाद है नाहीं यातैं। सर्वकै कर्त्ताका अस्मरण असिद्ध है बहुरि सर्वप्राणीनिके ज्ञानका विज्ञाता करि रहित जो अल्पज्ञ पुरुष सो सर्वकै कर्त्ताका अस्मरण कैसैं जाणैं तातैं वेदविषै अपौरुषेयपणां का स्वरूपनै॥ का असमर्थपणां है तातैं आगमकालक्षण कीया ताकै अव्यापकपणां नाहीं है ॥ बहुरि असभ बीपणा दूषण भी नाहीं है पौरुषेयपणां साधनैं विषै प्रमाण बहुत है ॥ सो ही कहै है सहस्रसंवन ८४

मस्कार नामा स्तोत्र पात्र केशरी कृत है ताकी काव्यका अर्थ ॥ जातैं जन्ममरणसहित जे ऋषि तिनिकै गोत्र आचरण आदि नाम वेदमैं कहै है बहुरि अनेकपदनिका समूहरूप न्यारे न्यारे छंदरचना वेदमैं देषिये है ॥ बहुरि फलकै अर्थी जे पुरुष तिनिकी प्रवृत्ति निवृत्तिकै कारण स्वरूप वेदमैं कहै है ते सुणिये हैं स्वर्गका वांछक अग्निष्टोम करि पूजे इत्यादिकतौ प्रवृत्ति के वाक्य बहुरि कांदा न खाइये राहनपी बैंगण कूं पगतैं स्पर्शै नाहीं इत्यादि निवृत्तिके वचन वेदमैं हैं जैसैं मनुऋषिके सूत्रमैं है तैसैं तातैं वेद है सो पुरुष का ही कीया है ऐसा भी वचन हमारे आचार्यनिका है ॥ बहुरि अपौरुषेयपणां वेदकै होतैं भी प्रमाणता नाहीं वर्णै है जातैं प्रमाणपणां का कारण जे गुण तिनिका वेदविषै अभाव है ॥ बहुरि मीमांसक कहै है ॥ जो गुणनिकरि कीया होतौ प्रमाणपणां नाहीं दोषका अभाव करि भी प्रमाणपणां है सो दोषका आश्रय पुरुष है ताकै कर्त्तापणां का अभाव होतैं भी वेदकै प्रमाणपणां निश्चय कीजिये है ॥ गुणके सद्भाव ही तैं नाहीं है सो ही हमारे कही है ताका श्लोक का अर्थ शब्दकै विषै दोष उपजैं है सो तौ वक्ता के आधीन है ॥ ऐसा निश्चय पहैं बहुरि कहूं दोषका अभाव है सो गुणवान वक्तापणां कै आधीन है ॥ जातैं वक्ताके गुणनिकरि दूरि किये जे दोष ते पर्हिशब्दमैं आवैं नाहीं बहुरि पहपक्ष समीचीन है जो वक्ताका अभाव करि तिस वक्ता कै आ

अपनेदोषनिशब्दमेंनहींहैं॥ ताकासमाधानआचार्यकरैहैंजोयहकहनांभाअयुक्तहैजातैंहमाराअभि
प्रायमीमांसककैंनेंजाण्यांनाहीं॥ जातैंहमनैंतौवक्ताकेअभावहीतैंवेदकैप्रमाणपणांकाअभा
वहैऐसैंकह्यानाहीं॥ हमनैंतोऐसैंकह्योहैजोवेदकेव्याख्यानकरनेंवालेनिकेअतींद्रियपदार्थनि
कादेषनांआदिगुणनिकाअभावहोतैंदोषनिकाअभावनाहीतातैंवेदविषैभीदोषनिकासद्भाव॥
आवेतवप्रमाणपणांकानिश्चयनाहीं॥ ऐसैंकहैंहैं तातैंअपौरुषेयपणांहीतैंभीवेदकैप्रमाण
पणंकानिश्चयकाअयोगहै॥ तातैंइसअपौरुषेयपणांरूपवेदकरिहमारूआगमकेलक्षण
केअव्यापीपणांअरअसंभवीपणांनाहीहै॥ यातैंवहुतकहनेंकरिपूरीपडो॥ छ॥ आगैंबौद्धमती
कहैहैजोशब्दकेअरअर्थकेसंबंधकाअभावहैतातैंशब्दअन्यकानिषेधमात्रकाकहनेंवा
लाहैनामजातिगुणक्रियाआदिस्वरूपशब्दकाअर्थनाहीहै॥ तातैंशब्दकैआप्तप्रणीतपणं
होतैंभीयातैंसत्यअर्थकाज्ञानकैसैंहोयऐसैंतर्कहोतैंसूत्रकहैहै॥ छ॥ सहजयोग्यतासंकेतवशाद्धि के
[redacted]शब्दादयोवस्तुप्रतिपत्ति[redacted]हेतवः॥ ९५॥ याकाअर्थ॥ सहजकहियेस्वभावभूतयोग्यता
कहियेशब्दअरअर्थकेवाच्यवाचकशक्तितिसकैहोतैंसंकेतकहियेवस्तुस्वरूपविषैपुरुषकाअ
भिप्रायकानियमजैसैंएथुवुध्नोदरआकाररूपमांटीकारूपहैसोघटहैऐसैंसंकेतकेवसतैंहिक॥ ८५

हियेप्रगटपणेंतैपूर्वोक्तआप्तप्रणीतशब्दअरआदिशब्दतैंअंगुलीआदिकीसमस्याहैंतेवस्तुकीप्र
तिपत्तिकहियेज्ञानताकूंकारणहैं॥ छ॥ आगैंयाकाउदाहरणकहैहै॥ छ॥ यथामेर्वादयःसंति॥ ९६॥
याकाअर्थ॥ जैसैंमेरुआदिकहैंतेहैं॥ छ॥ इहांबौद्धमतीकहैहैजोजेहीशब्दतौअर्थकेहोतैंदेषिये तेही
शब्दअर्थकेअभावहोतैंभीदेषियेहैं॥ तौअर्थकेकहनहारेशब्दकैसैंताकूंआचार्यकहैहैयहभीकह
नांअयुक्तहैजातेजेअर्थकेकहनहारेशब्दनाहीहैतिनितैंअर्थकेकहनहारेशब्दअन्यहीहैं सो॥
अन्यकेव्यभिचारहोतैंअन्यकैकहनांयुक्तनाहीं॥ जातैंयामेंअतिप्रसंगदूषणआवैहैजोऐसैंन॥
मानियेतौइंद्रजालकेघडेमैंधूमहोतैंभीअग्निनाहीऐसैंव्यभिचारहोतैंपर्वतआदिकेविषैधूम
होयताकैभीव्यभिचारकाप्रसंगठहरै॥ वहुरिजोकहैयत्नतैंपरीक्षाकीयाकार्यकारणकूंउलंघि
वर्त्तैनाहीं॥ तौऐसैंइहांभीसमानजाननांजोशब्दजिसअर्थमैंहोयतिसकूंहीकहैहै॥ नीकैंपरीक्षा
कीयाशब्दहैसोअर्थकूंनाहीव्यभिचरैहै॥ ऐसेहोतैंअन्यकानिषेधकैशब्दार्थपणांकीकल्पनांहै
सोप्रयासमात्रहीहैवहुरिअन्यापोहकहियेअन्यकानिषेधशब्दकाअर्थनाहीठहरैहैजातैंपती॥
तिविरोधहैप्रतीतिमैंऐसैंआवतानाहीजातैंगऊआदिशब्दकेसुननैंतैंयहअन्यनाहीऐसासा॥
मान्यअभावजोतुच्छाभावसोतौप्रतीतिमैंआवैहैनाहीं॥ तिसगऊशब्दतैंसास्नादिमानपदार्थविषै

परी० मु०
८६

प्रतीति देषिये है ॥ गऊतें अन्यकी बुद्धि जो तें होय ऐसा तहां अन्यशब्द ल्यावनां ॥ बहुरि कहै गऊ ही
गऊशब्दतें दोय अर्थकी प्रतीतिका संभावन है तातें अन्यशब्द ल्यावनें तें प्रयोजन नाही ताकूं कहिये
जो ऐसें नाही एक शब्दके दोय विरुद्ध अर्थके कहनें का विरोध है असंभव है ॥ बहुरि विशेष कहै है ॥
जो गऊशब्दके गऊतें अन्यकी व्यावृत्ति विषय होतें पहलें तो गऊ नाही ऐसी प्रतीति आवै है सो ऐसें
तो वणें नाही लोककै तो पहलें ही गऊ अर्थकी प्रतीति होय है यातें अन्यापोह शब्दका अर्थ नाही
बहुरि विशेष कहै है जो अपोह कहिये निषेध सो सामान्य है तो शब्दका अर्थपणां करि प्रतीतिमें
लीया हूवा पर्युदास प्रतिषेध रूप है कि प्रसज्य प्रतिषेध रूप है ऐसें दोय पक्ष पूछिये ॥ जहां विधि
की प्रधानता होय निषेध गौण होय तहां पर्युदास प्रतिषेध होय इहां जाका निषेध करणां होय ताके
शब्दके पूर्वें नकार ल्यावै जैसें काहूनें कह्या अब्राह्मणकूं ल्याव तहां जानिये ब्राह्मणका तो निषे
ध है अर अन्य वैश्यादिकका विधि है तिनिकूं बुलावै है ॥ बहुरि जहां विधिकी तो अप्रधानता होय अर ॥
निषेधकी प्रधानता होय तहां प्रसज्य प्रतिषेध होय इहां क्रियाकी साथि नकार ल्यावै जैसें काहूनें क
ह्या ब्राह्मणकूं न ल्याव तहां जानिये नाही ल्यावनेंकूं कहै है इहां अत्यंत निषेध जाननां ॥ सो इहां अन्या
पोह शब्दार्थ विषै दोय पक्ष पूछी तहां कहै पर्युदास प्रतिषेध है तो गऊपणां ही नामांतर करि कह्या जा ८६

DR. ... MEMORIAL

तैं अभावके अभावकै तो अन्यभावका सद्भावपणां ही है गऊकै अभावका अभाव कह्या तब गऊका
ही अन्य नाम कह्या बहुरि इहां पूछिये जो गऊशब्दकै वाच्य अश्व आदिकी निवृत्ति है लक्षण जाका ऐसा ॥
अभाव कह्या है जो कहै अपनां स्वलक्षण जो क्षणिक निरन्वय तिस स्वरूप है तो यह तो वणें नाही ॥ जातें
स्वलक्षण तो सकल विकल्प अर वचननिकै गोचरतें दूरवर्ती है ॥ बहुरि कहै जो कावरापणां आदि व्यक्ति
रूप है तो पहलें भी नाही है ॥ जातें बौद्ध शब्दकूं सामान्यका वाचक कहै है सो कावरापणां आदि विशेषरूप
व्यक्ति तिनिकूं कहें शब्दकै सामान्यका वाचक कहनेंका अभावका प्रसंग आवै है ॥ तातें समस्त जे गऊ
की व्यक्ति तिनि विषै अन्वयकी प्रतीतिका उपजावनहारा अर तहां न्यारा न्यारा समस्तपणां करि व्यक्ति
निविषै वर्तमान ऐसा सामान्य ही गोशब्दका अर्थ है ॥ ताही का अपोह ऐसा नाम करनें तो नाममात्र
ही भिन्न होय है अर्थभेद तो नाही ॥ तातें आदिका पक्ष जो पर्युदास निषेध सो तो श्रेष्ठ नाही ॥ बहुरि दूसरा प
क्ष जो प्रसज्य प्रतिषेध सो भी श्रेष्ठ नाही है ॥ जातें गऊ आदि शब्दनिका प्रसज्य प्रतिषेध होय तब कोई
वाच्य पदार्थ विषै प्रवृत्तिका अयोग होय ॥ अर तुच्छाभाव मानिये तो नैयायिक मतका प्रवेशका प्रसं
ग आवै ॥ बहुरि विशेष कहै है जो गऊ आदिक जे सामान्य शब्द हैं बहुरि जे शबलेय कहिये कावरा आ
दिक विशेषशब्द हैं तिनिकै बौद्धके अभिप्राय करि पर्यायशब्दपणां आवै अर्थका भेदका अभाव ठ

परी॰ मु॰
८७

हैरेजातैंएकअपोहहीसर्वशब्दनिकाअर्थवहैरे। जैसैंवृक्षकातरुनामपादपइत्यादिपर्य्यायशब्दहैं
तिनिकाअर्थन्यारानाहींतैसैंठहरै। बहुरितुच्छाभावकहियेसर्वथाअभावताकैविषेभेदयुक्तनाहीहै
संसृष्टत्वएकत्वनानात्वभेदहैंतेतौवस्तुहीविषेप्रतीतिमेंआवैहैं। बहुरिअभावविषेभेदमानियेतौव
स्तुपणांकीप्राप्तिआवैहैजातैंवस्तुपणांकालक्षणभेदस्वरूपहै। बहुरिनिषेधकरनेंयोग्यजेगऊ
शब्दकेअश्वआदिकतेहीभयेसंबंधीतिनिकेभेदतैंअभावमैंभेदकहैतौयहबणैंनाहीजातैंप्रमेय
अभिधेयआदिकजेविधिरूपशब्दहैंतिनिकीप्रवृत्तिकाअभावकाप्रसंगआवै। जातैंप्रमेयआदिश
ब्दनिकैव्यवच्छेद्यकहियेनिषेधकरनेंयोग्यअप्रमेयआदिहैसोताकैअतद्रूपकरिभीअप्रमेयआ
दिरूपपणांहोतैंतिसअप्रमेयआदितैंव्यवच्छेदकाअयोगहैजातैंतहांप्रमेयअभिधेयइत्यादिश
ब्दकअपोहविषैसंबंधीकेभेदतैंभेदकैसैंहोयबहुरिविशेषकहैहै। शाबलेयकाबरआदिशब्दनि।
विषेअपोहकहियेनिषेधसोएकहीनाहीठहरैहैजातैंव्यक्तिव्यक्तिविषेन्यारान्याराहीठहरैहै। बहुरि
कहैहैजोकाबरआदिशब्दअपोहकाभेदनाहीकरैहै। तौताकूंकहियेअश्वआदिशब्दभीभेदकरनेंवाले
मतिहोऊजातैंअपनेंसामान्यमांहीजेकाबरआदिगुणतैंभेदकरनैंवालेनाहीताकैआदिभेदकर
नैंवालेकहनांतौअतिसाहससहैजबरीहैं। वस्तुकैभीसंबंधीकेभेदतैंभेदनपाइएतवअवस्तुकैंकैसें ८७

होयसोहीकहियेहैएकहीदेवदत्तआदिनामाकोईपुरुषकडाकुंडलआदिपहरैतवतिनिसंबंधीनिके
भेदतैंअनेकपणांहोयनाहीबहुरिविशेषकहैहै। संबंधीकेभेदतैंभेदभीकहूंहोऊपरंतुवस्तुभूतसामा
न्यमांनेंविनांअन्यापोहहैआश्रयजाकाऐसासंबंधीहैसोतुमारैहोनेंयोग्यनेहोयहैसोहीकहियेहैजो
काबरआदिविषेवस्तुभूतसारूप्यकहियेसमानतानाकाअभावहैतौअश्वआदिकापरिहारकरि
तहांहीतिकाविशेषरूपयहुगऊहैऐसानामअरुज्ञानकैसैंहोयतातैंसंबंधीकाभेदकरिभेदचा
हैहैतौसामान्यभीवस्तुभूतअंगीकारकरनांयोग्यहै। बहुरिविशेषकहैहै। तौअपोहशब्दार्थकी
पक्षविषैसंकेतहोवणौंनाही। जातैंतिसअपोहकैग्रहणकाउपायकाअसंभवहै। तहांतिसकाग्र
हणविषैप्रत्यक्षप्रमाणसमर्थनाहीजातैंप्रत्यक्षकातौवस्तुविषयहै। अन्यापोहतौअवस्तुहैब
हुरिअनुमानभीताकाग्रहणकाउपायनाहीजातैं अनुमानतौस्वभावतथाकार्यवस्तुकालिंगहो
यतिसकरिजयजैहैअपोहहैसोतौनिरूपाख्यकहियेनिःस्वभावहैतातैंस्वभावलिंगनाही। अरअ
र्थक्रियाकरिरहितहैतातैंकार्यलिंगनाही। बहुरिविशेषकहैहै। गऊशब्दकेअगऊकाअपोहक।
हनहारापणांहोतैंगऊऐसाशब्दकाकहाअर्थहोयजातैंविनांजाण्यांकेविधिनिषेधविषैअधिकार
नाहीहैजोकहैअगऊकीनिवृत्तिगऊशब्दकाअर्थहैतौइतरेतराश्रयनामादोषआवैगा। अगऊकाव्यव

छेदतो अगरुका निश्चय भयें होय वहुरि सो अगरु भगरु की निवृत्तिस्वरूप है वहुरि अगरु है सो अगरु का व्यव
छेदरूप है ऐसें इतरेतराश्रय दोष है वहुरि अगरु इस पद में भी अगरु ऐसा अक्षर पद है ताका अर्थ भी ऐसें
में ही विचारणां अगरु की व्यावृत्ति तें अगरु का निश्चय होय अगरु की व्यावृत्ति तें अगरु का निश्चय होय वहु
रि कहै है जो अगरु ऐसें इहां गो शब्द का अर्थ विधिरूप ओर ही है सो अपोह ही शब्दार्थ है ऐसा कहनां वि
गडैगा तातें कही जो युक्ति ताकरि विचार्या हूवा अपोह का अयोग है तातैं अन्यापोह शब्द का अर्थ ना
ही है यह निश्चय यह निश्चय भया जो सहज योग्यता के वशतैं शब्दादिक हैं ते वस्तु की प्रतिपत्ति के
कारण है छ ॥ इहां श्लोक ॥ स्मृतिरनुपहतेयं प्रत्यभिज्ञानवज्ञा प्रमितिनिरतचिंता लैंगिकं संगता
र्थं प्रवचनमनवद्यं निश्चितं देववाचा रचितमुचितवाग्भिस्तथ्यमेतेन गीतं ॥ १ ॥ या का अर्थ ॥ इस अधि
कार विषैं निर्बाध तो स्मृतिप्रमाण कह्या वहुरि आदरनें योग्य प्रत्यभिज्ञान प्रमाण कह्या वहुरि प्र
मिति कहिये प्रमाण का फलरूप ज्ञान तिस विषैं लीन ऐसा चिंता कहिये तर्क प्रमाण कह्या वहुरि
यथार्थ है अर्थ जामैं ऐसा लैंगिक कहिये अनुमान प्रमाण कह्या वहुरि निर्दोष प्रवचन कहिये
आगम प्रमाण कह्या ए पांच परोक्ष प्रमाण के भेद अकलंकदेव आचार्य के वचन करि निश्चय की
या माणिक्यनंदि नैं उचित वचन करि रच्या हूवा मैं अनंतवीर्य आचार्य यहु यथार्थ गाया है छ ॥ प्रपा ॥ ८८

स्मृतिवरनीर दोषतथा प्रतिभिज्ञा सांची तर्क यथारथरूप वहुरि अनुमा शुभवांची आगम वाधा रहित
देव अकलंक विचारत ताकि वचन अनुसारनें दि माणिकनें धारा तेही अनंतवीर जगत्री भाषे भेद परोक्ष
के तसु देश भाष भाषी परोगुणी सुवुद्धी नर जके ॥ २ ॥ ऐसें परीक्षामुख प्रकरण की लघुवृत्ति विषैं नि
का विषैं परोक्ष का प्रपंच तीसरा समुद्देश समाप्त भया ॥ ३ ॥ आगें प्रमाण का स्वरूप संख्या विप्रतिपत्ति
का निराकरण करि अब प्रमाण का विषय की विप्रतिपत्ति का निराकरण के अर्थि सूत्र कहै है।
छ ॥ सामान्यविशेषात्मा तदर्थो विषयः ॥ १ ॥ या का अर्थ ॥ सामान्यविशेषस्वरूप तिस प्रमाण का अर्थ
है ताकूं विषय कहिये छ तहां तत् शब्द करि प्रमाण लेणा ताकै ग्रहणकरनें योग्य जो अर्थ सो विष
य है ताका विशेषण सामान्य अर विशेष है आत्मा जाका ऐसा है सो सामान्य अर विशेष का स्वरूप आगैं ॥
कहसी इनि दोऊनि का ग्रहण तथा आत्मशब्द का ग्रहण है सो केवल सामान्य ही कै तथा केवल विशेष ही
कै तथा केवल दोऊ स्वतंत्र के प्रमाण का विषयपणां का प्रतिषेध कै अर्थि है न्यारे न्यारे ही केवल विषय
नाही हैं तहां केई तो सत्ता सामान्य ही कूं प्रमाण का विषय मानैं हैं तिनि मैं सत्तामात्र देह जो परमब्रह्म
ताकै तो प्रमाण का विषयपणां का निराकरण पूर्वैं सर्वज्ञ के विवाद विषैं कीया ही या जानें सत्तामात्र कै।
केवल सामान्यपणां है सो प्रमाण का विषय नाही वहुरि तिस सिवाय अन्य विचारिये है तहां सांख्यम

नथावालेतौप्रधानकूंसामान्यकहैहैं। सोप्रमाणकाविषयमानैहैं। ताकावचनकाश्लोककहेहै ताकाअर्थ॥
ऐसाजोसत्त्वरजतमरातीनजामैंपाइयेवहुरिअविवेकीकहियेमहत्‌आदिनैंभेदरहितवाव्यविषयस्व
रूपअभिन्नएकरूपऐसासामान्यवहुरिअचेतनकहियेजडवहुरिउत्पत्तिधर्मस्वरूपवहुरिव्यक्तक।
हियेप्रगटदीषैतैसैंतौप्रधानहैवहुरितिसतैंविपरीतकहियेउलटाविशेषणस्वरूपअरतैसापुरुष
है। ऐसैंसांख्यकहैताकूंदोषपक्षपूछिये। जोऐसाप्रधानकेवलमहत्‌आदिकार्यकेनिपजावनेकूं
प्रवर्तेहैसोकाहूकूंअपेक्षालेकरिप्रवर्त्तेहैकिविनाअपेक्षाहीप्रवर्तेहै। जोकहैअपेक्षालेकरिप्रवर्ते।
हैतौकिसकीअपेक्षालेहैसोनिमित्तकहनां। जाकीअपेक्षालेप्रवर्ते। तहांकहैजोपुरुषकाप्रयोजन
हीयाकेप्रवर्त्तनेंमैंकारणहैजातैंऐसाकह्याहैपुरुषार्थहेतुकरिप्रधानप्रधानप्रवर्त्तेहै। तहांपुरु
षार्थदोयप्रकारहैएकतौशब्दआदिविषयकाग्रहणकरनांदूजागुणनैंस्पर्शआदिकअरपुरुष
मैंअन्यजोप्रधानतिनितैंपुरुषकेभेदकादेषनांएदोयपुरुषार्थकहैहै। ताकूंआचार्यपूछैहैकिप्र
हस्योहैतैसैंप्रवर्त्ततांभीप्रधानहैसोपुरुषकृतकिछूउपकारलेकरिप्रवर्त्तेहैकिनाहीलेकरिप्रवर्त्ते
है। जोकहैगापुरुषकृतउपकारलेकरिप्रवर्त्तेहैतौनहांपूछैहैकिसोउपकारप्रधानतैंभिन्नहैकिअ
भिन्नहै जोकहैभिन्नहैतौयहउपकारप्रधानकाहैऐसानामकाहेतैंकह्या। जोकहैप्रधानकैअरउपका

रकेसंवंधहैतौसमवायादिकसंवंधसांख्यमानैंहीनाहीतवसंवंधकाहैकावहुरितादात्म्यकहैतौ
भेदकैसैंकहियेतादात्म्यतौभेदकाविरोधीहै। वहुरिदूजापक्षकहैजोउपकारप्रधानतैंअभिन्नहैतौ
प्रधानहीतिसपुरुषकरिकीयाठहरयावहुरिकहैजोप्रधानपुरुषकेउपकारकीअपेक्षाविनाहीप्र
वर्त्तेहै तौमुक्तात्माप्रतिभीप्रधानप्रवर्त्तौयामैंविशेषनाही। याहीकाथनकरिनिरपेक्षप्रवृत्तिप।
क्षभीनिराकरणकीया। तहांभीहेतुकह्यासोहीजाननौ। वहुरिशेषकहैहै। जोप्रधानकोईप्र
कारकरिसिद्धहोयतौकहीवातसारीवणैंसोप्रधानकीतौसिद्धिहीहोयनाही। काहूप्रमाण।
करिनिश्चयकीयाजायनाहीइहांसांख्यकहैहैजोकार्यजातमैंहोयहैतिनिकैएकअन्वयदेषि।
येहै। तातैंकोईएककारणकरिउपजवापणांमाननांवहुरिजेमहत्‌अहंकारादिककार्यहैंतिनि
केभेदनिकापरिणामदेषियेहैतातैंइनिदोऊहेतुनितैं। जैसैंघटघटीसरावआदिकैएकमांटी
काअन्वयअरभेदपरिणामदेषियेहैताकाकारणएकमृत्तिकादीषैहैतैसैंमहत्‌आदिकार्य।
निकैएकअन्वयदेषनेंतैंवहुरिभेदनिकापरिणामदेषनेंतैंएकरूपकारणप्रधानमानियेहैऐ॥
सैंप्रधानकीसिद्धिहै। तहांआचार्यकहैहैयहहेतुस्यातौसुंदरनाही। जातैंसुखदुःखमोहरूपपरिणांक
रिघटआदिकैअन्वयकाअभावहैजडकैचेतनकाअन्वयहोयनाहीसुखादिककाअन्वयतैंअंतर।

गतत्वहीकेपाइयेहै। तातैंसर्वहीकार्यनिकैतौएकअन्वयपणांनाहीं। इहांसांख्यकहैहैजोअं
तरंगतत्त्वकैतौसुखआदिकापरिणमननाहींअरसुखदुःखादिरूपपरिणमनजोप्रधान
ताकिसंसर्गतैंआत्माकैभीतेप्रतिभासैहैं। तहांआचार्यकहैहैयहभीवणैंनाहीं। जोप्रतिभा॥
समानवस्तुनाहींताकैभीसंसर्गकीकल्पनाकीजियेतौतत्त्वकीसंख्याकानियमकानिश्चयना
हीहोयऐसाकह्याहैताकाश्लोककाअर्थ। जोसंसर्गतैंहीअविभागकहियेअभेदमानियेजैसैंलोहके
गोलाकैअरअग्निकैहैतैसैंतौसर्ववस्तुकैभेदअभेदकाव्यवस्थाकहियेनियमताकाउच्छेदहो
यजायऐसैंतत्त्वकीसंख्याकानियमरहैनाहीं। बहुरिजोपरिणमनामाहेतुकह्यासोएक॥
स्वभावरूपमांटीतैंभयेजेघटघटीसरावआदितिनिविषैंभीहैबहुरिअनेकस्वभावरूपजेप
रकुरीमुकुटझाकरणआदितिनिविषैंभीपाइयेहैयातैंहेतुअनैकांतिकहै। तातैंप्रधानजोप्रकृ
तिताकीसिद्धिनाहीहै। सोऐसैंप्रधानकाग्रहणकेउपायकाअसंभवहै। अथवासंभवैतौप्रकृ
तितैंकार्यकीउत्पत्तिकाअयोगहै। सांख्यनैंजोकह्याताकादोषआपीहैतिनिकाअर्थ। प्रकृतितैं
तौमहान्होयहैजोउत्पत्तितैंलगायनाशतांईस्थायीरहैऐसीबुद्धिकूंमहान्कहैहै। बहुरितिसमह
ान्तैंअहंकारहोयहैबहुरितिसअहंकारतैंषोडशगणहोयहैतेश्रोत्रत्वक्चक्षुजिह्वाघ्राण

एतौपांचबुद्धिइंद्रियअरपायुउपस्थवचनपगहाथएपांचकर्मइंद्रियहैं। एकमनहैअररूपरस
गंधशब्दस्पर्शएपांचतन्मात्राहैंऐसैंसोलहभये। बहुरितिसषोडशगणतैंपांचजेतन्मात्राति
नितैंपांचभूतउपजैंहैं। तहांकहियेहैरूपतैंतौअग्निहोयहैरसतैंजलहोयहैगंधतैंभूमिहोयहैश
ब्दतैंनभहोयहैस्पर्शतैंपवनहोयहैऐसैंसृष्टिकाक्रमहै। तहांमूलप्रकृतितौविकृतिरहितहैविका
ररहितहैअरयाकाकोईकारणभीनाहीं। बहुरिमहत्आदिहैंतेप्रकृतिकीसातविकृतिहैंअरसो
लहगणहैसोविकारहैऐसैंविकारहैंतेसातअरसोलहतेईसहैंबहुरिपुरुषहैसोविकृतिभी
नाहींअरप्रकृतिभीनाहींऐसैंपचीसतत्त्वकहेहैंतिनिकावर्णनवंध्याकेपुत्रकासुरूपपणांकावर्णन
सारिखाहैयाकाविषयअसत्यार्थहैतातैंआदरनैयोग्यनाहींप्रकृतितैंकार्यकीउत्पत्तिवणैंनाहीं
जाकारणतौअमूर्तीकहैअरपृथ्वीआदिमूर्तीकहैंतिनिकैएककारणतैंउपजनेंकाअयोगहै। जो।
ऐसैंनमानियेतौअचेतनजोपंचभूतकासमूहतातैंचेतन्यकीसिद्धिहोयतबचार्वाकमतकीसि।
द्धिकाप्रसंगआवै। तबसांख्यमतकावासभीनरहै। बहुरिसत्कार्यवादसांख्यकरैहैताकाप्र।
तिषेधप्रमेयकमलमार्तंडग्रंथविषैंविस्तारकरिकर्याहैसोइहांनाहींकहियेहैयाग्रंथकैसंक्षेप
रूपपणांहैयातैं। ऐसैंजानना। ऐसैंविचारकीयेंसामान्यमात्रहीप्रमाणकाविषयवणैंनाहीं

रही तांई सांख्यमती संवरयां है ॥ छ ॥ आगैं सांख्य आदि सामान्य ही कूं तत्व कहै है तिनिसैं बौद्धमती कहै है जो
विशेष ही तत्व है वस्तुस्वरूप है सो ही प्रमाण का विषय है ॥ जातैं तिनिकै असमान आकारनि करि सामा
न्य आकारनितैं समस्तपणां करि भिन्न स्वरूपपणां है ॥ भावार्थ विशेष है ते सामान्यतैं सर्वथा भिन्न ही
है ॥ नैयायिक सामान्य कूं सर्वथा एक मानै है सो ऐसे एक सामान्य कै अनेक विशेषनि विषै व्याप्ति का
रि वर्त्तमान कै संभव का अभाव है एक सामान्य अनेक विशेषनि मैं कैसैं व्यापै तिस सामान्य कै
एक व्यक्ति विषै समस्तपणां करि तिष्टनां पावै तिस ही काल अन्य व्यक्ति विषै पावनें का अभाव का प्र
संग आवै है ॥ बहुरि जो कहिये तिस ही काल अन्य व्यक्ति विषै भी पाइए है तो सामान्य नाहि ठहरै जातैं ए
क ही काल भिन्न देशपणां करि तिष्टते जे व्यक्ति तिनि विषै समस्तपणां करि जैसें व्यक्ति न्यारे है तैसैं
सामान्य भी न्यारे न्यारे पावै ॥ बहुरि जो ऐसैं होतैं भी सामान्य कै नानापणां न होय तो व्यक्ति भी न्या
रे न्यारे मति होउ ॥ तातैं जो बुद्धि करि अभेद मानिये है सो ही सामान्य है वस्तुभूत नाही सो हमारे क
ह्या है ताका श्लोक का अर्थ ॥ जो पदार्थ एक जायगां देषिये सो अन्य जायगां कहूं नदेषिये है ता
तैं बुद्धि विषै अभेद कल्पना सो ही सामान्य है यातैं भिन्न और कछू नाही है ॥ छ ॥ बहुरि बौद्ध ही कहै
है ते विशेष परस्पर संबंध रहित ही है जातैं तिनिकै संबंध विचास्या हूवा न काअयोग है जो एक देश

करि विशेषनिकै संबंध कहिए तो एक परमाणु कै छह ही दिशातैं छह परमाणु कारण क काल संयो
ग होतैं परमाणु कै छह अंशपणां की प्राप्ति होय ॥ सो परमाणु कै छह अंश कहनां संभवै नाही ॥ बहुरि
सर्व स्वरूप करि संबंध कहिये तो पिंड कै अणुमात्रपणां की प्राप्ति आवै बहुरि अवयवी का भी निषेध
है ॥ तातैं विशेषनिकै परस्पर संबंध नाही बणैं है ॥ बहुरि अवयवी का निषेध ऐसैं है जो इति विकल्प
कहिये अवयवी की अवयवनि विषै वृत्ति का विचार ता करि तथा अनुमान करि बाधा ही आवै है सो ही
कहिये है बौद्ध नैयायिक कूं कहै है ॥ अवयव है ते अवयवी विषै वर्त्तै है यह तो तैं मानी ही ना ही है ॥ ब
हुरि अवयवी है सो अवयवनि विषै वर्त्तै है ऐसैं मानी है सो इहां दोय पक्ष पूछिये है जो एक देश क
रि वर्त्तै है कि सर्वस्वरूप करि वर्त्तै है ॥ जो कहै एक देश करि वर्त्तै है तो अवयवी कै अवयवनि सि
वाय अन्य अवयव पवका प्रसंग आवै ॥ बहुरि तिनि विषै भी अन्य एक देश करि अवयवी वर्त्तैं तब अ
नवस्था आवै बहुरि कहै सर्वस्वरूप करि अवयवी अवयवनि विषै वर्त्तै है तो पूछिये एक एक अव
यव प्रति स्वभाव भेद करि वर्त्तै है कि एक रूप करि वर्त्तै है जो कहै स्वभाव भेद करि वर्त्तै है तो अवयवी बहु
त ठहरै ऐसैं बहुरि कहै एक रूप करि वर्त्तै है तो अवयवनि कै एकरूपपणां ठहरै है अथवा स्वभाव भेद
करि तथा एक रूप करि ऐसैं पूछनां मति हो इ ऐसैं ही कहनां न्यारे न्यारे एक एक अवयवनि परि एक

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजीइत्याख्यस्मारकम्

एकअवयवीसमस्तपणांकरिवर्त्ततौअवयवीवहुतठहरैहैंऐसैंहोतैंवृत्तिविकल्पतैंवाधाआवैहै॥
अरुअनुमानतैंवाधादिषावैहैजोदिषनेयोग्यहोतासंताभीग्रहणमैंनआवैसोनाहींहीहैजोसैंआका
शकाकमलतैसैंअवयवनिविषैअवयवीग्रहणमैंनाहींआवैहैवहुरिजाकाग्रहणनहोतैंजाकी
वुद्धिकाअभावसोतिसतैंअसत्अर्थनाहीं जैसैंदृक्षकाग्रहणनाहींताहांवननाहींपहलैअनुमानतैंतौ
अवयवनिविषैअवयवीनाहींऐसासिद्धकीयाइसअनुमानतैंभिन्नअर्थनाहींऐसाकल्याणैंसैंअ
वयवीकानिषेधकीयासंवंधकापूर्वैंनिषेधकीयाहीथाइनिदोऊहेतुनितैंरूपआदिकेपरमाणुहै
तेनिरंशहैंपरस्परस्पर्शनैंवालैनाहींसर्वथाभिन्नभिन्नहीहैं॥वहुरितेएकक्षणमात्रस्थायीहैंनित्य
नाहींहैंजिनिकाक्षणक्षणमैंविनाशहोयअन्यअन्यनयजैहैजातैंविनाशप्रतिअन्यकीअपेक्षा
नाहींहै॥याकाप्रयोगऐसा॥जोजिसभावप्रतिअन्यकीअपेक्षानाहींकरैहैसोतिसस्वभाव
विषैनियमरूपहैजैसैंस्वकार्यपटआदिकीउत्पत्तिविषैअंतमैंजोतंतुआदिसामग्रीहैसोअन्यका
रणनाहींचाहैहैसोतिसस्वभावविषैनियतहै॥वहुरिइहांकोईआशंकाकरैजोघटआदिकानाश
मुद्गरादिककरिहोयहैयहअन्यकीअपेक्षाहै॥तहांवौद्धदोयपक्षपूछैहैजोघटआदिकानाशमु
द्गरादिककरैहैसोनाशघटतैंभिन्नकरैहैकिअभिन्नकरैहै॥जोभिन्नकरैहैतौनाशघटतैंभिन्नरह्या

तवघटकैस्थितिहीभई॥इहांकहैहैजोविनाशकैसंवंधतैंघटकूंभीनष्टभयाऐसैंकहियेतौसद्भा
वकैअरअभावकैसंवंधकहाहैजोकहैतादात्म्यहैसोतौनाहींवणैंजातैंभावअभावकैतौभेदहै
वहुरिकहैजोतदुत्पत्तिकहियेकार्यकारणसंवंधहैतौसोभीनाहींहैजातैंअभावकैकार्यकाआधारपणां
वणैंनाहीं॥वहुरिकहैमुद्गरघटकानाशघटतैंअभिन्नकरैहैतौघटआदिहीकीयाठहरैंनाशअरघट
मैंभेदनाहींऐसैंहोतैंघटतौपहलैहैहीतिसनैंकीयाकहाऐसैंघटतैंअभिन्ननाशकहनैंमैंकर
णांवृथाहोयहै॥ऐसैंनाशकैअन्यकीअपेक्षारहितपणांसिद्धभया॥सोपरमाणुनिकैविनाश
रूपस्वभावकानियमपणांसाधैहीहै॥वहुरिअनित्यविशेषरूपपरमाणुतिनिकैतिसस्वभावका
नियमपणांसिद्धहोतैंतिनितैंअन्यजेआत्माआदिकविचारगोचरभएवस्तुतिनिकैसत्त्वनामाआ
दिहेतुकरिसाधनैं॥इसदृष्टांतकरिक्षणस्थितिस्वभावपणांकीसिद्धिहोयहीहै॥सोहीकहियेहै
जोसत्हैसोसर्वएकक्षणस्थितिस्वभावरूपहै॥जैसैंघटहैतैसैंहीसत्त्वरूपएभावहैंऐसैंतौवहि:
व्याप्तिमुखकरिअनुमानकीयाअरअंतर्व्याप्तिमुखकरिअनुमानकरैहै॥अथवासत्त्वहैसोहीविपक्ष
जोनित्यताविषैवाधकप्रमाणकावलकरिदृष्टांतविनाहीसमस्तवस्तुकैक्षणिकपणाकाअनुमानक
रावैहै॥सोहीकहियेहैसत्त्वहैसोअर्थक्रियाकरिव्याप्तहै॥वहुरिअर्थक्रियाहैसोक्रमयौगपद्यकरिव्या

म है बहुरि क्रम अर यौगपद्य ए दोऊ कैं ते नित्य तैं निवृत्ति रूप होते अपनी व्याप्य अर्थक्रिया कूं लार लेनि।
वृत्तिरूप होय है भावार्थ॥ नित्य मैं अर्थक्रिया न बणें है॥ बहुरि सो अर्थक्रिया है सो अपनां व्याप्य सत्व कूं
लार लें है नित्य मैं सत्व नाहीं रहे है॥ ऐसें नित्य कै क्रम यौगपद्य करि अर्थक्रिया का विरोध है तातें अर्थक्रि-
या विना सत्व का असंभव नांहे है सो ही विपक्ष जो नित्यता विषै बाधक प्रमाण है॥ बहुरि नित्य कै अनुक्रम।
करि तथा युगपत् अर्थक्रिया नाहीं संभवै है नित्य जो एक ही स्वभाव करि पूर्व अपर काल विषै होते होय
कार्य करै तौ कार्य का भेद करनें वाला नाहीं होय जातैं नित्य कै एकस्वभावपणां है॥ जो नित्य कै एकस्व
भावपणां होतैं भी कार्य कै नानापणां है तौ अनित्य विषै कार्य के भेद तैं कारण का भेद की कल्पना निःफल
ही होय है॥ जैसा एक ही कोई कारण कल्पनें योग्य होय है॥ जाकरि एकस्वभावरूप एक ही करि समस्त
चराचर वस्तु उपजैं॥ छ॥ बहुरि नैयायिक कहै है जो नित्य वस्तु कै स्वभाव का नानापणां ही कार्य के भेद तैं मा।
नियै है तौ तहां पूछियै जो ते स्वभाव तिस नित्य वस्तु कै सदा संभवते हैं तौ कार्य का संकरपणां आवैगा॥ जी
व नर नारक एक काल उपजते ठहरैंगे॥ बहुरि ते स्वभाव सदा नाहीं संभवते हैं तौ तिनि की अनुक्रम तैं उ
त्पत्ति होनें विषै कारण कहा है सो कह्या चाहियै तिस नित्य तैं ये हैं ऐसें एकस्वभाव तैं उत्पत्ति होतैं तिनि स्व
भावनि कै भेद कै असंभवनें तैं सो ही कार्यनि कै युगपत् प्राप्ति संभवै॥ बहुरि कहै है जो नित्य कारण के सह ९२

कारी कारण अनुक्रम तैं होय तिस अपेक्षा करि ताके स्वभावनि का अनुक्रम करि सद्भाव है तातैं उ
क्त कह्या जो दोष सो नाहीं॥ ताकूं कहियै जो ऐसैं कहनां भी नीकैं मिलै नाहीं॥ जो नित्य है अर सम
र्थ है ताके पर की अपेक्षा का अयोग है॥ बहुरि सहकारी कारण करि सामर्थ्य करणां मानियैं तौ
नित्यता की हानि आवै सहकारी नैं नई सामर्थ्य उपजाई तब नित्य कहां रह्या॥ बहुरि कहै है सहकारी
कारण नित्य तैं सामर्थ्य भिन्न ही उपजावै है यातैं नित्यता की हानि नाहीं॥ तौ नित्य तौ अकिंचितक
र रह्या कछू करनें वाला नाहीं सहकारी करि उपजाई जो सामर्थ्य तिस ही कै कार्यकारीपणां ठ
हर्‍या॥ बहुरि कहै है नित्य अर सामर्थ्य कै संबंध है तातैं नित्य कै भी कार्यकारीपणां कहियै॥ तौ त
हां दोय पक्ष पूछै है संबंध एकस्वभाव है कि अनेकस्वभाव है॥ जो कहैगा तिस सामर्थ्य कै संबं
ध है सो एकस्वभाव है तौ एकस्वभाव संबंध होतैं सामर्थ्य कै नानापणां का अभाव तैं कार्य विषै
भेद न ठहरैगा॥ बहुरि कहैगा संबंध कै अनेकस्वभावपणां है॥ तथा अक्रमवानपणां है तौ ऐसें
होतैं कार्य की ज्यों तिस सामर्थ्य कै भी संकरपणां आवैगा जड करनें की अर चेतन करनें की साम
र्थ्य के संकरपणां आवैगा॥ ऐसें सर्व आवर्तन होयगा तब चक्रक दोष का प्रसंग आवैगा॥ तातैं नि
त्य कै अनुक्रम करि कार्य का करणां नाहीं बणैं है बहुरि युगपत एक काल भी नाहीं बणैं है॥ समस्त

कार्यनिकी एक काल वस्तिहोतें दूसरे क्षण कार्यका न करणां आपात वअर्थ क्रियाकारीपणांन
नरस्यात व अवस्तुपणांका प्रसंग आवेहै ॥ ऐसैं नित्यकै क्रमयोगपद्यका अभाव सिद्ध ही है ॥ ऐ
सें बौद्धमती अपनां मत दृढ कीया जो विशेषही वस्तुस्वरूप हैं सामान्यवस्तु स्वरूप नाही ॥ बहुरि ते
विशेष परस्पर असंबद्ध ही हैं संबंध नाही अवयवी नाही बहुरि ते एक क्षणस्थायी ही हैं नित्य
नाही ऐसैं तीन पक्ष कहीति नि तीनों ही का निराकरणकै अर्थि अब आचार्य कहै हैं ऐसी कहनें
वाला बौद्ध भी युक्तवादी नाही जातें सजातीय विजातीय न्यारे न्यारे अंशरहित जे विशेष तिनिका
ग्राहक प्रमाणका अभाव है ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकै तौ स्थूल स्थिर साधारण आकाररूप वस्तु
का ग्राहकपणां है ताते अंशरहित वस्तुका ग्रहणका अयोग है ॥ परस्पर संबंधरूप नाही ऐ
से परमाणु नेत्र आदिक रि नाही प्रतिभासै हैं ॥ जो प्रत्यक्ष नेत्र आदि करि दीषै तौ विवाद कैसैं
रहै इहां बौद्ध कहै है जो पहलै तौ निरंश क्षणरूप परमाणु ही दीषै हैं ॥ पीछैं विकल्पकी वासनातौ
अंतरंगरूपता केवल तैं अर बाह्य अंतराल न दीषै तातैं अविद्यमान भी स्थूल आदि आकार विक
ल्पबुद्धि विषै प्रतिभासै है ॥ सो ऐसा विकल्प तिस निर्विकल्प प्रत्यक्षकै आकार करि मिल्या हूवा अ
पना विकल्पव्यापारकूं गौण करि प्रत्यक्षव्यापारकूं मुख्य करि प्रवर्तै है तातैं प्रत्यक्ष सारिषा दीषै है। ९४

तहां आचार्य समाधान करै हैं जो यह कहनां तौ बालक अज्ञानीका विलास है ॥ जातैं निर्विकल्पज्ञा
नका ही अनुभवन नाही है ॥ निर्विकल्प सविकल्पकी भेद पहलैं ग्रहण होय तब अन्य आकारके।
मिलनेंकी अन्य आकार विषै कल्पना युक्त होय है जैसैं पहलैं स्फटिकमणि अर जपाकुसुम न्या
रे न्यारे देषै होय पीछैं स्फटिककै उंकलाग्या दीषै तब ऐसी कल्पना संभवै जो यह स्फटिक जपाकु
सुमतैं रागित दीषै है जो न देषै होय तौ ऐसी कल्पना न होय ॥ याही कथन करि निर्विकल्प सविक
ल्पकै युगपत्‌ प्रवृत्तितैं तथा क्रमवृत्तिमैं एकपणांका निश्चय होय है ऐसा कहनां भी निराकरण।
कीया ॥ ताकै भी धीजलेणेंतैं प्रतीआवैति समानपणां है ॥ अथवा तिनि विकल्प सविकल्पका
एकपणांका निश्चय कौंन सै ज्ञान करि करिये ॥ प्रथम तौ विकल्पज्ञान करि तौ निश्चय नाही होय
जातें विकल्पज्ञान निर्विकल्पकी वातका जाननेंवाला नाही ॥ बहुरि अनुभवज्ञान करि निश्चय ना
ही होय जातैं अनुभव विकल्पकै अगोचर है ॥ बहुरि निर्विकल्प सविकल्प ज्ञाका विषय नाही ऐ
सा ज्ञान भी तिनिका एकत्वका निश्चय विषै समर्थ नाही ॥ यामैं अतिप्रसंग दूषण है अन्यका वि
षय अन्य करि ग्रहण होतैं अतिप्रसंग है ॥ तातैं प्रत्यक्षबुद्धि विषै तौ भिन्न भिन्न असंबंधरूप पर।
माणु प्रतिभासैं नाही बहुरि अनुमानबुद्धि विषै भी नाही प्रतिभासैं हैं ॥ जातैं तिससैं अविनाभूत जो।

स्वभावलिंगअरुकार्यलिंगनिकाअभावहै ॥ अरस्थूलस्थिरसाधारणकाअनुपलंभतैं विशेषहीत
त्वहैअैसैंकहैतौ अनुपलंभलिंगहैसोअसिद्धहीहै जातैंअन्वयरूपआकारकाअरस्थूलआकारका
प्रत्यक्षदेषनैंमैंआवनांकत्याहीहै ॥ वहुरिवौद्धनैंकह्याजौपरमाणूकैएकदेशकरिअरसर्वस्वरूपक
रिसंवंधनाहीवणैंहैसोयाकापरिहारयहहीजोअैसैंहमभीसंवंधनाहीमानैंहैं ॥ हमतौअैसैंमानैंहैं
जोलूषाचीकणाकेसमानजातीयकैतथाविजातीयकेदोयअधिकगुणहोयतौकथंचितस्कंध
केआकारपरिणमैताकेसंवंधमानैंहैं ॥ वहुरिवौद्धनैंजोअवयवीकाअवयवनिविषैवृत्तिवि
कल्पआदिदूषणाकह्यातहांअवयवीकीवृत्तिहीजोनवणैंतौअवयवीवर्त्तैहीनाहीहैअैसैं।
कहनांथाएकदेशआदिविकल्पनकहनांथाजातैंएकदेशआदिविकल्पकैतौअन्यविक।
ल्पविशेषतैंअविनाभावीपणांहै ॥ सोहीकहियेहै ॥ अवयवीअवयवनिविषैएकदेशकरिनाही
वर्त्तैहैवहुरिसर्वरूपकरिभीनाहीवर्त्तैहैअैसैंकहतैंअैसाआया जोअन्यप्रकारकरिवर्त्तैहै ॥ अ
रअैसैंनमानियेतौनाहीवर्त्तैहैअैसैंहीकहनां ॥ अैसैंविशेषकानिषेधकैअवशेषकाअंगीकाररू
पपणांहै ॥ तातैंकथंचित्तादात्म्यरूपकरिअवयवीकीअवयवनिविषैवृत्तिहैअैसानिश्चयकीजिये ९५
है जाहांजेकहेदोषतिनिकाअवकाशनाहीहै ॥ वहुरिविरोधआदिदोषकानिषेधआगैकरिसीयातैं

इहांविस्तारनाहीकीयाहै ॥ वहुरिजोवस्तुकैएकक्षणस्थायिपणांविषैहेतुकह्याजोजिसभावप्रतिद्व
न्द्वादिसोभीअहेतुहैजातैंहेतुअसिद्धआदिदोषकरिदूषितहै ॥ तहांप्रथमतौनाशविषैअन्यकीअपेक्षा
तैंरहितपणांहेतुकह्यासोअसिद्धहै ॥ जातैंघटादिककाअभावकैमुद्गरआदिकेव्यापारकाअन्वय
व्यतिरेककाअनुसारीपणांतैंतिसकेअभावप्रतिकारणपणांहैमुद्गरकीदीयैंघटफूटैंनदेतौन
फूटैइहांआशंकाकरैजोमुद्गरकीदेनांकपालकीउत्पत्तिकूंकारणहैअभावतौनिरपेक्षहीहैता
कूंकहैहैजोकपालआदिपर्यायांतरकासद्भावहैसोहीघटआदिकाअभावहै ॥ वहुरितुच्छाभावकहिये
सर्वथाअभावसोसमस्तप्रमाणकैअगोचरहैताकीवातहीनाकरणी ॥ वहुरिविशेषकहैहै अ
भावहैसोजोस्वाधीनहोयतौअन्यकीअपेक्षारहितपणांविशेषणायुक्तहोय ॥ सोवौद्धमतविषैसो
अभावस्वाधीनमान्यांनाहीयातैंहेतुकाप्रयोगकाहीअवतारनाही ॥ वहुरियहुअन्यानपेक्षपणं
हेतुहैसोअनैकांतिकहै ॥ जातैंशालिकेवीजकेकोदूंकाअंकुरकाउपजनांप्रतिअन्यकीअपेक्षार
हितपणांहैतौऊतिसकोदूंकेअंकुरकिउपजनेंकेस्वभावप्रतिनियमरूपपणांनाहीहै ॥ वहुरिवौद्ध
कहैजोहेतुकाविशेषणाअैसाकीयेंदोषनाहीजोविनाशस्वभावहोतैंअन्यानपेक्षहैतौतहांकहिये
पदार्थकैसर्वथाविनाशस्वभावपणांहीअसिद्धहै ॥ पर्यायरूपकरिहीपदार्थनिकेउत्पादविनाश।

मानिये हैं द्रव्यरूप करि उत्पाद विनाश नाही हैं। जातैं ऐसा वचन है ताका श्लोक का अर्थ। जो पदार्थ उ
पजै है अर विनशै है सो पर्यायनय का विषय है। बहुरि द्रव्यनय करि आलिंगित वस्तु नित्य है न उपजे
है न विनशै है ॥ छ ॥ अन्वय कहिये पहले पिछले के जोड तिस रहित जो विनाश सो निरन्वय विनाश तिस
कूं होतैं पहले क्षण तैं उत्तर क्षण की उत्पत्ति नाही बणै है जैसैं मूवा मोर की कुहुक नाही होय तैसैं। ऐ
सैं पदार्थनि का सर्वथा विनाश स्वभावपणां युक्त नाही जातैं कथंचित द्रव्यरूप करि पूर्वरूप का।
नैं नष्ट होना ऐसा भी वस्तुस्वरूप का संभवै है। बहुरि द्रव्य के रूप का ग्रहण होनें का असमर्थपणां
तैं द्रव्य का अभाव नाही है। तिस द्रव्य के ग्रहण का उपाय जो प्रत्यभिज्ञान प्रमाण ताका बहुलपणैं
पावना है। तिस प्रमाण के पहलैं प्रमाणपणां कह्या ही है। बहुरि उत्तर कार्य की उत्पत्ति की अन्यथा
नुपपत्ति तैं भी द्रव्य की सिद्धि होहै द्रव्य न होय तो उत्तर कार्य की उत्पत्ति न होय। बहुरि जो क्षणिक साधनें
विषै सत्व नाम अन्य हेतु कह्या सो भी विपक्ष जो नित्य ता विषै सत्व नाही तैसें क्षणिक मैं भी नाही है तातैं।
सत्व हेतु तैं भी क्षणिक साध्य की सिद्धि नाही होय है सो ही कहिये है। सत्व है सो अर्थक्रिया तैं व्याप्त है ब
हुरि अर्थक्रिया है सो क्रम यौगपद्य करि व्याप्त है ते क्रम यौगपद्य दोऊ क्षणिक तैं निवृत्तिरूप हुये संते अ ९६
पनें व्याप्य जो अर्थक्रिया ताकूं ल्यार लेनिवृत्तिरूप होय हैं बहुरि सो अर्थक्रिया निवृत्तिरूप होती अपनें व्या

DR. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊ दाजी इत्यस्य स्मारकम्
MEMORIAL

पनैं योग्य जो सत्व ताहि लेकरि निवृत्तिरूप होय है ऐसैं नित्य की ज्यौं क्षणिक कै भी गधा के सींग वत् सत्व।
नाही है। ऐसैं क्षणिक विषै सत्व की व्यवस्था नाही है। बहुरि क्षणिक वस्तु कै क्रम यौगपद्य करि अर्थ
क्रिया का विरोध है सो असिद्ध नाही है। जातैं ताकै देश करि कीया अर काल करि कीया जो क्रम ता
का असंभव है। जो अवस्थित एक होय ताही कै अनेक देश अर काल की कलानि विषै व्यापी।
पणां होय सो देशक्रम अर कालक्रम कहिए है सो क्षणिक विषै ऐसा देशक्रम अर कालक्रम
नाही है। जातैं बौद्धमत मैं ऐसैं कह्या भी है ताका श्लोक का अर्थ। जो वस्तु जिस क्षेत्र मैं है सो तहां ही
है बहुरि जिस काल मैं है सो तहां ही है यातैं पदार्थनि कै देश काल विषै व्याप्ति नाही है ऐसैं आप कह्या
है। बहुरि पूर्व उत्तर क्षणनि कै एक संतान की अपेक्षा करि भी क्रम नाही संभवै है। जातैं जो संतान
कूं वस्तुभूत मानैं तो तिस कै भी क्षणिकपणां ठहरै तब तिस की अपेक्षा क्रम नाही बणै है। अर अक्ष
णिकपणां होतैं भी वस्तुभूतपणां मानैं तो वस्तुभूतपणां करि तिस संतान ही करि सत्व आदि हेतु
कै अनैकांतिकपणां आवै। बहुरि संतान कूं अवस्तुभूत मानैं तौ भी तिस की अपेक्षा क्रम युक्त नाही
होय। बहुरि युगपतपणां करि भी क्षणिक विषै अर्थक्रिया नाही संभवै है। इहां दोय पक्ष जो युगपत
एक स्वभाव करि नाना कार्य करणां मानिये तो तिस के कार्य कै एकपणां ठहरै। बहुरि जो नाना स्वभा

वकल्पियै तौ ते स्वभाव तिस लक्षण करि व्यापे चाहियै सो जो एक स्वभाव करि ते लक्षणिक तिनि स्वभावनि
मैं व्यापै तौ तिनि स्वभावनिकै एकरूपता हूं है। बहुरि जो नानास्वभाव करि व्यापै तौ अनवस्था दूषण।।
आवै। जातैं फेरि एकस्वभाव अनेकस्वभाव का प्रश्न चल्या जाय। बहुरि बौद्ध कहै है जो एक पूर्वक्षण
कै एक उत्तरक्षण विषै उपादानभाव है। सो ही अन्य जे रूप तैं रसादिक तिनि विषै तिस क्षण कै स
हकारीभाव है। यह ही स्वभावभेद है तौ ताकूं आचार्य कहै है। नित्य एकरूप वस्तु कै भी क्रम करि ना।
नाकार्य करनेवाले कै स्वभाव का भेद अर कार्य का संकरपणां मति होऊ। ऐसा दूषण तैं कह्या था।।
सो मति होऊ। इहां बौद्ध कहै है जो अक्रम तैं क्रमवान् वस्तु की उत्पत्ति नाही ताही तातैं नित्य कै सैं नाही
तौ ताकूं कहियै तैसैं ही क्रमरहित जो क्षणिक सो एक है अनंश है ऐसे कारण तैं युगपत् अने
ककारणनि करि साधनें योग्य जे अनेक कार्य तिनि का विरोध है तातैं ता कै भी कार्यकारीपणां।
नाही है। बहुरि विशेष कहै है। बौद्धकूं पूछै है तेरे पक्ष विषै कार्यकारीपणां सत् कै मानै है कि असत्
त कै मानै है। जो सत् कै कार्य का कर्तापणां मानै है तौ सकल काल की कला विषै व्यापी जे क्षण।।
तिनि कै एकक्षणवर्तीपणां का प्रसंग आवैगा। बहुरि जो दूसरा पक्ष असत् कै कार्यकारीपणां मानैं।।
तौ गधा के सींग आदि कै भी कार्यकारीपणां ठहरैगा जातैं गधा का सींग भी असत्रूप है या मैं विशेष ना ही ९७

बहुरि सत्त्व का लक्षण अर्थक्रियाकारीपणां है सो असत् कै कार्यकारीपणां मानैं ता कै व्यभिचार।
आवैगा। तातैं विशेष एकांत है सो कल्याणकारी इष्ट नाही ऐसैं विशेष एकांत मानने वाला
जो बौद्धमत ता का पक्ष का निराकरण कीया तातैं विशेष एकांत वस्तुस्वरूप नाही तातैं प्रमाण का।।
विषय नाही है इहां तांई बौद्धमती संबंधस्या है। आगैं नैयायिक संबंधस्या करै है। अब कहै है जो
सामान्य विशेष दोऊ परस्पर अपेक्षारहित हैं ऐसैं नैयायिकमती मानैं हैं सो तिनि का मत भी
युक्ति करि युक्त नाही सो है है। जातैं तिनि कै परस्पर भेद होतैं दोऊ मैं एक का भी स्थापन करनें
का असमर्थपणां है सो ही कहिये है। विशेष कहिये व्यक्ति ते तौ प्रथम द्रव्य गुण कर्म ए पदा
र्थ हैं बहुरि सामान्य पर अपर भेद तैं दोय प्रकार है। तहां पर सामान्य तौ सत्तास्वरूप है तिस तैं
विशेषनि कै भेद होतैं विशेषनि कै असत्ता की प्राप्ति आई तैसैं ही प्रयोग है। द्रव्य गुण कर्म हैं ते
असत्रूप हैं जातैं सत्ता तैं अत्यंत भिन्न हैं जैसैं प्राक् अभावादिक अभाव है तैसैं इहां सत्ता तैं अ
त्यंत भिन्नपणां हेतु है तांकि सामान्य विशेष समवाय पदार्थनि तैं व्यभिचार नाही है। जातैं तिनि
विषै स्वरूपसत्त्व कूं अभिन्न नैयायिक मानै है। बहुरि नैयायिक कहै है जो द्रव्यादि पदार्थनि कै प्र
माण करि सिद्धपणां है तौ धर्मी का ग्राहक प्रमाण ता करि तुमनें हेतु कह्या सो बाधित है जिस

प्रमाणकरि द्रव्यआदिक निश्चयकीजिये हैं। तिस ही प्रमाणकरि तिनिका सत्व निश्चय कीजिये है इ
हां तुम कहौगे द्रव्यआदिक प्रमाण सिद्ध नाही है तौ तुमारे हेतुकै आश्रयकी असिद्धि आवैगी। ताका
उत्तर आचार्य कहै हैं जो यह कहना अयुक्त है। जातैं इहां हम नैं प्रसंगसाधन कीया है परका इष्ट लें
करि परकै अनिष्ट का आवना सो प्रसंगसाधन है सो इहां प्राकृअभावादि विषै सत्वतैं भेद है सो अ।
सत्वतैं व्याप्त पाइये है सो व्याप्य है तातैं तिस भेद का द्रव्यादि विषै अंगीकार है सो व्यापक जो अस
त्व ताका अंगीकार तैं अविनाभावी है। ऐसैं इहां प्रसंगसाधन है तातैं नैयायिक नैं कह्या प्रमाण
बाधित आदि दोष सो नाही आवै है। पदार्थनिकूं नैयायिक जैसैं भेदाभेदमानैं था तिस ही की अ
पेक्षा लेकरि प्रसंगसाधन कीया है। इस ही कथनकरि द्रव्यआदिक कै भी द्रव्यपणा तैं भेद ही तैं
अद्रव्यादिपणां विचार्या जाननां। बहुरि आचार्य नैयायिककूं पूछै है कि द्रव्य गुण कर्म सामान्य।
विशेष समवाय इनि छह पदार्थनिकै परस्पर भेद ही तैं न्यारे न्यारे अपनें स्वरूपकी व्यवस्था कैसैं
है जो कहैगा। द्रव्य का द्रव्य ऐसा नाम द्रव्यत्व का संबंध तैं है तौ द्रव्य कै संबंध पहलै तौ द्रव्य कै संबं
ध पहलै द्रव्य का स्वरूप कहा है सो कह्या चाहिये। जाकरि सहित द्रव्यत्व का संबंध होय। जो कहै द्रव्य
ही स्वरूप है तौ तिस का द्रव्य ऐसा नाम तौ द्रव्यत्व का संबंध रूप कारणतैं होय है तातैं द्रव्य ऐसा स्व। ९८

रूप का अयोग है बहुरि कहै जो निजरूप तौ सत्व है तौ ताका भी सत्व ऐसा नाम सत्ता के संबंधतैं करशो
तैं द्रव्य का निजरूप नाही बणैगा। ऐसैं ही गुण आदि विषै भी कहि लेणां ऐसैं होतैं केवल सामान्य
विशेष समवाय इनि तीन ही कै स्वरूपसत्व करि तैसा नाम बणै है। तातैं तिनि तीन ही पदार्थनिकी
व्यवस्था ठहरै है। बहुरि इहां नैयायिक कहै है। नैयायिक वैशेषिक का अभिप्राय एक ही है तातैं नैया
यिक ही नाम लिख्या इहां सामान्य नाम योगमत जाननां अर द्रव्यादिक सप्त पदार्थ वैशेषिक कहै हैं
है। अब इहां कहै है स्याद्वादी जैनी जीव आदि पदार्थनिकै सामान्य विशेष स्वरूपपणा मानैं हैं सो।
तिनि सामान्य विशेष का वस्तुतैं भेद अभेद है तैं विरोध आदि आठ दोष कै आवनैं तैं एक वस्तु
विषै नाही संभवै हैं। सो ही कहै है। भेद अभेद दोऊ विधि प्रतिषेध स्वरूप हैं तै एक जो अभिन्न व।
वस्तु ता विषै संभवैं नाही जैसैं शीत उष्ण स्पर्श दोऊ एक विषै नाही संभवैं तैसैं। ऐसैं तौ विरो।
धदूषण आया। बहुरि भेद का आधार अन्य अभेद का आधार अन्य ऐसैं वैयधिकरण्यदूषण
आया। बहुरि जिस स्वरूपकूं मुख्य करि भेद ब्यौं वर्त्तै है अर जिसकूं मुख्य करि अभेद वर्त्तै है तै दो
ऊ स्वरूप भिन्न है तथा अभिन्न है बहुरि तहां भी भेदाभेद कै कल्पनैं तैं अनवस्था दूषण है बहुरि जिस
रूप करि भेद है तिस ही रूप करि भेद भी है अभेद भी है ऐसैं संकरदूषण है। बहुरि जिस करि भेद है ति।

सकरि अभेद है। जिसकरि अभेद है तिसकरि भेद है ऐसें व्यतिकर दूषण है। बहुरि भेदाभेद स्वरूपपणां
होतें वस्तु का असाधारण आकार करि निश्चय करनें कूं असमर्थपणां है। तातें संशय दूषण है। ति
सही हेतुतें अप्रतिपत्ति दूषण है। तिसही हेतुतें अभाव दूषण है ऐसें अनेकांतात्मक वस्तु भी निश्चि
त नाहीं होय पक्ष के है। ऐसें नैयायिक कहे है। तहां आचार्य कहे है ऐसें कहनें वाले भी प्रतीति स्व।
रूप के कहनें वाले नाहीं। जातें प्रतीति गोचर वस्तु होय तामैं विरोध का असंभव है। विरोध तौ जे
सें दीखे नाहीं तैसें कहै तामें है तहां जो दीखनें में आवै तामें कहा विरोध भेदाभेद तौ एक वस्तु में दो
ऊ प्रकार दीखै हैं। इहां जो शीत उष्ण स्पर्श का दृष्टांत कह्या। सो धूपदहन का घट आदि एक अवय
वी कै शीत उष्ण स्वभाव की प्राप्तितें विरोध का दृष्टांत अयुक्त है। धूपदहन के घडे मैं शीत उष्ण दोऊ
स्पर्श होय हैं आदि शब्द करि संध्या विषैं प्रकाश तम का साथि अवस्थान होय है। एक वस्तु के चल
अचल रक्त अरक्त आवरण सहित आवरण रहित इत्यादि विरुद्ध धर्मनि का युगपत् देखनां है।
तैसें कहे जे भेदाभेद तिनिकै भी विरोध नाहीं है। इसही कथन करि वैयधिकरण्य भी निराकरण
कीया। तिनि भेदाभेद कूं एक आधारपणां करि प्रतीतितें समानाधिकरण्य है। इहां भी चल अचल
आदि पहलें दृष्टांत कहे ते जाननें। बहुरि जो अनवस्था नामा दूषण कह्या सो भी स्याद्वाद मनकूं ना। ९९

हीं जाननें वाले करि बताया है। स्याद्वादीनि का पक्ष मत है। सामान्य विशेष स्वरूप वस्तु विषैं सामान्य वि
शेष हैं ते ही भेद हैं जातें भेद शब्द करि तिनिकूं ही कहे हैं। बहुरि द्रव्यरूप करि अभेद है ऐसा कह्या है सो
द्रव्य ही अभेद है। जातें वस्तु कै एकानेक स्वरूपरूपपणां है। अथवा भेदनय का प्रधानपणां का।
रि वस्तु के धर्मनि कै अनंतपणां है। तातैं अनवस्था नाहीं है सो ही कहिये है जो सामान्य है बहुरि
जे विशेष हैं तिनिकै अन्वयरूप आकार करि अर व्यावृत्त कहिये न्यारा न्यारा आकार करि भेद है।
बहुरि तिनिकै अर्थक्रिया के भेदतें भेद है बहुरि तिस अर्थक्रिया के शक्ति के भेदतें भेद है। सो शक्ति
भेद भी सहकारी के भेदतें है। ऐसें अनंत धर्मनि का अंगीकार करणे तें अनवस्था कहे तैं होय
सो ही कह्या है। ताका श्लोक का अर्थ। जो मूल नाश का करनहारा होय ताहि अनवस्था दूषण पं
डित कहे हैं। वस्तु कै अनंतपणां होतैं अथवा विचारनें कूं असमर्थता होय तहां अनवस्था दूष
ण नाहीं जे अनवस्था होय तौ भी दूषण न कहिये। बहुरि जो संकर अर व्यतिकर दोऊ दूषण है
ते भी मेचक ज्ञान के दृष्टांत करि बहुरि सामान्य विशेष के दृष्टांत करि दूरि कीए। इहां संकर दूषण के
निराकरण कूं दृष्टांत मेचक ज्ञान अनेक वर्णाकार वस्तु के जाननें कूं कह्या है। बहुरि सामान्य विशे
ष ऐसें जो जो दीर्घ कपणां अपणी व्यक्तिनि की अपेक्षा सामान्य सो ही महिष आदि की अपेक्षा विशेष॥

ऐसे दृष्टांत करि व्यतिकर दूषण नाही। इहां कहै है जो मेचक ज्ञान विषै तौ जैसा वस्तु मैं अनेक वर्णाका
रपणा तैसा प्रतिभासै है। तौ ताकूं कहिये इहां हमारै भी जैसी वस्तु है ताका तैसा ही प्रतिभास है। बहुरि ता
का पक्षपातका अभाव है। बहुरि जैसा वस्तु है ताका तैसा निर्णय भया तहां संशय भी नाही। युक्त
है संशय तौ चलित ज्ञान रूप है अचल प्रतिभास विषै संशय बणै नाही। बहुरि जो वस्तु प्राप्त
भया सिद्ध भया ताके विषै अप्रतिपत्ति कहनां यह तौ अतिधीठपणां है। बहुरि जाकी उपल
ब्धि होय तहां अनुपलंभ भी नाही। सिद्ध है तातैं अभाव भी नाही। ऐसैं इनि दूषणनितैं रहित।
प्रत्यक्ष अनुमान प्रमाण करि अविरुद्ध अनेकांतात्मक वस्तु का [illegible] कहनैंवाला अनेकांत मत
है सो सिद्ध है। इस ही कथन करि अवयव अवयवीकै गुण गुणीकै कर्म कर्मवानकै कथंचित् भे
द है कथंचित् अभेद है कथंचित् अभेद है सो कहै है जानैं। अब नैयायिक कहै है जो समवायकै व
शतैं भिन्न पदार्थ विषै भी अभेदका प्रतीति है। जाकै वस्तु तुल्यनामा ज्ञान नन्तप० ज्या ताके भावार्थ॥
जाकै अतीन्द्रिय ज्ञान नाही ताकै भिन्न पदार्थ विषै भी समवायतैं अभेदका ज्ञान है ताकूं आचार्य क
है है जो ऐसैं नाही। जातैं समवाय भी पदार्थनितैं भिन्न ही है ताकै स्थापनैंकी असमर्थता है। सो ही कहि
ये है। इहां दोयपक्ष है समवायकी वृत्ति है सो अपनां समवायी पदार्थनि विषै वृत्ति सहित है कि वृत्ति। १००

रहित है। जो कहै वृत्तिसहित है तौ तहां भी दोयपक्ष करै है। जो यह वृत्ति आपही करि वृत्तिसहित है कि
अन्य वृत्ति करि है जो कहै आपही करि है तौ यह पक्ष तौ नाही बणै है। समवाय विषै अन्य समवायका
अंगीकार नाही। पांच ही पदार्थकै समवायीपणां है ऐसा नैयायिकका वचन है। बहुरि अन्य वृत्ति
की कल्पना करै तौ सो वृत्ति अपनैं संबंधीनि विषै वर्त्तै है कि नाही ऐसैं कल्प करैं तैं अन्य वृत्ति की प
रंपराकी प्राप्ति तैं अनवस्था आवै इहां कहै अपनैं संबंधीनि विषै अन्य वृत्ति कै अन्य वृत्तिका अं
गीकार नाही। तातैं अनवस्था नाही आवै तौ ताकूं कहिये समवाय विषै भी अन्य वृत्ति मति होउ अ
वयकै रिनैयायिक कहै है। जो समवाय है सो अपनैं आश्रय विषै वृत्तिरूप नाही मानिये है तौ ता
कूं कहिये छह पदार्थनिकै आश्रितपणां है ऐसा ग्रंथका विरोध आवैगा नैयायिकका सूत्र है जो
नित्यद्रव्य विनां छह पदार्थ अन्यकै आश्रय है सो ऐसा सूत्र विरोध्या जाय। बहुरि नैयायिक क
है है जो समवायिपदार्थनिकै होतें ही समवायकी प्रतीति है। तातैं समवायकै आश्रितपणां कल्पि
ये है। तौ ताकूं कहिये मूर्त्त द्रव्यनिकूं होतें ही दिशा द्रव्यका लिंग जो यह या तैं पूर्व दिशा करि है इत्या।
दिक ज्ञान ताकै बहुरि कालका लिंग जो पर अपर आदि प्रतीति ताका सद्भावतैं तिन दोऊ द्रव्य
निकै भी तिनि मूर्त्त द्रव्यनिका आश्रितपणा ठहरैगा। तातैं सूत्र मैं कह्या जो नित्यद्रव्य विना अन्यकै आ

परी० मु०
१०२

श्रितपणांहै ऐसा कहनां अयुक्त भया। वहुरि विशेष कहै है जो समवायकै अनाश्रितपणा होतैं संबंधरूपपणां हीन वणे है तैसैं ही प्रयोग है। समवाय है सो संबंध नांही है। जातैं याकै अनाश्रितपणां है जैसैं दिशा आदि द्रव्य अनाश्रित है तैसैं। इस प्रयोग विषै समवाय जो धर्मी सो कथंचित ता। दात्म्यरूप है अर अनेक है ताकूं हम मान्यां है तातैं धर्मी का ग्राहक जो प्रमाण ताकरि बाधा नाही है वहुरि आश्रयासिद्धि दूषण नां कहणां वहुरि। तिस समवायकै आश्रितपणां होतैं भी यहु दूषण कहिये है। समवाय है सो एक नांही है। जातैं संबंधस्वरूपपणां होतैं याकै आश्रितपणां है जैसैं संयोग संबंध है इहां सत्ता करि हेतुकै अनेकांत होय है तातैं हेतुकै संबंधस्वरूपपणां होतैं ऐसा विशेषण कीया है। अब नैयायिक फेरि कहै है जो संयोग विषै तो दृढ संयोग शिथिल संयोग इत्यादि नानापणांकी प्रतीति है तातैं नानापणां है अर ऐसैं समवाय विषै तो नाही जातैं समवायतौ तिसतैं विपरीत है ताकूं आचार्य कहै है जो ऐसैं नाही जातैं समवाय विषै पविषैभी उत्पत्तिमानपणां विनश्वरपणांकी प्रतीति रूप नानापणां सुलभ है वहुरि कहै है संबंधीपदार्थकै भेदतैं समवाय विषै नानापणां है तौ संयोग विषै भी तैसैं ही नानापणां समान है। एकही विषैतौ प्रश्न युक्त नाही। तातैं नैयायिककरि कल्पित समवायकै विचार करि अयोग्य १०२

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी स्मारक

पणां है। तातैं तिस समवायकै वशतैं गुण गुणी आदि विषै अभेदकी प्रतीति नाही वणे है। वहुरि नैयायिक कहै है जो अवयव अवयवी आदिका भिन्न प्रतिभास है तातैं तिनिकै भेद ही है। ताकूं आचार्य कहै है जो यहु नाही जातैं भेद प्रतिभासकै अभेदतैं विरोध नाही है। घटपट आदिकै भेद है तौ कहु कथंचित अभेद वणे है। सर्वथा प्रतिभासकै भेदकी असिद्धि है। जातैं यहु सत है इत्यादि अभेद प्रतिभासका भी सद्भाव है। तातैं कथंचित भेदात्मक द्रव्यपर्यायात्मक वहुरि सामान्य विशेषात्मक तत्त्व है सो जलकी तीर देषनें वालेकै पंखी देषनैं मैं आया ति सन्यायकरि नैयायिक अपनां मत सोधै था ताकौ स्याद्वाद मतमैं कल्याण तत्त्व भी देषनैं मैं आया यातैं वहुत कहनें करि पूर्णता होउ। छ। आगैं अनेकांतात्मक वस्तुके समर्थनकै अर्थि ही दोय हेतु कहै है। छ।
अनुवृत्तव्यावृत्तप्रत्ययगोचरत्वात्पूर्वोत्तराकारपरिहारावाप्तिस्थितिलक्षणपरिणामेनार्थक्रियोपपत्तेश्च॥२॥ याका अर्थ॥ अनुवृत्त कहिये अन्वयरूप अर व्यावृत्त कहिये न्यारा न्यारा रूप इनिका जो प्रत्यय कहिये ज्ञान तिनमैं प्रतीतिनाकै गोचरपणांतैं वहुरि पूर्व परिणाम का छोडनां उत्तर परिणामका ग्रहण करनां इनि दोऊ निकरि सहित स्थितिरूप सो है लक्षण जाका ऐसा जो परिणाम तिस करि अर्थक्रियाकी प्राप्ति है तातैं। छ। तहां अनुवृत्त आकार तौ जैसैं अनेक गऊ विषै गं

कागकूं ऐसी प्रतीति सौं है वहुरि व्यावृत्त आकार कहिये यह गऊ श्याम है यह कावरा है ऐसें व्यावृत्ति
प्रतीति सौं है। तिनि दोऊ प्रतीतिनिकै गोचर कहिये विषयताका भावतातैं अनेकांतात्मक वस्तु है इस
हेतु करि तौ तिर्यक् सामान्य अर व्यतिरेक लक्षण विशेष इनि दोऊ स्वरूप वस्तु साध्या वहुरि पू
र्व आकार का त्याग उत्तर आकार की प्राप्ति अर इनि दोऊ निकरि सहित स्थिति सो ही है लक्षण जा
का ऐसा जो परिणाम तिसकरि अर्थक्रिया की उपपत्ति है तातैं सामान्य विशेषात्मक वस्तु है इस हे
तुकरि ऊर्द्ध्वता सामान्य अर पर्याय नामा विशेष इनि दोऊ रूप वस्तु समर्थ्या है ॥ छ ॥ आगैं पह
लैं कह्या जो सामान्य ताका भेदकूं कहै है ॥ छ ॥ सामान्यं द्वेधा तिर्यगूर्द्ध्वताभेदात् ॥ ३ ॥ याका
अर्थ ॥ सामान्य दोय प्रकार है तिर्यक् सामान्य ऊर्द्ध्वता सामान्य ऐसैं भेद तैं ॥ छ ॥ आगैं पहला भे
द जो तिर्यक् सामान्य ताकूं उदाहरण सहित कहै है ॥ छ ॥ सदृशपरिणामस्तिर्यक् खंडमुंडा
दिषु गोत्ववत् ॥ ४ ॥ याका अर्थ ॥ सदृश कहिये सामान्य जो परिणाम सो तिर्यक् सामान्य है
जैसें अनेक खांडी मूंडी गऊ है तिनि विषै गऊपणां है ॥ छ ॥ तहां जो गऊपणां आदिकूं सर्वथा नि
त्य एक रूप मानिये तौ क्रम यौगपद्य करि अर्थक्रिया का विरोध आवै अर सर्व व्यक्ति निविषै
न्यारा समस्तपणौं वृत्ति का अयोग आवै तातैं अनेक है अर सदृश परिणाम स्वरूप ही है ऐसा ति १०२

र्यक् सामान्य कह्या ॥ छ ॥ आगैं दूसरा सामान्य का भेद जो ऊर्द्ध्वता सामान्य ताकूं दृष्टांत सहित दिखावै
है ॥ छ ॥ परापरविवर्त्तव्यापि द्रव्यमूर्द्ध्वता मृदिव स्थासादिषु ॥ ५ ॥ याका अर्थ ॥ पर कहिये पूर्वका
लभावी अपर कहिये उत्तरकालभावी विशेष पर्याय तिनि विषै व्यापनेवाला जो द्रव्य सो ऊर्द्ध्व
ता सामान्य है जैसैं स्थास कोश कुसूल आदि मृत्तिका की अवस्था विषै मृत्तिका व्यापी है ॥ छ ॥ इ
हां सामान्य शब्द की अनुवृत्ति लेणी ॥ ताकरि यह अर्थ होय है जो यह ऊर्द्ध्वता सामान्य है ॥ सो
कहा है द्रव्य है ॥ सो ही परापरविवर्त्तव्यापी ॥ ऐसा विशेषणरूप कीजिये है ॥ पूर्व अपर काल
वर्त्ती तीन काल विषै अन्वयरूप है ॥ ऐसा अर्थ है ॥ जैसैं चित्र का ज्ञान एक है ता विषै एक का
लभावी जे अनेक अपनैं विषै आपे चित्र के नील आदि आकार तिनिकी व्याप्ति है तैसैं एक
कै भी क्रम तैं होय ॥ ऐसा परिणाम तिनि विषै व्यापीपणां है ॥ ऐसा अर्थ जानना ॥ छ ॥ आगैं ॥
विशेष के भी दोय प्रकारपणां है ऐसैं दिखावै है ॥ छ ॥ विशेषश्च ॥ ६ ॥ याका अर्थ ॥ विशेष
है सो भी दोय प्रकार है ॥ इहां द्वेधा शब्द का अधिकार करि संबंध करणां सो ही कहै है ॥ छ ॥ पर्याय
व्यतिरेकभेदात् ॥ ७ ॥ याका अर्थ ॥ सो विशेष दोय प्रकार है ॥ पर्याय अर व्यतिरेक ऐसैं भेद तैं
॥ छ ॥ आगैं पहला विशेष का भेदकूं कहै है ॥ छ ॥ एकस्मिन् द्रव्ये क्रमभाविनः परिणामाः पर्याया आ ॥

क्रमनिहर्षविषादादिवत् ॥ ८ ॥ याका अर्थ ॥ एक द्रव्य विषै क्रमभावी परिणाम हैं ते पर्याय हैं। जैसें
आत्मा विषै हर्ष अर विषाद अनुक्रम तैं होय हैं ते पर्याय हैं ॥ छ ॥ इहां आत्म द्रव्य अपनी देह प्रमाण
मात्र ही है व्यापक नाहीं है। बहुरि वटकणिका मात्र छोटा सा नाहीं है। बहुरि काय के आकार
पर परिणये जे पृथ्वी अप तेज वायु आकाश तावन्मात्र चार्वाक मती कहै है सो नाहीं है। तहां।
आत्माकूं व्यापक कहै हैं। तिनिका तौ अनुमान का प्रयोग ऐसा है। आत्मा व्यापक है जातैं द्र
व्य पणां का होतैं अमूर्तीकपणां है। जैसें आकाश व्यापक है। ताकूं पूछिये जो आत्मा विषै
अमूर्त्तपणां है सो जो रूपादिक स्वरूप मूर्तीकपणां है। ताका प्रतिषेध रूप अमूर्त्तपणां है
तौ मन करि अनेकांत है योग मती मनकूं द्रव्य मानै है अर अमूर्त्तपणां उहरया तौ व्यापक
नाहीं पटद्र व्यभिचार आया। बहुरि कहै है असर्वगत द्रव्य का परिमाण मूर्त्तपणां है। ताका निषे
ध अमूर्त्तपणां है तौ परजे हमतिनिप्रति साध्यसमान हेतु है आत्माकै व्यापकपणां साध्य है ते
सा ही व्यापकपणां हेतु भया। बहुरि अन्य अनुमान कहै है। जो आत्मा व्यापक है जातैं अणुप॥
रिमाण अधिकरण का अभाव होतैं नित्य द्रव्य है। इहां नित्य है ऐसा ही हेतु कहै तौ परमाणु वि
षै गुण भी नित्य है ताकरि व्यभिचार आवै ताके परिहार कै अर्थि नित्य द्रव्य कह्या। बहुरि द्रव्य १०३

ही कहै तौ पर भी द्रव्य है ताकरि व्यभिचार आवै ताके परिहार कै अर्थि नित्य विशेषण कीया। बहु
रि नित्य द्रव्य ही कहैं तैं मन करि अनेकांत होय ताके परिहार कै अर्थि अणुपरिमाणानधिकरण कह्या।
इहां भी आकाश दृष्टांत है। सो यह अनुमान भी समीचीन नाहीं है जातैं अणुपरिमाणानधिकरण
पणां हेतु का विशेषण है। तहां निषेध पर्युदास है कि प्रसज्य है। जो कहैगा पर्युदास है तौ अणुपरि
माण का प्रतिषेध करि कैसा परिमाण है। महापरिमाण है कि अवांतर परिमाण है कि परिमाणमा
त्र है। महा। जो कहै महापरिमाण है तौ हेतु साध्य समान ही है जातैं व्यापकपणां साध्य है महापरिमा
ण हेतु कह्या सो समान भया। बहुरि कहै अवांतर परिमाण है तौ हेतु विरुद्ध है अवांतर परिमाणा
धिकरणपणां है सो अव्यापकपणां ही कूं साधै है। बहुरि कहै परिमाणमात्र है तौ तिसकूं परि
माण सामान्य अंगीकार करनां। ऐसैं होतैं अणुपरिमाण का प्रतिषेध करि परिमाण सामान्याधिक
रणपणां आत्माकै है ऐसा कह्या ठहरे। सो बणै नाहीं यामैं विशेष अधिकरण रहित की सिद्धि का प्रसं
ग आवै है। जातैं आत्मा कै विषै परिमाण सामान्य व्यवस्थित नाहीं तौ कहां है परिमाण की व्यक्ति निवि
षै ही व्यवस्थित है सामान्य होय सो तौ अपने विशेषनि मैं ही रहै है। बहुरि अवांतर परिमाण अर महापरि
माण इनि दोऊनि का आधारपणां करि आत्मा न पावै तब परिमाणमात्र अधिकरणपणां आत्मा विषै

निश्चय कीया जाय नाही बहुरि आकाश का दृष्टांत कह्या सो साधन रहित होय आकाश विषै तौ महा परिमा
णाधिकरणपणां करि परिमाण मात्र अधिकरणपणां का अयोग है। बहुरि नित्य द्रव्यपणां है सो सर्व
था असिद्ध है सर्वथा नित्य कै क्रम योगपद्य करि अर्थक्रिया का विरोध है। बहुरि कहै गा दूसरी पक्ष प्र
सज्य प्रतिषेध है तौ प्रसज्य प्रतिषेध तौ तुच्छाभाव कहिये सर्वथा अभाव रूप है। ता का ग्रहण का
उपाय का असंभव है। तातैं ता कौं हेतु का विशेषणपणां ही नाही। बहुरि अगृहीत विशेषण है
तु है सो कछू है नाही। जातैं ऐसा वचन है जो विशेष्य विषै बुद्धि है सो अगृहीत विशेषण स्वरूप ना
ही है विशेषण कूं ग्रहण कीयै विशेष्य की बुद्धि होय है। बहुरि तुच्छाभाव का ग्रहण का उपाय प्र।
त्यक्ष प्रमाण नाही है जातैं प्रत्यक्ष कै तुच्छाभाव कै संबंध का अभाव है। प्रत्यक्ष तौ इंद्रिय कै अरथ
सार्थ कै सन्निकर्ष तैं उपजै। सो नैयायिक मत विषै प्रसिद्ध है अर विशेषण विशेष्य भाव सं।
बंध की कल्पना करै तौ अगृहीत कै विशेषणपणां नाही है। ऐसैं तौ पूर्वै कह्या सो ही इहां दूषण
है तातैं आत्म द्रव्य व्यापक नाही है। बहुरि वटकणिका मात्र भी नाही है। सुंदर स्त्री का कुच जघन।
स्पर्शन के काल विषै रोम रोम मैं आह्लाद आकार सुख का अनुभव होय है जो ऐसैं न होय तौ सर्वां
ग विषै रोमांच आदि कार्य का उपजनें का अयोग होय। बहुरि इहां कहै जो अणुमात्र आत्मा कै शीघ्र

वृत्ति तैं आलात चक्र की ज्यौं युगपत का प्रतिभास होय है तौ क्रम करि ही सर्वांग सुख होय है तौ
इहां अयुक्त है। जातैं तिस सुख का कारण अंतःकरण का अन्य अन्य संबंध की कल्पना होतैं बी।
चि मैं व्यवधान कहिये अंतर का प्रसंग आवै है सुख मैं विछेद बीचि बीचि हूवा चाहिये। अर मन का
संबंध विना ही सुख मानिये तौ सुख कै मानस प्रत्यक्षपणां का अयोग होय है। बहुरि पृथ्वी आदि
भूत चतुष्टय स्वरूपपणां भी आत्मा कै नाही है। जातैं पृथ्वी आदि तौ अचेतन है सो अचेतन तैं चेतन।
न की उत्पत्ति का अयोग है। बहुरि पृथ्वी आदि के धारण प्रेरण द्रवत्व उष्ण स्वभाव रूप तैं चेतन्य कै अ
न्वय का अभाव है जातैं पृथिवी का धारण स्वभाव है पवन का प्रेरण स्वभाव है जल का द्रव स्वभाव
है अग्नि का उष्ण स्वभाव है इनि स्वभावनि तैं चेतन्य का देखनां जाननां स्वभाव कै अन्वयपना ही दीखै है
बहुरि तुरत के भये बालक कै स्तन आदि विषै अभिलाष का अभाव का प्रसंग आवै है। अभिलाष
तौ प्रत्यभिज्ञान होतैं होय है प्रत्यभिज्ञान स्मरण होतैं होय है स्मरण अनुभव होतैं होय है। ऐसैं पूर्वै
अनुभव होनां सिद्ध होय है। जातैं बीचि कीड़ा विषै तैसैं ही व्याप्ति है। बहुरि मरण भये पीछै व्यंतर कु
ल विषै आय उपजैं ते आय कहैं हैं जो मैं फलाणां हूं सो व्यंतर भया हूं ऐसैं कहते देखिये हैं बहुरि केइक
नि कै पूर्वै भव का स्मरण होय है ऐसैं चेतन कै अनादिपणां सिद्ध होय है। सो ही कह्या है ता का श्लोक है

ताका अर्थ। तिस ही दिन का उपज्या बालक कै तिस ही दिन स्तनकै लागरे की इच्छा होय है वहुरि व्यंत
रकादिषनां भवस्मरण का होनां पृथ्वी आदि भूत अचेतननैं अन्वय नाही ऐसैं च्यारि हेतुनितैं स्वभा
वही करि ज्ञाता द्रव्यस्वरूप नित्य सिद्ध होय है वहुरि ऐसैं न कहनां जो अपनां देह प्रमाण आत्मा है
ऐसैं कहनैं मैं भी प्रमाण का अभाव है यातैं सर्वत्र संशय है जातैं देह प्रमाण साधनैं विषै अनुमान
प्रमाण का सद्भाव है। छ सो ही कहै है देवदत्त नाम पुरुष का आत्मा तिसके देह विषै ही है वहुरि
तहां सर्वत्र ही विद्यमान है जातैं तिस देह विषै ही वहुरि तहां सर्वत्र ही अपनां असाधारण गुण
का आधारपणां करि ग्रहण होय है। जो जहां ही वहुरि जहां सर्वत्र ही अपनां असाधारण गुण
का आधारपणां करि पाइए सो तहां ही वहुरि तहां सर्वत्र ही विद्यमान होय जैसैं देवदत्त के घर वि
षै ही वहुरि तहां सर्वत्र ही पाइए ऐसा अपनां असाधारण भासुर प्रकाशपणां आदि गुण जा।
कै ऐसा दीपक है तैसैं ही देवदत्त पुरुष का देह विषै ही अर देह विषै सर्वत्र ही आत्मा है आत्मा
कै असाधारण गुण ज्ञान दर्शन सुख वीर्य है ते सर्वांग विषै तिस देह विषै ही पाइए है इहां दे
ह विषै ही आत्मा है ऐसा कहनैं तैं तौ व्यापक का निषेध भया अर देह विषै सर्वत्र है ऐसैं कह।
नैं तैं वटकणिका मात्र का निषेध भया। इहां श्लोक है ताका अर्थ। सुख है सो तौ आल्हादन कै आ १०५

कार है विज्ञान है सो मेय कहिये जाननैं योग्य वस्तु का जाननां है। शक्ति है सो क्रिया करि अनुमान मैं
आवै है जैसैं तरुण पुरुष कै स्त्री का समागम विषै होय है। आनंद अरु ज्ञान नां अरु सामर्थ्य ए
तीनूं जहां ताकै प्रगट देषिए हैं ऐसा वचन है। यातैं आत्म अपनी देह कै प्रमाण ही निश्चित भया छ
आगैं विशेष का दूसरा भेद कूं कहै है। छ। अर्थांतरगतो विसदृशपरिणामो व्यतिरेको गोमहिषादि ६
वत् ॥छ॥ ९॥ याका अर्थ॥ अन्य अन्य पदार्थ विषै पाइये ऐसा विसदृश परिणाम है सो व्यतिरे
क नामा विशेष है जैसैं गऊ भैंसि आदि न्यारे विलक्षण परिणाम स्वरूप दीसै तैसैं छ यातैं
विसदृशपणां है सो प्रतियोगी के ग्रहण होतैं ही होय है जैसैं गऊतैं भैंसि विसदृश है इहां ग
ऊ प्रतियोगी है ताका ग्रहण है वहुरि या विसदृशपणां कै पर की अपेक्षा स्वरूप होतैं अव॥
स्तुपणां नाही है अवस्तु विषै तौ आपेक्षिकपणां का अयोग है यातैं अपेक्षा कै वस्तु निरूपणां।
ही है अवस्तु विषै अपेक्षा नाही होय है। छ ऐसैं प्रमाण के विषय का निरूपण कीया। इहां श्लोक॥
स्यात्कारलांछितमबाध्यमनंतधर्मसंदोहवर्मितमशेषमपि प्रमेयं देवैः प्रमाणबलतो निरवा॥
द्यत्तत्संक्षिप्तमेव मुनिभिर्विहितं मयैतत् १ याका अर्थ॥ श्री अकलंकदेव आचार्यनैं समस्त ही
प्रमाण का विषय जो प्रमेय ताका निरूपण कीया कैसा है प्रमेय स्यात्कार करि लिये कथंचित प्रका

रताकरिविक्षिप्तहै याहीतैं अवाध्याकहियेनिर्वाधहै वह्निरकैसहै अनंतधर्मकाजोसमूहताकरि
सहितहै सोकाहेतैंकह्याहै प्रमाणकेवलतैंकह्याहै तातैं प्रमाणभूतहै सोहीमुनिजेमाणिक्यनं
दिआचार्यतिनिनैंसंक्षेपकरिकह्याहै सोहीमैं अनंतवीर्यआचार्यविवरणरूपकीयाहै ॥ छ ॥ सवै
या अकलंकदेवमुनिरची जोप्रमेयधुनिस्यारवादविह्वलैं अशेषनिरवाधहै मानकोसहायप
यलप्रेजेअनंतधर्ममंडितअखंडपंडितांकेहूअगाधहै रत्ननंदितातहिजानिसंक्षेपकियावषा
नताकाविसतारसंअनंतवीर्यसाधहै देशमयीकथारूपकियावुद्धिसारमैंभीपरोसुनूंभव
जीवमिथ्यामतवाधहै ॥१॥ ऐसैंपरीक्षामुखप्रमाणप्रकरणकीलघुवृत्तिकीवचनिकाविषैवि
षयकासमुद्देशनामा चौथा अधिकारसंपूर्णभया ॥ छ ॥ आगैंप्रमाणकेफलकीविप्रतिपत्ति
कानिराकरणकैअर्थिसूत्रकहैहै ॥ छ ॥ अज्ञाननिवृत्तिर्हानोपादानोपेक्षाश्चफलं ॥१॥ याकाअर्थ ॥
अज्ञानकीजोनिवृत्तिकहियेअभावहोनांवहुरिहानकहियेत्यागअरउपादानकहियेग्रहणअ
रउपेक्षाकहियेउदासीनतावीतरागताएतैप्रमाणकेफलहैं ॥ छ ॥ तहांफलदोयप्रकारहैंसा॥
क्षात्कहियेलगताहीअरपारंपर्यकहियेपरंपराकरितहांसाक्षात्तौअज्ञानकानाशहोनांफ
लहैजातैंवस्तुकायथार्थज्ञानहोयतिसहीकालअज्ञानकानाशहोयहैकरणरूपज्ञानसोतौप्रमा १०६

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

णहैअरक्रियारूपजाननांसोफलहैसोहीअज्ञानकीनिवृत्तिहै वहुरिपरंपराकरिग्रहणत्याग
अरवीतरागताएफलहैंजातैंप्रमेयवस्तुकानिश्चयभयेंपीछैंहोयहैं सोयदूदोयप्रकारकाही
फलप्रमाणतैंभिन्नहीहै ऐसैंतौनैयायिकमानैंहैं वहुरिप्रमाणतैंअभिन्नहीहै ऐसैंवौद्धम
तीमानैंहैं तिनिदोऊनिकामतनिराकरणकरिअपनांमतस्थापनेंकूंसूत्रकहैहै ॥ प्रमाणादभिन्नं
भिन्नंच ॥२॥ याकाअर्थ ॥ प्रमाणतैंप्रमाणकाफलकथंचितअभिन्नहैकथंचितभिन्नहै ॥ छ ॥ आ
गैंकथंचितअभेदकेसमर्थनकैअर्थिसूत्रकहैहै ॥ यः प्रमिमीते स एव निवृत्ताज्ञानो जहात्यादत्ते उपेक्ष
तेचेतिप्रतीतेः ॥३॥ याकाअर्थ ॥ जोआत्माप्रमेयकूंप्रमाणकरियथार्थजानैंहै सोहीदूरिभयाहैअज्ञा
नजाकाऐसाहोयकरिअनिष्टकात्यागकरैहै इष्टकाग्रहणकरैहै जोआपकैइष्टअनिष्टनजानैंता
विषैमध्यस्थहोयहै वीतरागहोयहै ऐसैंप्रतीतिहै ॥ छ ॥ इहांऐसाअर्थजाननां जिसहीआत्माके
प्रमाणकेआकारपरिणामहोयहैतिसहीकैफलरूपपणांकरिपरिणामहोयहै ऐसैंएकप्र
माताकीअपेक्षाकरिप्रमाणफलकैअभेदहै वहुरिप्रमाणकरणरूपपरिणामहैफलक्रिया
रूपपरिणामहै ऐसैंकरणक्रियापरिणामकैभेदतैंभेदहै ऐसैंभेदकैंसामर्थ्यसिद्धपणांहै ता
तैंभेदकासमर्थननहीकह्याहै ॥ छ ॥ ऐसैंप्रमाणकेफलकानिरूपणकीया ॥ इहांश्लोक ॥

पारंपर्येणसाक्षाच्चफलंद्वेधाभिधायियत्। देवैर्भिन्नमभिन्नंचप्रमाणात्तदिहोदितं॥ १॥ याका अ
र्थ॥ अ॥ अकलंकदेवमुनिनैं प्रमाणकाफल साक्षात् अर परंपरा करि दोय प्रकार कह्या सो प्रमाणतैं
भिन्न अर अभिन्न कह्या है सो ही याप्रकरणविषै माणिक्यनंदि आचार्यनैं कह्या है॥ छ॥ दोहा॥ परंप
रासाक्षात करि भिन्न अभिन्न विचारि। देव कह्यो फलमानको सो ही याम धि धारि॥ १॥ ऐसैं परीक्षा
मुखप्रमाणप्रकरणकी लघुवृत्तिकी वचनिकाविषै फलका समुद्देश नामा पंचमा अधिकार संपू
र्ण भया॥ ५॥ आगैं अब कह्या जो प्रमाणका स्वरूप आदि चतुष्टय तिनिका आभास कहिये कहै।
जैसे नाही अर तिनि सारिषे दीषैं तिनिकूं कहै हैं॥ छ॥ ततोन्यत्तदाभासं॥ १॥ याका अर्थ॥ ततः क
हिये कह्या जो प्रमाणका स्वरूपादिका तातैं अन्यत् कहिये विपरीत सो तदाभास कहिये ताका
आभास है॥ छ॥ इहां कह्या जो प्रमाणका स्वरूप संख्या विषय फल ये च्यारि भेद तिनितैं अन्यत्
विपरीत सो तदाभास हैं। आगैं क्रममैं प्राप्त भया जो स्वरूपाभास ताकूं दिषावै हैं॥ छ॥ अस्वसंवि
दितगृहीतार्थदर्शनसंशयादयः प्रमाणाभासाः॥ २॥ याका अर्थ॥ अस्वसंविदित कहिये आ
पकरि आपकूं न जानै गृहीतार्थ कहिये ग्रह्याकूं ग्रहण करै। दर्शन कहिये सामान्याकारमात्रका ग्र
हीसंशय कहिये संदेहरूप आदि शब्दतैं विपर्यय अनध्यवसाय ए सर्व प्रमाणाभास हैं॥ छ॥ इहां अ १०७

स्वसंविदितगृहीतार्थ दर्शनसंशयादि इनिका द्वंद्वसमास करनां। बहुरि आदिशब्द करि विपर्य
य अनध्यवसायका ग्रहण करनां। तहां ज्ञान अस्वसंविदित है जातैं अन्य ज्ञानकरि प्रत्यक्ष होय है
ऐसैं नैयायिकमती कहै है। ज्ञान है सो आपतैं न्यारा जो ज्ञाता ताकरि जाननैं योग्य है। जातैं वेद्य क
हिये जाकूं जानिये सो तौ ते यह है। जैसैं घट है। तहां आचार्य कहै है यह कहनां मिलै नाही। इहां धर्मी
जो ज्ञान ताकै अन्य ज्ञान करि वेद्यपणां होतैं साध्यकै मध्य आय पड्या तैं धर्मीपणांका अयोग है
जातैं धर्मी तौ प्रसिद्ध ही होय है बहुरि धर्मी ज्ञानकै स्वसंविदितपणां कहिये तौ तिसही करि हेतुकै
अनैकांतपणां है बहुरि महेश्वरका ज्ञानकरि व्यभिचार आवै है जातैं महेश्वरका ज्ञान अस्व।
संविदित कहै तौ सर्वज्ञपणां न ठहरै स्वसंविदित कहै तौ स्वसंविदित कहै तौ स्वमतकी हानि होय है
बहुरि व्याप्तिज्ञान करि भी अनैकांत कहिये व्यभिचार आवै है बहुरि अस्वसंविविदितज्ञानतैं
अर्थकी प्रतिपत्तिका अयोग है। जातैं जो ज्ञापक कहिये जनावनेंवाला अप्रत्यक्ष होय सो जना
वनैं योग्यकूं जनावै नाही। जो ऐसैं होय ज्ञापक विनां जाण्यां भी जणावै तौ शब्द कानतैं सुण्यां वि
नां अर्थकूं जणावणें वाला ठहरै लिंग धूमादिक नेत्रकरि देष्यां विनां अग्नि आदिकूं जणावणें।
वाला ठहरै। इहां कहै जो लगता ही अन्य ज्ञान है ताकरि ग्रहण करिये है तौ ताकै भी विनां ग्रह्या कै प

रकाजनावनेंवालापणांनाहीतवताकेग्रहणकूंतिसतैंअन्यज्ञानकल्पनेंयोग्यठहरैतहांभीतिसतैंअ
न्यकल्पनेंऐसैंअनवस्थाआवै। तातैंअस्वसंविदितज्ञानऐसानैयायिककापक्षश्रेष्ठनाही। इसही
कथनकरिमीमांसककहेहै। जोकरणज्ञानकै परोक्षपरोक्षपणांकरिस्वसंविदितपणांनाहीहै
करणज्ञानपरोक्षहीहैतातैंअस्वसंविदितहीहैताकाभीनिराकरणकीया। जातैंऐसेंज्ञानतैंभीअ
र्थकाप्रत्यक्षपणांकाअयोगहै। इहांमीमांसककहैहै जोकरणज्ञानहैसोकर्मपणांकरिप्रतीति
मेंनआवैंहै तातैंयाकैप्रत्यक्षपणांनाहीहैप्रत्यक्षतौकर्मज्ञानहै। तौताकूंकहियेऐसेंकहैं।
फलज्ञानकैभीप्रत्यक्षपणांनठहरैगा। वहुरिकहै फलपणांकरिप्रतिभासनेतैंप्रत्यक्षपणां।
हैतौकरणज्ञानकैभीकरणपणांकरिप्रतिभासनेतैंप्रत्यक्षपणांहोऊ। तातैंअर्थज्ञानकी
अन्यथाअप्राप्तितैंजैसैंकरणज्ञानकल्पियेहै तैसैंअर्थकाप्रत्यक्षपणांकीअन्यथाअप्राप्ति
तैंज्ञानकैप्रत्यक्षपणांभीहोऊ। वहुरिकहै जोनेत्रआदिकरणकैअप्रत्यक्षपणांहोतैंभीरूप
काप्रगटपणांहोयहैतिसतैंव्यभिचारआवैहै तहांकहियेजोभिन्नहैकर्त्ताजातैंऐसाकरण
केहीयहुव्यभिचारहैअभिन्नकर्त्तृकरणहोतैसंतैतौकर्त्ताकाप्रत्यक्षपणांहोतैंतिसकर्त्ता
तैंअभिन्नजीकरणताकैकथंचितप्रत्यक्षपणांकरिअप्रत्यक्षपणांकानकाविरोधहै जैसैंपकास्व

रूपकैअप्रत्यक्षपणांहोतैंप्रदीपकैप्रत्यक्षपणांहोतैंविरोधहैतैसैं। ६। वहुरिगृहीतग्राहीजोधारा
वाहीज्ञानसोगृहीतार्थप्रमाणाभासहै वहुरिवौद्धकरिमान्यांजोनिर्विकल्पस्वरूपप्रत्यक्षप्र।
माणसोदर्शनहैसोअपनेंविषयकाउपदर्शकपणांपावैनाहीहै तातैंअप्रमाणहै जातैंति
सविषयभूतपदार्थतैंउपज्याजोव्यवसायकहियेनिश्चयताहीकैअपनांविषयकाउपदर्श
कपणांहै। वहुरिवौद्धकहैहै जोव्यवसायकैप्रत्यक्षपणांनाहीप्रत्यक्षकेआकारकरिअनुर
क्तपणांहीहै तातैंप्रत्यक्षकेतौप्रमाणपणांहैअरव्यवसायहैसोतौगृहीतग्राहीहैयातैंअप्र
माणहै तहांआचार्यकहैहैयहसुभाषितनाही। दर्शनहैसोविकल्परहितहै ताकाउपलंभना
ही। तातैंताकासद्भावकाअयोगहै। वहुरिसद्भावमानियेतौजैसैंनीलआदिकविषैउपदर्शक
हैतैसैंक्षणक्षयादिविषैभीताकाउपदर्शकपणांठहरैहै। वहुरिकहै जोक्षणक्षयादिविषैक्ष
णिकतैंविपरीतअक्षणिककासंशयादिरूपसमारोपहोयहैतातैंताकाउपदर्शकनाहीतौताकूंक
हियेयहसिद्धभईनीलआदिविषैसमारोपजोसंशयादिकताकाविरोधीजोग्रहणसोहैलक्षण।
जाकाऐसानिश्चयहोयहै। तिसस्वरूपहीप्रमाणहैअन्यतदाभासहै। वहुरिसंशयादिहैतेप्र।
माणाभासप्रसिद्धहीहै। तहांसंशयहैसोतौदोयांतरफकास्पर्शनकरनेंवालाहै। जैसैंस्थाणमेंरोष्या

स्थाणु कों देषि जाकैं पद स्थाणु ही है ऐसा निश्चय नाही सो विचारे यह स्थाणु है कि पुरुष है ताका निश्चय नाही होनैं तैं यहु प्रमाणाभास है। बहुरि अन्य विषै अन्य का विकल्प निश्चय सो विपर्यय है। जैसैं सीप विषै रूपा का निश्चय बहुरि विशेष का निश्चय नाही सो अनध्यवसाय है। जैसैं चालता कै तृण लागै भ्रम जानें कि कछू है विशेष निश्चय नाही। छ। आगैं कहै है इनि अस्वसंविदित आदिके प्रमाणाभासपणां कैसै है ताका सूत्र। छ। स्वविषयोपदर्शकत्वाभावात्॥३॥ याका अर्थ। जातैं ए अस्वसंविदित आदिक हैं तिनि के अपनां विषय का उपदर्शकत्व कहिये निश्चायकपणां प्रवर्त्तकपणां ताका अभाव है तातैं ए प्रमाणाभास हैं। छ। आगैं इति विषै दृष्टांत अनुक्रम तैं कहै है। छ॥ पुरुषांतरपूर्वार्थगच्छत्तृणस्पर्शस्थाणुपुरुषादिज्ञानवत्॥४॥ याका अर्थ॥ अन्य पुरुष का ज्ञान की ज्यों अस्वसंविदित ज्ञान अपनां विषय विषैं नाही प्रवर्तै है तातैं प्रमाण नाही। पूर्वै ग्रह्या है अर्थ जानैं ऐसा ज्ञान की ज्यों गृहीतार्थ ज्ञान प्रमाण नाही। चालतै कै तृणस्पर्श ज्ञान की ज्यों दर्शन प्रमाण नाही है स्थाणु पुरुष ज्ञान की ज्यों संशय प्रमाण नाही है आदि शब्द तैं विपर्यय आदिक का तथा ऐसे और भी जानने तैं सारे प्रमाणाभास है। छ। आगैं जो संनिकर्ष कूं प्रमाण कहै है तिस प्रति दृष्टांत कहै है। छ॥ चक्षूरसयोर्द्रव्ये संयुक्तसमवायवच्च॥५॥ याका अर्थ। नेत्र कै अर रस कै १०९

द्रव्य विषै संयुक्त समवाय स्वरूप संनिकर्ष है सो जैसैं प्रमाण नाही तैसैं और भी संनिकर्ष प्रमाण नाही इहां यहु अर्थ है जैसैं नेत्र अर रस कै द्रव्य विषै संयुक्त समवाय है तौ ऊ प्रमाण नाही। तथा चक्षु रूप कै संयुक्त समवाय है सो भी प्रमाण नाही है तातैं यह भी प्रमाणाभास ही है यहु अतिव्याप्तिक ही सो उपलक्षण रूप है ऐसैं ही अन्य इंद्रिय के सन्निकर्ष कै अप्रमाणता जाननैं इहां नेत्र करि रूप कै संयोग भया अर रूप कै संयोग भया अर रूप कै अर रस कै एक द्रव्य विषै समवाय है सो रस करि भी समवाय भया सो संयुक्त समवाय नामा सन्निकर्ष तौ भया अर नेत्र कै रस का ज्ञान न भया तातैं प्रमाण न भया तब अतिव्याप्ति दूषण आया बहुरि अव्याप्ति दूषण है जातैं नेत्र इंद्रिय विनां अन्य इंद्रियनि कै संनिकर्ष है अर नेत्र प्रमाण है तहां संनिकर्ष व्यापै नाही तातैं अव्याप्ति है बहुरि संनिकर्ष कूं प्रत्यक्ष प्रमाण कहै हैं तिनि कै नेत्र कै विषै संनिकर्ष का अभाव है नेत्र पदार्थ तैं भिड़ै नाही तातैं नेत्र प्रत्यक्ष मैं संनिकर्ष लक्षण संभवै नाही जब असंभवी दूषण भी है इहां नैयायिक कहै है जो नेत्र प्राप्त अर्थ का जाननैं वाला है जातैं चीवि मैं अन्य पदार्थ आड़ा आवै तब जाणैं नाही है जैसैं दीपक कै भीति आदि आदि आड़ी आय जाय तिस अर्थ कूं प्रकाशै नाही तैसैं भावार्थ नेत्र भी पदार्थ तैं जुड़ि अर ही जाणैं है तातैं संनिकर्ष की सिद्धि है ताकूं आचार्य कहै है यह भी साधना समीचीन नाही। तातैं नेत्र कै काच भो

उलंग्रादिग्राउ आय जाय तौऊ नेत्रताकरि व्यवहित पदार्थकूं प्रकाशै है। तातैं हेतु असिद्ध है। बहुरि
वृक्षकी शाखा अरु चंद्रमाकूं एक काल नेत्र देखै है सो नाहीं ठहरै यह प्रसंग आवै है। बहुरि कहै इहां
क्रम संदेखै है तहां पुरुषकै युगपत् देखनें का अभिमान है सो ऐसैं भी न कहनां जातैं काल का अंतर
नाहीं दीखै है। एक ही काल है। बहुरि विशेष कहै है। जो क्रमका ज्ञान तौ प्राप्ति भयें ही नेत्रकै जाननें
का निश्चय भयें होय है। क्रम प्राप्ति विषै अन्य प्रमाण तौ नाहीं है। इहां कहै जो नेत्र इंद्रियकै तैज
सपणां है इस हेतुकरि प्राप्त अर्थका प्रकाशकपणां है यह अन्य प्रमाण है तौ ताकूं कहिये प्र
हना हीं है। तैजसपणांकी सिद्धि नाहीं होय है। इहां नैयायिक तैजसपणां साधनेंकूं प्रयोग करै
है। जो नेत्र है सो तैजस है जातैं रूपादिक गुणनिमैं रूप का ही प्रकाशक है। जैसैं दीपक
है। आचार्य कहै है यह भी प्रयोग विना विचार्यां कीया है। जातैं इहां प्रदीपका दृष्टांत कह्या सो तौ
तैजस है अरु मणि तथा अंजन आदिक पार्थिव है पृथिवीतैं उपजे हैं ते रूपकूं प्रकाशै हैं बहु
रि नेत्रकूं तैजो द्रव्यकै रूप प्रकाशनेंतैं तैजस कहिये तौ पृथिवी आदिकै रूपका प्रकाशक है। तातैं
याकै पृथिवी आदिकरि व्यापणांका प्रसंग आवै है भावार्थ नेत्र भी पार्थिव ठहरै है। तातैं संनिक
र्षकै अव्यापकपणां है तातैं प्रमाणपणां नाहीं। बहुरि कारणज्ञान करि याकै व्यवधान है संनिकर्ष ११०

भयें पीछै इंद्रियज्ञान पदार्थकूं जाणैं है संनिकर्ष ही जाणैं नाहीं ऐसैं कारणज्ञान करि व्यवधान भ
या संनिकर्षकरि ही तौ अर्थका संवेदन तौ न ही भया तातैं संनिकर्ष प्रमाणाभास ही है। आगैं प्रमाण
सामान्याभास कहि करि अब प्रमाणविशेषका आभास कहै है। तहां प्रत्यक्षाभास कहै है ॥ अवै
शद्ये प्रत्यक्षं तदाभासं बौद्धस्याकस्माद्धूमदर्शनाद्वह्निविज्ञानवत् ॥६॥ याका अर्थ ॥ अविशदपणां होतें
प्रत्यक्ष मानैं सो प्रत्यक्षाभास है जैसैं बौद्धमतीकै अकस्मात् निश्चय भयें विना ही धूम देखनें तैं अग्निका
विज्ञान बौद्ध निर्विकल्प प्रत्यक्ष मानैं है सो जैसैं धूमकी परीक्षा निश्चय विना अग्निका अनुमान क
रै सो विना निश्चय तदाभास है तैसैं प्रत्यक्षाभास ही है प्रमाण नाहीं ॥ आगैं परोक्षाभासकूं क
है है ॥ वैशद्येपि परोक्षं तदाभासं मीमांसकस्य करणज्ञानवत् ॥७॥ याका अर्थ ॥ जहां वैशद्य
होय तहां भी परोक्ष मानैं सो परोक्षाभास है। जैसैं मीमांसक करणज्ञान विशद है तौऊ ताकूं।
परोक्ष मानैं है तैसैं। याका पहलैं विस्तार करि कह्या ही है ॥ आगैं परोक्षके भेदाभासकूं कहै है।
संतें क्रममैं आया जो स्मरणाभास ताकूं कहै हैं ॥ अतस्मिंस्तदिति ज्ञानं स्मरणाभासं जिनदत्ते
स देवदत्तो यथा ॥८॥ याका अर्थ ॥ जो अनुभव विषै आया नाहीं ताका स्मरण सो स्मरणाभास है
जैसैं जिनदत्त पुरुषकूं पूर्वैं देख्या था अरयादि देवदत्तकूं कीया जो सो देवदत्त ऐसैं आगैं प्रत्यभिज्ञाना

परी० मु०
१११

भासकूं कहैहै॥ छ॥ सदृशेतदेवेदंतस्मिन्नेवतेनसदृशंयमलकवदित्यादिप्रत्यभिज्ञानाभासं॥ ९॥ या॥ का अर्थ॥ सदृश विषै तौ ही यह है अर तिसही विषै यह तिससारिखा है जैसैं दोय का जुगल विषैए कदेषै॥ इत्यादि प्रत्यभिज्ञानाभास है॥ इहां प्रत्यभिज्ञानदोय प्रकारका कौंले प्रत्यभिज्ञानाभासभी दोय प्रकार कह्या॥ एकत्वनिबंधन सादृश्यनिबंधन तहां एकत्व विषै तौ सादृश्य का ज्ञान अर सादृश्य विषै एकत्व का ज्ञान सो प्रत्यभिज्ञानाभास है॥ छ॥ आगैं तर्काभासकूं कहै है॥ छ॥ असंबद्धे तज्ज्ञानं तर्काभासं यावांस्तत्पुत्रः स श्याम इति यथा॥ १०॥ या का अर्थ॥ असंबद्ध कहिये अविनाभाव रहित विषै अविनाभाव का ज्ञान सो तर्काभास है॥ जैसैं काहूकै अन्य कोई पुत्र श्याम देषि कहै याके जेते पुत्र हैं तथा होंयगे ते सर्वै श्याम हैं॥ ऐसैं व्याप्ति कहनां तर्काभास है॥ छ॥ आगैं। अनुमानाभास कहै है॥ छ॥ इदमनुमानाभासं॥ ११॥ या का अर्थ॥ इदं कहिये आगैं कहै है सो अनुमानाभास है॥ छ॥ आगैं तिस अनुमानाभास विषै तिसके अवयवाभास दिषावनैं करि समुदायरूप अनुमानाभासकूं दिषावनैंकी इच्छा करि पहलैं पहला अवयवाभास कहै है॥ छ॥ तत्रानिष्टादिः पक्षाभासः॥ १२॥ या का अर्थ॥ तिनि अवयवनि विषै अनिष्ट आदि शब्द करि बाधित प्रसिद्ध ए पक्षाभास हैं॥ इष्ट अबाधित अप्रसिद्ध लक्षण साध्य पूर्वै कह्या था सो ही पक्ष कह्या था आगैं तिनितैं विप

१११

रीत तदाभास है ऐसैं कहै है॥ छ॥ अनिष्टो मीमांसकस्यानित्यः शब्दः॥ १३॥ या का अर्थ॥ अनिष्ट पक्षाभास तौ मीमांसककै शब्द अनित्य है मीमांसक शब्दकूं नित्य मानैं है सो अनित्य कहै तौ ताकै अनिष्ट है॥ छ॥ आगैं असिद्धतैं विपरीत सिद्धपक्षाभास कहै है॥ छ॥ सिद्धः श्रावणः शब्दः॥ १४ या का अर्थः॥ शब्द है सो श्रावण है ऐसैं पक्ष कहै तौ सिद्ध पक्षाभास है जातैं शब्द तौ सुननेमैं आवै है सो श्रावण है ही फेरि साधै तौ सिद्धपक्षाभास है॥ आगैं अबाधिततैं विपरीत बाधित पक्षाभासकूं कहतेसंते सो प्रत्यक्ष आदि प्रमाण करि बाधित है ऐसैं दिषावतेसंते सूत्र कहै है॥ छ॥ बाधितः प्रत्यक्षानुमानागमलोकस्ववचनैः॥ १५॥ या का अर्थ॥ बाधित पक्ष है सो प्रत्यक्ष अनुमान आगम लोक स्ववचन इनि करि है तातैं बाधित पक्षाभास पंच प्रकार जाननां आगैं इनिका अनुक्रम करि उदाहरण कहै है॥ छ॥ तत्र प्रत्यक्षबाधितो यथा [redacted] नुष्णोग्निर्द्र व्यत्वा [redacted] ज्जलवत्॥ १६॥ या का अर्थ॥ तिनि विषै प्रत्यक्ष बाधित जैसैं अग्नि है सो अनुष्ण कहिये शीतल है जातैं याकै द्रव्यपणां है जैसैं जल शीतल है तैसैं इहां अग्नि है सो उष्ण स्पर्श स्वरूप है सो अनुष्ण कह्या तब स्पर्शन प्रत्यक्ष करि बाधित भया॥ छ॥ आगैं अनुमान बाधित कहै है॥ छ॥ अपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् घटवत्॥ १७॥ या का अर्थ॥ शब्द है सो अपरिणामी है जातैं या

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी इत्यस्य स्मारकम्

केकृतपणांहैकस्याहोयहैजैसेघटकस्राहोयहै इहांअपरिणामीपक्षहैसोनित्यपक्षहै सोआवृ
कृतकपणांहेतुतैंपरिणामीसधैहैइसअनुमानकरिनित्यपक्षवाधितहै छ आगैंआगमवा॥
धितकहैहै छ॥प्रेत्यासुखप्रदोधर्मःपुरुषाश्रितत्वादधर्मवत्॥१८॥याकाअर्थ॥धर्महैसोपरलो।
कविषैदुखदैनैवालाहै जातैंयहपुरुषकैआश्रयहैजैसैंअधर्मपुरुषकेआश्रयहैतातैंदुख
दैनैंवालाहै॥इहांपुरुषकेआश्रयपणांतैंअधर्मधर्मअविशेषहैतोऊआगमविषैधर्मकै पर
लोकमैंसुखकाकारणपणांकह्याहै तातैंपक्षआगमवाधितहै छ आगैंलोकवाधितकहै
है छ॥शुचिनरशिरःकपालंप्राण्यंगत्वाच्छंखशुक्तिवत्॥१९॥याकाअर्थ॥मनुष्यकामस्तगका
कपालकहियेखोपरीसोपवित्रहैजातैंयाकैप्राणीकाअंगपणांहै जैसैंशंखसीपपवित्रमानि
येहैंतैसैं छ इहांलोकविषैमनुष्यकीखोपरीप्राणीकाअंगहैतोऊअपवित्रमानियेहैशंखसीप
भीप्राणीकेअंगहैं तिनिकूंपवित्रमानैहैतैसैंखोपरीकूंपवित्रकहनांलोकवाधितहै छ आ
गैंस्ववचनवाधितकहैहै छ॥माताममवंध्यापुरुषसंयोगेप्यगर्भत्वात्प्रसिद्धवंध्यावत्॥२०॥या
काअर्थ॥मेरीमातावांझहैजातैंपुरुषकासंयोगहोतैंभीताकेगर्भवतीपणांनाहीहैजैसैंअन्यप्र
सिद्धवंध्याहैतैसैं इहांमेरीमाताकहनेतैंवंध्याकहनांअपनांवचनहीतैंवाधितभयाजौवंध्याहैतौ ११२

आपपुत्रकैसैंभया छ आगैंक्रममैंआयेजेहेत्वाभासतिनिकूंकहैहै छ॥हेत्वाभासांअसिद्ध
विरुद्धानैकांति[redacted]काकिंचित्कराः॥२१॥याकाअर्थ॥हेत्वाभासच्यारिहैंअसिद्धविरुद्धअनैकां
तिकातिकअकिंचित्कारऐसैं छ आगैंइनिकायथानुक्रमकरिउदाहरणसहितलक्षणकहैहै छ
असत्सत्तानिश्चयोसिद्धः॥२२॥याकाअर्थ॥असतहैसत्ताअरनिश्चयजाकासोअसिद्धहेत्वाभास
है छ आगैंपहलाभेदकूंकहैहै छ अविद्यमानसत्ताकःपरिणामीशब्दःचाक्षुषत्वात्॥२३॥
याकाअर्थ॥नाहीविद्यमानहैसत्ताजाकीसोअसतसत्ताकानामाअसिद्धहेत्वाभासहै जैसेंप
रिणामीहैजातैंचाक्षुषहै इहांशब्दतौश्रावणहैअरचाक्षुषहेतुसंसाधैसोशब्दविषैचाक्षुषप
णांकीसत्तानाही छ आगैंकहैहै किइसहेतुकैअसिद्धपणांकैसैंभया छ॥स्वरूपेणासिद्ध।
त्वात्॥२४॥याकाअर्थ॥यहस्वरूपकरिहीअसिद्धहैचाक्षुषपणांशब्दकास्वरूपनाही छ आगैंअ
सिद्धकादूसराभेदकूंकहैहै छ॥अविद्यमाननिश्चयोमुग्धबुद्धिंप्रत्यग्निरत्रधूमात्॥२५॥याका
अर्थ॥अविद्यमानहैनिश्चयजाकासोअसतनिश्चयहेत्वाभासहै जैसैंमुग्धबुद्धीजोभोलाजीव
तिसप्रतिकहैइहांअग्निहै जातैंधूमहै छ आगैंयाकैअसिद्धताकैसैंऐसैंपूछैंकहैहै छ॥आगैंत
तस्यवाष्पादिभावेनभूतसंदेहात्॥२६॥याकाअर्थ॥तिसधूमनामाहेतुकैवाफआदिपणांकरि।

पृथिवीआदिभूतसंघातविषैं संदेहतैं असतनिश्चयपणैं है मुग्धके विद्यमानधूमविषैभी विनासमझ्यां
संदेहउपजै जो यह वाफ है कि धूम है ॥ छ ॥ आगैं अमुग्धबुद्धिप्रति और असिद्धका भेद कहै हैं ॥ छ ॥
सांख्यं प्रति परिणामी शब्दः कृतकत्वात् ॥ २७ ॥ याका अर्थ ॥ सांख्यमती प्रति कहै है जो शब्द परिणा
मी है जातैं कृतक है ॥ छ ॥ याका असिद्धपणां विषै कारण कहै है ॥ छ ॥ तेनाज्ञातत्वात् ॥ २८ ॥ याका
अर्थ ॥ तिस सांख्य करि नाही जानवापणांतैं ॥ जातैं सांख्यके मतमें आविर्भाव तिरोभाव ही प्र
सिद्ध है उत्पत्तिआदि प्रसिद्ध नाही है ॥ तातैं शब्द कृतक है ऐसा सांख्यमती नाही जाणै है तातैं याकै
भी असिद्धपणां है ॥ छ ॥ आगैं विरुद्धहेत्वाभासकूं दिखावता संता सूत्र कहै है ॥ छ ॥ विपरीतनि
श्चिताविनाभावो विरुद्धोऽपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् ॥ २९ ॥ याका अर्थ ॥ विपरीत कहिये विप
क्ष विषै है अविनाभावका निश्चय जाका ऐसा विरुद्धहेत्वाभास है ॥ जैसे अपरिणामी शब्द है इ
हां कृतकपणां हेतु है सो अपरिणामका विरोधी जो परिणामता करि व्याप्त है तातैं विरुद्ध भया ॥ छ ॥
आगैं अनैकांतिकहेत्वाभासकूं कहै है ॥ छ ॥ विपक्षेप्यविरुद्धवृत्तिरनैकांतिकः ॥ ३० ॥ याका अर्थ
विपक्ष विषै भी अविरुद्ध है वृत्ति जाकी सो अनैकांतिक हेत्वाभास है ॥ छ ॥ इहां अपि शब्दतैं ऐसैं जानि
ये जो केवल पक्ष सपक्ष विषै ही याका वृत्ति नाही है विपक्ष विषै भी है सो यह हेत्वाभास दोय प्रकार है ११३

निश्चितविपक्षवृत्ति शंकितविपक्षवृत्ति तहां आदि भेदकूं दिखावता संता सूत्र कहै है ॥ छ ॥ निश्चितवृत्तिरनित्यः
शब्दः प्रमेयत्वात् घटवत् ॥ ३१ ॥ याका अर्थ ॥ शब्द है सो अनित्य है ॥ जातैं याकै प्रमेयपणां है ॥ जैसैं घ
ट है ॥ यह निश्चितवृत्ति अनैकांतिक है ॥ छ ॥ आगैं याकै विपक्ष विषै निश्चितवृत्ति कैसैं है ऐसी आ
शंका करि कहै है ॥ छ ॥ आकाशे नित्येप्यस्य निश्चयात् ॥ ३२ ॥ याका अर्थ ॥ जातैं नित्य जो आकाश
ताकै विषै भी याका निश्चय है ॥ भावार्थ इहां प्रमेयपणां हेतु है सो पक्ष जो शब्द ता विषै अनित्यप
णां साध्य है ता विषै भी है अर सपक्ष घट ता विषै भी है अर विपक्ष जो नित्य आकाश ता वि
षै भी निश्चय करि पाइए है तातैं निश्चितविपक्षवृत्ति हेत्वाभास भया ॥ छ ॥ आगैं शंकितविपक्ष
वृत्तिकूं उदाहरणरूप कहै है ॥ छ ॥ शंकितवृत्तिस्तु नास्ति सर्वज्ञो वक्तृत्वात् ॥ ३३ ॥ याका अर्थ ॥ सर्व
ज्ञ नाही है जातैं जाकै वक्तापणां है ॥ इहां वक्तापणां हेतु शंकितविपक्षवृत्ति अनैकांतिक है ॥ छ ॥
आगैं याकै भी विपक्ष विषै शंकितवृत्ति कैसैं है ऐसी आशंका करि कहै है ॥ छ ॥ सर्वज्ञत्वेन वक्तृ
त्वाविरोधात् ॥ ३४ ॥ याका अर्थ ॥ जातैं सर्वज्ञपणां करि वक्तापणांकै अविरोध है ॥ इहां अविरो
ध यहु जो ज्ञानका उत्कर्ष होतैं वचननिका अपकर्ष नाही देखिये है ॥ बहुत ज्ञान होय तब वचन स्पष्ट
नीसरै है यह निरूपण पहलैं कीया ही है ॥ तातैं वक्तापणां हेतु सो विपक्ष जो सर्वज्ञ ताका सद्भाव है तहां शं

कितौ है संदेहरूप है वक्तापणां होतैं सर्वज्ञपणां होय भी है नाही भी होय है तातैं अंकिंचित विपक्ष वृत्ति
अनेकांतिका हेत्वाभास भया छ आगैं अकिंचितकर हेत्वाभास का स्वरूप कहै है छ ॥ सिद्धे प्र
त्यक्षादिवाधिते च साध्ये हेतुरकिंचित्करः ॥ ३५ ॥ याका अर्थ ॥ जहां साध्य सिद्ध होय तथा प्रत्यक्ष आ
दि प्रमाणकरि वाधित होय तहां हेतु अकिंचितकर है छ आगैं इनिकूं उदाहरणरूप करै है छ ॥
सिद्धः श्रावणः शब्दः शब्दत्वात् ॥ ३६ ॥ याका अर्थ ॥ जैसें शब्द है सो श्रावण है श्रवण इंद्रिय का गोच
र है यातैं श्रावण कहिये है तातैं याकै शब्दपणां है इहां शब्दपणां हेतु है सो श्रावणपणां साध्य है।
सो तो प्रहलैं ही सिद्ध है हेतु तौ किछू साध्या नाही तातैं अकिंचित्कर है छ आगैं याकै अकिंचितकर
पणां कैसैं है सो कहै है छ ॥ किंचिदकरणात् ॥ ३७ ॥ याका अर्थ ॥ इस हेतु नै किछू कीया नाही ॥ ता
तैं अकिंचितकर है सो हेत्वाभास है छ आगैं दूसरा भेद प्रत्यक्षादि वाधित जाका साध्य होय ता
कूं पहला भेद का दृष्टांतरूप करणें का द्वार ही करि उदाहरणरूप करै है ॥ छ ॥ यथानुष्णोग्निर्द्रव्य
त्वादित्यादौ किंचित्कर्तुमशक्यत्वात् ॥ ३८ ॥ याका अर्थ ॥ जैसैं अग्नि है सो अनुष्ण है तैं याकै द्रव्यप
णां है इहां अग्नि उष्ण है अर अनुष्ण कह्या सो साध्य स्पर्शन प्रत्यक्ष करि वाधित है तातैं इस द्रव्य
पणां हेतु कै अकिंचितकरपणां है जातैं इहां किछू कीया नाही जैसें इहां किछू कीया नाही तैसैं ही पूर्व

सूत्र मैं जाननां वहुरि यह अकिंचितकरपणां दोष हेतु का लक्षण के विचार का अवसर विषै ही
है अर वाद काल विषै नाही है ऐसैं प्रकरकरनेसंतें कहै हैं छ ॥ लक्षण एवासौ दोषो व्युत्प
न्नप्रयोगस्य पक्षदोषेणैव दुष्टत्वात् ॥ ३९ ॥ याका अर्थ ॥ यहु अकिंचितकरपणां हेतु का दोष है
सो लक्षण कहिये शास्त्र विषै ही है वाद विषै व्युत्पन्न का प्रयोग है सो पक्ष के दोष ही करि दूषि
त है हेतु का दोष प्रधान नाही व्युत्पन्न ऐसा पक्ष का प्रयोग ही न करै अर करै तौ तहां पक्षाभा
स कहनां जो सिद्ध साध्य कहै तौ सिद्ध पक्षाभास कहनां वाधित साध्य कहै तौ वाधित पक्षाभा
स कहनां अकिंचित्कर हेत्वाभास का कहनां शास्त्र मैं ही प्रधान है वाद मैं नाही छ आगैं दृष्टां
त है सो अन्वय व्यतिरेक के भेद तैं दोय प्रकार कह्या है तातैं आभास भी दोय प्रकार ही है ॥ तहां अ
न्वय दृष्टांताभासकूं कहै हैं छ ॥ दृष्टांताभासा अन्वयेऽसिद्धसाध्यसाधनोभयाः ॥ ४० ॥ याका
अर्थ ॥ दृष्टांताभास हैं ते अन्वय विषै तौ तीन हैं असिद्धसाध्य असिद्धसाधन असिद्धसाध्यसाधन ॥
ऐसैं अरइनि का अर्थ ऐसा असिद्ध है साध्य जा विषै सो असिद्धसाध्य अन्वय दृष्टांताभास कहिये
इत्यादि जाननां छ आगैं इनि तीननि के उदाहरण एक ही अनुमान के प्रयोग विषै दिखावै है ॥ छ ॥
अपौरुषेयः शब्दोऽमूर्तत्वादिंद्रियसुखपरमाणुघटवत् ॥ ४१ ॥ याका अर्थ ॥ शब्द है सो अपौरुषे

यहै पुरुष का कीया नाही जातैं अमूर्तीक है। इहां तीन दृष्टांत हैं ते आभास हैं। इंद्रिय सुख की ज्यों परमा॥
णु की ज्यों घट की ज्यों तहां इंद्रिय सुख की ज्यौं यह तौ असिद्ध साध्य है इहां इंद्रिय सुख पौरुषेय दृष्टां
त है अर अपौरुषेयपणां साध्य है सो इंद्रिय सुख मैं असिद्ध है तातैं असिद्ध साध्य भया। परमाणु
की ज्यौं यह असिद्ध साधन है इहां साधन अमूर्तीकपणां है सो परमाणु तौ मूर्तीक है सा धैन अ॥
सिद्ध भया। वहुरि घट की ज्यौं यह असिद्ध साध्य साधन परमाणु दृष्टांत मैं अमूर्तपणां साधन अ
सिद्ध है तातैं। घट पौरुषेय भी है अर मूर्तीक भी है अर इहां साध्य अपौरुषेय है साधन अमूर्तीक
पणां है। तातैं दोऊ घट मैं असिद्ध भये आगैं कहै है साध्य तैं व्याप्त साधन दिषावणां ऐसैं अन्वय
दृष्टांत का अवसर मैं कह्या था सो जहां इसतैं विपरीत उलटा कहै सो भी दृष्टांताभास है॥ छ॥
विपरीतान्वयश्च यदपौरुषेयं तदमूर्तं॥ ४२॥ याका अर्थ॥ जहां अन्वय विपरीत कहै जैसैं
जो अपौरुषेय है सो अमूर्तीक है। इहां जो अमूर्तीक है सो अपौरुषेय है ऐसैं अन्वय कहनां था॥
सो उलटा कह्या तातैं दृष्टांताभास यह भी है॥ छ॥ आगैं याकै दृष्टांताभासता कैसैं है सो कैहै॥ छ॥
विद्युदादिनातिप्रसंगात्॥ ४३॥ याका अर्थ॥ विद्युत कहियै वीजली आदि करि अतिप्रसंग
तैं दृष्टांताभास है। जातैं उलटा अन्वय कहैं वीजली कै भी अमूर्तपणां की प्राप्ति आवै है। वीजली॥ ११५

अपौरुषेय तौ है परंतु मूर्तीक है॥ छ॥ आगैं व्यतिरेक उदाहरणाभास कूं कहै है॥ छ॥ व्यतिरेके सिद्ध
तद्व्यतिरेकाः परमाण्विंद्रियसुखाकाशवत्॥ ४४॥ याका अर्थ॥ पहलै प्रयोग मैं ही लगाइये।
है शब्द है सो अपौरुषेय है जातैं याकै अमूर्तीकपणां है जो अपौरुषेय नाही सो अमूर्तीक नाही जै
सैं परमाणु है इंद्रिय सुख है आकाश है। ये व्यतिरेक दृष्टांताभास हैं इनि विषै साध्य साधन उभय तीनूं
निका व्यतिरेक असिद्ध है। तहां परमाणु तौ अपौरुषेय है तातैं यह तौ असिद्ध साध्य व्यतिरेक भया जा
तैं इहां व्यतिरेक ऐसैं है जो सो अमूर्तीक नाही जैसैं परमाणु सो परमाणु कै अपौरुषेयपणां॥
साध्य तैं व्यतिरेक न भया। वहुरि इंद्रिय सुख है सो असिद्ध साधन व्यतिरेक है जातैं यह अमूर्ती
क है। सो अमूर्तीकपणां साधन तैं व्यतिरेक नाही भया। वहुरि आकाश है सो असिद्ध साध्य सा
धन व्यतिरेक है जातैं यह अमूर्तीक भी है अर अपौरुषेय भी है। साध्य साधन दोऊ तैं व्यतिरेक ना
ही भया ऐसैं तीन व्यतिरेक दृष्टांताभास कहे॥ छ॥ आगैं साध्य का अभाव होतैं साधन का अभाव है
ऐसैं व्यतिरेक उदाहरण कै अवसर मैं कह्या था ता विषै तिसतैं विपरीत कहै सो भी दृष्टांताभास है
यह दिषावै है॥ छ॥ विपरीतव्यतिरेकश्च यन्नामूर्तं तन्नापौरुषेयं॥ ४५॥ याका अर्थ॥ जो अमूर्ती॥
क नाही सो अपौरुषेय नाही ऐसैं कहनां सो विपरीत व्यतिरेक है। इहां जो अपौरुषेय नाही सो अमूर्तीक

परी० मु०
१२६

नाही ऐसैं कहनां था सो उलटा कह्या तातैं विपरीतव्यतिरेक भया यह भी बीजली आदिकविषै अति
प्रसंग आवनें तैं व्यतिरेकदृष्टांताभास ही है ॥ आगैं बालव्युत्पत्तिके अर्थि उदाहरण उपनय निग
मन ए तीन अवयव कहे थे सो अब बाल अल्पज्ञानीकूं तिनितैं पारिक है तौ प्रयोगाभास कहिये ऐ
सैं कहै है ॥ बालप्रयोगाभासः पंचावयवेषु कियद्धीनता ॥ ४६ ॥ याका अर्थ ॥ अनुमानके पां
च अवयव अल्पज्ञकूं कहनें तिनिमैं घाटि कहै सो बालप्रयोगाभास है ॥ आगैं याका उदाहरण
कहै है ॥ अग्निमानयं प्रदेशो धूमवत्त्वात् यदित्थं तदित्थं यथा महानसः ॥ ४७ ॥ याका अर्थ ॥
यह प्रदेश अग्निसहित है जातैं याकै धूमसहितपणां है जो ऐसैं होय धूमसहित होय सो अ
ग्निसहित होय जैसैं महानस कहिये रसोई यहां तीन ही अवयव कहे तातैं बालप्रयोगाभास है ॥ आ
गैं च्यारि अवयवका प्रयोग होतैं प्रयोगाभास कहै है ॥ धूमवांश्चायं ॥ ४८ ॥ याका अर्थ ॥ धूम
वान् यह है यहां तीन अवयव तौ पहलै सूत्र के लेणें अर एक यह कह्या ऐसैं च्यारि अवयव कहे सो
भी बालप्रयोगाभास है ॥ आगैं अवयवनिकूं विपर्यय करि क्रमहीन कहै तौ कुप्रयोगाभास
कहिये ऐसैं कहै है ॥ तस्मादग्निमान् धूमवांश्चायं ॥ ४९ ॥ याका अर्थ ॥ तातैं अग्निमान है व
हुरि यह धूमवान है ॥ यहां निगमनकूं पहलैं कह्या उपनयकूं पीछैं कह्या तातैं क्रमभंग भया तातै

ऐसे दृष्टांता
भासकहे २

Dr. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजीइत्यास्यस्मारकम्
MEMORIAL

१२६

प्रयोगाभास है ॥ आगैं यह प्रयोगाभास कैसैं ताका हेतु कहै है ॥ स्पष्टतया प्रकृतप्रतिपत्तेर
योगात् ॥ ५० ॥ याका अर्थ ॥ जातैं क्रमहीन अनुमानका प्रयोग करै तहां स्पष्टपणां करि प्रकृ
त अर्थकी प्रतिपत्तिका अयोग है शिष्यकै स्पष्टज्ञान होय नाही तातैं प्रयोगाभास है ॥ आगैं अ
व आगमाभासकूं कहै है ॥ रागद्वेषमोहाक्रान्तपुरुषवचनाज्जातमागमाभासं ॥ ५१ ॥
॥ याका अर्थ ॥ रागद्वेषमोह करि सहित जो पुरुष ताका वचन करि जो ज्ञान होय सो आगमाभा
स है ॥ आगैं याका उदाहरण कहै है ॥ यथा नद्यास्तीरे मोदकराशयः संति धावध्वं माण
वकाः ॥ ५२ ॥ याका अर्थ ॥ जैसैं नदीकै तीर लाडूनिकी राशि है सो हे बालक हो दौडो ल्यो ॥ यहां
कोई पुरुष बालकनि व्याकुल करि आप्यथा तव तिनिकूं अपनी लार छुडावनेंकूं वहकावनैंके वा
स्तै कहता भया ॥ नदीके तीर लाडूनिके ढेर है सो हे बालक ही तुम तहां जाय ल्यो ऐसैं कहि तिनि
कूं नदीके तीर चलाये ऐसैं अपनां प्रयोजन साधनेंकूं कछू कहै सो आप्तका वचन नाही तातैं आ
गमाभास है ॥ आगैं इस उदाहरणमात्र करि संतुष्ट न होते अन्य उदाहरण कहै हैं ॥ अंगुल्यग्रे
हस्तियूथशतमास्ते इति च ॥ ५३ ॥ याका अर्थ ॥ बहुरि यह उदाहरण जाननां जो अंगुलीका अ
ग्रभागविषै हस्तीनिका समूह सैंकडां तिष्टै हैं यहां सांख्यमती अपनें आगमकी वासनामैं लीन हुवा

नताका सो प्रत्यक्ष अनुमान करि विरुद्ध सर्वज्ञही सर्वज्ञपणां विद्यमान है ऐसैं मानना सो ता ऐसे वचन
कहै है तातैं यह अनाप्त के वचनपणां तैं आगमाभास है ॥ छ ॥ आगैं इनि दोऊ वचननिकै आगमा
भासपणां कैसैं है ताका हेतु कहै है ॥ छ ॥ विसंवादात ॥ ५४ ॥ याका अर्थ ॥ जातैं ऐसे वचनकै अर्थ
विषै विसंवाद है ॥ तातैं अविसंवादरूप जो प्रमाणका लक्षण ताकै अभावतैं ऐसे वचन आग
माभास है ॥ छ ॥ आगैं संख्याभासकूं कहै है ॥ छ ॥ प्रत्यक्षमेवैकं प्रमाणमित्यादि संख्याभासः ॥
॥ ५५ ॥ याका अर्थ ॥ जो एक प्रत्यक्ष ही प्रमाण है इत्यादिक है सो संख्याभास है ॥ प्रमाण प्रत्य।
क्ष परोक्ष के भेदकरि दोय आकरि दोय कहे तहां तिसतैं विपरीतपणां करि कहै है एक प्रत्यक्ष प्र।
माण ही है तथा प्रत्यक्ष अर अनुमान ऐसैं दोय है इत्यादि नियम करै सो संख्याभास है ॥ छ ॥
आगैं प्रत्यक्ष ही एक प्रमाण है ऐसैं कहनां कैसैं संख्याभास है ऐसैं पूछै सूत्र कहै है ॥ छ ॥ लौका
यतिकस्य प्रत्यक्षतः परलोकादिनिषेधस्य परबुद्ध्यादेश्चासिद्धेरतद्विषयत्वात् ॥ ५६ ॥ याका
अर्थ ॥ एक प्रत्यक्ष ही प्रमाण माननैं वाला जो लौकायतिक कहिये चार्वाकमती ताकै परलोक।
आदिका निषेध की अर परकी बुद्धि आदिकी अनुमान आदि प्रमाण विना प्रत्यक्ष ही तैं असिद्धि है
जातैं ए परलोक आदिका निषेध परबुद्धि आदि प्रत्यक्षका विषय नाही है ॥ छ ॥ याका विस्तार सं॥ ११७

ख्याका निरूपण विषै पहलैं कीया ही है सो इहां नाही कहिये है ॥ आगैं और वादीनिकी प्रमाणकी
संख्याका नियम भी विगडै है ऐसैं चार्वाकमतके दृष्टांत के द्वार करि तिनिके मत विषै भी संख्या
भास है ऐसैं दिखावै है ॥ छ ॥ सौगतसांख्ययोगप्राभाकरजैमिनीयानां प्रत्यक्षानुमानाग।
मोपमानार्थापत्त्यभावैरेकैकाधिकैर्व्याप्तिवत् ॥ ५७ ॥ याका अर्थ ॥ जैसैं बौद्ध सांख्य नैया
यिक अर प्राभाकर जैमिनीय कहिये मीमांसक इनिकै बौद्धकै प्रत्यक्ष अनुमान ए दोय सां
ख्यकै प्रत्यक्ष अनुमान आगम ए तीन योगकै प्रत्यक्ष अनुमान आगम उपमान ए च्यारि प्राभा
करकै प्रत्यक्ष अनुमान आगम उपमान अर्थापत्ति ए पांच बहुरि जैमिनीयकै अभाव सहित ए
ही छह ऐसा संख्याका नियम है सो इति का व्याप्ति विषय नाही यातैं व्याप्तिका ग्रहण करनैं वाला
तर्क प्रमाण वधैं तब संख्या विगडै तैसैं चार्वाककी भी संख्या परकी बुद्धि आदि प्रत्यक्षका विष
य नाही ताकूं ग्रहण करन द्वारा अनुमान आदि वधै तब ताकी संख्या विगडै है ॥ भावार्थ जैसैं सौ
गतादिक प्रत्यक्ष अनुमान आदि एक एक वधता प्रमाण करि व्याप्तिकूं तर्क विनां ग्रहण न करि
सकै है तैसैं चार्वाक भी प्रत्यक्ष करि परबुद्धि आदिकूं ग्रहण न करि सकै ॥ ऐसा अर्थ है ॥ आगैं चार्वा
क आदिक कहै जो परबुद्धि आदिकी प्रतिपत्ति प्रत्यक्ष करि मति होऊ अन्यतैं होसी ऐसी आशंका करि कहै है

है। छ॥ अनुमानादेस्तद्विषयत्वे प्रमाणांतरत्वं॥ ५८॥ याका अर्थ॥ अनुमान आदिकरि परबुद्धि
आदिका ग्रहण मानिये तौ अन्यप्रमाणपणां आया॥ दृष्टांत तर्क आदिकरि परबुद्ध्यादिका लैणां या
तैं अनुमानादिकके परबुद्ध्यादिक विषयपणां होतें प्रत्यक्ष एक प्रमाण है ऐसा वादकी हानि होय
है आगैं इहां उदाहरण कहै है॥ छ॥ तर्कस्येव व्याप्तिगोचरत्वे प्रमाणांतरत्वं॥ अप्रमाणस्याव्यवस्था प्र
पकत्वात्॥ ५९॥ याका अर्थ॥ जैसें तर्क कै व्याप्ति विषयपणा होतैं अन्य प्रमाणपणां है बौद्धा
दिकै अन्यप्रमाण आवै है। तैसें ही परबुद्ध्यादि अनुमानका विषय मानिये तब अन्यप्रमाण
पणां आवै है॥ अर जो कहै है तर्क अप्रमाण है तौ अप्रमाण कै व्याप्तिका व्यवस्थापकपणां नाही
है॥ इहां ऐसा विशेष जो एक प्रत्यक्ष ही प्रमाणका वादी चार्वाक है ताकरि बहुरि प्रत्यक्ष आदि ए
कएक अधिक प्रमाणका वादी बौद्धादिक है तिनिकरि स्वसंवेदन प्रत्यक्ष इंद्रियप्रत्यक्ष ऐसैं तौ
प्रत्यक्षके भेद अर प्रत्यक्ष अनुमान आदि भेद प्रतिभासका भेदकरि ही प्रमाणका भेद वक्तव्य
है अन्य किछु गति नाही है सो प्रतिभासका भेद चार्वाक प्रति तौ प्रत्यक्ष अनुमान विषै है अर बौद्धा।
दिककै व्याप्तिज्ञान जो तर्क अर प्रत्यक्षादि प्रमाण इनि विषै है ता तैं सर्व ही की प्रमाणसंख्या विगडै है ११८
सो ही दिषावै है॥ छ॥ प्रतिभासभेदस्य च भेदकत्वात्॥ ६०॥ याका अर्थ॥ जा तैं प्रतिभास भेद कै ही प्र

प्र

माणका भेदकपणां है ता तैं सर्वकी संख्या विगडै है॥ चार्वाक कै तौ अनुमान विगाडै है जा तैं प्रत्यक्ष
तैं अनुमानका प्रतिभास जुदा है॥ अर बौद्धादिक कै तर्क विगाडै है॥ जा तैं प्रत्यक्ष अनुमानादिक तैं त
र्कका प्रतिभास जुदा है॥ छ॥ आगैं अब विषयाभासकूं दिषावनेंकूं कहै है॥ छ॥ विषयाभासः सामान्यं
विशेषो द्वयं वा स्वतंत्रं॥ ६१॥ याका अर्थ॥ प्रमाणका विषय सामान्य ही एक कहै॥ अथवा विशेष
ही एक कहै अथवा दोऊ ही स्वाधीन कहै तौ विषयाभास है॥ छ॥ आगैं पूछै है कि इनिकै विषया
भासपणां कैसैं है॥ तहां कहै है॥ छ॥ तथाऽप्रतिभासनात्कार्याकरणाच्च॥ ६२॥ याका अर्थ॥ जा
तैं जैसैं सामान्यमात्र विशेषमात्र दोऊमात्र कह्या तैसैं प्रतिभासै नाही है बहुरि यह कार्यकर
णहारा नाही है॥ छ॥ आगैं इहां आचार्य अन्यवादीकूं पूछै है जो सामान्य आदि एकांत स्वरूप का
र्यकूं करै सो आप समर्थ होय करै है कि असमर्थ होय करै है॥ तहां समर्थपक्षमैं दूषण कहै है
॥ छ॥ समर्थस्य करणे सर्वदोत्पत्तिरनपेक्षत्वात्॥ ६३॥ याका अर्थ॥ जो कहै है सामान्य आदि सम
र्थ होय कार्य करै है तौ कार्यकी सर्वकाल उत्पत्ति चाहिये जा तैं अन्यकी अपेक्षा रहितपणां है॥ बहु
रि कहै सहकारीकी सापेक्ष तैं कार्य करै है॥ या तैं सर्वकाल उत्पत्ति नाही है॥ तौ तहां कहै है॥ छ॥ परा
पेक्षणे परिणामित्वमन्यथा तदभावात्॥ ६४॥ याका अर्थ॥ जो परकी अपेक्षा करै तौ ताकै परिणा।

मीपणां आवै पहलैं नकीया सहकारी आया तब कीया न व सामर्थ्य न वी न आया तातैं परिणा
मीभया ॥ अर जो ऐसैं न मानिये तौ कार्य होनें का अभाव है भावार्थ ॥ सहकारि रहित अवस्था
विषै तौ कार्य न करै अर सहकारी का संबंध भये कार्य करै तब पहला आकार छोडि आनतर आ।
कार आत्यादीकू मैं आपस्थित रह्या ऐसे परिणाम की प्राप्ति होतैं परिणामीपणां आया वहु
रि ऐसैं न मानिये तौ जैसैं पहलैं अभाक अवस्था विषै कार्य करणें का अभाव है तैसैं ही वनू
रि अवस्था विषै अभाव है ॥ छ ॥ आगैं दूसरा पक्ष मैं दोष कहै है ॥ छ ॥ स्वयमसमर्थस्याकरि
कत्वात्पूर्ववत् ॥ ६५ ॥ याका अर्थ ॥ आप असमर्थ होय तौ कार्य करनें वाला नाही है जैसैं
पहलैं सहकारी विना कार्य करण हारा न था तैसैं अब भी नाही ॥ छ ॥ आगैं फलाभास कूं प्रकाश
ना संता कहै है ॥ छ ॥ फलाभासं प्रमाणादभिन्नं भिन्नमेव वा ॥ ६६ ॥ याका अर्थ ॥ प्रमाणतैं फल
अभिन्न ही कहै अथवा भिन्न ही कहै सो फलाभास है ॥ छ ॥ आगैं इन दोऊ पक्ष मैं फलाभासता
कैसैं है ऐसी आशंका होतैं आद्य पक्ष जो प्रमाणतैं फल अभिन्न ही है ऐसी ताकैं फलाभास
ता विषै हेतु कहै है ॥ छ ॥ अभेदे तद्व्यवहारानुपपत्तेः ॥ ६७ ॥ याका अर्थ ॥ जो प्रमाणतैं फल अभे
द ही कहिये तौ प्रमाण फल का व्यवहार वणैं नाही के तौ प्रमाण ठहरै कै फल ही ठहरै तातैं दूसप ११९

रा पदार्थ ही नाही ॥ छ ॥ आगैं कहै है संवृति कहिए उपचार है नाम जाका ऐसी जो व्यावृत्ति कहिये जुदा
पणी अवस्तु रूप ताकरि प्रमाण फल की कल्पना होहु ऐसैं कहैं उत्तर कहै है ॥ छ ॥ व्यावृत्त्यापि
न तत्कल्पना फलान्तराद्व्यावृत्त्याऽफलत्वप्रसंगात् ॥ ६८ ॥ याका अर्थ ॥ जो व्यावृत्ति कहिये अव
स्तु रूप जुदायगी ताकरि भी फल की कल्पनां नाही युक्त है जातैं अन्य फलतैं व्यावृत्ति कहिये।
जुदायगी ताकरि अफलपणां का प्रसंग आवै है ॥ इहां यह अर्थ है ॥ जैसैं विजातीय फल जो
अप्रमिति तिसतैं व्यावृत्ति कहिये जुदायगी करि फल का व्यवहार है तैसैं अन्य प्रमिति रू
प जो सजातीय फल तिसतैं भी जुदायगी है ऐसैं अफलपणां ही आया ॥ अब इहां ही अभेद प
क्ष विषै दृष्टांत कहै है ॥ छ ॥ प्रमाणान्तराद्व्यावृत्त्येवाप्रमाणत्वस्य ॥ ६९ ॥ याका अर्थ ॥ जैसैं अ।
न्य प्रमाण करि व्यावृत्ति कहिये जुदायगी करि अन्य प्रमाण के अप्रमाणपणां का प्रसंग आवै
तैसैं ही फल कै जाननां ॥ इहां भी पहलैं फल मैं प्रक्रिया कही सो ही जोडि लेणीं ॥ भावार्थ ॥ जैसैं प्रमा
ण ऐसैं कहैं अप्रमाण की व्यावृत्ति है तौ अन्य प्रमाणतैं व्यावृत्त प्रमाण है सो भी अप्रमाण ठहरै तब
ऐसैं कहै ताकै मन मैं प्रमाण न ठहरै तैसैं ही विजातीय फलतैं व्यावृत्त फल प्रमिति है सो ही सजा
तीय फल जो अन्य प्रमिति तिसतैं भी व्यावृत्त है ऐसैं अफल ही ठहरै ॥ छ ॥ आगैं अभेद पक्ष कूं निरा।

करणकरिआचार्य इसकथनकूं संकोचै है छ ॥तस्माद्वास्तवो भेदः॥ ७०॥पाका अर्थ॥ तातैं भे

दहै सो वस्तुभूत है प्रमाणफलकै एकांतकरि अभेद ही नाही है छ आगैं भेदपक्षकूं दूषणता सं ता
कहै है छ॥भेदेत्वात्मांतरवत्तदनुपपत्तेः॥७१॥पाका अर्थ॥ प्रमाणकै अर फलकै सर्वथा भेद
ही होतैं अन्य आत्माकी ज्यौं पहयाका फल है ऐसैं कहनां न वनैं छ आगैं वादी कहै है जो जिस आ
त्माविषै प्रमाण समवायरूप है तिसही विषै फल भी है ऐसैं समवायसंबंध करि प्रमाणफ
लकी व्यवस्था है तातैं अन्य आत्माविषै ताका प्रसंग नाही सो ऐसैं कहनां समीचीन नाही ऐ
सैं कहै है छ॥समवायेतिप्रसंगः॥ ७२॥पाका अर्थ॥ समवायसंबंध होतैं अतिप्रसंग आवै
है भावार्थ॥ समवाय तौ नित्य है अर एक है व्यापक है सर्व आत्माकै समवाय तौ समान धर्म है
तातैं यह इसही का समवाय है ऐसा प्रतिनियम नाही तातैं अतिप्रसंग आवै है छ आगैं॥
स्वपरपक्षका साधन दूषणका व्यवस्था दिषावै है छ॥प्रमाणतदाभासौ दुष्टतयोद्भावितौ प
रिहृतापरीपो वादिनः साधनतदाभासौ प्रतिवादिनो दूषणभूषणे च॥ ७३॥पाका अर्थ॥ वादीनें प्र
माण अर प्रमाणाभास स्थापे तिनिकूं प्रतिवादी दूषणसहित कीये अर फेरि वादी ताका दोषका
परिहार कीया तथा परिहार न कीया तौ ते दोऊ वादीकै साधन अर साधनाभास हैं अर प्रतिवादी १२०
कै दूषण अर भूषण दोऊ हैं छ इहां ऐसा अर्थ है वादी प्रमाण स्थाप्या प्रतिवादी ताकूं दूषण दीया॥
फेरि वादी तिस दोषका परिहार कीया तौ सो ही वादीकै साधन है अर प्रतिवादीकै दूषण है वहुरि
जो वादी प्रमाणाभास कह्या अर प्रतिवादी तादी ताकूं प्रमाणाभास दिषाया फेरि वादी ताकूं॥
स्थाप्या नाही प्रतिवादीका वचनका परिहार न कीया तौ तिस वादीकै सो साधनाभास है अर प्र
तिवादीकै सो ही भूषण है छ आगैं कह्या प्रकार करि समस्त विप्रतिपत्तिका निराकरण द्वा
र करि पूर्वैं प्रमाणतत्व कहनेंकी प्रतिज्ञा करी थी ताकी परीक्षा करि अव नय आदिका स्वरूप
अन्य शास्त्रमैं प्रसिद्ध है सो तहां तैं विचारणां ऐसै दिषावतासंता सूत्र कहै है छ॥संभवदन्य
द्विचारणीयं॥७४॥पाका अर्थ॥ प्रमाणके स्वरूपतैं अन्य तत् कहिये और संभवता होय सो वि
चारणी छ संभवत् कहिये विद्यमान अंन्यत् कहिये प्रमाणके स्वरूपतैं और जो नयका स्वरू
प सो अन्य शास्त्र विषै प्रसिद्ध है सो विचारणां इहां युक्ति करि जाननां छ तहां मूल नय तौ दोय
हैं द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक भेद तैं तहां द्रव्यार्थिक तीन प्रकार है नैगम संग्रह व्यवहार भेद तैं व
हुरि पर्यायार्थिक च्यारि प्रकार है ऋजुसूत्र शब्द समभिरूढ एवंभूत भेद तैं तहां परस्पर गौण प्र
धानभूत जो भेदाभेद तिनिका है प्ररूपण जामैं सो तौ नैगम है नैकं गमो नैगम ऐसी निरुक्ति तैं भा

वार्थपहन्नयाएकहीधर्मविषैनाहींवर्त्तैहै॥ विधिनिषेधरूपसर्वहीधर्मनिमैंएककूंमुख्यकरिअ
न्यकूंगौणकरिसंकल्पमैंलेवर्त्तैहै॥ बहुरिसर्वथाभेदहीकूंकहैसोनैगमाभासहै॥ बहुरिप्रतिप
क्षकीअपेक्षारहितसत्तामात्रसामान्यकाग्रहणकरनद्वारासोसंग्रहहै॥ सर्वथासत्तामात्रक
हैऐसाब्रह्मवादसोसंग्रहाभासहैं॥ बहुरिसंग्रहकरिग्रह्याताकाभेदकरनद्वाराव्यवहारहै
कल्पनामात्रभेदकहैसोव्यवहाराभासहै॥ शुद्धपर्यायग्राहीप्रतिपक्षीकीअपेक्षासहितहो
यसोऋजुसूत्रहै॥ क्षणिकएकांतनयहैसोऋजुसूत्राभासहै॥ छ बहुरिकालकारकलिंग।
निआदिकाभेदतैंशब्दकैकथंचितअर्थभेदकहैसोशब्दनयहै अर्थभेदविनाशब्दनिहीकैन
नापणाकाएकांतहैसोशब्दाभासहै॥ बहुरिपर्यायकेभेदतैंअर्थकैनानापणांकहैसोसम।
भिरूढहै॥ पर्यायकानानापणांविनांहीइंद्रादिकशब्दनिकैभेदकहैसोसमभिरूढाभासहै॥ ब
हुरिक्रियाकेआश्रयकरिभेदकाप्ररूपणकरैयाहीप्रकारहैऐसानियमकहैसोएवंभूतहै
क्रियाकीअपेक्षारहितक्रियाकेवाचकशब्दनिविषैकल्पनारूपव्यवहारकरैसोएवंभूतन
याभासहै ऐसैंनयनयाभासकालक्षणसंक्षेपकरिकह्या॥ विस्तारकरिनयचक्रग्रंथतैंतथा।
तत्त्वार्थसूत्रकीटीकातैंजाननां॥ अथवादसंभवतकहियेविद्यमानसंभवताअन्यवादकालक्षण १२२

Dr BHAU DAJI MEMORIAL

अरपत्रकालक्षणअन्यशास्त्रमैंकह्याहैसोइहांजाननां॥ तैसैंकह्याहै॥ समर्थवचनंवादःयाकाअर्थः
जहांवादीप्रतिवादीकैअथवाआचार्यशिष्यकैपक्षप्रतिपक्षकाग्रहणतैंसमर्थवचनकीप्रवृत्तिहो
यसोवादकहिये॥ जोहेतुदृष्टांतआदिकरिनिर्बाधवचनहोयसोसमर्थवचनकहिये॥ बहुरिपत्र
कालक्षणकह्याहैताकाश्लोककाअर्थ जोप्रसिद्धजेपांचअनुमानकेअवयवतेजामैंपाइये
बहुरिअपनांइष्टअर्थकासाधकहोय॥ बहुरिनिर्दोषगूढजेपदतेजामैंबाहुल्यपणैंहोयऐ
सावाक्यहोयसोनिर्दोषपत्रकहिये॥ छ॥ आगैंअकआचार्यप्रारंभकीयाताकानिर्वाहअरअ
पनांउद्धतपणांकापरिहारदिखावतासंताकहैहै॥ छ॥ परीक्षामुखमादर्शंहेयोपादेयतत्त्व
योः संविदेमादृशोबालः परीक्षादक्षवद्व्यधां॥१॥७५॥याकाअर्थ॥ मैंमंदबुद्धीपरीक्षामुख
नामप्रकरणकीयाहै॥ कैसाहैयहहेयउपादेयतत्त्वकादिखावनैंकूंआरसासारिषाहै॥ कौनकी
ज्यौंकीयाहैजैसैंपरीक्षाविषैचतुरहोयकरैतैसैंकीयाहैबहुरिकौनअर्थिकीयाहैमोसारिखे
मंदबुद्धीनिकैज्ञानकेअर्थिकीयाहै॥ छ इहांबालऐसाआपकूंकह्यातहांतौउद्धतताकापरिहा
रकावचनहै॥ बहुरिशास्त्रकाप्रारंभकरिनिर्वाहकरनेंतैंतत्त्वतपणांनिश्चयहोयहीहै॥ बहुरिआरसा
कीउपमाहैसोजैसैंआपकाआपकाअलंकारआदिकरिमंडितसुंदरपणांअथवाविरूपपणांआरसा

मैंदीषैनैमैंपामैंहेपनपादिपतत्वासाधनरूपएर्ह्ररकरिदीषैहै॥ वहुरिपरीक्षादक्षकौजैंपांकल्यासो
जैसैंपरीक्षावानअपनांप्रारंभ्याशास्त्रकूंनिर्वाहैहैतैसैंमैंभीनिर्वाहकीयाहै॥ ऐसाअर्थहै॥ आगैंटी
काकारकलश्लोककहैहै॥ छ॥ अकलंकशशांकैर्यत्प्रकटीकृतमखिलमान[redacted]निभनिकरं॥ तत्सं
क्षिप्तंसूरिभिरुरुमतिभिर्व्यक्तमेतेन॥ १॥ पाका०अर्थ॥ जोअकलंकआचार्यरूपचंद्रमाकरिप्र
माकरिप्रमाणअरप्रमाणाभासकासमूहसमस्तप्रगटकीयासोमाणिक्यनंदिआचार्यनैंसंक्षेप
करिकत्या॥ कैसैहैंआचार्यवडीहैवुद्धिजिनिकी॥ वहुरिसोहीमैंअनंतवीर्यआचार्यव्यक्तप्र।
गटकीयाहै॥ छ॥ ऐसैंपरीक्षामुखनामप्रमाणप्रमाणप्रकरणकीलघुवृत्तिकीवचनिकाविषैप
माणआदिकाआभासकासमुद्देशनामछठापरिछेदसमाप्तभया॥ ६॥ आगैंटीकाकारइसटीका
कीउत्पत्तिकेसमाचारकहैहै॥ छ॥ श्लोक॥ श्रीमान्वैजेयनामाभूदग्रणीर्गुणशालिनां॥ वदरी
पालवंशालिव्योम[redacted]द्युमणिरूर्जितः॥ १॥ पाका०अर्थ॥ श्रीमान्कहियेलक्ष्मीवान्वैजेयना
मगुणनिकरिशोभायमाननिविषैमरव्यहोताभयाकैसाहैवदरीपालकावंशकीजोआलिक।
हिएपंक्तिपरिपाटीसोहीभयाआकाशताविषैसूर्यसमानमहानहोताभया॥ छ॥ वहुरिश्लोक॥ तदी
यपत्नीभुविविश्रुतासीन्नाम्नावनामागुणशालधीमायारेवतीतिप्रथितांविवेतिप्रभावतीति।

प्रवदंतिसंतः॥ २॥ छ॥ पाका०अर्थ॥ तिसवैजेयकीस्त्रीपृथिवीविषैप्रसिद्धनाणांवऐसाहैनाम
जाकाऐसीहोतीभईसोकैसीहैगुणनिकरिशोभायमानवुद्धिअरलक्ष्मीजाकैपाइयेवहुरिजाकूं
रेवतीऐसाभीनामप्रगटकहैहैं॥ तथाअंविकाऐसाभीनामकहैहैं तथासतपुरुषप्रभावतीऐ
साभीनामकहैहैं॥ छ॥ वहुरिश्लोक॥ तस्यामभूद्विश्वजनीनवृत्तिर्दानांवुवाहोभुविहीरपाख्यः॥ स्व
गोत्रविस्तारनभोंशुमालीसम्यक्त्वरत्नाभरणार्चितांगः॥ ३॥ पाका०अर्थ॥ तिसवैजेयकीनाणांवना
मास्त्रीविषैहीरपनामापुत्रहोताभया॥ समस्तलोककूंहितकारीहैहृत्तिजाकीवहुरिदानदेनैंकूं
पृथ्वीविषैमेघसारिषाहैवहुरिअपनांगोत्रकाविस्तारसोहीभया॥ आकाशताविषैसूर्यसमा
नहै॥ वहुरिसम्यक्त्वरूपरत्नकाआभरणकरिसोभितहैअंगजाकाऐसाहोतभया॥ छ॥ वहुरि
श्लोक॥ तस्योपरोधवशतोविशदोरुकीर्त्तेर्माणिक्यनंदिकृतशास्त्रमगाधवोधं॥ स्पष्टीकृतंकतिप
येर्वचनैरुदारैर्वालप्रवोधकरमेतदनंतवीर्यैः॥ ४॥ पाका०अर्थ॥ तिसहीरपकेआग्रहकेवशतैंमैंअनंत।
वीर्यआचार्यमाणिक्यनंदिकृतअगाधवोधरूपजोशास्त्रताहिकेईविस्ताररूपवचननिकरिप्रगटस्प
ष्टकीयाहै कैसाकीयाहैवालजिमंदवुद्धीतिनिकेंप्रकृष्टज्ञानकाकरनहाराहै॥ वहुरिहीरपकैसाहैसाहै
वहुरिहीरपकैसाहै॥ निर्मलहैवडीकीर्तिजाकी॥ छ॥ ऐसैंपरीक्षामुखप्रकरणकीलघुवृत्तिप्रमेय

रत्नमाला है दूसरा नामा जाका सो समाप्त भई ॥ छप्पय ॥ कह्यो प्रमाण स्वरूप वहुरि संख्या वि
धि नीकी फुनि तसु विषय विचार सार फल विधि हू ली की तदाभास विस्तार कियो परमत निषेध
कर सुनि भवि लषिय्यथा स्वरूप निज पर मत जिमवर मुनिराज वडो उपकार यह कियो परीक्षामु
खकथन तसु देश वचनिका शुभ वनी सुगम परत सुनत नांमर्थन १ आगै या वचनिका होनेंके
समाचार लिषिये हैं ॥ दोहा ॥ ग्रंथ परीक्षामुखतनी वनी वचनिका एह समाचार ताके कहूं सु
नूं भव्य जुन नेह १ चौपई ॥ देश दुंढाहर जयपुर जहां सूवस वसै नहीं दुख तहां नृप जगतेश
नीतिवलवान ताकै वडे वडे वडेपरधान २ प्रजासुखी तिनिके पुरलापकाहू कै नहि थासंता
प अपनें अपनें मत सव चलै जैनधर्म हू अधिको भलें ३ तामै तेरापंथ सुपंथ शैली वडी
गुन ग्रंथ तामैं मैं जयचंद्र सुनाम वैश्य छावडा कहै सु गाम ४ मैं तो आतम द्रव्य विशुद्ध जाति
नाम कुल सवे विरुद्ध तो ऊ कर्मतणो संयोग है विभाव परिणति को भोग ५ अशुभ मंद तैं शुभ
अनुराग धर्मवुद्धि जागी धनिभाग तव विचार यह भयो सुसार जैन ग्रंथ पढि करि निरधार
धि परनै सुननै भयो सुवोध न्यायग्रंथ को भी कछु शोध स्याद्वाद जिनमत मैं न्याय ताकी रीति
लषी कछु पाय ७ तवें विचारी इस कलिकाल जैन न्याय वुध विरले भाल प्रकरण दिश व १२३

चनिकारूप लघु सो होय करूं जु अनूप ८ तव यह लख्यो न्याय को द्वार कियो वचनिकारूप उदा
र भव्य पढो मन लाय अज्ञो स न्याय देश मैं करो प्रवेश ९ निजपर मत का जानूं भेद मिटै विपर्य
य वुधि को खेद स्वपर तत्व को जानि विचार तजो विभाव रहो अविकार १० रत्नत्रय मारग ल
गि ताम पहुंचो मुक्तिपुरी सुखधाम यह उपदेश जिनेश्वर देव भाष्यो गहो करो तिनि सेव ११
पंडित जन सूं यह अरदासि करूं परोक्ष मान मद नासि हीनाधिक जो या मैं होय मूल ग्रंथ लषि
सोधो सोय १२ दोहा ॥ वालवुद्धि लषि संतजन हसैं न कोप कराय इहै रीति पंडित गहै धर्मवुद्धि उम
गाय १३ ॥ छप्पय ॥ नमूं पंचगुरु चरन सदा मंगल के दाता वंदौं जिनवर वानि सुनें पावै सुख सा
ता वीतराग ता धर्म नमूं जो कर्म नाश कर चैत्य धाम अरु चैत्य नमूं सम्यक प्रकाश पर इम एन व
वंदन योग्य है जिन मारग मैं निस्पृही मैं ग्रंथ अंत मंगल निमित्त करी वंदना सस्पृही १४ अशदश
शतसाठि त्रय विक्रम संवत माहि सुकल अषाढ सु चौथि वुध पूरण करी सुवाहि १५ ॥ इति परीक्षा
मुख जैन न्याय प्रकरण की लघु वृत्ति प्रमेयरत्नमाला की देशभाषामय वचनिका जैचंद छावडा कृ
ता संपूर्ण ॥ १ ॥ श्लोकसंख्या तीन हजार आठसै पचास ॥ ३८५० ॥ मिति चैत्र कृष्ण पं५
क्षी भकेवार ॥ संवत १८७० सक ॥ १७३५ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री १२४

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

॥९ ॥पोथीपरीक्षामोरवकासमाप्तमूनं॥१॥

॥पत्र १२४॥

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL